बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित

शील – महात्म

श्री चन्द्र सेण लीलावती चरित्र

मूल्य – सद्गुण स्वीकार

प्रसिद्धकर्ता – सागरमल गिरधारीलाल साकला सिकन्द्राबाद (हैद्राबाद दक्षिण)

वीर २४३८ [illegible] १ प्रत १० सयप्रत १०००

देहो से प्राप्त

४७५

॥ प्रस्तावना ॥

वाछा सज्जन संगमे परगुणे प्रीतिर्गुरो नम्रता ।
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकाप वादाद्भयम् ॥
भक्ति शूलिनि शक्ति रात्मदमने संसर्ग मुक्तिः खले ।
एवत येषु वसति निर्मल गुणास्तेभ्यो नरे भ्यो नमः ॥ १ ॥

अहो सुज्ञ मनुष्यों! आपको पुण्योदय से प्राप्त हुए सद्बुद्धि द्वारा दीर्घ दृष्टी से अब ऊंडा विचार करके देखो कि सुखार्थी प्राणी का इस विश्व में सद्गुण स्विकार की और दुर्गुण का नाश करनेकी कितनी अपार आवश्यकता है. जितने प्रकार के जगत में सुख है उनका मूल सद्गुणही हैं जितने प्रकारके ऊंच पद है वो सद्गुण सही प्राप्त होतेहैं सा मान्य मनुष्य से लगाकर बड़े२ महात्माओं का महो निश गुणगान व्मना नमस्कार करते हैं सो सद्गुणीयों कही कर ते हैं और आगामिक स्वर्ग मोक्ष आदि क सुख की प्राप्ती होती है सो भी सद्गुणा सेही होती है. यथा जो उत्तमोत्तम पदार्थों का दाता जो सद्गुण है, उसको प्राप्त करने की किस सुज्ञ को अभिलाषा न होगी? अर्थात् सबही को होगी

गुणो की खान है इसलिये सद्गुणो परस्त्री को माता भगिनि तुल्य समज स्वस्त्री मेंही संतोष धारण करतेहैं " शोभय धारास्वयम् अर्थात् सद्गुण का त्यागते सज्जनु लोक अपवाद-निंदा होनेसे डरत रहते" इसलिये निंदा कराने वाले दुर्गुण उनसे दूरही रहतेहैं " शक्ति शक्तिमि जो प्रभूके भक्तिवन्त प्रभु कि भाज्ञा मे चलने वाले होतेहैं सद्गुणों उनके-ही मेमानु हो वहांही चिरस्थाइ होतेहैं शक्ति धारमधर्म" दुर्गुणों का त्यागना और सद्गुणों धारन करना सहज नहीं है जो अपनी आत्म को अपने वशम कायम रखने सामर्थ्य होतेहैं वोही सद्गुणी बन सकेहैं " संसग शुचि मलेन अर्थात् सद्गुणियों के सद्गुणों का नाश कर दुर्गुणी बनाने वाला दुर्गुण-मल मूर्खों का संसग-परिचय-संगतही हाताहै कुसंगत से अनेक महात्मा बिगड गयेहैं ऐसा जान सद्गुणी सदा दुर्गुणयोंके संगसे दूर रहतेहैं इत्यादिगुण संयुक्त होतेहैं, वोही सद्गुणभी भासो कर सुखी होतेहैं इन सर्व बातोंका खुलासा चित्त मत करण की बखान पर " चन्द्रसेन लीलावती चरित्र " बहोही असर कारक है बगोक श्लोक में कहा हुव सद्गुण संपन्न चन्द्रसेन राजा और लीलावती राणी थी कि जिनोपर महान् संकट पडतेभी जिनोने सद्गुण का त्याग नहीं किया जिससे वो दोनो भवमें सुख पाये और उनकी संगतसे दुर्गुणी भी सुधर कर सद्गुणी बन सुखी हुवे. और बरोक्त गुण रहित जो धमरथ राजा और कुसीला राणी हुई कि जो दोनो भव में दुःख पाये और सद्गुणों की संगत से सुखी हुये इत्यादि बातका इस चरित्र में कथन किया गयाहै

हमारे शुभपुण्योदय से परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के स्थविर तपस्वी जी श्री श्री केवलऋषिजी महाराज वृद्धावस्था के कारण से यहां हैदराबाद विराजमानहै उनकी सेवामें बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलखऋषिजी (इस ग्रन्थ भाषाके कर्ता) विराजमानहैं, इनके सदुपदेश से भाजतक २०००० छोटी बडी पुस्तकें

॥ ॐ ॥

॥ श्री परमेश्वराय नम ॥

॥ शील महात्म ॥

॥ चन्द्रसेन लीलावती चरित्र ॥

॥ दुहा ॥ जय जय जगगुरु जग तिलो । जग रक्षक जिनराय ॥ यश जिनको
निरमल ~ । प्रणमु उनका पाय ॥ १ ॥ आदि जिनन्द आदि कारी । चौवसि जिन
नन्द ॥ तस चरणा वुज सेवता । होवे परमानन्द ॥ २ ॥ गणपत गोतम गणधरु । लब्ध
तणा भन्डार ॥ आदि देइ सब श्रमण को । ह्लुली करु नमस्कार ॥ ३ ॥ गुरुपद कमल
सुझ मन अली । ज्ञान रसे ग्रस कीध ॥ तस चरण को शरण ले । करु मनोर्थ सिद्ध ॥
४ ॥ वाघेश्वरी जग इश्वरी । श्रीमुख प्रगटी जेह ॥ मुझ मन इच्छा है श्रुती । पूर्ण कर
जो गह ॥ ५ ॥ ॥ सद्गु तणो आश्रय ग्रही । धरीमन उछरग ॥ शील तणी महिमा

म्हू । सुण जो चतुर्विध सघ ॥ ६॥ ०॥ श्लोक—शार्दुल विक्रिडित वृतम्॥ तोयत्यग्नि रपि
स्त्रनत्य हिरपि व्याघ्रोपि सारगती । व्यालोप्य श्वति प्रश्नतो स्युप लति क्ष्वडोपि पियूपति
॥ विम्नो प्युरसवति प्रियत्यरिरपि क्रिडा तडाग स्याय । नाथोपि श्वगृह् त्यटव्यपि नृणा
शील प्रभावत ध्रुव ॥ १ ॥ ० ॥ शील थकी लीला ल्हे । कमला करे किल्लोल ॥ अरि
करी हरी जेहरी डरे । थाय मन चिन्त्या कोल ॥ ७ ॥ शील्वत चन्द्रसेण नृप ।
राणी लीलावती पवित्र ॥ विघ्न समय शील पालियो । तेहनो सुणियो चरित्र ॥
॥ ८ ॥ वी कथा नहीं सु कथा यह । सुण्या थी मालम थाय॥ निद्रा थी कथा परिह
री । सुणिया चित लगाय ॥ ९ ॥ ० ॥ ढाल १ ली ॥ तावडा धीमो सो पड जे ॥ यह
दशी ॥ श्रोता सुणजो चित लाइ । शील वन्त की कथा सुणता । श्रुती पवित्र थाइ
॥ यह आकडा॥ लघू द्विप तो जम्बू द्विप है । सर्व द्विप माहि ॥ नर्व क्षेत्र तिण मांहि अनो
पम । कर्म अकर्म साही ॥ श्रोता ॥ १ ॥ तिण माह भरत क्षेत्र नीको । थेत
दिशा मझारो ॥ वग देश अति चग दीप तो । महीतल शिण गारो ॥ श्रोता ॥२ ॥ तास

---

* अर्थ—अग्नि पानी जसी सिंह मृग जैसा सर्प डोरी जैसा जहर अमृत जैसा, [illegible] उत्सव जैसा। समुद्र [illegible]
[illegible] तलाव जैसा मोर अगड पर जैसा। शील के प्रभाव से हाजाते है

शिरोमण त्रिजयपुर नगरी । विजय कर वसाइ ॥ नव जोजन की लम्बी चोडी चौको
नी भाइ ॥ श्रोत ॥ ३ ॥ तेहने मध्ये राज भवन छे । नव खन्ड ऊचाइ । नव रंग करी
अधिको शाहे । देखत मोहाइ ॥ श्रोता ॥ ४ ॥ तिण महल के चारु विशा में । वजार
चोपड पाइ ॥ मेहल हवेली वजार दुकाना । पक्ति बन्ध रहाइ ॥ श्रोता ॥ ५ ॥ आगल
जाता पुष्प तणी परे । वहुरग फैलाइ ॥ द्विवट त्रिवट चौटव गलिया । करी हे सफाइ ॥
॥ श्रोता ॥ ६ ॥ गढ करी वींटी छे नगरी । बुरज करी सोहे ॥ पोडशैत द्वार चौदिश मा-
हो । देखत मन मोहे ॥ श्रोता ॥ ७ ॥ नगरी वाहिर चारों कानी । वगीचा मनोहरो ॥
सुम पुष्य फल कर भरीया । सहू ऋत सुख कारो ॥ श्रोता ॥ ८ ॥ तिण में वगला घणा-
है चगला । पुकरणी फूवारा ॥ सहू ऋतू की निपजत है सदा । शोभा श्रेय कारा ॥ श्रो
॥ ९ ॥ धर्म शाळा विशाळा कूपादि । विश्रामो ग्राम वारो ॥ पर्थी जन ने साता काजे
। जाग सहू सारो ॥ श्रो ॥ १०॥ विजयसेन राजा देशाधिप । अरि विजय कीधी ॥ पुरुप
माह ते सिंह समानो ॥ कीर्ति बहू लीधी ॥ श्रोता ॥ ११ ॥ पुत्र तणी परे प्रजा पाले
। न्याय प्रमाणे चाले ॥ सज्जन ने तो है मन मोहन । दुर्जन ने शाले ॥ श्रोता ॥ १२ ॥
॥ श्लोक ॥ धर्मान्या शील शोभा । न्याय नीति विचक्षणम् ॥ प्रजा जन्य प्रति पालती ॥

मिती राजस्य लक्षणम् ॥ २ ॥ ढाल ॥ रूप सुन्दरी राणी स्याणी । सीता समजाणी ॥
मेष्ट वाणी सकोमल पग पाणी । बिचक्षण गुण स्याणी ॥ श्राता ॥ १३ ॥ श्रूती सागर
मती श्रूती आगर । नागर गुण पूरो ॥ न्याय मुरोले समान घतावे । राज का ग्रह पूरो
॥ श्राता ॥ १४ ॥ शामादि चउ वड ने जाणे । परजा हित राखे ॥ सागसार का जाण
निपुण मति । कीर्ती सुख चाखे ॥ श्रोता ॥ १५ ॥ ० ॥ श्लोक-मालानी ॥ नृपी हित
कर्तो ह्रपता याति लोको । जन पद हित कर्ता स्यजते पार्थिवेना ॥ इति महती विरोधे
तमान समान । नृपी जन पदाना दुर्लभ कार्य कृता ॥ २ ॥ ० ॥ ढाल ॥ नगर राय
रण न्यायवत है । धन बहूले घरमा ॥ विनय वन्त न न्याय का पक्षी । चाले अपनी
घरमा ॥ श्रोता ॥ १७ ॥ वृक्षाला फूलाला रुपाला । गुणीयाला सुखमाला ॥ छोगाला न
छेल छबीला । दीन प्रतिपाला ॥ श्राता ॥ १८ ॥ ० ॥ श्लोक ॥ यथा देशस्तथा माषा ।
यथाबीज तथाङ्कुर ॥ यथा भूमी स्तथा तोयं। यथा राजा तथा प्रजा ॥ ८ ॥ ० ॥ढाल ॥ छत्तीस
रण और चारे कोमका । लाक सुखी सारा ॥ निज कुलकी रीति प्रमाणे । यन्त मसाग
॥ श्रोता १९ ॥ धन धान्य ने दोपद चौपद । पूर्ण घर माही ॥ भिक्षुक जन तिहा थोडा
गावे । सुखी है सघलाही ॥ श्राता ॥ २० ॥ धर्म स्थानक घहुला छ पुरमा । मनी

सत सुख पावे । दान पुन्य दयादि गुण से । पुर घणो शोभावे ॥ श्रो ॥ २१ ॥ स्वचक्री ने परचक्री को । भय नहीं कोइ ॥ राजा सामान्त सहु प्रजाके । नित्यानन्द होइ श्रोता ॥ २२ ॥ वेरक्त ढाल रसाल श्रोता । मन्डण इण माही ॥ आगे वरणन सुनो वे श्रवन । अमोल ऋषि गाइ ॥ श्रोता ॥ २३ ॥ ● ॥ दुहा ॥ शयन भवन में एकदा । सुख शय्या के माय ॥ रुप सुन्दरी राणी निशे । सूती सुख में आय ॥ १ ॥ अमित कला पूरण करी । उडु गण परिवार ॥ मुख वगासी आता थका । पेठो उदर मझार ॥ २ ॥ इन्दु स्वप्न अवलोकक । जाग्रत यइ तेवार ॥ हर्ष वदन गैयगती करी । प्रितम पास पधार ॥ ३ ॥ राग मञ्जुल करस्फर्स्यथी । भूपत जाग्रत थाय ॥ आदर देइ राणीको । भद्र-सण पेठाय ॥ ४ ॥ पूछ कन्त प्रेम भरी । आगमको विचार ॥ शिरसानते अजली करी । कान्ता करे उचार ॥ ५ ॥ ढाल २ री ॥ उगरसेन की लली ॥ यह ॥ सुनो गुनी जन लोक। पुण्य थकी मिले वाछित थोक ॥ आ० ॥ में सूती थी श्वामी शय्या मझार । सुख थी स्वप्न लियो श्रय कार ॥ सुनो ॥ १ ॥ पूर्ण कला शशी सह परिवार । आइ प्रकाश्यो शीतलाकार ॥ सुनो ॥ २ ॥ मुजने वगासी आइ ताम । मझारा पेट माही पेठो निशाश्वाम ॥ सुना ॥ ३ ॥ इम देखी ने जागृत थाय । नाथ आप पास में आइ चलाय ॥ सुना ॥

२ ॥ सुन राजाजी इम स्वप्न विचार । मन माहे आनन्द पाया अपार ॥ सुनो ॥ ५ ॥
पुत्र हासी कुल उद्योत कार । नाश करसी ते शत्रु अन्ध कार ॥ सुनो ॥ ६ ॥ इम सुनी
राणी हर्षित थाय । तिहा थी उठी निज मन्दिर आय ॥ सुनो ॥ ७ ॥ शय्या में बैठी करे
विचार । रख बीजा स्वप्न आया फल जाउ हार ॥ सुनो ॥ ८ ॥ धार्मिण दासीयों बोलाइ
ने रार ॥ कर्या जागरण धर्म कथा उच्चार ॥ सुनो ॥ ९ ॥ प्रात थया नृप सेवक बोला
य । शभा मन्डप ने सज्ज कराय ॥ सुनो ॥ १० ॥ स्वप्न पाठ को तय तेडाय । नृप
आइ विराज्या शभा के माय ॥ सुनो ॥ ११ ॥ जोतषी न्हाइ धोइ हुवा तैयार । आया
नमी बैठा शभा मझार ॥ सुनो ॥ १२ ॥ शास्त्र देखीने बोले विबुद्ध । बहोत्तर स्वप्न माहे
तीस स्वप्न शुद्ध ॥ सुनो ॥ १३ ॥ तिण माहे चउदैह कह्या प्रधान । तिण माहिलो एक
देख राजान ॥ सुनो ॥ १४ ॥ सर्व जोतषी का अभिमत राय । तिम राष्ट पति तुम पुत्र
थाय ॥ सुनो ॥ १५ ॥ नृपत को सुन हर्ष्यो वचन । पण्डित को दियो बहूलो धन ॥
सुनो ॥ १६ ॥ पण्डित खुशी होगया निज घर चाल । भूधव आइ कह्या राणी को हाल ॥
सुनो ॥ १७ ॥ गर्भ की राणी करे प्रति पाल । सुखे तीन मास बीत्या तत्काल ॥ सुनो
॥ १८ ॥ कमोदनी कन्त पीणो पानी में घोळ । इसो राणी ने उपनो डोहल ॥ सुनो ॥

॥ या डाहलो पूरो हाये कॅम । राणी जी चिन्ता माहे पेढ्या पेम ॥ सुनो ॥ २० ॥
अग रक्षक चटी नृपने चेताय । नृप पूछो राणी घन आय ॥ सुनो ॥ २१ ॥ राणी जी
रहयो डहला नो विरतत । मं पूर सू इमराय दीवी शत ॥ सुनो ॥ २२ ॥ राय बेठा
सभा म जाय । डोहलो पूरण की चिन्ता मन माय ॥ सुनो ॥ २३ ॥ मन्त्री देखी पूछी
योताम । राजाजी राम्यो मन को काम ॥ सुनो ॥ २४ ॥ मन्त्री कहे चन्द्र प्रभा मझार
पंच पाल भेलो मध्यान आवे जार ॥ सुनो ॥ २५ ॥ पछे घोरीने पानो खीर । इम इच्छा
पूरी हामी रण धीर ॥ सुनो ॥ २६ ॥ इमही कियो उपाय तत्काल । राणी इच्छा पूरी
कृष्या नरपाल ॥ सुनो ॥ २७ ॥ सुखे२ पीरया सवा नव मास । प्रसवता पुत्र थयो उजा
म ॥ सुनो ॥ २८ ॥ दासी वधाइ दी नृपने जाय । ताम घडारण स्थापी घर मांय ॥
सुनो ॥ २९ ॥ त्रिन ऊगा नृप मोत्सव कराय । अति आनन्द हुयो नगर के माय ॥
सुना ॥ ३० ॥ छट्ट दिन राती जोगो दिराय । बारमें दिन दियो भानु बताय ॥ सुनो ॥
३१ ॥ सज्जन भेला कर दियो दसोठण । चन्द्रसेण नाम कियो स्थापन ॥ सुनो ॥ ३२
॥ सुक्रपक्ष का ईन्दू जम । बुद्धिघल रुप तेज वध तेम ॥ सु ॥ ३३ ॥ पंच धाय करे प्रति
पाल । वृद्धि पामे ज्यों चपक गिरी शाल ॥ सु ॥ ३४ युग्म ढाल में जन्म अधिकार ।

अमोलऋषि कहे पुण्य प्रकार ॥ सु ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ वसु वर्ष वय सुत तणी । दुह
जाणी नृपाल ॥ विद्याभ्यास करावया । विद्युद्ध बुलाइ कुशाल ॥ १ ॥ ० ॥ श्लोक ॥ मात वै
री पित शत्रु । बालो येन पाठते ॥ न शोभते शभा मध्य । हंस मध्य वको यथा ॥ ५ ॥ ० ॥
दुहा ॥ इम विचारी कलाचार्यने । पास बेठाया कुवार ॥ यथा विधी पढाइने । कीजे शि
घ होंश्यार ॥ २ ॥ पुन्य वतने विद्या तणो । कठिण नहीं कुछ काम ॥ स्वल्प दिना में
कुवर जी । सीख्या कला तमाम ॥ ३ ॥ बहोत्तरें कला पुरुष की । चौसठ महीला की
जान ॥ बेंउरे विद्या अठारेंह लिपी । धर्म राज नीती पहचान ॥ ४ कब्रुज मे पयं शोभे
तिन । शोभनिक हुवा कुंवार । सुवर्ण सुगंध दोनों मिल्या । कमी नहीं कोई सार ॥ ५ ॥
० ॥ श्लोक ॥ विद्या नाम नरश रूप मधिक , प्रच्छन्न गुप्त धन ॥ विद्या भोग करी यश सु
ख करी , विद्या गुरुणा गुरु ॥ विद्या बन्धू जनो विदेश गमने । विद्या परम दवत ॥ विद्या
राजस्य पुज्य ते हि धन । विद्या वीहीनो पशु ॥ ६ ॥ ० ॥ दुहा ॥ पण्डित प्रवीन जान तस
। लाया शभा मझार ॥ सचिव प्रश्न पूछीया । शिघ्र उत्तर दे कुवार ॥ ६ ॥ तुष्टी नृप क
ला चार्यने । धनदे पहों चाया घर । कुवर सुखे निश्चिन्त रहे । हिवे लीलावती जिकर ॥
७ ॥ ० ॥ ढाल ३ जी ॥ जोधारे घर दीपक धीना ॥ यह ॥ पूर्व देश माहे दीपतो । भरत

पुर मनो हारोहो ॥ गढ मन्दिर मढि फरी । स्वर्ग पुरी अनुहारोहो ॥ १ ॥ जोवो२ प्रि
ता लक्षण ॥ टर ॥ प्रिती सदा सुख दाइहो ॥ दोनों गुनी जन जोमिले। तो घडी अभी
फाइहो॥ जोवो ॥ २ ॥ जयत्तन राजा तिहा तणा । न्याय नीती गुन धारोरे ॥ अरिगजन
जन रजना । शूर वीर सिर दाररे ॥ जोवो ॥ ३ ॥ पद्मावती राणी तेहने । शील रुप
गुण धामोर । पति पल्लभ पात वृता । वश किंयो गुण कामोहो ॥ जोवो ॥ ४ ॥ मन्त्री
सज्जनेत्तन छे । घारा वुद्धि निधानोहो॥ सुखदाई राय राष्टँ ने । राज धुरधर जानोहो ॥
जोवा ॥ ५ ॥ प्राण थी पल्लभ नृपने ॥ लघु भाइ सम जाने हो ॥ पलवो नही कोई वा
त फा । क्षिण अन्तर नहीं आनहो ॥ जोवा ॥ ६ ॥ प्रधान जेष्ट भ्रत सम । काण म
र्यादा राख हो । खान पान गान मान में । अन्तर थी प्रम दाखे हो ॥ जोवो ॥ ७ ॥
। ॥ श्लाक ॥ ददाती प्रति प्रद्या तो । गुह्य मक्षती भार्शक ॥ भुंक्त भोजय देव ।षं
ड विधीप्रिती लक्षणम् ॥ ॥ दाल ॥ खीर नीर मिलिया धका । एक रुप वन जा
वजी ॥ धीज फरे पान्हि ताप में । एक ही भाव विकावजी ॥ जो ॥ ८ ॥ ॥ सवैया
क्षीर की सगत नीर करी । तव देगुन आप समान किये हे ॥ ताप लग्यो जब उन क्षी
रन को ।जान्यां नहीं पन आप जयों हे ॥ नही देख के नीर गियों पक्षा कर। रुद अ

धि माही आन पड्यो हे ॥ हीर अलिया मिस मिल्यो । प्यारे मसी क्यों तो ऐसो क
ग्राहे ॥ ७ ॥ ० ॥ ढाल ॥ पय राजा नीर मसवी । इण व्रष्टाल रेणोह्वा ॥ ॥ ऐता जो
गश्न जगत् म। मास ही सज्जन षेणोहो ॥ जो ॥ ९ ॥ राजाराणी प्रेम से । ससारिक सु
न्य नागदा ॥ एक दिन राणी सुख सज में । स्वपन ल्यो पुण्य जोगेहो ॥ जोवो ॥ १० ॥
हरिया भरिया पर्ण्यो । बगीचो सुखदाइहो ॥ पेठो ते आइ मुख । वपे । जागी राजाने ज
णाइहो ॥ जा ॥ ११ ॥ गर्भ रह्या मास तीसरे । डोहलो मन जोवा नो आइहो । सवा नव
मास पूर्ण हुवा । पुत्री प्रसुत थाइहो ॥ जो १२ ॥ बारमे दिन विशोटण करी । सज्जन
परजन ने जिमाइहो ॥ स्वप्न डोलहा प्रमाण थी । नाम लीलावती ठाइहो ॥ जो ॥ १३
पन्नधाय थी मोटी हुवे । सयने लागे प्यारीहो ॥ प्रेम घणो प्रधान थी । खलवाने धावे ला
गीहो ॥ जो ॥ १४ ॥ फाका२ कहे प्रेमथी । सवा सग तस रहावहो ॥ स्याइने आगे पालन
। आइ दाय नहीं आयहा ॥ जो ॥ १५ ॥ गुण सुन्दरी नारी मन्त्रीकी । ते पण तास
लडावहा। पुत्रथी अधिकी गिने । इम सुखे दिन वीतावहा ॥ जो ॥ १६ ॥ तिणकाले
तिण अवसर । चरण करण गुण धारीहो ॥ ज्ञाती ऋषि पधारीया । उतर्या बाग मझारीहो
॥ जो ॥ १७ ॥ ग्राम जन सुणी एकया । मनमें अति हर्षायाहो ॥ माली खबर दी रायने

। गिर पात्र नन रक्ष या॰। ॥ जो ॥ १८ ॥ चतुरगी शेन्या सजी । मुनि वरण को जावेहो ॥ सामत मठने राणीरा । सहू नृप संगे आवेहो ॥ जो ॥ १९ ॥ विधीथी सहु वदन करी । नम्र सन्मुख वठाइदो ॥ पर उपकारी मुनिवरा । देशना तब फरमाइजो ॥ जो ॥ २० ॥ ७ । दाहा ॥ सेरवर तरवर सत जन । चौथा वूठे मेह ॥ परोपकार के कारणे । चारों धारी दह ॥ ८ ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अनित्या नी शरीरानी । वेभव नेव शाश्वतं ॥ नित्य सान्निहितो मत्यू । कृतव्य धर्म समह ॥ १ ॥ ७ ॥ ढाल ॥ देह सपत अशाश्वती । स्वपन सम दरसाइहो ॥सज्जन दुर्जन सारीखा । धर्म किया सुख पाइहो ॥ जो ॥ २१ ॥ इत्यादि देशना मुणी । धरा पति वैराग्याहो ॥ शाश्वतसुख वरवा भणी । अशाश्वत थी मन भाग्या॰ ॥ जो ॥२२॥ राज दियो मत्री भणी । लीलावती समलाइहो । राजा राणी जाउथी । दिक्षा सुख दाइहो ॥ जो ॥ २३ ॥ ज्ञान मणी तपस्या करी । अणसण कर स्वर्ग पाइहो ॥शंकर लोचन ढाल यह । अमोलख ऋषि गाइहो ॥जो ॥ २४ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मत्रीका राना हुवा । प्रिती के प्रशाद ॥ परजा पाले प्रेमथी । मेटी दुःख विखवाद ॥ १ ॥ लीलावती लीला करी । शुक्ल शशीपर जेह ॥ गुण तन कला वृधी हुइ । रुप मनोपम गह ॥ २ ॥ सौन्दे तन मृग लोचनी । व्याले वेणी हरी लंके ॥ दंती गमण नर मन

रमण । करण चतुर निशक ॥ ३ ॥ अमरारुण शुक नाशीका । मीनेउर कुंभपगे ॥ हाय भाव विलास जो । सुर पसि रहे थग ॥ ४ ॥ रुप अनोपम छयी छकित । सब वरणव नहीं थाय ॥ छवी उतारि सेहनी । दशो देश लेजाय ॥ ५ ॥ चित्रवेस गुण सांभली, मोहाया बहु राय ॥ उत्सुक हुवा परणण भणी । मानता ले मनमाय ॥ ६ ॥ मांगण दूत आया घणा । सज्जन जी करे विचार ॥ केहने परणावू एक यह । करनो कोइ उपाय ॥ ७ ॥ ● ॥ ढाल ४ थी ॥ मांग २ वर मांगणी ॥ य ॥ नारी जगमें मोहणी । करे य-हू तेहनी आसहो ॥ यहने छाडे भनजे । मोटीया जग माहे फासहो॥ नारि ॥ १ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ विस्तारित मकर केत्त नवीवरेण । स्त्री संज्ञित बडिश मात्र भवा बुराशो ॥ ये नन्वितस्तव धरामिष छुब्ध । जीव मत्स्यान विकप्यपचति स्यनुराग वन्हो ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ सज्जन सेन मति आगला । चिन्तवे मनमें आमहो ॥ एक नृपने दिया थका । सवलसी नृप तमाम हो ॥ ना ॥ २ ॥ सहु जना खुशी रहे । झगडा पण नही थायहो ॥ कुँवरी र मन भावतो । वरने वरसी चायहो ॥ ना ॥ ३ ॥ इम मन मांहि विचारने ।

मर्थ जैसे मीर मच्छीयों को पकड कर पचाता है तैसे भव रुप समुद्र म पडे जीव रुप मच्छकी स्त्रीरुप भरणी पानी रुप काम में स्तन रुप मांस से जेहुपी कमा कर फसा कर प्रेम रुप अग्नि में कामी पुरुष को पचाती है

सघरा मन्डप तेवारहो ॥ तैयार करायो चूपस्यू । खरची द्रव्य अपार हो ॥ ना ॥ ४ ॥ सुन्दर पत्री लिखाइ ने । सुंशि पुरुपने हातहो ॥ देशो देश पहोंचावइ । बात करी विख्यात हो ॥ ना ॥ ५ ॥ पात्रकी वांची करी । भूधव घणा हर्षाय हो ॥ सर्व जणा इम चिन्तवे । हमे परणस्या जाय हो ॥ ना ॥६॥ आपर का मन थकी । दुल्हा बण्या सहूकोय हो ऋद्धि सजाइ करी घणी।आसंघरे पूजा होयहो ॥ ना ॥७॥●॥श्लोक॥शेभायां व्यवहारेच। वैरी धुसरे घरे ॥ अदम्बरा नि पुज्यते । स्त्रीषु राज्रं कुले पुचे ॥ १० ॥ ● ॥ ढाल ॥ मगध अग वग देशना । काशी अने कुशाल हो ॥ वीर सोरठ कच्छ वच्छ ना । काशमीर पचाल हो ॥ ना ॥ ७ ॥ इत्यादि बहु देशना ॥ नृपती ऋद्धि लेय हो ॥ मन अधिकाइ धरता थका । चाल्या दमामा देय हो ॥ ना ८ ॥ भरतपुर चल आविया । भरत नृप सहूने बधाय हो ॥ साता कारी स्थान के। सहु ने दिया उत्तराय हों ॥ ९ ॥ सन्मान खान पानादिक । भक्ति करी सवाय हो ॥ विभुक्षित हो सहु नृपति । मन्ड पे बेठा आय हो ॥ ना १० ॥ निज २ स्थान वेसीया । देइ मूछे ताव हो ॥ लीलावती न वरण को । लाग्यो घणो उमाव हो॥ना ॥ ११ ॥ लीलावती तिण अवसरे । स्नान शिणगारे सज्ज हो ॥ दासीया सग परिवारी । जावे इन्द्राणी लज्ज हो ॥ ना ॥ १२ ॥ सवैया ॥ भजन भजन

पीर । दोउ कर कक्कन कुन्डल जोरी ॥ फूल की माल भलकती भाल । तिलक तबोल असखसी भेरि ॥ घमके घूघरी चमके दुलहरी । नखवेसर नवर कचूकी डोरी । ज्ञान क हे चतुराइ सवी । यो सोल्ह शिणगार सजावत गोरी ॥ ११ ॥ ढाल ॥ मन्डप में आवी त दा । शोभे सहु मे शिरदार हो ॥ तारागण में चन्द्र जिम ।हाथ में पुष्पको हार हो ॥ ना ॥ १२ ॥ सर्व देख चकित हुवा । जावे मेखान्मख हो ॥ जेहने यह रंभा वरे । तस जन्म कृतार्थ लेख हो ॥ ना ॥ १६ ॥ दरपण में दरसावती । दासी नृप नो रुप हो ॥ नाम गोत्र ऋद्धि आदि । कहती मुख थी स्वरुप हो ॥ ना ॥ १४ ॥ मगधपती अरी गजनो । चपा नो मही पाल हो ॥ कच्छ पति महा प्राक्रमी । कुशल काशी नो विशाल हो ॥ ना ॥ १५ ॥ काशमीर कनक पुरी । कलरथ नृपाल हो ॥ कुमुखसेण मत्तीश्वरु । राज कलाये खुशाल हो ॥ ना ॥ १६ ॥ तिहा कुवरी स्थभित थइ । कलरथ हर्षाय हो ॥ पण मन पाछो वालीयो । आगे चलती थाय हो ॥ ना ॥ १७ ॥ तखते नृप प्रधान ने । मनमें धर्यो अमरोषहो ॥ पुण्य विना किम पामीये । हुयो घणो अपसोष हो ॥ ना ॥ १८ ॥ आगे चलता आवीया । विजयपुर राय कुँवर हो ॥ चन्द्र कुँ-वर चन्द्रकला समो । देखी प्रोहि अपार हो ॥ ना ॥ १९ ॥ वर माला कंठ ठवी । चन्द्र

कुमर वर कीधहो ॥ जोडी मिली रती कामसी । थया मानोथे रिद्धहो ॥ ना ॥ २० ॥
वर्दे ढाल पूर्ण हुइ । सघरा मन्डप अधिकाइ हो ॥ अमोल ऋषि कहे चारित्र को । ६
ठ्यो बीज ए मझार हो ॥ ना ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ जयर कार तिहां हुवो । खुशी
हुवा सव राय ॥ एक वस्तरथ नृपने । मनमें भाया नाय ॥ १ ॥ आपणी २ शैन्य ले। नृप
गया निज गाम ॥ रम मोछव मडयो भरतमें । सज्जन सेन नृप धाम ॥ २ ॥ वीजय
पुरथी आवीया। विजय सेण परि वार ॥ स्वागत्त कीधी तस घणी । मृत्या मङ्गला चार
॥ ३ ॥ लग्न दिवस शुभ स्थापीयो । वाज्या वाजिन्त्र हर्ष पुर ॥ मङ्गल गावे गोरडी ।
दु:ख दोहग सहू दूर ॥ ४ ॥ मेघधारा पर खरपता । द्रव्य दोनों राजिन्द ॥ द्रव्य तिहां
सर्व सपजे । वृत रह्या आनन्द ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ५ मी ॥ कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥
॥ य० ॥ लग्न तणा दिन आवीयो जी। वर राय हुवा तैयार ॥ ऊगटणो पीठी करी जी।
स्नान करी शृंगार ॥ चतुर नर । जोवो पुण्य प्रकार ॥ १ ॥ टेर ॥ केसऱ्या जामो पेरी
योजी । रत्न मुगट शिर धार ॥ जरी सेलो कड बान्धीयो जी । गल अठ रे मन्यो हार ॥
॥ च ॥ २ ॥ इत्यादि शृंगार थी जी । शोभ्या इन्द्र अनुहार ॥ गेयवर रढ हो चालीया
जी । वाजिन्त्र ने झणकार ॥ च ॥ ३ ॥ ❁ ॥ मनहर ॥ ढोलेक मृदगे दहुं । झाँझ

नेफेरी ढांके । गढ़ेगढी भीणी शके । डमेरु मुंमगहे ॥ भीमेडेल ढोगढधाट रावेण हायो घडीयेोल । तम्बूरो पकावेन । ढुंडेक रणेसिंग है ॥ मृगेल फेंशील जंसे । सोरंगी नगोरा पुंगी । सरणोइ खंजेीर । मजीरी डफ अंगहे ॥ मनुंपण घूघेरा । अेगो वोरेवाव मेरी" । घरघूं छत्तीस सब । वाजिन्त्र के अंग हे ॥ १२ ॥ ● ॥ ढाल ॥ आर्य अनार्य देशनीजी। मुन्ड वासी काळार ॥ स्वदेश वेश भाषा विशेष जी । गीत करे उच्चार ॥ च ॥ ४ ॥ इम अनेक ठाठा रमस्यू जी । आया तोरण द्वार ॥ सासू पुत्री वर पुंखने जी ।लेगइ चोरी मझार ॥ च ॥ ५ ॥ कर मेलण मोषण आदेजी । ससारी विवहार ॥ पहरावणी ने दापजो जी । कीधो घणो अेपकार ॥ च ॥ ६ ॥ परणीने घर आवीयाजी । पोषण सहू प रिवार ॥ चतुर रसोइया हाथ स्यूजी । पकवान किया तेयार ॥ च ॥ ७ ॥ मनहर ॥- मोती चूर ममव पूरी ॥ जलबी खाजे मुरमुरी । वडा पकोडी चुरचुरी । रावडी दुध पि जीये ॥ घेवर केसर्या पूर । पेडा वोठ कव ओर । गुपचुप घी सजूर । सीरा पूरी लीजी पे ॥ अम्य केल माजी शाख । रायता में डाली दाख । चांवळ कूर मेली दाल । घृत भी रेडीजीये ॥ बतीस भोजन प्रकार । तेंतीस सलाण सार । रुपालप मेल मुग्न । वेर नही कोजीये ॥ १३ ॥ ● ॥ ढाल ॥ सहू परिवार सतोषीयो जी। लायक बेद मन्मान

... जी । तयार हुई तब जान ॥ च ॥८॥ पहां चायण न चाला-
याजी । नृपादि सहु परिवार ॥ पुत्री वियोग हित शिक्षानाजी । गाथे गीत साथ नार ॥
च ॥ ९ ॥ आँख आश्रून्दाखती जी । गुण सुन्दरी तेयार ॥ लीलावती उर लगाय ने जी
। शिक्षा दे सुखकार ॥ च ॥ १० ॥ सासू सुसरा बडा तणी जी। लज्जा धरजो नित्य ॥
पति वयण मत लोप जोजी । रही जे सदा यनीत ॥ च ॥ ११ ॥ मरम मोसा नहीं बो-
ली ये जी । सील रत्न ने समाल । दान धर्म कर जो सदा जी । दोनों कुल सोहाग वि
शाल ॥ च ॥ १२ ॥ थने कहणो घणो न लगे जी । ठेठ थी तू छे सुजाण ॥ वच पनथी
केहनी जी । लोपी नहीं काण आण ॥ च ॥ १३ ॥ मोटा घर में जावणो जी । मिलणो
मुशकिल फेर ॥ माया विसारो मती जी । राखजो हमपर मेहर ॥ च ॥ १४ ॥ सज्जन
विजयजी से भणे जी । तुम सोले हम वाल ॥ ऊँच नीच काइ हुवे तो । कीजो सदा
समाल ॥ च ॥ १५ ॥ विजय जी कहे तुम पुत्री काजी । हम कुल की शृंगार॥ कुँवरी
ने पण सतोष ने जी । दी शिक्षा हितकार ॥ च॥ १६ ॥ सीम लगन पहोंचाय ने जी
। पाछा फिर्या भरतराय ॥ कुँवरी गुण सभारता जी। सुखे रहे घर अ य ॥ च ॥ १७ ॥
विजय सेन आदि सहू जी । सुखे मुकाम करत ॥ विजयपुर ढिग आवीया जी । हिवडे

हर्ष धरत ॥ च ॥ १८ ॥ सामंत पुर जन वधाइनें जी । लेगया मेहल माय ॥ लीलाव
ता घणी नम्र थइ जी । लागी सासूजीरे पाय ॥ च ॥ १९ ॥ चिरंस्वागी पुत्र वती हुवो
जी । बढावो धर्म कुल मान ॥ भंडार तणी कूची दीवी जी । राखे जीवन प्रान ॥ च ॥
२ ॥ हाथ खरची में आपयिा जी । मोटा २ ग्राम ॥ नवरंग नवा मेहल रहण ने जी।
दिया सहु आराम ॥ च ॥ २१ ॥ वैमव सुख दुगंदक परे जी । विल से
चन्द्र कुँवार ॥ चन्द्र चावणी सारखी जी ॥ प्रिती आपस में अपार ॥ च॥ २२ लीलाव
वती सुख थी रहेजी । पाढँव मी यह ढाल ॥ अमोल कहे आगे सुनोजी । सयम लेवे
नृपाल ॥ च ॥२३ ॥ ● ॥ दुहा ॥ तिण काले तिण अवसरे । सुमती ऋषि अणगार ॥
चरण करण गुण मागुरु । घणा मुनि परि वार ॥ १ ॥ जिन पद माहे जे करे । अप्रति
बन्ध विहार ॥ सद्बोध देइ तारता । भव्य समुद्र समार ॥ २ ॥ मनोरम नामे उघ्यान में
। समो सर्या ऋषि राय ॥ आज्ञा लेइ वन पाल की । उतर्या बाग में आय ॥ ३ ॥ मा
ली लेइ भटणो । आया कचेरी माय ॥ मुनि आगम की वारता । सामली हर्ष्यो राय
॥ ४ ॥ चतुरगणी शैन्य सजी । आया वदन काज ॥ प्रपदा बेठी भराय नें। दे उपदेश
मुनि राय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ॥ ६ ठी ॥ रेलाला विछियो म्हारो चाज नो ॥ यह ॥ रे

श्रोता ॥ साभलो श्रुत लगाय ने । काइ यो ससार असार रे श्रोता ॥ तन धन जोवन कारमो । जेसे विजली को चमत्कार रे ॥ श्रोता साभलो ॥ १ ॥ श्लोक ॥ श्रियो विधु लोला, किति पय दिन योवन मित्र ॥ सुख दु खा क्राता । वपूर नियत व्याधि विधूरं ॥ गृहा यास पास । प्रणयति सुखं स्थैर्य विमुख ॥ असार संसार । स्तदिह नियत जागृत जना ॥ १४॥ ० ॥ रे श्रोता काल अहेडी सारखो । काइ ताक रह्यो निशाण रे श्रोता ॥ न जाने किण वक्त में । यो तो हरण करी जासी प्राणरे ॥ रे श्रोतासा०॥२॥ रे श्रोता सुग्व कारण यो जीवडो । काइ उद्यम करे अपार रे श्रोता । ते दु:ख रुप होइ परग मे । काइ इण भव परभव मझार र श्रो ॥ सा ॥ ३ ॥ निश्चल सुख जो चाहिये । तो सयम करो अगीकर रे० ॥ नहीं तो श्रावक पणा आदरो । तो पण निकलसी सार श्रो ॥ सा ॥ ४ ॥ रे० पत्र महा वृत मुनितणा । काइ श्रावक का वृत बार रे श्रो० ॥ इण ने आराध्या जे जीवडे । तिणरो थयो निस्तारर ॥ श्रो ॥ सा ॥ ५ ॥ रे० इत्यादि धर्म देशना । सुणी हर्ष्यां भव्य जनरे श्रो० ॥ केइ श्रावक पणो आदर्यो । नृप कर्यो सजम को मनरे श्रो ॥

भर्थात्—लक्ष्मी विजली जैसी चपल यावत थोडे दिवस पावणा सुख आ दु:ख रुप शरीर व्याधी कर कर भय इया घर धन वैर भान जैसा इत्यादि संयाप जनम से यह प्रकार ससार निःसारजाताहै, एसा जाण महा सुखार्थीयों जागरो!!

सा ॥ ६ ॥ रे० हाय जोडी ने इम कहे । सहत वचन मुनिराय रे श्रोता ॥ सरध्या पर
तीस्या निशंक मे । फरसणरी मन मायरे श्रोता ॥ सा ॥ ७ ॥ मुनि कहे उतावल की
जीये । प्रति बन्ध करणे नायरे श्रोता ॥ वदना करी राय चालीया । आया राज रे
मांय रे श्रोता ॥ सां ॥ ८ ॥ राणी ने कहे राय जी । हमे लेशा संयम भार रे रा
णी ॥ आज्ञा दीजे वेग स्यु ॥ हिवे ढील न करणी लगाररे राणी ॥ सां ९ ॥ हो
सायब सयम मार्ग दोहीलो । थानो सुख माल शरीरहो स्वामी ॥ परि सहा सहण दोहि
ला । तिहां किम रहे मन स्थिरहो स्वामी ॥ १० ॥ अहो राणी कायर ने छे दोहिलो।
सूरारे मन सहज रे राणी ॥ हम क्षत्री पाछा नही हटां । शिघ्र रजा मुज देजरे राणी ॥
सां ॥ ११ ॥ अहो सायब राज काज यह सायबी । इण री कुण करसी समाल हो
राजा । चन्द्रसेण छे नानडयो । कोइ हम अबला अवतार रे राजा ॥ सां ॥ १२
॥ अहो राणी जीवता सहु रक्षा करे । काल खुटचा किम थायरे राणी
काल को भरो छे नहीं । न जाने किण वेला आयरे राणी ॥ १३ ॥ सां ॥
अहो राज इम कठोर मन किम थयो । हम दया नावे लगार रे राजा । इचा विनारी प्रितडी
कांइ किम तोडो निरधाररे राजा ॥सा॥१४॥ अहो राणी जो साची होवे प्रीत । तो चालो हम

लारे राणी। तो अखन्ड प्रिती रेवसी। होसी आत्मको उधाररे राणी ॥सा॥१५॥ अहा राजा आप छोडे संसारने। तो में किस्यो करस्यू रेयरे राजा ॥ आप मुनि में आर्जिका। इम नि भाव स्यू नेहरे राजा ॥ सां ॥ १६ ॥ रेश्रोता राणी वैरागी देखन। बोलायो चन्द्र सेण कुवाररे श्रोता। राज करो पुत्र चेनमें। हम लेस्या सयम भाररे श्रो ॥ सां ॥ १७ ॥ कु वर यह बचन सांभली। कोइ छूटी आंश्रूकी धाररे ॥ अहो तात आप मुजे छोदी गया। तो मुजने किणरो चाधार हो तात ॥ सा ॥ १८ ॥ अहो पुत्र राज करण जोग तू थयो। म्हार साधनो हिवे जोगरे पुत्र। परभव सरची लेवस्यू। जो सुखीया होवा आगे लोग रे पुत्र ॥ सा ॥ १९ ॥ ० ॥ शेर ॥ वेपार तो यहाका बहुत किया। अब वहाकाभी कुछ सोदालो ॥ जोखेप उधरकी चढनी हे। उस खेप को यहा से लदवा लो ॥ उस रहामें जोकुछ खाते हो। उस खाने कोंभी बधवालो। सब साथी पहोंचे मजलस पर। अब तुमभी अपना रस्तालो ॥तन सुखा कुबडी पीठ भइ। घोडे पर झीन धरो बाबा ॥ अब मोत नगारा बाज चुका। चलनेकी फिकर करो बाबा ॥१५॥●॥ढाल॥ अहो पुत्र अबतो हम रहस्या नहीं। इम सुणी पिताका बेणरे श्रोता ॥ चन्द्र कुमर चुपको रह्यो। राज दियो ताम ततक्षिण रे श्रोता ॥ सा ॥ २० ॥ रेश्रोता श्रूती सागर सचीव पे देखने। तिणने आयो वैरागरे

श्रोता । सोमचंद प्रधान पणायने । नृप साथ हुवो महा भागरे श्रोता ॥ सा ॥ २१ ॥
रेश्रोता राजा राणी प्रधानजी । तीनो विमुक्षित थायरे श्रोता ॥ कुतीया वण की दुकान
से । पातरा ओगा मगायरे श्रोता ॥ सा ॥ २२ ॥ रेश्रोता सहँश्र पुरुष तोके जिसी ।
शिवकामें आरूढ होयरे श्रोता ॥ सज्जन पुरजन संग परिवर्या । आया बागमें सोयरे श्रोता
॥ सां ॥ २३ ॥ पंचमुष्टी लोचन करी । लीनो सयम भाररे श्रोता । परिवार वदी घरगया
। तीनो मुनी सति ते धाररे श्रोता ॥ सां ॥ २४॥ करणी कर स्वर्गे गया । महा विदेह थइ
मोक्ष जायरे श्रोता ॥ कार्तिक सुख जित्ता ढाल ए । ऋषि अमोलख गायरे ॥ श्रोता ॥
सांभलो ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ चन्द्रसेण नृपत हुवा । जिम जोतपी मे सोम ॥
न्याय नीती सुरीती थी । सुख थी पाले कोम ॥ १ ॥ ◉ ॥ स्लोक ॥ इन्द्रात नृपस्त्व
ज्वालान, प्रताप । कोधयमा, वैश्रमणा चित ॥ सम्य स्थिती राम जनार्दन भ्या । मा
राय राज्ञ क्रियते शरीर ॥ १६॥ ● ॥ दुहा ॥ दिन२ चषे सपवा । पुण्य तणे पसाय ।
पच धर्म करी नृपजे । तहि राज निभाय ॥ २ ॥ स्लोक ॥ दुष्टस्य दंड, स्वजनस्य पूजा ।
न्यायन कोशस्य, च सप वृधी ॥ अपक्षेपातो, निजराष्टे चिन्ता । पचापि धर्मा नृप पुंगवान
॥ १७ ॥ दुहा ॥ सोम चन्द्र प्रधान तस । बुद्धितणा भन्डार ॥ सत्यमेव [illegible]

... ... परिवार ॥ २ ॥ आधर भन्डारी जी । रक्षक कोश का जेह ॥ पतिहू मन्त्री रायका । धरता अधिको नेह ॥ ४ ॥ गेंदू नामे हजूरायो । श्वामी भक्त होंश्यार । ओर परिवार सपती घणी । सर्व जोग श्रेय कार ॥ ५ ॥ विजय पुरने पाखती । भील पल्ली बहु जष्ट ॥ उपद्रवी घणा भीलडा । कूर स्वभावी नेष्ट ॥६ ॥ सग्राम करी तस वश किया । वधो शैन्य प्रताप ॥ चन्द्र नृप इन्द्र समा । सोहे रिद्ध सिद्ध आप ॥ ७ ॥ ० ॥ ढाल ॥ ७ मी ॥ सहस्याए आंबो मोरीयो ॥ यह ॥ तिण अवसर भरतपुर नयर मे । सज्जन सेण हो गुण सुन्दरी साथ ॥ बात करत विनोदनी । लीलावती हो यादज तस आत ॥ सुण जो कथा चित लाय ने ॥ टेर ॥ १ ॥ गुण सुन्दरि कहे स्वामी सुणो । निर मोही हा तुम दीसो छो पूर ॥ लीलवती मुज लाडली । परण्या पाछे हो न बुलाइ हजूर ॥ सुण ॥ २ ॥जिन विन घडी सरतो नही । तिण ने हो वर्ष वीत्या चार ॥ कभी याद कीनी नही । नही मंगाया हो समाचार । सुण ॥ ३ ॥ महीपत कहे राणी सुणो । म्हारा मन में हो हुवे कभी को विचार । पण मोटा घर थी लावणो । वेगो किम हो होवे इण वार ॥ सुण ॥ ४ ॥ हिवे प्राते बुद्धि सागर भणी । भेजस्यू हो विजय पुर मेय ॥ थोडा दिन रे माय ने । ले आवसी हो लीलावती तेय ॥ सुणो ॥

५ ॥ दूजे दिन प्रधान ने । राखे हो सज्जन सेण राजान ॥ विजयपुर पधारीये लेइ आवोहो लीला वती जान ॥ सु ॥ ६ ॥ चन्द्रसेण भूपालने । कीजो हो हम छुलने जुहार ॥ मिलवाकी मन मे घणी । ते होसी हो पुण्य फलसी जेमार ॥ सु ॥ ७ ॥ तुम विचक्षण छोघणा ॥ घणा तुम ने हो कहणो पडे नाय ॥ सुख शातीसे पधार जो । बुद्धि व ता हो जावे तिहा सुख पाय ॥ सु ॥ ८ ॥ जो हुक्म स्वामी आपको । हम कही हो हुवा शिघ्र तैयार । चतु घंट रथ आरुढ हुइ । ते चाल्या हो करी ने नमस्कार ॥ सु ॥ ९ ॥ विजय पुर चल आविया । नमियाहो चन्द्रसेण ते आय ॥ जय विजय वधावीया लाइ पत्रिका हो दीनी सामे ठाय ॥ सु ॥ १० ॥ चन्द्रनृप खुशी हुइ । बुद्धि सागर को करायो सत्कार । सुभ समाचार पूछीया । क्यों हो योग सहू उचार ॥ ११ ॥ ❁ ॥ पत्र-मरहट ॥ आपकी सुद्रष्टी मिवा । कृपा भाव करी अत्र । निश दिन सर्व विध । वरते आनंद मे ॥ तस सदा आरोग्य । कुशल सपती भोग्य । सुजस सुबुद्धि वृद्धी । सदा रहो सुख वृन्दमे ॥ येही मुज आस । विश्वास है तुम्हारो खास ॥ नेह लीला नि मानो । जेसे वृद्धि चन्द्र में ॥ देखन दीदार । जीवन तरसत अपार । नित्य वसी रखो चित्त । आप मुख अरि विन्द में ॥ १८ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ कागद वाची नृपती । चित पाया हो अ

तिहाँ आणद ॥ प्रिता पखा अतस तणा । जागो जाण्या हो सुमराल समन्द ॥ सु ॥ १२ ॥ वुद्धिसागर प्रधान ने । पहोचाया हो लीलावती मेहल ॥ राणी जाइ पियर तणा । अणनदी हो मनमे अति फेल ॥ सु ॥ १३ ॥ सुख समाचार पूछीया । खुश खबरी दी तिण हर्षाय । अणदी घणी मन विषे । भक्ति भोजन हा प्रिती थी कराय ॥ सु ॥ १४ ॥ बुद्धि सागर रहे सुख मे । पूरी हुइ हो पत्रिभाजिथी । ढाल ॥ अमोलऋषी कहे आगले । सहु सुणियों हो कर्मा का हवाल ॥ १५ ॥ ० ॥ दूहा ॥ कर्म बली है जक्त मे । चैतन्य करे तस सच ॥ आबाधा काल पुरा हुवा । टले नहीं त रंच ॥ १ ॥ हरी हर ब्रह्म ने च ब्रते । कर्मे पाया दुख ॥ तोइहां चन्द्र सेण को । कहवो वरणवस्यू मुख ॥ २॥कारण से कार्य हुये।निमित मिलि बिच आय ॥ तिम सवर मडप विषे ।जेजे बीज रापाय ॥ ॥३॥तेह तणो द्रुम जे भयो।लाग्या पस पुण्य फल॥ते चरित्र श्रोता जनो।सुनो हो मन विमल ॥४

ढाल ॥ ८ ॥ मी ॥चार प्रहर नो दिन हुवेरे लाल ॥ यह ॥ काशमीर देश तणे विषेरे लाल । कनक पुर घर सेहर हा श्रोता आन ॥ कसरथ राजा तेहनारे लाल ॥ दुमुख प्रधान पर मेहर हो श्रोता जन ॥ १ ॥ जोवा विचार कामी तणोरे लाल । कामी कपटी होय हा श्रोताजन ॥ अतर वाहिर जुजुवारे लाल ॥ कामीना काम होय हो श्रोताजन ॥ २ ॥

राजा प्रधान दोनों लम्पटीरे लाल । उपर सें घणो प्रेम हो भो० ॥ अना धारी परजा दुइरे लाल । रइयत रहे राय जेम हो भो० ॥ जो ॥ ३ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ राज्ञि धार्मिण धर्मिष्टा । पापे पाप समे समा ॥ राजा ने मन वृतते । यथा राजा स्तथा प्रजा ॥ १९ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ एक दिन नृप प्रधान जीरे लाल । बेठा एकान्त जाय हो भो० ॥ चारवि कथा करवा लगारे लाल ॥ कामीको ज्ञान केस आय हो भो० ॥ जो ॥ ४ ॥ दुहा ॥ ज्ञानीसे ज्ञानी मिले । तो ज्ञानकी लूंटा लूट ॥ मूर्खसे मूर्ख मिले । वो करे मांथा कूट ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ सवरा मन्डप की कथारे लाल । निकली तिहा तिणवार हो भो० ॥ राय कहे प्रधान स्यूरे लाल । केसी सुन्दरथी नारहो भो० ॥ जो ॥ ५ ॥ साक्षात रती समीरे लाल । तेसी ओर न कोय हो मसी श्वर ॥ मुजने ते परती छूतीरे लाल । पण चन्द्र सेण लिये जोय हो मसीश्वर ॥ जो ॥ ६ ॥ तास छवी मुज मन थकीरे लाल । भुलाय नहीं क्षिण एक हो म० । अहो निश चेन पड नहींरे लाल । किम पूरे ए टेक हो मं० ॥ जो ॥ ७ ॥ एसो उपाय बतावीये लाल । लीलवती आवे हाथ हो म० ॥ दुमुख जी कहे सांभलोरे लाल । फिकर न करो भूनाथ हो राजेश्वर ॥ जो ॥ ८ ॥ में जा आबू विजय पुररे लाल । चोकस करवा काज हो रा० ॥ शेन्य सामंत साथि सहरे

लाल । देखी आवू सत्र साज हो रा० ॥ ९ ॥ महारी पहली पतनी तणोरे लाल । पीयर लक्ष्मीधर गेह हो रा० ॥ ते भन्डारी चन्द्रसेनकारे लाल । सहू पतासी तेह हो रा० ॥जो॥१०॥भूधव कहे जलदी करोरे लाल। पसलाछे ठीकहो म० ॥पाछे साज सजाव स्यारेलाल हो आस्या निर्विक हारा ॥ ॥ जो ॥ ११ ॥ दुमुख अश्वा रूढ हुवारे लाल । आया विजयपुर ताम हो श्रो० ॥ । भन्डारी घरे उतर्या रलाल । भक्ति भाव किया जाम हो श्रोता ॥ जो ॥ १२ ॥ एकान्त दोनो पेठनेरे लाल । पूछे भन्डारी जी तास हो ॥ सा जन ॥ मुज मसि भूआ पछेरे लाल । आप को किहा छे वास हो सा० ॥ जो ॥ १३ ॥ दुमुख कहे शिष्ट पुर तजीरे लाल । हू जाइ वस्यो कासमीर हो सा० ॥ कन क पुरी छे स्वर्ग समीरे लाल । तिहा कस्वरथ अमीर हो सा० ॥ जो ॥ १४ ॥ सचीव मुज ने पणासियोरे लाल । तिहां ही थयो मुक्त व्याघ हो सा० ॥ पेकही कन्या तेहनेरे लाल । सहू भेला रहां घर ओछावहो सा० ॥ जो ॥ १५ ॥ लक्ष्मी धर कहे कीजियरे लाल । शिष्ट पुर दियो किम ताय हो साजन ॥ दुमुख कहे मुज हस्त छर लाल । स भाल करूंछू जायहो सा ॥ जो ॥ १६ ॥ फिर पूछे भन्डारीजी रेलाल । कस रथ छे केसा राज होसा० ॥ राज काज शैन्या दिक रेलाल । भाखो योग जे साज हो सा० ॥ जो ॥

१७ ॥ कुसुम कहे ते राजवीरे लाल । छे न्यायवत सुख कार हो सा० ॥ तेजवत बलवत
घणा रेलाल । दुश्मन गया सहु हार हो सा० ॥ १८ ॥ ० ॥ दुहा ॥ आप २ की पर
सस्या करे । कुळ की येहि रीत । उटा केरा व्याव में । गवा गाव गीत ॥ २० ॥ ० ॥
ढाल॥फिर पूछ कुसुम जी रेलाल।कहो इहा को वृतान्त हासा०॥भन्डारी कहे संभला ॥इहा
छ चन्द्रसेण रावहा सा०॥जो॥१९॥शूर वीर महाप्राक्रमी रेलाल।दिन२वढतो प्रतापहोसाजन
सामन्त प्रजा प्रेम धरे घणोरे लाल । ऋद्धि सिद्धि ये से है आप होसा० ॥ जो ॥२० ॥
कुसुम कहे दरवाडी येर लाल । राज सायथी मुज तांय हा सा० ॥ लक्ष्मी धर सग ले
चल्यारे लाल । आया राज मेहल माय हो ॥ सां ॥ जो ॥ २१ तिण अवसर लीला
वती रेलाल । उभी थी गोख माय हो सा० ॥ कुसुम मोहीया मुरछा पड्या रेलाल ।
भन्डारी पूछे ताय हो सा० जो ॥ २२ ॥ कुसुम कहे ठोकर लगी रेलाल । कामीन् बो
ले सत्य हा सा० ॥ राजसभा में आवियारे लाल । जो भूप आफस्य हो सा० ॥
२३ ॥ अश्चर्य अधिको पावीयारे लाल । इन्द्र सम ऋद्धि श्रेकारहो सा० ॥ भन्डारी सग
घर आवीयारे लाल । करता मन मे विचार हो ॥ जो ॥ २४ ॥ थोडा दिन रही करि
रेलाल । फिर चाल्या निज देश हो श्रोत० ॥सिद्धी ढाल पूरी हुइरे लाल । कहे अमोल

सुणो शेप हो श्रोत० ॥ जो ॥ २५ ॥ ० ॥ दूहा ॥ दुमुख रस्ते चालता । मन में करे विचार ॥ लीलावती मुज राणी हुवे । ऐसो करू उपचार ॥ १ ॥ घर पोताने आवीया । चठ्या साच उपाय ॥ कुरुदत नाम मन्त्री तस । मिलण तास विग आय ॥ २ ॥ पूछे चिन्ता किसी करा । गया हूता किन ठाम ॥ दुमुख कहे विजयपुर जोइ । अभी आयाछु आम ॥ ३ ॥ पत्नीराय चन्द्रसेन की । साक्षात इन्द्राणी समान ॥ रूप रष हरवा च हो मुज भम्यो चो तान ॥ ४ ॥ तहा पेखी आवियो । कर तो तेह विचार ॥ इचे तुम पधारीया । पेखी हर्षो अपार ॥ ५ ॥ ढाल९ मी ॥ नणदल हा नणदल ॥ यह० ॥ देखो कपटी को कपट पणो । कपटी धूतारा होयहो सज्जन ॥ कुरुदत्त कहे आगे कहो । तुम करी आया सोयहो सज्जन ॥देखो ॥ १ ॥दू ख मुख दरसावे नहीं । खरो पोतो नो विचार हो सज्जन । कुरुदत्त कहे मन्त्री हुइ । कपट न करो इनवार हो सा ॥ देखो ॥ २ ॥ दुमुख कहे भाखु कीस्यो । मुज मन मोटी वात हो सा० ॥ इश्वर कृपाए सिद्धि हुवे । तो फिर मजा आत हो स० ॥ देखो ॥ ३ ॥ कुरुदत्त कहे म्हारी सुणो । एक तो तकडी होय हो स० ॥ वो एक वैयारा दुजे । काम कर कह्यो सोयहो स० ॥ देखो ॥ ४ ॥ सिद्ध साधक नी जाडी कही । रामलक्ष्मण की जोड होस० ॥ तो प्रतापि रा

मण तणी । छिन मे लफा न्हासी तोड होस० ॥ देखो ॥ ५ ॥ तिण थी विचारजे सुम
तणो । दीजिये मुजने सुण य होस०॥ शक अन्तर रासा मती।शक्रे होस्यू सहाय होस
० ॥ देखो ॥ ६ ॥ हर्षीन दूमुख भणे । तुमथी गुप्त न घात होस० ॥ लीलावती मोहनी
तणे । में पेम्यो तिहा गोत होस० ॥ देखो ॥ ७ ॥ हाती हास विधीये घडी ॥
लेइ जगत् को सार होस० ॥ बीजी नारी नहीं विश्वमें । लीलावती अनुहार होस० ॥
खा ॥ ८ ॥ कुरुदघ कहे इण घात में । आधिकाइ किसी कहवाय हासे० ॥ ते राणी
महराय की । अपने हाथ किम आय होस० ॥ देखो ॥ ९ ॥ व्यर्थ इछा नहीं किजीये।
राक रतनी पेर होंश ॥ दुमुख कहे इम ना कहो । उपाय राख्यो में हेर होस० ॥ देख
॥ १० ॥ कस रय महाराज की । मरजी पण छे एय होस० ॥ सेहने हु भरमाय ने ।
शेन्य सजाइ सग लेय होस० ॥ देखो ॥११॥ जास्या हमविजयपुरे । देवा चन्द्रनृपनेभ
गाय होस० ॥ ललितावती वश आणस्या । सिद्ध हमारो उपाय होस० ॥ देखो ॥ १२ ॥
कुरुदत्त कहे वुद्धि तुम तणी । तुच्छ दीसे इणवात होस० ॥ ते राणी होसी कंस रय की
। अपणे हाथ काइ आत हो स० ॥ देखो ॥ १३ ॥ दुमुख कहे आगल सुणो । ते असी
मा राज मांय होस०॥[illegible]

स० ॥ देखो ॥ १४ ॥ फिर प्यारी लीलावती भणी । कर लेस्यू मुज वश होस० ॥ इम
इच्छा सहू सिद्ध हुवे । गुत कर्म्या तुज कश होस० ॥ देखो ॥ १५ ॥ कुरुदत्त तहे भली
कही। तुम मतलब इण माय हास०॥ तुम राजा वा राणी तुम तणी । मुज हाथे सीं आव
हास० ॥ देखा ॥ १६ ॥ दुमुख कहे हूं तुज भणी । धनास्यू महारो प्रधान होस० ॥ मूल
नहीं प्यारा निस न । पकी यह शमारी जवान होस० ॥ देखो ॥१७॥हर्षी भणे कुरुदत्त
जी । मुज सरीखा कोइ काज होस० ॥ होवे ते प्रकासीये । जा मुज थी लगे साज हो
स० ॥ देखा ॥ १८ ॥ दुमुख कहे हिमत धरी । तूम जो करो एक काम होस० ॥ तो थो
डा माहे आपणी । सघली पुगे हाम होस० ॥ देखो ॥ १९ ॥ हम जावां शैन्य लेइने ।
घिनयपुर जिण वार हो स० ॥ चन्द्र सेण सामा आवसी । शैन्य सामत सनूलार होस०
॥ देखो ॥ २० ॥ तिण वेला तुम गुत पणे तिहां । जइ चन्द्र सेण मेहल लाय होस ॥
लीलावती लेइ भागजो । शिष्ट पुर रहजो जाय होस ॥ देखो ॥ २१ ॥ पहोत करी
कस्व रथ की करू संग्राम में घात होस०॥में राजा तुम प्रधान जी ।लीलावती प्यारी थात
होस० ॥ देखो ॥ २२ ॥ सहा ठसीये तस मनोपाया हर्ष अपार होस०॥वचन पका दोनों
किया । करो निज२काम धार होस० ॥ देखो ॥ २३ ॥ मनोराज मणिया उभे ॥ कुरुदत्त

गया निज घेर होस० ॥ कूमुख राय ना मन विषे । उपजे हर्ष की लेहर होस० ॥ देखो ॥ २४ ॥ जोवो श्रोता कामी तणा । कृतघ्नता ना सवाल होस ॥ अमोल कहे षचो पाप थी । पहुइ निधी ढाल होस ॥ देखो ॥ २५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ कुरुचच घरे गया। हुइ मन खुशाल ॥ प्रधान आपण होवस्यां । मसी हुसी नरपाल ॥ १ ॥ कुमुख पण राजी हूवा । हुवा एक से दोय ॥ सिद्ध साधक दोनो मिल्या । अब तो काज सिद्ध होय॥ २ ॥ राजा न भरमाइ ने । शेन्य करावू तैयार ॥ विधाता देवो दुदे मुज । काम पडे जिन पार ॥ ३ ॥ रात थोडी गइ अछे। जाणो नृपती पास ॥ अब तो होसी एकला । तत् क्षिण उठ्यो हुलास ॥ ४ ॥ सयन भवन ने पासती । बैठ्या था राजिन्द ॥ कुमुख आदा देखके । पाया घणो आनन्द ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १० मी ॥ श्रीरामजी नारन पाड हो ॥ यह ॥ महीपाल तिण ने पास बेठाया । अति घणो सन्मान्याइ हो ॥ कब आया तुम विजयपुर थी । पूछे तब राजा इहा ॥ सुणो कपटी तणी कपटाइ हो ॥ १ ॥ टेर ॥ कुमुख कहे अधी भोजन करने । आयो आप पासाइ हो ॥ आपका दरसन ने मन चहा तो । ते अब इच्छे पूरा इहो ॥ सुणो ॥ २ ॥ नरिन्द्र कहे कहो विजयपुर कहानी । काम

मुना॥३॥कार्य तोहोतो नहीं स्वामी । फर तो कोड उपाइ हो ॥ पण आप का वास ग
या था । जिणथी सहु सिद्धि थाइ हो ॥ सुनो ॥ ४ ॥ काइ हुवो ते मुजने कहोजी । वेर
करा मन काइहो ॥ शंका काइ लावो मत मनमा । कृता करे सा थाइहो ॥ सुनो ॥ ५ ॥
मत्री दाखे सुनो महाराजा । विजयपुर की सुघडाइहो ॥ साक्षासते स्वर्ग सरीखी । देखत
मन मोहाइहो ॥ सुनो ॥ ६ ॥ चन्द्रसेणमहाराज तिहा का । साक्षातइन्द्र साइहो ॥ शू
रवीर न चतुर विचक्षण । शत्रु सभा धुजाइहो ॥ सुनो ॥ ७ ॥ सामंत मत्री नी नृपत पर
प्रेम अधिक दरसाइहो ॥ तेपण प्राण झोंके नृप काजे । इन्द्र शभा ज्यों देखाइहो ॥ सु
नो ॥ ८ ॥ नगर लोक पण राजा जैसा । धर्म नीती वरताइहो ॥ नृपने साठे प्राणने स्वर
चे । सहु सायथी सुखदाइहो ॥ सुनो ॥ ९ ॥ इत्यादि सामग्री तेहनी । एकथी एक स
वाइहो ॥ से दवीने म्हारो जीवडो । अधिक गयो मुरजाइहो ॥ सुनो ॥ १० ॥ महीपत
भाखे प्यारा मत्री । घात विषम पडी जाइहो ॥ अपना राजमें फूट घणीछे । कार्य सिद्ध
किम थाइहो ॥ सुनो ॥ ११ ॥ मनमे आस घणीथी महारे ॥ ते वात सुणी विरलाइहो।
हावेवा हिवे किस्यो करूंम । निश्वास नृप न्हस्याइहो ॥ १२ ॥ मत्री कहे फिकर नही
कीजे । हिम्मत धरो मनमाइहो ॥ हिमतथी विषम सम होवे । हिमत हार्या हराइहो ॥

सुना ॥ १३ ॥ ● ॥ मनहर ॥ हिमतजो होय तो हरएक कांम करी सके । हिमतथी घाघ मोग्रा हाथीने चिदारेछे ॥ हिमतथी नारी पण हथीयार हाथ ग्रही । महा रण माहे मोटा मरदन मारेछे ॥ हिमतथी भूत प्रेत तणो भय भागी जाय । हिमतथी मणी भर हाथ मांहि । धारेछे । हिमत जो हीया माहे होय वलपत कहे । घूडतानी घाघ ग्रही । तरे भन तारेछे ॥२१ ॥ ● ॥ ढाल ॥ बुधिवंतने आगल स्वामी । बलंवत रहे बेठाइहो ॥ अचुक बुधियी मोटा सिंघने । न्हाख्यो कूपने माइहो ॥ सुनो ॥ १४ ॥ नृप कहे अहो म हीश्वरा बुधि पेसी को उपाइहो । लीलावती आवे मुज हाथे । मानु उपगार थांराइहों ॥ सुनो॥१५॥उपाय एक दाखु में स्वामी ।जोउपज्यो मनमाइहो॥ तिण प्रमाणे जो करस्योतो । कार्य निश्चय थाइ हो ॥ सुनो ॥ १६ ॥ प्रात समय शेन्यापति बुलाइ । शेन्या लेणी सजाइ हो ॥ शेन्यापति ने इहा राखणो । राजरक्षा ने तांइ हो ॥ सु ॥ १७ ॥ फिरवा नोमिश करी निकलणो । भेद न को जान पाइ हो॥ चुप चाप विजयादिग पहाड में ।दि न का रहणो छिपाइ हो ॥ सुनो ॥ १८ ॥ साज समय सहू लोक तिहा का । घरधंदा में फसाइ हो ॥ आपां एक दम जाइ पडस्या । वेश्या सहू न घबराइ हो ॥ सुनो ॥१९ ॥ नाके २ चोकी बेठाइ । घर स्या मेहल ने नाइ हो ॥ में [illegible] । आ

म्यू महल्न माइ हो ॥ सुणा ॥ २० ॥ चन्द्रसेन ने पकडी बान्ध स्या । लीलावती करां
नग माइ हो ॥ लघा पनी मुम्ब काल अमालम्ब दाखी । सुणो जे चिचमां थाइ हो ॥ सु
ना ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ इम बातों करता थका । बेठा कस्वरथ राय ॥ पति जेसी
पत्नी हुय । सर जेसी सर आय ॥ १ ॥ कुसीता राणी राय की । शेन्यपति संग नेह ॥
त दिन वचन त्रिया हुसो । राते आस्यूं तुम गेह ॥ २ ॥ ते तेय्यार हुइ तदा । बेठी
आया धाम ॥ प्रधान नृप बाते लग्या । अवसर पाइ जाम ॥ ३ ॥ आइ शेन्यापति घरे
। मन म हुइ हुल्लास ॥ आट जाता महा शेन्यजी । वक्त हुइ बहु तास ॥ ४ ॥ ते तले
आइ दम्पन । हर्षित हुया अपार ॥ आदर दे बेठाइ ढिग । करेविनोदविचार ॥५ ॥ ॐ॥
ढाल ११ मी ॥ राम आया जमना खोटा ॥ यह० ॥शाणा नारी चरित्र लो जोइ । सुण
चन्द न समजा काइजी शाणा ॥ टेक ॥ शेन्यपती कहे तुम दरसण ने । मैं थो घणो
तरस्याइजी ॥ शाणा ॥ १ ॥ मोडो आज कियो किम प्यारी । ते बोली खुश
हाइग्जी ॥ शा ॥ २ ॥ पहली राय अकेला बेठाथा । रखे ते आये मायोइजी । शा ॥
३ ॥ पिछेसे प्रधानजी आया । बाता सुणती सोइजी ॥ शा ॥ ४ ॥ अपना मतलबकी हुं
ती बाता । शन्यपी च हतो कहाइजी ॥ शा ॥ ५ कहे राणी काले या परस्यु । शेन्य थां

णी सज हाइजी ॥ शा ॥ ३ ॥ विजयपुर लीलावती कारण । लडवा जावसी राजोइजी ॥ शा ॥ ७ ॥ थ कोइ तरह को मिश करीने । । रहजो इण ठोडोइजी ॥ शा ॥ ८ ॥ पछे आपांने फिकरन काइ । फरस्या मन चिन्तयोइजी ॥ शा ॥ ९ ॥ इण बातने मूलजो थे मती । सोगन म्हारी जाणोइजी ॥ शा ॥ १० ॥ म्हारो मन तुम माइ धर्यो थो । आणो पडे अवसर जोइजा ॥ शा ॥ ११ ॥ लोकलाज जरा रखणी पडेछे । था थिन म्हारे न दुजोइजी ॥ शा ॥ १२ ॥ शेनपती खुश होइ बोले । प्रभू सहायक थयोइ जी ॥ शा ॥ १३ ॥ हास विलास करी फिरी राणी । करंरथ दुमुख दोइजी ॥ शा ॥ १४ ॥ शङ्का जची राजा के मनमे । कहे करस्यू तुम कहोइजी ॥ शा ॥ १५ ॥ मुंज का रणतुम तु रव सह्यो घणो । विजयपुर चरी आयाजोइजी ॥ शा ॥ १६ ॥ दुमुख कर जोडी तब बोले । हम आपका दासोइजी ॥ शा ॥ १८ ॥ आपकी क्रपा दृष्टी चाहिये । नृप क हे रात घणी होइजी ॥ शा ॥ १८ ॥ हिवे प्रधानजी घरे पधारे । थाक्यो होसो जायोसो इजी ॥ शा ॥ १९ ॥ मुजरो कर दुमुख गया घर । मनहो तस हरक्योइजी ॥ शा ॥ २० ॥ राय जा बेठया सयन सेज पर । राणी तिहा नहीं जोइजी ॥ शा ॥ २१ ॥ चा री,रानी जाइ महलॅम । पतो न तस लाग्योइजी॥ शा ॥२२॥फिकर करता फिर आई थे

ठा । राणी आइ तिहा पेम्थोइजी ॥ शा ॥ २२ ॥ राजेश्वर सेज वेठा निहाली । उपाव तब घडयाइजी ॥ शा ॥ २३ ॥ पक्त्या पास की सूनी ओरी मे । पेसी ते छानोइजी ॥ शा ॥ २४ ॥ ठमक २ तब राता लागी । राय सुन कर अचभोजी ॥ शा ॥ २५ ॥ आइ राय तन तास घोलाव । तिम २ ज्यावा रोइजी ॥शा ॥ २६ ॥ थाने तो लीलावती चाहिय । मने तो अब मरणोइजी ॥ शा ॥ २७ ॥ इम कही माथो कूटण लागी । नृप तस हाथ पकडयाइजी ॥ शा ॥ २८ ॥ थारे से ज्यादा महारे नही दूजी । नही पाडू अतरो इजी ॥ शा ॥ २९ ॥ लीलावती न थारी दासी वणास्यू । तू पटराणी हाइजी ॥ शा ॥ ३० ॥ विजयपुर का राज लेनाने । जावूगा मैं फजर इजी ॥ शा ॥ ३१ ॥ इम समजाइ सेज पर लाइ । तासँहस्या मुखडाइजी ॥ शा ॥ ३२ ॥ रुद्र संख्यानी ढाल ए भाखी । अमोल रुप चरित्र ए होइजी ॥ शा ॥ ३३ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ वखो नारी चरित्र ने । पार कोइ नही पाय । कथा तह वरणवता । अत कभी नहीं जाय ॥ १ ॥ ० ॥ छपाय ॥ तिया चरित्र लख कर । प्रित लाखा सग जोड ॥ दिन डोरडे डरे । राते वारसिंगण मोडे ॥ ऊदर स्यू ओचके । कान फहरी को झाले ॥ दहली स्यू गिरपड । चडे प्रवत शिखराले ॥ भर्या समुद्र तर नीसरे । रीता मांहे बुडी मरे । कवी कहे अहो गुनी जन । त्रि

या चरित्र पता को ॥ १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ मदा २ ने हराइया । रामा महीमद माय ॥ मरता ने राउभा कर्या । कहता मन शरमाय ॥ २ ॥ ❋ ॥ मनहर ॥ बाकडी मूछडीवा ला । रंगीला नेरडीयाळा । छेलने छोगाळा भाला । नारीये नमाडीया॥ मानी मछराला । ज्ञानी ध्यानी वली गुण वाला । दूदाला फूदाला । वेर चन्डाल चाडीया ॥ वृद्ध जवान वाला । जोगी भोगीने दयाला । वरण उज्वल काला । मामाय भमाडीया ॥ वेषताने ब्रगपाला । जल थलयोम वाला । साडा दास भ्रर पाला । रोमाय रमाडीया। १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ रस्रो कपट कुसीता तणो । राजन दियो भरमाय ॥ काज आपणो साधवा । वण बेठी ज्यों गाद ॥ ३ ॥ ऐसी नीच स्त्री थकी । मूर्ख रह्या लोभाय ॥ कसरथ भरमी गया । सुता सुसरे माय ॥ ४ ॥ प्रात थया थी शिघ्रता । कसरथ नाम राय ॥ रातकी बात ने याद कर । माटी शभा सजाय ॥ ५ ॥ मंत्री नी शला जिसा । बोले तब भूपाल ॥ राज वडाबो आपणो । यह कसी की चाल ॥ ६ ॥ विजय पुर ताबे करण । हम नन हुवो विचार ॥ सामतादि शूर सब । वेगा होवो तैयार ॥ ७ ॥ सहू हुकम ने मानीयो । मंत्री बोले ताम ॥ महा सेन शैन्या पति । तुम करो पत्ता काम ॥ ८ ॥ चतुर्यंश शैन्य सहित । इहा रह्या रक्षा काज ॥ पौणी दो हम साथ सज । जे उत्तमो मम आज ॥ ९ ॥ ● ॥

ढाल १२ मी ॥ सुनगी छन्द ॥ नृप कहे वगा करा स
जी नाही । गर्गा महूर्त पिछली रात माही । तिण वेलो
शेन्या पति तुम रहजो इहा ही । प्रजा की संभाल करज ण त
सीश चडाइ । मानी आज्ञा आप जे फरमाइ ॥ २ ॥ स नरा बजाइ । नृप
त हुक्म सह को सुणाइ ॥ शु ा श्रवण कर आनन्द पाइ । ायर का रथा हीया थरराइ
॥ ३ ॥घटा जेसा काला ने मदमत वाला । गुजारव करे सूडा दड उछाला ॥ अम्बाडी
हमे चमका विद्युमाला । गाजी रथा गज सत त्रिंतील ॥ ४ ॥ तुरगा कुरगा ज्यू भया चो
फाला । हणणाट करता नस रोशाल ॥ सत पाचसा पैलाण वेठा मुछाला । थइ २ ना
च वे घोला लाल फाला॥५ ॥ घणणाट घुघरु पसी ज्यो घाजे । रेशम जरी भरखोली विरा
जे । छाट शृंग घोरी मोटा मलाजे । रथ शास्त्र भरीया दो सहेश्र साजे ॥ ६ ॥ शूरा
म हा वीरा सुभट सगे । वक्तर शास्त्र सज्या नवर रगे ॥ लेक्षैपैक धरता लडवा उमगे ।
मरे मार न हटे विकट जग ॥ ७ ॥ चउ विध कटक विकट ऐसा सजीया । रणा
सिघा कजोश शेन्य में गजीया ॥ वेखी पिशुन्य दल भग जाय लजीया । ऐसा चउच
॥ धरिहमन रजीया ॥ ८ ॥ नृरत मसी अटण कर न्हाया । वक्तर शास्त्र शिरे अंगे सजा य

पच रग नेजा गगन फर राया ॥ ९ ॥ चली फौज
भरी हर्ष बेठा मयंगल आया । रज चढी गगने सुर्य नहीं सूजे ॥ पोद घडाकें ऊडी खाड रूजे
चोज धरणी थरर धूज । सरोवर जल तो हो जायछू जे ॥ १० ॥ धर कूच करता विजय पुर ढिग आया ।
। सरोवर जल तो हो जायछू जे ॥ निशी न्यापतां पुरन घेरा विराया । निशाण
छिपी पहाड म ड सबी विन रहाया ॥ निशी न्यापतां पुरन घेरा विराया । बुगल फुंकी ने
घधी मोरछा जहां जमाया ॥ ११ ॥ द्वार रक्षके शिघ्र द्वार लगाया । बुगल फुंकी ने
उपद्रव जणाया ॥ नगर जन काने नहीं सुन पाया । शत्रु तणा दल वावज पाया ॥ १२
घडडड छोडी सेत्घनी जारे । खडडड खडक्या नगर लोक त्यार ॥ भडडड भद क्या
द्वार रक्षवारे।तडडड फूकी सर णाइ कोट मारे॥१३॥कोट द्वार तोडी नगर माहेआया।गली २
नाक निशाणा लगाया॥पुर लोक घरके माहे भराया । अहो प्रमेश्वर यह सकट केस आया ॥
१४॥ अन्दर रह्या सिरदार लेइ खङ्गहाथे। शत्रुतणी करवा धारी घात ।।क्या करे तम घोर छारही
रात । पोता की शैन्या नहीं को सघात ॥ १५ ॥ भय पामी पुर जन घर छोड भाग्या ।
कितनाक तो परमेश्वर ध्याने लाग्या ॥ कितनाइ तो निद्रा माहे थी जाग्या । किताक ध
न नारी स्वजन त्यागा ॥ १६ ॥ कितनीक महिला वस्त्र राहित जावे । छोटे वाल दर्षी
[illegible] ॥ [illegible] सभाल करने न पावे । सकट समय आडो कर्ने कौन

अम्नि ॥ १७ ॥ ● ॥ श्लोकं ॥ न साजार्ये वित्त । सुत संर्भेन सतरीप ॥ नच मंत्री भ
म्रि । न मितवर्ग तय मपि ॥ न बन्धू मरणाते । सरण मपि कौपिन दश्यते ॥ श्रीजिन
प्रणिताना । धर्म मपि मे कास्ति केवल ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ चन्द्रसेन नृप हाक सुणी
तब कान । तत्क्षिण गोख माहीं आये राजान ॥ मारो २ पकडो छोडावो को म्हान ।
शेडो आवो कोइ अहा भगवान ॥ १८ ॥ इत्यादि श्रवणी चिन्ते महाराजा । अहो प्रभू
यह क्या होवे अकाजा ॥ इतन में गेंदू आया धबऱ्याजा । पूछे नृप यह क्या होता बला
जा ॥ १९ ॥ गेंदू धूजतो बोले सुन महाराजा । सस शत्रु को अअ आया आज ॥ सुन
मारे प्रजा कापे गलाज । सुन सार कोइ करो राखो लाज ॥ २० ॥ सुणी धराधव अति
क्रोधे भराया । वक्तर पहरी खड्ग हाथे सहाया ॥ शूरत्व अग अभंग भराया । अरे कोन
दुष्ट मेरे पुर में आया ॥ २१ ॥ लीलावंता पास गेंदू बेठाया । खूब होंश्यारी रखना मेरा
भाया ॥ सभलाइ पछी भवन नीचे आया । झट पट शत्रु के सामे जो धाया ॥ २२ हे
उतेजन अपन लोकों को दीया । अहो मारो दुष्टोंको इनका क्या लीया ॥भींस ढाल मारे
भूजग छन्द कीया । अमोल कहे वीर रस कोन पीया ॥ २३ ॥ ● ॥ दुहा ॥ नृपती आ
या जान कर।शूर हुवा शिरदार ॥ मार हाण करवा लग्या । पीछो न जावे लगार ॥ १॥

र आयो लखी । फवरथ की शैन्य ॥ उलटी उदधी पुरफुर्यो । बोलती मुख कू
२॥ मुज शिरदार ने चन्द्रनृप । शत्रुदल अपार ॥ जाणी ने पाछाहट्या । किस्या
मार ॥ ३ ॥ दुसुख अवसर देखकर । कुरुवृत्त का चलाय ॥ गंतेरा सुभट साथ ले
सेरन घेराय ॥ ४ ॥ विश्वासू नर साथ ले । पेठो महल के मांय ॥ लीलावंती
रे । करण फते इच्छाय ॥ ७ ॥ ढाल १३ मी ॥ श्री अभी नन्दन दुःख निकद
॥ लीलावती घबरावण लागी । हरण करण भीती जागीजी ॥ रखे दुष्ठ मुज
ने भोगे । चोथाजू जोवे थागीजी ॥ देखो दुष्ट तणी दृष्टाइ ॥ टेर ॥ १ ॥ गेंदु क-
फिकर करो मत कोइ ।चालो मुज साथ मांइजी ॥ वेधू आपके पीहर पहोंचाइ । तिहां
स्या सुख माइजी ॥ देखो ॥ २ ॥ नृपती शत्रुने भगाइ । भरतपुरथी लेसी बुलाइजी
रखे शत्रु पकडले जाइ । पाछें करस्या कहो काइजी ॥ देखो ॥ ३ ॥ लीलावती कहे
लो भाइ । जहां तुम इच्छाइजी ॥ गेंदु राणी ने घान्धी पीठपर । जिम ओलखे कोइ
इजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ गुप्त मार्गथी बाहिर निकल्या । द्रष्टी न कोइके आयाजी ॥ ग्रा
बाहिर भरतपुर के मार्ग । अनुसारे चाल्या जायाजी ॥ देखो ॥ ५ ॥ चन्द्रनृप लडत
रह्या रहीया । शिरदार भागा जोइजी ॥ ततक्षिण फिर आया महल मांही । रखे की

रात्रनी लुप्त होइजी ॥ देखो ॥ ६ ॥ देखी मेहलशोंते नहीं पाई । तब मन मांहे घवराइ

जी ॥ दासी एक कया गेंद लेआयो । तब जरा धीरज आइजी ॥ देखो ॥ ७ ॥ शत्रु स

णो जोरो घणा जाणी । गुप्त रस्त तिण धारोजी । नगर बाहिर भूपत चन्द्रआया । कर-

ता केइ विचारेजी ॥ देखो ॥ ८ ॥ कूलवत्त आवि शत्रु का सुभट । सहु मेहल फिरीने

जोयाजी ॥ राजा राणी कोइ नही पाया । तब निराशते होयाजी ॥ देखो ॥ ८ ॥ धका

भूमंमे रात विहाणी । ऊग्यो जय दिन कारोजी ॥ कंवरय वेठा चन्द्र नृप गादी । सिंघ

स्थान स्वान ज्यों धाराजी ॥ देखो ॥ ९ ॥ जीत तणी धुंवनी बजाइ । नाके २ चोकी वे

ठाइजी । रखे पाछो कोइ करे मस्ताइ । सहु होशियारीथी रहाइजी ॥ १० ॥ जाहिर ख

बर गामो गाम पहोंचाइ । जिहा चन्द्रलीलावती आइजी ॥ तेहनी खबर जो देसी लाइ

। तेजागीरी पाइजी ॥ देखो ॥ ११ ॥ जे चन्द्रसेन का आज्ञा धारक । राजा उमरावज

कोइजी ॥ कंवरयकी आज्ञा धारो । न मान्या सजा होइजी ॥ देखो ॥ १२ ॥ न्यायत

णीता घातन जाण पोलापोल चलाइजो ॥ छोटा मोटा की शंक न माने । दानाने, देवे

डराइजी ॥ देखो ॥ १३ ॥ अनाचार नगरमे चाल्यो । धधी धणी निशरमाइ जी ॥ राज

मत्री काछ लम्पटी । तोदूना को कहणो कांइजी ॥ देखो ॥ १४ ॥ मोटा कुलवत नी

लज्जा । रही नहीं तिहा कांइजी । गुप्त पणे ते सपत लेइ । दूजे देश रवा जाइजी ॥
१५ ॥ चोर चुगलने लुच्चा ठगारा । लपटी कपटी अन्याइजी ॥ कृतघनी विश्वीने धुतारा
। तिणथी नगर भराइजी ॥ देखो ॥ १६ ॥ तिण अवसर तिहा कनकपुर को । देव धर
विप्र जाणोजी । लडाइ मांड साथ आयोथो । राजानो नौकर कहवाणोजी ॥ देखो ॥
१७ ॥ भारती नामे तेहनी नारी । श्रीधर पुत्र गुणवंतोजी । तास नारी गोरी नामे सो
हे ।सहु विजयपुर मा रहंतोजी ॥ देखो ॥ १८ ॥ ते गोरी कोइ कारण उपने । गइ राजा
कुल्तान माइजी ॥ कस्तरथ रूप वस्त्र मोह आयो । पकडी मेहले बेठाइजी ॥ देखो ॥ १९
॥ देवधर श्रीधर खबर ये जाणी । तत्क्षिण नृप पास आइजी ॥ नरमाइ कहे अहो अन्न
मता । महरि मह दो पहोंचाइजी ॥ देखो ॥ २० ॥ श्रीधर पकडाइ केद कराइ । कनक
पुर दिया पहोंचाइ ॥ घर धन लूटी लियो सेहनो । डोकरा डोकरी धघराइजी ॥ देखो ॥
२१ ॥ दुरा वन माहे जाइ वसीया । चाराकी झोंपडी बनाइजी ॥ मुशकलसे करे उदर
पूरणा । कर्म गतीये वोयाइजी ॥ देखो ॥ २२ ॥ पोता ना घरसे नही चूक्यो । तो पर
का कहणो काइजी ॥ ढाल तेरमी अमोलख गाइ । अन्याइ तजे सुगुणाइजी ॥ देखो
॥ २३ ॥ ● ॥ दुहा ॥ इम अन्याय देखी करी । सुख सेन्न लक्ष्मीधर ॥ वनीता पिर

हुइ हैरान ॥ फिर सुख त कधी पेखस्या । अहो श्री भगवान ॥ ३ ॥ तीनों मंत्री चन्द्र सेन का । राज लेवण के उपाय ॥ वाव उपाव जोइ रह्या । किस्यो करां इण ठाय ॥ ४ ॥ एकदा गुप्त आवास में । मिली तीनो मंत्रीश । सल्ला आपस में करे । जिम पूरे यह जगीश ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ धर्म रुची ऋषि वंदू ॥ यह ॥ लक्ष्मी धर फोटारी बोले । सुणा मंत्रीश्वर म्हारो ॥ आपा सेवक चन्द्रसेण का । तो करो सुख उपचारो ॥ होमंत्री सुण जो महारो विचारो ॥ टेर ॥ १ ॥ स्वपना मे यह बात न जानता । ऐसो संकट आसी ॥ लाखां मनुष्य का पालन हारा । विदेश माहें सिधासी ॥ होमत्री ॥ २ ॥ सुख शेन सैन्या पति बोले । क्या अब कहना भाइ ॥ क्या मगदूर किसी दुशमन की । जो चन्द्र नृप सन्मुख धाइ ॥ होमंत्री ॥ ३ ॥ बडा २ नृपी ने नमाया । भीलाधिप वश कीधा ॥ सुर पति तेहनी होड करे नहीं । पण विचित्र कर्म का वीधा ॥ होमं ॥ ४ ॥ क्या मगदूर दुष्ट कंस रथ की ।जो हम सन्मुख आवे ॥ काम किया धाडायती सरीखा । यह क्षत्री जती नहीं फावे ॥ होमंत्री ॥ ५ ॥ जो रण भूमीमे सामा आता । तो

हम मजा यताता ॥ निमक हलाल करता तिण ठामे । पण वगासे हम ठगाता ॥ होमसी ॥ ६ ॥ सोमचन्द्र सचीव जी बोले । विचार मन कइ उपजे । पण मालक विन फेरा त्रि स्या आपां । जेहथी कार्य यह संपजे ॥ होम ॥ ७ ॥ पण काकरता करनी न जोगी । जिसको अन्न आपां खायो । जीवतां सुधी प्रयत्न करने । करस्यां काज सहु चेहायो ॥ होम ॥ ८ ॥ रामने उद्यम से सीता पाइ । राक्षस रावण हराइ ॥ लंका जैसी नगरी ना मालक । भभिषण ने कीधाइ ॥ होम ॥ ९ ॥ धातकी खंड से द्रोपदी लाया । पाण्डव कृष्ण नरे सो । उद्यम साहस थी हम बहुला । काम काधाछे विसेषो ॥ होमसी ॥ १० ॥ तिण कारण आपां उद्यम करातो । सहू कार्य सिद्ध थावे ॥ येही सछा महारी मानो । तो गइ संपत फर आवे ॥ होम ॥ ११ ॥ पहिली चन्द्र सेन भूपती केरो । ढूंढी पत्तो लगावो ॥ फिर सहू कार्य यहजे थासी । येही साचो उपावो ॥ होमं ॥ १२ ॥ विशेष वात में तार न काइ । होण हार सो थाइ ॥ गइ बातरी चिन्ता करां तो । हाथ में कुछ नहीं आइ ॥ होमं ॥ १३ ॥ आप दोनो रहजो इण स्थाने । वदो वस्तने काजे ॥ अपना स जनने संभालो । पहोंचाइ गुप्त साजे ॥ हास ॥ १४ ॥ शन्या ने पण हाथ में राखजो

१५ ॥ मे तो आवी प्रदेशे जास्यूं । पुर ग्राम वन ने तपास्यू । चन्द्र सेणनो पतो लगा
यूं ॥ तबही बीसामो खास्यू ॥ होम ॥ १६ ॥ दोनों कहे धन्य २ तुम ताइ । साची
नवा धजाइ ॥ पीछे को कुछ फिकर न कीजे । योग जे करस्या सघलाइ ॥ होम ॥ १७
। होंश्यारी से आप सदा रहजो । दुःख से तन बचाजो ॥ अवसरे समाचार जणाजो ।
नगा चन्द्र नृप लाजो ॥ होमं ॥ १८ ॥ सचीव ततक्षिण भेष पल्टायो । विदेशी सजाव
सजायो ॥ अन्यकोइ ओलखण नहीं पावे । लागे न वैरी उपावा ॥ होम ॥ १९ । खरचन
ने बहू द्रव्य सग लीधो । हलको बचन गुप्त रेव ॥ गुप्त पणे निकल ने चाल्या । दोना
जना सिद्ध केवे ॥ होम ॥ २० ॥ सोम चन्द्र प्रदेश सीधाया ॥ हाल लोके राजु माही ।
अमाल कहे किम पतो लगावे । रे आगे सुणजो भाइ ॥ होमं ॥ २१ ० ॥ दुहा ॥ तिण
अवसर विजय पुर में । अन्य भवन के माय ॥ दुमुख ने कुरु दत्त मिल । करे बात चित
लाय ॥ १ ॥ दुमुख मूछ मरोड कर । भूज दोइ ठोकंत ॥ कहो प्यारा मंत्री मम । हम
ऐस काम करंत ॥ २ ॥ राज लिया विजय पुरका । चन्द्रसेन दिया भगाय ॥ हम बुद्धि
के आगले । इन्द्र करी सके काय ॥ ३ ॥ हम कह्या सो सिद्ध किया । रहा सो करस्या फेर
॥ तुमने काम किस्यो कियो । कहो शिघ्र ना देर ॥ ४ ॥ जीव बस्यो मम प्रेमला । लीलावती के

धावला सम करो काय होम०॥ धेर्य धरो शूग हूइ । सोधो कोइ उपाय होम०॥ त्रि ॥
१० ॥ दु मुख कहे कोइ जायने । पतो लावे तास होम०॥ तो उपाय आगल चले । कारि
ये चिन्तित खास होम०॥ त्रि ॥ ११ ॥ कुरुवच कहे ते हुं करू । जाइ विवेशे सोध हो
मं०॥ पकडीने लाइ देस्यू । साथ ले जावू जोध होम० ॥ त्रि ॥ १२ ॥ ते अबला जासी
किहा । होसी किहा भूपीठ होम०॥ फिकर जरा तुम मत करो । समजायो बोलियो मीठ
होम० ॥त्रि ॥१३ ॥ सुणी दुमुख खुशी हुवो । शावास महरा प्राण होम०॥जो लावेने ली
लावता । तो तुम करस्यू प्रधान होम०॥ त्रि ॥ १४ ॥ कुरुवच चिन्ते मन विषे । ऐनो
मूर्ख शिरदार होम०॥ तेतो चतुर सुजान छे । किम करसी अंगीकारहोम०॥त्रि॥१५॥ प
तो कालो कू रुपीयो । ते इन्द्राणी अनुहार होम०॥ जोडी किम मन से सही । किम सम
जावू गवांर होम० ॥त्रि ॥ ॥ १६ ॥ पण अपनो जावे किस्यो । पकडी ला देवू हाथ हो
म० ॥कुबुद्धि तो यह छे खरो । वण जासी नरनाथ होम० ॥ त्रि ॥ १७ ॥ प्रधान मुजने
घणाधसो । वली ज्यूनो मन्त्री मुझ होम० ॥ इम चिन्ती हुकारो भर्यो । लीलावती लावू
तुझ हो म०॥ त्रि ॥ १८ ॥ होशार चार सुभट लिया । भेष आपनो पल्टाय होम०॥ ध

मांय । किहा छिपाइ तेहने । वेवा शिघ्र वताय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १५ मी ॥ वेद रवी स्यु मन वस्यो ॥ यह० ॥ कुरुदत्त कहे मंत्री सुणो । कियो मे किया प्रमाण ॥ होमश्री ॥ शेन्य संगाते आवीयो । तेहना तुम छो जाण होम ॥ विचार सुणो तू मित्र वो ॥ टेर ॥ १ ॥ आप लडाइ में लागीया । चन्द्र सेन आया तिनवार होमं० ॥ तुम कह्यो जिम जोगज वण्या । में आयो मेहल मझार होम० ॥ वि ॥ २ ॥ चारुं कानी पहरा रख करी । में गयो मेहल ने मांय हो मं ॥ चोकस कीधी अति घणी । ते तो मिलीन मुझ नांय हो मं ॥ वि ॥ ३ कुसुम कहे झुटा लवी । ठट्टा करणी नाय हो मं ॥ तूं करे मस्करी माहेरी । पर्या म्हारो जीव जाय हो मं०॥ वि ॥ ४ ॥ वेर हिव क्षिण मत करो । शिघ्र वे मुज ने वताय हा म ०॥ इम कही हाय धरी तहनो । उन्ठ ले चाल्यो माय हो मं ॥ वि ॥ ५ ॥ सेंव हाय कुरुदत्त तस । वेठाये ते ठाम हो मं० ॥ नही निश्चय में हसी कर्‌ं । सोगन खाया जाम हो मं० ॥ वि ॥ ६ ॥ सोगन सुणी व्याकुल हुवो । हय २ यह किस्यो काम हाम ॥ तिण कारण में पचडो । परपंच रची आयो आम होम० ॥ वि ॥ ७ ॥ संग्राम किया तम कारणे । सेंकडा नर चम शाण होमं० तो पण काम हुवो नहीं । मेहनत निष्फल सहु जाण होम० ॥ वि ॥ ८ ॥ आंख्या थी आंसू झरे । मस्तक [illegible] निश्वास होम० ॥

मस्तकें हाथ लगाइने । बैठो होइ निरास होम०॥ वि ॥ ९ ॥ कुरुदत्त कहे शाणा हुइ । वावला सम करो काय होम०॥ धैर्य धरो शूरा हुइ । सोधो कोइ उपाय होम०॥ वि ॥ १० ॥ दुमुख कहे कोइ जायने । पतो लावे तास होम०॥ तो उपाय आगल चले । कारिये चिन्तित खास होम०॥ वि ॥ ११ ॥ कुरुदत्त कहे ते हु करू । जाइ विदेशे सोध होम०॥ पकडीने लाइ देस्यूं । साथ ले जावू जोध होम० ॥ध ॥ १२ ॥ ते अबला जासी किहा । होसी किहा भूपीठ होम०॥ फिकर जरा तुम मत करो । समजायो बोलियो मीठ होम० ॥वि ॥१३ ॥ सुणी दुमुख खुशी हुयो । शाबास महरा प्राण होम०॥जो लादेवे लीलावता । तो तुम्न करस्यू प्रधान होम०॥ वि ॥ १४ ॥ कुरुदत्त चिन्ते मन विषे । एतो मूर्ख शिरदार होम०॥ तेतो चतुर सुजान छे । किम करसी अंगीकारहोम०॥वि॥१५॥ ए तो कालो कू रुपीयो । ते इन्द्राणी अनुहार होम०॥ जोडी किम बन से सही । किम सम जाषू गवांर होम० ॥वि ॥ ॥ १६ ॥ पण अपनो जावे किस्यो । पकडी ला देवू हाथ होम० ॥ कुबुद्धि तो यह छे खरो । बण जासी नरनाथ होम० ॥ वि ॥ १७ ॥ प्रधान मुजने बणावसी । वली अपूनो मन्त्री मुख्य होम० ॥ इम चिन्ती हुंकारो भर्यो । लीलावती लादू तुम्न हो म०॥ वि ॥ १८ ॥ होशार चार सुभट लिया । भेष आपनो पलटाय होम०॥ ध

न लियो सरयन घणो।साहस धर्यो मन माय होम०॥ वि॥ १९॥ लीलावती ने जात्रा। कुरुवच चाल्या तब होम० ॥ दुःमुख जी हर्ष्या घणा। काम तो होसी अब होम ॥ वि ॥ २० ॥ तीयी ढाल पुरण हुइ। पहिला खन्ड की यह होम ॥ अमोल ऋषि फद्द आग ले। घात रशिक घणी छेह होमशी ॥ विचार ॥ २१ ॥ ॥ खन्ड सारांस हरीगीत छन्द ॥ चन्द्र सेण भूप अधिक श्वरुप। कर्मे प्रदेश सचर्यो। तस राणी गुन खाणी। लीलावती पीयर पथ वर्यो। सोमचद मत्री गुनजसी। चल्या खवर करषा भणी ॥ कुरुदत्त दुमुख मयणे। लीलावती महथा तणी ॥ १ ॥ यह चारनो अधिकार आगे सार श्राता सांभलो ॥ प्रथम खन्ड माहे मद। विहड मन को आमलो ॥ यह हुल्लास वुध्र प्रकाश सम। ऋपि अमोलख इम कहे ॥ गावे गवावे सुने सुनावे। तेह नित्य मङ्गल लहे॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋपिजी महाराज के सम्प्रदाय के

बाल ब्रह्म चारी मुनि श्री अमोलख ऋपिजी महाराज

रचित शील महात्म श्री चन्द्रसेन लीलावती

चरित्र का प्रथम खन्ड समाप्त ॥ १ ॥

॥ प्रणमू सिद्ध साधू भणां । सिद्ध साधन मुज काज ॥ चरणा बुज सुधा सेवता । धर्भे चिन्तित साज ॥ १ ॥ नमु में चन्द्र जिनेश्वरु ।चन्द्र वरण सुख कार ॥ वाह्या भ्यन्तर शिव करण । अर्पे सुख उदार ॥ २॥ दो विद्ध धर्म आराध कर । दोविद्ध कर्म नियो नाश ॥ दोविध जन आराधता । पूर पूरण आस ॥ ३ ॥ दो विध शाती दायका । गुरु गुण गुरुवा होय ॥ तस पद पद्म ज सखजे सम । वदू विनय थी सोय ॥ ४ ॥ कर्म वलीहे जक्त में । शुभा शुभ दो प्रकार ॥ शुभ सुख दुभ दुःख देतहे।सम से सुख अपार ॥५॥ ● ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मापन कुलाल घनय मिता ब्रह्मान्ड भन्डो दरा ।विष्णू पन दशाव तार ग्रहणो क्षितो महा संकट ॥ रुद्रायन कपाल पाणी फुटके भिक्षाटन कार्यत । सूर्यो भ्रम्यति नित्य मम गगन तस्मैनम कर्मणे ॥ १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ प्रथम छेला जिन भणी । कर्म घरीया आय ॥ ता दूजा का किस्यो दाखवू । मुचथा थी सुख पाय ॥ ६ ॥ हरि हर इन्द्र नरिद्र न । दिया कर्म दुःख पूर ॥ चन्द्रसेण तो नृपतीहे । तहनो किस्सो है भूर ॥ ७ ॥ जब ते नगर से निकल्या । जामै नी जामैं प्रमाण ॥ प्रवेश कभी फिरिया नहीं ।

● भर्थात्– मवृहरी कहते हैं कि ब्रह्मा कुम्भार के माफिक होकर भट्ठी बनाइ, विष्णु दशी अवतार धारन कर महा संकट में पड़े महादेव मूरख का खोपरीकी हड्डी हाथमें ले घरोघर भिक्षा मांगो और सूर्य कर्मफल वशमें पड़ रात्री दिन परिभ्रमना करता है ऐसे ८ महान् जब कर्मों ने संकट में डाले तो दूसरे का कहनाही क्या? इस लिये कर्म को नमस्कार है ॥ १ ॥

रस्ता का था अजान ॥ ८ ॥ विजय पुर बाहिर दक्षिणे । अटवी महा भयकार ॥ तिण मग चाल्या चन्द्र नृप । करता मन विचार ॥ ९ ॥ ● ॥ ढाल १ली ॥ आइरे पनोती जग सिन्धनेरे ॥ यह० ॥ चन्द्रसेण जी आगे चालीयारे।अंग लडाइ को पोशाकरे ॥ खड्गछे जहना हाथ मेरे । धपडा पर जमी चलतां खाकरे ॥ १ ॥ जोय जो विचित्र गति कर्मनी रे ॥ कर्म समा नहीं कोयरे ॥ उदय आया थका जीवडारे । क्षिणमे राजा का रंक होय रे ॥ जोय ॥ २ ॥ चिन्ता करता थका चलीयारे । रजनी में तम रह्यो छायरे ॥ काटा काकरा पगमे चुथरे । खाडों आया लचके पायरे ॥ जोय ॥ ३ ॥ इम निशा विती कुन्त भइरे । ऊग्यो दिन कर तामरे ॥ द्रष्टी पसारी जोवे तदारे । नहीं मनुष्य नहीं गामरे ॥ जो ॥ ५ ॥ दोय जोजनरे आतरेरे। वन एक आयो सुख काररे ॥ पत्र पुष्प फले भर्यारे । तरुवर विविध प्रकाररे ॥ जो ॥ ६ ॥ पेखीने अश्चर्य भयारे । मैं आयो किण ठायरे ॥ दिग मुढ भया समझे नहीं रे । ठेर्या तेही जागायरे ॥ जो ॥ ७ ॥ वक्तर शास्त्र सहू खोल नेरे । मेल्या छे तरु तल तामरे ॥ सरोवर कांठे आवी यारे । जोइ ते सुख को ठामरे ॥ जो ॥ ८ ॥ स्नान मजन तिणमे कियोरे । वस्त्र सुकाइ पेररे ॥ क्षुधा त्रसी कारणेजी । निरोगा पाका फल हेररे ॥ जो ॥ ९ ॥ रुमाल माहीं लेइ फरीरे । सरपाज बेठा खाय

रे ॥ मन विचार केई उपगार । आर्त असि चित आयरे ॥ जो ॥ १० ॥ कठ कवल कर
रे नहीरे । धरजोरी थोडो सो खायरे ॥ छाणी ने उदक प्रासीयोरे । पुन ते सरुतल
आयरे ॥ जो ॥ ११ ॥ सम जागा पुजी करीरे । रुमाल तिहा बिछायरे । शास्त्रादि उ
सीसे दइरे ॥ सूता चन्द्र महा रायरे ॥ जो ॥ १२ ॥ एक नरना विजोगि थारे । निद्रा
न लेवे रातरे ॥ कोव्यान नर विजोगी नीरे । कहवी किम्मी यद्दां वातरे ॥ जो ॥ १३ ॥
॥ श्लोक ॥ विंधा वच्छा पर नार रेका । खिविधोगी सज्जनें स्य मुक्ता ॥ परस्य ठेया
धी नरसें रागी ॥ पष्ठ प्रकारो न लमन्ति निद्रा ॥ २ ॥ ॥ ढाल ॥ जोवो विचित्रता
कर्म कीरे । एक क्षिण में हुवे फेर फाररे ॥ राय तणा रकज हुवोरे । देखीलो प्रत्यक्ष
विचाररे ॥ जो ॥ १४ ॥ उष्न सुगन्धी नीर थीरे । कन्क कलसे करता स्नानरे ॥ से आज
गुदला तोय मारे ॥ दूयाया तन प्रानरे ॥ जो ॥ १५ ॥ सुन्धी तेलादी मर्दवारे ॥ कम
कर रहता तयार ॥ ते हाथे मेल उतारी थोरे । गधीला जलनी लाररे ॥ जो ॥ १६ ॥
सुवर्ण रत्नका वाटकारे ॥ जीमता विविध पकानरे ॥ ते तरु फल भक्षी रयारे । वस्त्र सन्दे
जानरे ॥ जो ॥ १७ ॥ पान बीडा मशाला भर्यारे । खामा कीलावती हायरे ॥ तेहनेपु
गी मोसर नहीरे । वेखो मव्य तव्य साक्षातरे ॥ जो ॥ १८ ॥ सुखमाल शय्या में पोढ

तारे । ते पड्या कंकराली भोमरे ॥ इम सहू उलटा हुवारे । पाप रो प्रगट्या जोमरे ॥ १९ ॥ कर्म कियांथी फिरे सहूरे । इम जाणी भव्य जीवरे ॥ डरो अशुभ कर्म सचतारे । जिम नहीं भोगवो रीवरे ॥ जो ॥ २० ॥ सपम ढाल माही कह्योरे। चन्द्रण कर्म प्रकाररे ॥ थाकी रह्यो ते आगे सुणोरे । कहे अमोल अणगाररे ॥ जो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मेदनी धव शयनासने । चिन्ता करे चित माय ॥ देव जिसी ऋद्धि माहेरी । क्षिणमें गइ विरलाय ॥ १ ॥ पूर्व कृत अघे पर गट्या। दिशा थइ मुज एह ॥ अरण्य में धरणी पड्यो । एकाकी यह देह ॥ २ ॥ इन भवे तो में केहनो । कीधो नहीं अन्याय ॥ सर्व ज्ञ जाने पाछली । जे प्रगट्या यें आय ॥ ३ ॥ किहा नगर रह्यो महिरे । किहा म्हारो परिवार ॥ किहां प्यारा मान्स सरु । किहां लीलावती नार ॥ ४ ॥ स्वप्न समी संपत हुइ । गत काले इण वेल । राज तख्त बेठो हुंतो । आज पड्यो मध्य गेल ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल २ री ॥ जीवेरे जीवो वीरा वालहारे ॥ यह० ॥ चन्द्रसेणर चन्द्रसेण चिन्ते एहवोरे । म्हारी परजाका काइ हालरे ॥ तेपापीरे ते पापी लूंटी हसरे ॥ दुःख देसी चडालरे ॥ चन्द्र ॥ १ ॥ म्हारारे म्हारा राज मे सुखीहतारे । ते पड्या परवश आयरे ॥ जिम मृगरे जिममृग फासीगर करेरे । तिम परजाने सतायरे ॥ चन्द्र ॥ २ ॥ ● ॥ कुंडलिय ॥ लो

भी कामी के मने । दया रती नाहोय॥ जर जोरु की लाल से। अनर्थ करेहै सेय॥ अनर्थ॰ ॥ हित आहित नहीं जाणे । गुरु सज्जन की शीख । जरा हिरदे नहीं आणे ॥ दास सत अमोल खोल हृदय लो जोय ॥ लोभी॰ ॥ २ ॥ ● ॥ ढाल ॥ मंत्रीश्वरेर मन्त्रीश्वर ने शेन्य पतिरे ॥ तीजा भन्डारी गुन खानरे ॥ म्हारारे म्हारा घाला मंत्री सरुरे । दु:खता होसी तास प्रानरे ॥ चन्द्र ॥ ३ ॥ प्यारारे प्यारा सज्जन माहेरारे । मुज काज पाया दु खरे ॥ तस कामरे तसकम्रमें आयो नहींरे । काइ जाणसी ते मुखरे ॥ चन्द्र ॥ ४ ॥ खयरजरे खबरते करसी माहेरीरे । किहां निलसी मुज आयरे।अहो प्रभूरे अहोप्रभूते स्ववश रहोरे । वैरीरे वश मत थायरे ॥ चन्द्र ॥ ५ ॥ म्हारीरे म्हारी घाली सुन्दरीरे । पितवता छूटी आंस्यू धाररे ॥ कठ जरे कठज छाती पट गइरे । ऊठ बैठा ते वाररे ॥ चन्द्र ॥ ६ ॥ टेकोरे टेको लयो तरु शुद्ध कार । वचे आश्रू पुजरे ॥ प्राणनीरे प्राणकी प्यारी ली लावतीरे।मुज दु ख मुज दीपे खुचरे।चन्द्र ॥७॥मुज समरेमुजसम गती थारी हुसीरे । गेंदू ले जासी किण ठोडरे॥तूं छेरे तूंछे अबाला पातलीरे । कधी न गइ मेहल छोडरे ॥ चन्द्र॥ ८ ॥ वासजरे वास वने तूं किम करेरे । किम चले कोमल खुले पायरे ॥ शीतजरे शीत ताप किम सेवसीरे । किम रहसी फल खायरे ॥ चन्द्र ॥ ९ ॥ रवी तणीरे रवी किरणे कु

मलावतीरे । ते मुज पापी प्रसगरे ॥ दू ख मारे बू खमा अचिन्त्य जाइ पडीरे । में नही च
चा सक्यो अगरे ॥ चन्द्र ॥ १० ॥ चिन्ता मारे चिन्ता में परवश हुवोरे । भरमथी ली
लावती जोयरे ॥ रोवे मतरे रोवेमत प्यारी प्राणथीरेछोडीन जाबु तोयरे ॥चन्द्र॥ ११ ॥ऊ
ठयारे उठया तेहने झाल मारे । पडया वृक्षे टकरायरे ॥ मस्तकरे मस्तक फूटयो पत्थरेरे
धीरे । रक्त की धारा वहायरे ॥ चन्द्र ॥ १२ ॥ चमकीरे चमकी तव बेठा हुवारे । तरु
टेके बेठया आयरे ॥ फाडीनेर फाडीने वस्त्र बान्धीयोरे । निज मस्तके तव रायरे ॥ चन्द्र
॥ १३ ॥ वायजुरे वायु शीतस लाग्या थकरि । ताप चडयो तव अगरे ॥ थर २ रे थर
धूजे तेहथीरे। भइ मती सब भगरे ॥चन्द्र॥ १४ ॥ठाण्डिलनी ठण्डिलनी बाधा हुइरेउठी सर
तीरे आयरे ॥ ढाल जरे ढाल बन्धे अमोलख कहेरे ॥ चन्द्र नृप गति जो यो भायरे ॥ च
न्द्र ॥ १५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ तिण समे चारू मीलडा । हाथ में तीर कावाण ॥ गोफण
केड बान्धी करी । लगी लगोटी ताण ॥ १ ॥ काला महा विहामणा । मस्तके मोटा
केश ॥ आँख पीली रोसे भरी । बचने उपजे क्लेश ॥ २ ॥ दया नही तस रच मन । चो
री तणो वेपार ॥ जीव वध भक्षण करे । डर न धरे लगार ॥ ३ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ A ॥
दुष्ट नृरक्ष मास ,रक्षकार्यं ।क्षीति वन्दि चोरैं पारधी यक्ष॥क्रोधी कपटी धनस्य लोभपक्षी

हारी । नवी दरया पते वश स्याने ॥ ४ ॥ ० ॥ दुहा ॥ दु खी देखी दुजा भणी । खुशी त होवे मन ॥ जो सुखियो देखे कदा । तो छंद्यो चहावे धन ॥ ४ ॥ पापी चारे तस्करा । आवे तिण दिश चाल ॥ आगे श्रोता जे करे । सुणो ते चन्द्र हवाल ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ३ री ॥ कर्म न छूटेरे प्राणियां ॥ एक कहेरे वादा सुनो । आजनो दाडो केवो होयरे ॥ साहू शिकार मिली नहीरे । क जाने मु किस्यो जोयरे ॥ १ ॥ सुण जोरे गति कर्मातणी ॥ ॥ आं ॥ दूजो कहे सुण माहेरी । काले साहू मली थी सीकार ॥ तीजो कहेरे काल नो । मानस होतोरे गमार ॥ सु ॥ २ ॥ चोथो कहे चावरो मती । तेदेखो सरवर तीर ॥ धन गाडीने किहां जायरे । हार्यो चहुना जी हीर ॥ सु ॥ ३ ॥ चामो वेगारे धरो तस । ते धांमी जासी किहां लप ॥ इम कहता चारों दोडिया । चन्द्र सेण झाल्योरे झप ॥ सु ॥ ४ ॥ लात मुकी ने लाठीथी । मारण लागारे मार ॥ नृपती अश्चर्य पा रह्यो । यह किसी गति कृतार ॥ सु ॥ ५ ॥ पुछे तेहथी राजवी । तुम कोन मारो मुज किम ॥ मनमें होवे ते प्रकाशदो । करु में तुम कहो जिम ॥ सु ॥ ६ ॥ वनचर कहे हमें कोन छां । थने सूजेछे नाथ ॥ मूका नही तुज जीवतो । धन दाटी किहां जाय ॥ सु ॥ ७ ॥ ते धन म्हाने देखाडदे । जेजन करसी लगार ॥ नही तो कुचो निकालस्या । तने मारी इण ठाय

॥ सु ॥ राय कहे हु जाणू नहीं । धन वाटण कीरे यात ॥ झाडे जावा बेठयो हूतो ।मत
करो म्हारी रेघात ॥ सु ॥ ९ ॥ भील कहे शाणो घणो । ल्पराइ करे धीठो यन ॥ प
चातर्थी हम समजा नहीं । यता थेगो किह्ना धन ॥ सु ॥ १० ॥ ● ॥ इन्द्र विजय ॥ घ
न की लाय थडी जग में । घा साय गह्न मोटा जनने ॥ कुधर्म निश्चर्म कुकर्म करे । नहीं
हर लाय जरा मनने ॥ प्रदेश फिरे पर प्रान हरे । मज्जन हूणे कष्ठेद तनने ॥ सुखी दु
खी लालची न देखे । अमोल सुखी छोडी धनने ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ हम कही मार
न लगा। धक्का मुक्की त वार ॥ जोर किस्यो करें वापडा । हम तूज सारीखा चार ॥ सु ॥
११ ॥ हाय पड्यो गला विपे । सुवर्ण भूपण जोय ॥ खुशी हुइ तोडी लिया । अरे यो
मोटो हे कोय ॥ सु ॥ १२ ॥ प धूतारो मोट को। फिर मारन लागा मार ॥ सज्जनवि
योग ताप सु खथी । भूप होइ रह्यो लाचार ॥ सु ॥ १३ ॥ तेतलेते गिरी यहार विपे ।
शत्रु हुवो असगल ॥ धायोरे पकड्यो दूष्टने । सुणियों पाचो ते काल ॥ सु ॥ १४ ॥ राय
ने छोडी भागी गया ॥ राजा धैर्य धार ॥ आइ येठो ते तरु तले । करतो मनमें विचार
॥ सु ॥ १५ ॥ जेहनी हाकथी चड भग्या । ते नर पथी बलिष्ठ ॥ अहो प्रभू प करसी
किस्यो । प्यामे पर भेटी इष्ठ ॥ सु ॥ १६ ॥ मारथी अग अकडा गयो । तू खे चमके ते

वार ॥ तिहाइ ते सोइ गयो । करतो केइ बिचार ॥ सु ॥ १६ ॥ तापे थर २ कापतो । भगावण भणी शीत ॥ धक्कर वस्त्र पहरी लिया । बान्धी शास्त्र क्षीत ॥ सु ॥ १७ ॥पुन सुतो तेहि स्थानके। चालणको शक्ति नाय॥सेवक कोइ नही पाखती।आर्त चित्त आणि आ य मु ॥ १८ ॥ क्षिण सभारे स्वाजन भणी । क्षिण प्रजा करे याद । क्षिण चिन्ते लीला वती मने । क्षिण करे विस्तवाद ॥ सु ॥ १९ ॥ सकल्प विकल्प मन हुवे । पुन तिहां बे ठो होय ॥ ध्यान धर्यो नमकार को । जिम सुखी आत्मा ते होय ॥ सु ॥ २० ॥ दाल कही कर्म दंडकी ॥ श्रोता सोचोरे मन ॥ असोल कहे हरो कर्मथी । धर्मथी सुख पावे तन ॥ सु ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ पतले नर आवा तणो । काने पड्यो भण कार । झाडि'दट दीस नहीं । ध्यान चुकयो ते वार ॥ १ ॥ चिन्ते तेहि भीलडा । तूजाने ले सग ॥ हिवे आपणा शरीर नो । निश्चय करसी भग ॥ २ ॥ पण कछु हरकत नहीं । हिवे शास्त्र मुज पास ॥ धोका हुवा तो सर्व ने । देस्यू काल ग्रास ॥ ३ ॥ तिण वेला म्हारा कने । अरिगजण नही कोय ॥ तिण थी मैं परवश हुयो । पण हिवे तमाशो जोय ॥४॥बिन छेड्या नहीं छेडणो॥५.उत्तम आधार इम धारिने मही पती बेठो तिहा चुप धार॥ ५७दाल४थी॥करसां साधुतणों आचार॥यह०॥सुणतो भीलतणो विचार।राजा बेठोवन मझार

॥ टेर ॥ ते चोरोंकी नहीं पहचाणी । कोइ दूजो है प्रकार ॥ शत्रु तणा जो भट हुवा तो । रक्षे
करनो कोइ प्रकार ॥ सुण ॥ १ ॥ चोरडा हुवाता सर्व जना ने । मेलूगा यम द्वार ॥ रक्षे
ज्यादा हो पकड ले जावे । न्हासे केव मझार ॥ सुण ॥ २ ॥ दीना नाथ जग रक्षक
अर्हं । आपही को आधार ॥ इण सकट से पार उतारो । मिलावो मुझ परिवार ॥ सु ॥
३ ॥ इम विचारी धैर्य धारी । झाडी छिद्र ते वारे ॥ नर नेडा आया आणी ने । जोवे
द्रष्ट पसार ॥ सु ॥ ४ ॥ दोय भीलडा आता दीसे । विखर्या सिरका वार ॥ फाटी चिन्दी
तूंतडा लटके । बाधी सीस संवार ॥ सु ॥ ५ ॥ घष्ट पुष्ट शरीर जिनोका । मलिष्ट प्रचा
कार ॥ काली प्रभा वाली चमडी । दीसे नशा जार ॥ सु ॥ ६ ॥ बान्धी काछडी तंग
कसीने । कम्बल स्कन्ध धार ॥ इत्यादी तस रुप शोभावे । गाबेठा दूजा पसवार ॥ सु
॥ ७ ॥ मण्यो भील पूछे कृष्नाने । तू क्याथी आवे इण वार । कृष्नो कहे हूं विजय पुर
थी।जावुं मुज आगारे॥सु॥८॥ किम जावे विजय पुर छोडी । कृष्नो नि श्वास डार। कहे स्यू क
हूं कर्मदा कथनी । हुवो गजब निधार ॥ सु ॥ ७ ॥ धाडाती एक शत्रु आयो। सामी रात
गिमार ॥ करी धिंगाइ दिया भवराइ । पुर पति ने सिरदार ॥ सु ॥ १० ॥ राजा राणी
सामंत आदि। कोइ न रह्या ते ठार ॥ अन्याइ फेलाइ नगरमें । परजा करे पुकार ॥ सु ॥

११ ॥ ए अनर्थ जोड़ हूं जाषू । पलीने पतिने द्वार कहस्यू बीती हकी गत सारी।मेज्यों नाका
दार ॥ सु ॥ १२ ॥ सहस्र पचास आपां सहू शूरा । चन्द्र नृप आज्ञा धार ॥ किम दु खी
होषा वां भूपने । करस्या जग जुजार ॥ सु ॥ १३ ॥ मण्यो कह्यो अरे खोटो घणो हुवो
। गया अपना सिरदार ॥ चालो वेगा अपनी पछी । करा चन्दो वस्त ए धार ॥ सुण ॥
१४ ॥ कृष्नो कहे क्षुधा लागी मुज । रोटलो पेटे डार ॥ ए सरोवर मा पाणी पीने ।
चलां आगे निजद्वार ॥ सु ॥ १५॥रोटलो काहड्यो कृष्नो तक्षिण । दो विभाग कर जार
॥ आध्यो दियो मण्या ने तांइ । दोनो करे सब अहार ॥ सु ॥ १६ ॥ ● ॥दुहा॥ गरीबा
घर उधारता । सेठ हुवा है सूम ॥ कली की रचना देख कर । अकल होवे गुम ॥ १ ॥
● ॥ ढाल ॥ भूप वचन वनचरका साभल । मन हुवो शीतल गार ॥ अरे यहतो है
म्हारा सेवक । डरन रह्यो लगार ॥ सु॥ १७ ॥ ततक्षिण ऊठी आलस मोड्यो । चमक्या
भील वे चार ॥ अरे वन देव कोइ प्रकट्या । दूर ऊभा भय धार ॥ सु ॥ १८ ॥ नृप कहे
उरो मत भाइ । मत करो कोइ विचार ॥ मैं परदेशी कर्मे क्षोभोना। भाग्य हीन निराधार
सु ॥ १९ ॥ निडर भील हुवा मनमांही । सूणी नृप उच्चार ॥ कहे आपसेंम मोटो नर
कोइ । पेरण ज़री अर तार ॥ सु ॥ २० ॥ रुपे रूडो छे राज सम । किम आयो राज स

भार ॥ ध्यानें ढाल कही ऋषि अमोलख । आगे सुणो अधिकार ॥ सु ॥ २१ ॥ ● ॥
दूहा ॥ दोनों भील अहार करणने । पेठा पून ते ठान ॥ तेहने पासे तत क्षिने । आ
पेठा राजान ॥ १ ॥ कृष्नो कहे धराधवने ॥ तमे कोन महाराज ॥ किसा ग्रामथी आवी
या । इहां रन मा किस्ये काज ॥ २ ॥ अवनीश चिन्ते चितमें । पुरो पतो कहू नाय ॥
जिहां लग कर्मछे वाकडा । तिहां लग रखु छिपाय ॥ ३ ॥ ❁ ॥ कुंडलिया ॥ साह्र अप
ने चितकी मूलन कहिये कोय ॥ तब लग मनमें राखिये ॥ जब लग कार्य होय ॥ जब ॥
भूल कबहुं न कहिये । दुर्जन सातो होय । आप चूपको हो रहिये ॥ कहे गिरधर कवि
राय । बात चतुरन के ताइ ॥ करतुतही कर देत आप कहीये नही सांइ ॥ १ ॥ ● ॥
दुहा ॥ साथ पेहने रेइने । जावो पछी पती पास ॥ तेतो पहचानी लेसे । करस्या फिर
जिम आस ॥ ४ ॥ बात बनाइ नृपतीते । मलि भणी समजाय ॥ ते सुणियो श्रोता सहू ।
होनहार ते थाय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ ५ मी ॥ जगत् गुरु त्रसलानंदन वीर॥ यह॰
॥ नृप चन्द्र कहे भाइ सुणोजी । मुज परदेशी वतन ॥ वीती वात बहू माहेरी । तुमआ
गे करूं कथन ॥ भाविक जन नीच ऊंचलो जोय ॥ टेर ॥ १ ॥ विजयपुरनो रहवासीयो
जी । वेपारी महारी जात ॥ परदेशे फिरबाभणी । हु निकल्यो सज्जन संघात ॥ भवि

॥ २ ॥ भील कहे इण वन विषेजी । किम आया शिरकार ॥ मुखडा ऊपर आप केजी। दीसे
दु ख अपार ॥ भवि ॥ ३ ॥ धराधर कहे कर्म जोगथी में ॥ आयो इण वन माय ॥ दु
खी कहो किण कारणे भाइ । फिरवाथी मुख कुमळाय ॥ भ ॥ ४ ॥ धनधर कहे स्यू म
नुष्यनेजी । एतळो समज्ये नाय ॥ तमारो मुख छे जोसमा जी तिणथी पूछ्या आय॥
भ ॥ ५ ॥ स्यान पेखी समजे तेहिजी । मनुष्य जात कहवाय ॥ नहीतो ढोंढो राणको
जी । इनमें शंका नाय ॥ भ ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक ॥ उदे रीतो अर्थ पशुनापि प्रद्यते ।
हयाश्च नागाश्च वहति नोमिता ॥ अनुक्त मप्यु हति पण्डितो जना । परे
गित ज्ञान फलाही बुध्या ॥ १ ॥ • ॥ ढाळ ॥ नृपत कहे साची कहीजी । म
हारा मनकी वात ॥ ऐसा वया सन्त जक्त में भाइ । थोडाही देखत ॥ भ ॥ ७ ॥ सुनो
हकीगत माहरी भाइ । आजही मुक्ति जेह ॥ मरण थकी हु उगर्यो जी । पुण्यतणे सनेह ॥
भ ॥ ९ ॥ चार चोर मिल्या हुताजी । मारी म्हने खुब मार ॥ धन खोसीने लेगया । इ
म कियो घणो बेजार ॥ भ ॥ ९ ॥ हांक सुणी थाणी तेहीजी ॥ भागी गया इण वार॥
यह सकटथी में बच्यो भाइ । थाणोहि उपकार ॥ भ ॥ १० ॥ कृष्नो कहे किहां छुटते
जी । जो आवे हम हात ॥ तो करता निश्चय हमेजी । से चारो की घात ॥ भ ॥

११ ॥ नृप कहे वोष नहीं तेहनो भाइ । मुज कर्म फिर्यो इणवार ॥ चन्ध्या सो
हा भोगवू । कर्म उवय न चले उपचार ॥ भ ॥ १२ ॥ पुन कृष्नो कहे ते कहोजी । किमे
पड्या इण वन मांय ॥ राय चिन्ते करणो किस्यो ॥ एतो पूछे सहू वीत्याय ॥ भ ॥ १३
॥ मिथ्या पण लगे नहीं जी । ए मुज ओलखे नाय । इम कही समजाइ ने । मू कम
करु म्हराय ॥ भ ॥ १४ ॥ गइ राते विजय पुरे पेजमै । पड्या धाडा यती आय ॥ मुजने
पकडन चायता पण । हाय लग्यो में नाय ॥ भ ॥ १५ ॥ रातरा मग दीस्यो नहीं माइ
। निकल आयो इण ठाम ॥ और कुटुम्ब सहू माहेरो भाइ । न जाणू गयो किण गाम ॥
भ ॥ १६ ॥ ए वीती माहारी कही जी । ए हीज दु:ख मुज मन ॥ पुन कृष्नो कहे
कीजीये हिवे । किहां करशो छे गमन ॥ भ ॥ १७ ॥ राय कहे सूजे नहीं मुक्षेजी । बुद्धि
थइ छे गुम्म । कृष्नो कहे महारे सगे जी । चालो जोमन तुम ॥ भ ॥ १८ ॥ पछी पती
ने मिलावसांजी । ते वेशी तुमे साज ॥ कुटुम्ब मिलासी थायरो जी । इम सुण हर्ष्यो राय
॥ भ ॥ १९ ॥ रोटलो खावो हम तणो सो । लो तुम तीजो भाग ॥ राय कहे में भोगव्ये
जी । फल आहार ए जाग ॥ भ ॥ २० ॥ खाइ पीइ निवृत हुइजी । चाल्या तीनों सग ॥
अमोल वाल महा वृन कीमें । दीस्या सज्जनता रग ॥ भ ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ चन्द्र

नृप चित चिन्तवे।एकही खानी मांय ॥ रयण कंकर वो निपजे॰। प्रत्यक्ष दीठो थाय ॥ १
॥ एक ते चारो मीलड़ा । निर्दय चोर कठोर ॥ ए पण दोनों भीलछे । विवेक दया कुछ
ओर ॥ २ ॥ मिष्ट वचन थी माहेरो । पूछ लियो सहू भेद ॥ महारो दु ख देखी करी ।
इण चित पायो खेद ॥ ३ ॥ एहने साथे रेइने । भेटी पल्ली नाथ ॥ काज करुं सहू मा
हरा । करी शत्रुकी घात॥४॥इत्यादि विचरना । करता नरवर जाय ॥ होण हारनी अजब
गत । सुणो श्रोत चितलाय ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ शाल भद्र भोगीरे लोए ॥ यह० ॥
भील संग चन्द्र नृपती जी । अटवी उल्लंघता जाय ॥ सत्रा जोजन लग आवीया जी। राय
जी थाक्या सवाय ॥ चतुर नर । होण हार लो जोय ॥ टेर ॥ १ ॥ मारगथी कुछ वेग
लो जी । थो छो टो सो ग्राम ॥ तिण माहे ते भील का जी । होतो कोइक काम ॥ च
॥ २ ॥ राय थी कहे बेठो इहांजी । थाक्या होसो महाराज ॥ इण गाम में होइने जी
। हम पाछा आस्या आज ॥ च ॥ ३ ॥ भीलगया ग्राम ने विषे जी । नृप बेठ्या तिण
ठाय ॥ थाक थी पग सणणा रह्या जी । ताप थी जीव घबराय ॥ च ॥ ४ ॥ शीतल
पवन सयोग थी जी । शान्त थयो तव चित ॥ विचार केइ चित ऊपजेजी । जाणे भी
ल ने मित ॥ च ॥ ५ ॥ विश्वास लायक मानवी जी । प्रिती इण ने अपार ॥ वचन एह

खवले नहीं सी पूरा भरोसा वार ॥ च ॥ ५ ॥ ● ॥ इन्द्र विजय ॥ अल्प खाइ सतोप रखे । अरु निरुद्योमी कभु नहीं रहावे ॥ महा वन में निर्भिक रहे । विश्वास दिया फिर जान बचावे ॥ शूर पणो सह सिख घणा । सम्राममे जा सीस कटावे॥तस्कर लस्कर में अगवाणीं । मील के गुण अमोल बतावे ॥ ५ ॥ ● ढाल ॥ पक्ष जेह धारण करे जी । तेह नहीं छोडे हेर। पक्षी कारण आपणो । जीव देन करे वेर ॥ च ॥ ६ ॥ शूर पणो इण में घणो जी । धरे नहीं पछाजी पाय ॥ स्वाभी भक्त एतो खरा जी । व्रद साधन उपाय ॥ च ॥ ७ ॥ मुज पक्षीने मित्र कोजी । एतो लगासीजी एय ॥ इण सहाये शत्रू दमीजी । लेस्युराज मूज मेय ॥ च ॥ ८ ॥ तरु टेके विचार मेंजी । नृप गया शुगाय ॥ तेतले अश्वना पग तणोजी । अवाज नृप कर्ण जाय ॥ च ॥ ९ ॥ द्रष्टी खोली पेखताजी । वसु स्वार चाल्या आय । चिन्ते शत्रू तणाछेप। केव करसी इण ठाय ॥ च ॥ १० ॥ छिपवाकी जागानही जी । भाग्योसो नही जाय ॥ क्षत्री नन्दन शत्रू नेजी । पीठ कयहु न बताय ॥ च॥ ११ ॥ झटपण जोइ नृपनेजी । लाया तूरी दोडाय ॥ चोपासे आघेरीयाजी । पकडण झपट लगाय ॥ च ॥ १२ ॥ खड्गम्यान दूरो कगीजी । नृप पण सन्मुख होय ॥ झटा प टी करता थकाजी । मर्या स्वारसे दोय ॥ च ॥ १३ ॥ एक स्वार पाछल रहीजी । नृप

कर परतें वार ॥ लाठी मारी जोरथीजी।छूट पडी तरवार ॥ च ॥ १४ ॥ कुदीने चारें ज
गाजी । लियो नृपने सहाय ॥ थाक तापना जोगथीजी । निबल तन नृप ताय ॥ च ॥१५
॥ ऊदी मुसक्या बधीनेजी । दिया घोडा पर डाल ॥ मजबूत बान्ध्यो डोरथीजी । जिम छू
टण नहीं पाय ॥ च ॥१६ ॥ शमशेर नगी करीजी । दो आगल दो लार।दो आजू बाजू र
याजी । नृप पूछे ते वार ॥ च ॥ १७ ॥ गुन्हो किस्यो छे हम तणोजी । बन्धी किहां चा
ल्या भ्रात ॥ भट कहे अरे चोरटा तू । मुशकले आये हाथ ॥ च ॥ १८ ॥ नृप कहे इण
जन्ममें । चोरी कभी करी नाय ॥ भ्रमथी मुज क्यों बान्धीयोजी । छोडो करुगा लाय ॥
च१९॥भट कहे बश बोले मतिरे।नही तो खासी मार॥हमतो तुज लेजावस्यारे।कन्कपुर नृप
द्वार॥च॥२०॥मेदनी पती चूपको रह्योजी।बोल्यामेंनही सार॥होणहारसें होवसीजी।हुवापरवश
इण वार॥च॥ २० ॥ दिन तीन ते अन्तरे जी।कन्क पुर आया तेथ॥तेलवर सन्मुख खडो
कियोजी।भट सहू बीती केय ॥ च ॥ २१॥ यह तस्कर जबरो घणो जी । मार्या दोय स
वार । पदरे दिनथी जोवतां जी । हाथे आयो अबार ॥ च ॥ २२ ॥ राय पुकारी ने कही
जी ।में नहीं हू चोर जार । बिना गुन्हे मुझ बान्धीयोजी । छोडो करी विचार ॥ च ॥
२३ ॥ बूम सुणें नहीं रायकी जी । मारण लागा मार ॥ लाठी मूठी कोरडा जी । अहो२

में प्रकार ॥ च ॥ २४ ॥ माखसी मा केवज किया जी । श्री चन्द्रनृपाल ॥ वूजा खन्ड
लेश्या तणीं जी । ऋषि अमोल कही ढाल ॥ च ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर
कन्क पुर विषे । शेन्या पति महा सेन ॥ राज तणो करे काज ते । जिम तस्कर ने रेनें ॥
१ ॥ कन्करथ राजा तणी । राणी कु सीता नाम ॥ सिया चरिते निपुणते । विष थी
भरी तमाम ॥ २ ॥ प्रगट शेन्या पति संगे । भोगवे इच्छित भोग ॥ लाज फाज करी
गली । न अंकुश को जोग ॥ ३ ॥ तृतिय जाम दिवसके । चन्द्र नृप लेइसग ॥ कोत
ल आया तदा । राणी मेहल अनुसंग ॥ ४ ॥ बोलाय शेन्या धीशने । दासी ने कही
समाचार ॥ गोखे रही शेन्य पति । पूछो तस होन हार ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ७ मी ॥
मिस्दारी पूतली भजन करले ॥ यह० ॥ शाणा सुणो सहीरे। नारी चरित्र को पार नहींरे
॥ टेर ॥ राणी पण चोर देखन । आइ गोख मांय ॥ रुप देखी मूप तणो ।गइ मोह थाय
॥ शाणा ॥ १ ॥ अहो २ रुप पहनो इन्द्र अनुहार ॥ काम किडा इनसे करु । तो सफल
जमार ॥ शाणा ॥ २ ॥ शन्यपति भणी राणी दाखवे एम । एतो नर गरीब छे कीजो
ण पर खेम ॥ शाणा ॥ ३ ॥ चोर तणा लक्षण तो दीसे इण में नाय ॥ छोडी देवो
इणने इहां दया दिल लाय ॥ शाणा ॥ ४ ॥ राणी को हुकम तब प्रमाण कीध । चन्द्र

सेण धन्धन छोडी दीध ॥ शाणा ॥ ५ ॥ तिण समय कासेद एक आयो चलाय ॥ पत्र ठव्यो शेन्या पति कर मांय ॥ शा ॥ ६ ॥ वांची पत्र कहे राणी ताय । पोलास पुर मुज जाणो इण वेलाय ॥ शाणा ॥ ७ ॥ अन्दर थी खुशी उपर थी नाराज । राणी रजा दी शेन्य पती ने त्याज ॥ शाणा ॥ ८ ॥ दासी हाथे राणी सराजाम पहों चाय । दे शिघ्र जाइ तिण फेरीने तांय ॥ शा ॥ ९ ॥ जीमजो तुम हाइ पीवो शीतल नीर । दु खी दे खी तुम ताइ आवे मुज पीर ॥ शा ॥ १० ॥ जीमाइ शिघ्र लावीजे मुज पास । इम शिक्षा दासीने पठावी उल्लास ॥ शा ॥ ११ ॥ चन्द्र नृप भणी दासी किया पकान ॥ राणी कह्यो जिम सुणायो सय ययान ॥ शा ॥ १२ ॥ सुणी भेदनी पसि मन हर्षाय । धर्मात्मा राणीजी वीसे छे पाय ॥ शा ॥ १३ ॥ अहार करी राजा राणी मेहलमें आय ॥ भाग्रेक भाव जाणे आप साय ॥ शा ॥ १४ ॥ मर्यादे दूर ऊभो द्रष्टी भू पर ठाय । उत्तम नर पर सिया ओवे नाय ॥ शा ॥ १५ ॥ ● ॥ मनहर ॥ दीवाकी छोल समान । काम नी का नेन जान । कामी नर पतग ज्यों । बाले निज तनहे ॥ माजर ज्यों योले सुन्दर । जार नर जानो उन्दर । गटको करीले झट । हरी लेवे मनहे ॥ मोर ज्यों सुदरा कार । व्याले सम जाणो जार । तक्षिण करे अहार । ठग्या [illegible]

गीर्वे जोय । अवनी सामे व्रंग होय । अमोलख नर सोय । धन्य धन्य धनहे ॥ ७ ॥ढाल ॥ राणी उल्लास लाइ बोलावे ताम । किहां ना रहवासी छो कांइ थांरो नाम ॥ शा ॥ १६ ॥ नृप सुण चिन्त ए शमूनो स्थान । सचो पत्तो कदापि कहणो नहीं जान ॥ शा ॥ १७ ॥ ठन्डे वाक्य भूपके प्रवेशी म्हारो नाम । जिहा उदर पुर होवे तेही मुज गाम ॥ शा ॥ १८ ॥ आया कांइ प्रयोजने इण ग्राम मांय । मुज लायक काम होतो देवो फरमा य ॥ शा ॥ १९ ॥ नृप कहे म्हारा मनथी आयो नही पेय । परवश लेजावे ज।णो पडे तेथ ॥ शा ॥ २० ॥ कर्म वश प्रदेशे जातां मार्ग मांय । धार कर भट पकडी लाया इण ठाय ॥शाणा ॥ २१ ॥ राणी कहे दुष्ट सीपाइ । कर्यो खोटो काम । अरे अरे दुष्टा ने न दया आइ नाम ॥ शाणा ॥ २२ ॥ आवा वेषो शन्य पती कुटावु तस खाल । थे किस्यो डर न राखो रहो खुशाल ॥ शाणा ॥ २३ ॥ दूजे खण्ड भेय निवारण कही यह ढाल । चन्द्र नृप शीलवत राखे मत पाल ॥ शाणा ॥ २४ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ किहा परिवार हेतुम तणो । सुत सज्जन ने नार ॥ राणी कहे कृपा करी । फरमावे पसार ॥ १ ॥ सज्जन नारी नाम सुण । नीर आयो नृप नेण ॥ स्मरी दुःख हियो भर्यो । निकसे न मुख थी वेण ॥ २ ॥ राणी नृपने रोवतो । देखी बोले आम ॥ प्यारा प्रदेशी

जी तुम। दुःख न करो निकाम ॥ ३ ॥ दु ख थाणो देखी करी । करुणा आवे मोय ॥
जे जे वीत्यो तुम विपे । सुणावो मुजने सोय ॥ ४ ॥ किया विना किम जाणीये । वी
जा मन की घात ॥ अन्तर न रखो मुज थकी । जाडी कहूं छू हाथ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल
८ मी ॥ थूल भद्र कियोजी चोमासो । वेश्या केरी शाल में जी महरा राज ॥ य० ॥ ध
न्य २ ते नर जगत् । राखे शील रत्नजी ॥ काम दुष्ट ॥ सकट समय तेहा करे खुब ज
तनेजी ॥ काम दुष्ट ॥ धन्य ॥ १ ॥ राजा विचारे मन । आपण शत्रु राजमेंजी ॥ का० ॥
सात्री किहा धका घात । पडा दु ख साजमेंजी ॥ का ॥ धन्य ॥ २ ॥ पुर्ण करी विचार ।
धैर्य दिल धारनेजी ॥ का ॥ वस्त्र से पूछी अनन । करयों उचारनेजी ॥ काम ॥धन्य
धन्य ॥ ३ ॥ सुणो थाइ मुज घात । वीतीजे मुज तणीजी ॥ का ॥ मुज पत्नी रही वन
मांय । फिकर करसीते घणीजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ४ ॥ कृपा करीने आप छोडायो मुज
भणीजी ॥ का ॥ हिवे जाइ तिण ठाम । खपर लेस्यू तिण तणीजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ५
॥ राणी नेणे नीर लाय । कहे भूडो थयाजी ॥ का ॥ ते विचारी रहसी किम। पति यहा
आइ रयोजी ॥का॥ धन्य ॥६॥ ये मनुष्य गुनवत । मोटा दीसो मनेजी ॥ का ॥ एक क
रो मुज काज । गुत कहु छू तनेजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ७ ॥ नृप करे मुज जोग तेह । होवे

करशा जिसोजी ॥ का ॥ आप हुकम थी तेह । शके करस्यूं तिसोजी ॥ का ॥ धन्य ॥८ ॥ इम सुण राणी वेण । पंचशर व्यापीयोजी ॥ का ॥ लज्जा छोडी तेह ।विषय मन स्थापियोजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ९ ॥ ओर बीजो कोइ काम । म्हारे तो छे नहीजी ॥ का ॥ विरह तुम्हारे विजोगथी में वाजी रहीजी ॥ का ॥ १० ॥ गाढा लिंगन देय । शतिल मुज कीजियेजी ॥ का ॥ वेसी रुप पडी मोह फंद । खोले मुज लीजियेजी ॥ का ॥ ध ॥ ११ ॥ इम कही उठी तेह । पकडन राजा भणीजी ॥ का ॥ राजा विस्मय पाय । चिन्ते पा केसी बणीजी ॥ का ॥ ध ॥ १२ ॥ राजा पाछा दिया पाव । राणी उभी रहीजी ॥ का ॥ विराजो इण सेज माय । वाणी मधुरी कहीजी ॥ का ॥ ध ॥ १३ ॥ ● ॥ गाथा ॥ सयणासणही जोगही । इत्थीओ पगत णिमताणं ॥ पसाणी षेव सेजाण । पेसोणी विहु पिहु पाणी ॥ ● ॥ ढाल ॥ राजा अधोकर ढ्रंग । कहे थाइ कोइ कयोजी ॥ का ॥ मे समजो कछु नाय । हृदय नहीं भययोजी ॥ का ॥ ध ॥ १४ ॥ ❀ ॥ गाया ॥ नोतासु

अर्थ—● शय्या आसन आदि की अमंगल एकान्त में कर स्त्री पुरुष को भावफास में फसाती है विद्वान ऐसे काम में फसते नहीं हैं अथ—उत्तम नर स्त्री से आंखो नहीं मिलाते हैं एकान्त सहवास नहीं करते हैं तो भवापीय सेवन करना तो दूरही रहा। ऐसी तरह सत्पुरुष शीलव्रत रक्षण करते हैं

चखु सन्धजो । नो विय साहसं समाभआण ॥ ना सहाय सा विहरज्जा । एव मप्पा सर
स्वी ओहोइ ॥ १ ॥ ० ॥ ढाल ॥ कुसीता मुख मटकाय कहेथे शाणा दिसोजी ॥ का ॥
किती परिक्षा करोमाय । योली २ ने इसोजी ॥ का ॥ ध ॥ १५ ॥ तन मन म्हारो स
र्व । थार अरपण कियाजा ॥ का ॥ प्राणनाथ करो महर । शितल करदो हियोजी ॥ का
ध ॥ १६ ॥ सफल करो मुज काय । भोगवी भोगनेजी ॥ का ॥ ऐसो अवसर पाय । वि
सरो मत जोगनेजी ॥ का ॥ १७ ॥ नृप कहे मोटा होय के इम किम बोलयेजी ॥का॥
योगा योग हीये तोल । फिर बाहिर खोलियेजी ॥ का ॥ ध ॥ १८ ॥ तुम राजा की प-
टनार । हमे प्रदेशियाजी ॥ का ॥ महारे उपर आप । खोटा मन किम कियाजी ॥ का॥
ध ॥ १९ ॥ घरो घरी का स्यु प्रेम । कियां सुख लीजियेजी ॥ का ॥ में गरीब तुमजेट
। कहो किम रींजियेजी ॥ का ॥ ध ॥ २० ॥ राणी कहे मुज मन । थाने मोटा मानिया
जी ॥ का ॥ सिधीसत्य नृप ढाल । अमोल बखाणियाजी ॥ का ॥ ध ॥ २१ ॥ दुहा ॥
क्षिती कंत कहे भमि सुणो ।तुम शाणी गुण वन्त ॥ मोटा घराणा धणी । एह करवो न
कलपन्त ॥ १ ॥ में नहीं मोटो मानवी । दु खी प्रदेशी लोक ॥ निर्धन निर्बल निकर्मी
। मोहित हुवा तेफोक ॥ २ ॥कर्म करता सोहिल । हंसी खुशी ये बन्धाय ॥ भोंगवती

वक्त जीवडा । रुवता न लुटाय ॥ ३ ॥ पूर्व भव सच्या जिका । भोगवू हिवणा पाप ॥
इण भव यह कृतयकरी । भोगवू किहां कहोआप ॥ ४ ॥व्यभिच्यारने मारिखो । मोटो
नहीं कूकर्म ॥ इण कारण मानी माहेरी । धारो थोडीसी शर्म ॥ ५ ॥ ● ॥श्लोक॥परयो
नी गतवीर्य । कोठीपुज्य विनान्यन्ती ॥ तीय हानी तपाहानी॥ब्रह्महत्या सतानिच ॥१॥
॥ ७ ॥ ढाल ९ मी ॥ नहीं सदेह लगार निरोपम ॥ यह० ॥ धन्य २ ते नर वक्त पर व्र
ढ रह । धन्य तहनों अवतारो ॥ सकट समय वृत व्रढ राखे । सुधरे तेहनो जमारो ॥
धन्य ॥ १ ॥ राणी भाखे सांमलो सज्जन । इण मां पाप तुम दाखो ॥ मनमें विचार
करीने प्यारा । पाछे जबान से भाखो ॥ धन्य ॥ २ ॥ काइक भिक्षुक क्षुधा पिडित ।
याचत आवे तुम पासे ॥ तेहनी इच्छा पूर्ण करतां । किस्यो फल होवे तास ॥ धन्य ॥
। ३ ॥ सर्व सत्पुरुष धर्म कहै । अन तुम किम पाप बतावो ॥ पुण्य को स्थान छोडि, प
जासों तो पाछे करसो पस्तावो ॥धन्य॥ ४॥ मही धरकहे योगो जे याचक।तेहने दान देवाय
में परदेशी गरीब छू वाइ । मुज थी दान किम थाय ॥ धन्य ॥ ५ ॥ कूसीता बोले
हू याचकणी तोलो । इच्छा पूर्ण कीजे ॥ भतू मानकोफल छे मोटो । येव समारी
लीजे॥ धन्य ॥ ६ ॥ व्यभि चार रे तुम दान बतावो । धर्म्मिष्ट भ्रष्ट यह थारी ॥ स्त्री का

सगं कन्या थी प्राणी । उपजेनर्क मझारी ॥ ध ॥ ७ ॥ राणी कहे जग सहू नर्क में जासी
केहने घर नहीं नारी ॥ बुद्धि म्हारी भृष्ट बतावो पण वात विचारो नी थारी ॥ ध ॥
८ ॥ स्वस्त्री ने परस्त्रीमां । फेर घणोछे बाइ ॥ जग सहू स्वस्त्री समोगे । जे पचनी
साक्षीये व्याइ ॥ ध ॥ ९ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ चत्वारी नर्क द्वरा ॥ प्रथम रात्री भोजनम्
परस्त्री गमनं चैव । साधनन्त कायक ॥ १ ॥ ❀ ॥ परस्त्री को संग किय। थी । दुख
घणा थली पाया ॥ कितनाक का तो न म सुणावू । जे गन्थान्तर गाया ॥ ध ॥ १० ॥
रावण पद्मोतर ने यच्चिक । मणी रथ आदि घणाइ । परस्त्री नो भग करता । गया नर्क
गति मांइ ॥ ध ॥ ११ ॥ थे पराइ घाजो ठगाइ । थांपर हक नहीं म्हारो ॥ केस्व रथ
सम नाय तुमारो । पतिवृता पणो धारा ॥ ध ॥ १२ ॥ राणी भाखे इन्द्र अने चन्द्र ।
परस्त्री भोग कीधो ॥ थे तो जाति मनुष्य में उपजा । वश म्हारो परचो घणो लीधो ॥ ध
॥ १३ ॥ अहो तेहना काइ हवाल थइया । राणी साहेब विचारा ॥ चन्द्र न कलङ्क ने
इन्द्रने सहश्र भग । तो में मनुष्य अवतारो ॥ धन्य ॥ १४ ॥ में हारी थे जीत्या जाणो
म्हारा थी नहीं रहवाय ॥ पाप लागे तो मुजने लागसी । इण में थारो काइ जाय ॥ ध
॥ १५ ॥ तुम मननो छेजी नहीं जरा भर । पण में उपता कहू थाने ॥ थाणी जवान थे

पूरी पाडो । जे वाचा पहिली श्री म्हाने ॥ ध ॥ १६ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ षाय पदल माटी पदल । धचन पदल धेशूल । यारी कर क्वारी करे । तिनके मुख पर धूल ॥ १ ॥ ❋॥ ढाल ॥ गुरु मुख से में धारण कीधा । पर महिला पच्चखाण ॥ किंचित सुखने कारण धाइ । नहीं भांगू जिन आण ॥ ध ॥ १७ ॥ और दूसरो काम बताओ । अबी करी बतावू ॥ जिवत की आसा नही राखू । तो में साचो कहवावू ॥ ध ॥ १८ ॥ विना कारण । मुज वचन भग को । दोषण शिर नहीं दीजे ॥ बोलणा जोग जे होवे तुमारे तो । हृदय विचारी बोलीजे ॥ ध ॥ १९ ॥ में तो विचार करीने बोली । जो तुमने बुरो लागो ॥ माफी मागु हाथ जोडने । मुजने तुम मत त्यागो ॥ ध ॥ २० ॥ हम जो तुम मुज छह बतासो तो । स्त्रि हिस्या शिर लेसो ॥ म्हारी चहाती वस्तु तुम पास है । आस हे मुजने देसो ॥ ध ॥ २१ ॥ बाई करी नृप शील ने राख्यो । ढाल असोलख गाइ ॥धन्य जेहसहा पुरुष चन्द्र नृप सम । तेही शभामें गवाइ ॥ ध ॥ २२ ॥ ● ॥ दुहा ॥ अवनीश कहे बाइ सुणो । थे मागो जे वस्त ॥ ते देवा सरखी नहीं । कारण ते अप्रसस्त ॥ १ ॥ गुरु मुख में धारण किया । पर महीला पच्चखाण ॥ किंचित सुख के कारणे । नहीं मागू जिन आण ॥ २ ॥ वृत जे लेवे नहीं । तेतो पापी कहाय ॥ लेइने भाजे जिका । ते महा

पापी गिणाय ॥ ३ ॥ इण भव पर भव दु:ख लहे । इण सरीखो न अधर्म ॥ जाणी दे
खी पहवो । किम कीज कहो कर्म ॥ ४ ॥ मरनो तो कबूल छे । पण न करुं पहवो काम
॥ तिण कारण तुम पहनो । म करोहट निकाम ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १० मी॥ धंधव बोल
मानोहो ॥ यह० ॥ राणी कहे सुणो साहीबा । थे इम किम बोलोहो ॥ दासी तणी
अरजी जरा । हीया मा तोलोहो ॥ धन्य २ चंद नरिन्दनेहो ॥ आं ॥ १ ॥ किंचित सुख
किम दाखवो । जाव जीव न छेहूहो ॥ आप तणी सहु आज्ञा । कदापि न तोड़ुहो ॥
धन्य ॥ २ ॥ राज पाटने सायथी । मागो सो देस्यूहो ॥ मुज पति नारी दूजी करी । में
तुम सग रहस्यूहो ॥ धन्य ॥ ३ ॥ किंचित सुख इण कारणे।धाइ। मे नहीं धतायोहो ॥नर
आयुष्य सुख तुच्छ छे । आगम मांही गायोहो ॥ धन्य ॥ ४ ॥ ● ॥ गाथा ॥ जहा कुस
ग्ग उदय । समुद्द ण सम मिणो ॥ एव मणुसगा कामा ॥ देव कामण अतिए ॥ १ ॥
● ॥ इण कारण इण हठने। छोडो तुम धाइहो ॥ हर गिज में नही आचरु । अनाचीर्ण
ताइहो ॥ धन्य ॥ ५ ॥ नृपांगना कहे प्याराजी । निरास न कीजेहो ॥ गरीबढी बिल २

अर्थ—जितना समुद्रके पानी में और कुशाग्र के ओस बुंदमें, अन्तर है उतना देवता के भोग सुख में और मनुष्य के सुख में अन्तर है अर्थात् मनुष्य का तुच्छ सुख है।

करे । दया दिल लीजेहो ॥ ध ॥ ६ ॥ जोथे छेह देवा लग्या तो । क्षिण मां मरस्युहो।
पचेन्द्रिने नारिहित्या।थाणे शिर परस्युंहो ॥ ध ॥ ७ ॥ दयालु दीसो मने । निर्दय कि
म थइयाहो ॥ तुम चरणरी किंकरी । जरा आणोनी वइयाहो ॥ ध ॥ ८ ॥ शेशी कहे प
क दया किया । नव लक्ष जीव जावहो ॥ चोर हांयू गुरु कन्तको । इम मन नही थावहो
॥ ध ॥ ९ ॥ तुम मोटा रायनी अगना । हुइ इम किम बोलाहो। विषय अन्धता पर हरी
। जाति कुल तोलोहो ॥ ध ॥ १० ॥ थांर कमी किण बातरी । लघुताइ न कीजेहो ॥
गेहला पणो ए परि हरो । लज्जा तन धरीजेहो ॥ ध ॥ ११ ॥ धन सुख छे थागे घणो
। दास दीसा परिवारहो । राजेश्वर पति तुम तणा । भर योवन भरतारहो ॥ ध ॥ १२ ॥
ये अन्याय करता लग्या । तो प्रजा करसी कांइहो ॥ अनीती पन्थ धारण किया।अपकीर्ती
थाइहो ॥ ध ॥ १३ ॥ मनुष्य जन्म उत्तम कुले । वार २ न आवेहो ॥ पुण्य पाप खोटा
खरा । करे ते सग ले जावहो ॥ ध ॥ १४ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ दुर्लभ प्राप्त मानुष्य जन्म
। हाहा मुधा हारितं मया ॥ पाप चे केवल धात्वा । रामो रामे धना धनं ॥ १ ॥ ●
॥ ढाल ॥ इण कारण तुमने कहु । पेसी बुद्धि न लाणोहो ॥ खोटा कर्म किया थका ।
पाछे पछे परतावणोहो ॥ ध ॥ १५ ॥ राणी कहे पसा शास्त्र अग । पेदा क्यों थइयाहो ॥

विद्युत् पड़ो । पोथा परे । म्हारे लाय लगियाहो ॥ ध ॥ १६ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ ओल्सु
मंद बुद्धिश्च । सुखी नो व्याधी पिडीत ॥ निद्रालु कामिका चैव । पड़ते शास्त्र वार्जित ॥
१ ॥ ॥ ढाल ॥ में नहीं समज्यूं र वातने । कद्यो मानो के नाहीहो ॥ पोथा थोथानी कु-
कथा । क्यों इहा चलाइहो ॥ ध ॥ १७ ॥ इन्दु राय कहे कू कर्म । में इच्छुं नाहींहो॥
ता करणो दूरो रह्यो । थे क्यों रह्या लोभाइहो ॥ ध ॥ १८ ॥ चन्दा क्रोधे भजली । चो
ले भ्रकुटी चढाइहा ॥ एकवार ओजु ना कहे । मजा देवू वताइहो ॥ ध ॥ १९ ॥ तू क
हे एकवरको । मुझ कर वतावेहो ॥ नहीं करुं नहीं करु नहीं करुं । कर थने जे भावेहो ॥
ध ॥ २० ॥ अरुण न कर नारडी । कहे अधम्म नीचारे । कृतघ्न पणो किम आचरे
। ध ध छाडाव्याजी चोरे ॥ ध ॥ २१ ॥ म्हारो हुकम माने नही । खोटी वाता वणावेरे
मे नो कर्माकी घडवडू । तू गुनराइ जणावेहो ॥ ध ॥ २२ ॥ भूप कहेरे दुष्टणी । अव
ज्यादा मती वोले हा ॥ इतनी वर क्षमा करी । तू छे जारणी ताले हो ॥ ध ॥ २३ ॥
धिगर विचारी जो बोलसी तो । शिक्षा पासी हो ॥ नीच जात छे पापरी । तेहथी नाहीं
विमासी हो ॥ ध ॥ २४ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ न जार जातस्य लिलाट शृंग । कुल प्रसु तस
नपाणी पद्म ॥ यदा२ मुञ्चति वाक्य वाण । तदा जाति कुळ प्रमाण ॥ १ ॥ ॥ ढाल

। कुसीता कहे म्हारा राज म । मने शिक्षा करसीरे ॥ तूं करेके वेस्यां में करुं । थारों जाम उतरसीर ॥ ध ॥ २५ ॥ पाछे पश्चतासीघणो । पहिला हीचेतावू हो ॥ मानले कहणी म्हरी । तो सुख घतावुं हो ॥ ध ॥ २६ ॥ धीजे हुलास सील राम में । न्रपती धर्मे रही या हो॥धन्य २ पेसा सत्य वंत । अमोल ऋषि कहीया हो ॥ ध ॥२४ ॥ चन्द्रसेण कहेरे पापणी । अभ्यान राखे वश ॥ धार २ धोलें इसो । अजुन निकल्यो कश ॥ १ ॥ फिर ऐ वचन जो वदाडसी । पासी दुःख भरपूर पेसी चन्डालण थकी । प्रभु । रखो सदा दूर ॥ २ ॥ कोपातुर हुइ आणी ध, कहेरे धोल सभाल ॥ अब थारा पुण्य खुट गया ।।आयो थारो काल ॥ ३ ॥ में तुझने सुख अर्पवा । कीना घना उपाय ॥ पण निर्भागी तु खरो । तो किम चाले दाव ॥ ४ ॥ वेस तू मजा म्हारा । किम वेवे दु ख पूर ॥ सभाल निज इष्ट ने हिवे । करावू हड्डी चूर ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ॥ ११ मी ॥ धन्य २ श्रावक पुण्य प्रभावक ॥ यह० ॥ भव्यजन सुणजो एकण चित्ते । त्रिया चरित्र मोटो जगमाही ॥ टेर ॥ इम बोलती कुसीता तिहां । घबराइन चिल्लाइ ॥ दोडो २ रे सुभटो जल्दी । कोन आय घूसा मेहल मांइ ॥ भवि ॥ १ ॥ महारी इज्जत माहे हाथ घाल्यो । करण आ

यो छे अन्याइ ॥ छोडावो शिघ्र पहना करथी । पकडोर ऊँहवी आइ ॥ भवि ॥ २ ॥ हम
हाक सुण सुभट दोडी । शिघ्र राणी भवने आइ ॥ ततक्षिण पकडा वतायो चन्द्रने ।
अहो पकडो इणरे तांइ ॥ भवि ॥ ३ ॥ मेहल नीचेका तल घर माहीं । न्हासी दो इण
रे तांइ ॥ सीपाइ घर तेहमे न्हाख्यो । तालो दीयो लगाइ ॥ भवि ॥ ४ ॥ कुजी राणी
पासे राखी । कहे भट थी जावो भाइ ॥ सुभट रहु गया निजस्थाने । राणी वठी आ
मेहल माइ ॥ भवि ॥ ५ ॥ क्षिण भर जक पदे नहीं तेहने । सेजमे पडी लोट लगाइ ॥
सर्व सर्वरी तडफी निकाली । जरा न आइ निद्राइ ॥ भवि ॥ ६ ॥ रवी प्रकासत चटपट
राणी । तालो खोली भुवरा में जाइ ॥ चन्द्रराय रह्या मोन धरी ने । न देखे न बोलाइ
॥ भवि ॥ ७ ॥ नम्र मधुर गिरा थी कहे सा । म्हारो कह्यो यों मान्यो नाइ ॥ तो कष्ट
रा में रह्या पडीया । तेम घोर कहाडी रैंइ ॥ भवि ॥ ८ ॥ तोसक तकीया छोडी थाने
। लोटणो पड्यो निशे भरस्यांइ ॥ तुम दुःख देसी में दु ख पावु । पण तुम हट छाडो नाइ
॥ भ ॥ ९ ॥ भरापत कहे थारा महेल थी । हजार गुणो सुख है यांइ ॥ हाथ जोडी कहू
ह परमेश्वरी । तू इहां कमी मत रहाइ ॥ भ ॥ १० ॥ राणी कहे हाल तक थारी । मन
की न मिटी गुमराइ ॥ क्यों तू थारी हसी भगावे । विचारकर जर मन माइ ॥ भ

२ पूरण विचार में । हिवे तुझथी डरुं नाहीं ॥जलदी हट तू मुज सन्मुख
ा मुज सुख थाइ ॥ भ ॥ १२ ॥ रखे भागी जावे यह किहां । इम धा
॥ इसके पगमें बडी डाले । नहीं छोडता प चपलाइ ॥ भ ॥ १३ ॥
का गरजी । बेडी नृप पग पराइ ॥ अपना हाथ से ताले लगाइ ।पाछी आइ
। ॥ १४ ॥ चन्द्रसेन की मोहनी मूर्ती । तेहने हृदय रही ठसाइ ॥ काम
व्याप्यो । अन्न पाणी भावे नाहीं ॥ भ ॥ १५ ॥ पूरी मंडले दिन कर
गगट पोटेश सजाइ ॥ अटक मटक कर चटक चाखणी । कामी देखी
। १६ ॥ युग चेटीसे बोले चन्द्रा । ते केदीने लावो उठाइ ॥ दासी हुकम
नृप पास तत्क्षिण आइ ॥ भ ॥ १७ ॥ मिष्ट वयण समजावे भूपा ने ।
ण साइ ॥ पांच मिली चेटी तत्क्षिण । उठा करी महल में लाइ॥ भवि
स्थान नेणका बाण । ताकी राणी नृपके मान्याइ ॥ ज्ञान खड्ग से अध
न जोवे सामाइ ॥ भवि ॥ १९ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ कान्ता कटाक्ष वि
रस्य । चितन निर्वहति कोप कृसानु ताप ॥ कृर्षंति मूरी विषयाश्च न

लोभ पास । लोक त्रय जयन्ति कृत समिदस्य धीरा ॥ * ॥ ७ ॥ ढाल । मजुल काम दीपायण वाणी थी । नृप जरा रींजो नाहीं ॥ गुप्त अग उपाग वताया । नृप मन चाल्यो न जराइ ॥ भवि ॥ २० ॥ अहो अयतो जरा समजो मनमें । फोडा पडे छ दहा माही ॥ म्हारी आत्मा सतोपो तो । सुख वतावू स्वर्ग साइ ॥ भवि ॥ २१ ॥ धरापत कहे में सुण तु म मे । लक्ष गुणा मुक्त गाइ ॥ थारे मन आर सा कीजे । पण निर्लज्ज वचन म कहाड वाइ ॥ भवि ॥ २२ ॥ तुम दु ख दाता वचन नहीं चालू । आवो पदिख करो म्हारि धाइ ॥ थाणो हुकम शिर उपर धरु में । वालती पदहू चुप काइ ॥ भवि ॥ २३ ॥ नृप कह हु जो वेरो हु तो । तो एसा वचन सुनतो नाइ ॥ मानती यह किम निन्दा करहे । म्हारो वचन माने तू नाइ ॥ भवि ॥ २४ ॥ नहीं नहीं नहीं मानू तुज वचन में । मरण श्रेयछे मुज ताइ ॥ क्यों म्हार तू पाछे पडीहे । ग्राम सुख कर मंश वाइ ॥ भवि ॥ २५ ॥ इम सुणी कामनी कामतुरी । नृप के उपर पड जाइ ॥ कूचेष्टा करवा लागी तब ॥ राजा जी क्रोधे भराइ ॥ भ ॥ २६ ॥ वेडी पेर्यां लातर्यां मारी । काकडी ज्यों दी गुडाइ ॥ दूरी पडी लागी शक्त अग । असुरत क्रोध थाइ ॥ भवि ॥ २७ ॥ अरे थारे पग कीडा

भय- लोक मत्र रूप कन्यास वाण्यों जिमाया हृदय भेगाया नहीं चित्त चल्या नहा कामदेव शाकारा के फासमें फसा म ही विषय भामिय मांस भक्षा नहीं एस धीर पुरुषोंने तीन लोक का जय एक क्षिण मात्र मे किया है

पडजो । इम शराप दिया पछु लाइ ॥ नृप पाडीने भट बुलाइ । बोडी आया घणा दोडाइ ॥ भवि ॥ २८ ॥ कहे घताइ अर दुष्ट यों । म्हारे लारे पडयाइ ॥ मारि कूटी कूबी करो खूप । लेजावो ढोर ज्यों घींसताइ ॥ भवि ॥ २९ ॥ कीडा ढी भाखसी में पूरजो । दी जो मत पानी खवाइ ॥ सडीर ने मर जावे यो । ऐसो उपाय करजो भाइ ॥ भवि ॥ २९ ॥ ● ॥ इन्द्र विजय ॥ कामनी कूतरी बाइ बराबर । रीजे सो चाट ने खीजे तो काट ॥ भामनी मकड तुल्य धनी । यश कीर्ती सुख संपती बाटे ॥ कामनी पापनी सापनी ताप नी । पोशाक ने पण न्हाखे उचाटे ॥ समर्थ छे खोडी वास कहे नर । एहनी आगल कोइय न खाटे ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ मृत्यूक पशू पर भूपने घींसता । लेगया कारागृह मांइ ॥ ॥ खोडा माहे पांव घाली ने । कोटडी में दिया बेठाइ ॥ भ ॥ ३० ॥ अहो२ देखो कर्म तणी गत । कब पडी दुःख भुकाइ ॥ नारी वसी सुरनर मुनि चलीया । चन्द्र न चल्या ऽह अधिकाइ ॥ भवि ॥ ६१ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ विश्वामित्र परास राशि मुनियो प तानपू प्रणासना ॥ तेपि स्त्री मुख पत्तज सु ललिते दृष्ट मैत्र मोह गता ॥ शाल्यन्न घृत पयोद धि युत भुजन्तिये मानना । स्तेषा मिदय निग्रयहो यदि भवेत् विन्ध्यास्तरे त्सागर ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ स्त्री चरित्र त्रिलोको है कसा । सुणता चमत्कार मन पाइ ॥ अबला काम

गर छ मयगा । सात दाषद स्वभावाइ ॥ भवि ३२ ॥ ७ ॥ अनंत साहसे मैंया । सूर्ख
रर मोंसिराभता ॥ अशोध निर्दयंपच । क्रिणा वोप स्वभाजा ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥फ्स्व
रप टाडी शन्या पति प्रिया । तस तज चन्द्र स्यु लल्चाइ ॥ इम अनेक वर्षे सिया मन
में । मृद मूर्ख रष्ठ ललचाइ ॥ भवि ॥ ३३ ॥ धन्य २ श्री चन्द्रसेण नृप । ब्रह्म व्रतकी
गम्भी ब्रदताइ ॥ फिर सुणा लीलावती सती कथा । जे आगले खण्ड गवाइ ॥ भवि ३४
॥ द्वितीय खण्ड मील स य म डन ॥ ओं ढाल पुर्ण थाइ ॥ अमोल ऋषि भणे श्रोता
वक्ता । पाठन श्रवण सुख वरताइ ॥ भवि ॥ ६५ ॥ ꕥ ॥ ● खन्ड सारास हरिगीत
छन्द ॥ चन्द्रसण राजा गुण क्षाजा । शील भली परे राखीयो । कुशीला राणीको अवगुण
नाणी । नदी फहन भाखियो ॥ चारित्र नारी प्रिया अपारी । तास फन्दे नही फस्या ॥
सम्यक्त्व रत्न वा गुण सत्य शील । अनुभवे हृदय ठस्या ॥ स्वल्प काल को दु ख । आ
गे सुख पुर्ण पावमे । कथा अधिक रस आण सक्के ॥ श्रोताने सुणावसे ॥ शील रास दु
तास द्वितीय । निज मति अमोलख ऋषि कहे ॥ गावे मयावे सूणे सूणावे । तेह नित्य
मग लहे ॥ २ ॥ ꕥ ॥ ꕥ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री

अमोलख ऋषिजी रचित शील महात्म श्री चन्द्रसेण लीलावती चरित्र का चन्द्रसेण प्रवर्य नामक द्वितीय खन्ड समाप्तम् ॥ २ ॥ ● ॥ ● ॥

॥ प्रथम समरु प्रमेष्टी को । अर्हत सिद्ध सर्व साध ॥ त्रीपदे त्रीकरण शुद्धि से। प्रणमु चार अगाध ॥ १ ॥ उरस्थान रक्षा थका । शान्ती शान्ती करी लोप ॥ पोडेसमां जिनवर तणो । सदा सरण हो मोय ॥ २ ॥ त्रि ताप हरण त्रि जयकरण । ज्ञानादि त्रि दातार ॥ तिरी शिव घरजे वक्षे । ते सद्गुरु नमस्कार ॥ ३ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मी सुन्दरि रैजमती द्रौपदी । कुन्त्यों सीता मृगावती। कौशल्या सुलसा पद्मावती । शिवा जैयति सत्यवति ॥ सुभद्रा चेन्दना ववर्वेती । इत्यादि घहुला सती ॥ कित्तिय सुरा रक्षती किती स्वार्ति ।प्रणमु ब्रह्मवृत धरती॥●॥दुहा॥सति शिरोमणी लीलावती।सकट सह्या अपार॥पण ब्रह्मवृत नही खन्डीयो । पाल्यो खान्डा धार ॥ ४ ॥ केइ सतीने सकट समय । हूवा देवता सहाय ॥ ध सती नर स्व शक्त थी । रही विमल अधिकाय ॥ ५ ॥ जे नर जग में सत्य वत । तस नारी सती होय ॥ चन्द्रसेननी अगना । लो लीलावती जोय ॥ ६ ॥
[illegible] चित करी,। मनो

रम्य यह कथन ॥ ७ ॥ ते काले विजयपुर में। कामिये कियो अन्याय ॥ चन्द्रसेण सामा
गया । कुरवत आयो मेहल माय ॥८॥ जे काले सती लीलावती । गेंदु दासनी लार ॥
पीयर मार्गे सचरी । हिवे आगल अधिकार ॥ ९ ॥ ● ॥ ढाल १ ली ॥ निरमल शुद्ध
समकित जिन पाइ ॥ यह० ॥ सुणजो सति तणी अधिकाइ। शील किणपर रखियोभाइ
॥ टर॥ग्राम वाहिर आ घुडशाल माही से।केकाण लियो खसाइ ॥ लीलावती तिण पर
घठाइ । भरतपुर मग चाल्याइ ॥ सुण ॥ १ ॥ जाम जामना गइ ।तिण अवसर । महा
नम रह्यो छाइ ॥गेंदू आगे अश्व वाग धरीने। अनुसारे ले जाइ॥सुण ॥२॥पीछे को पण ढ
र है मन मे । रखे कोइ पकडे आइ ॥ दुष्ट तणे जो वश में पडिया । तो फिर कर सीको
इ ॥ सुण ॥ ३ ॥ शीतल वायु थी कोमल काया । थर २ रही थर्गइ ॥ झीण अबर प-
तली कम्मर । तुरी हिचके लचकाइ ॥ सुण ॥ ४ ॥ वन मे जावे स्वपद घणा आवे जावे।
मन में धस्काइ ॥ इम घणा गाउने उल्लंघ्या । व्याति कर मीजय राइ ॥ सूण ॥ ५ ॥
भानु को प्रकाश पख्याथी । अग आइ गरमाइ ॥ आगल २ चाल्याइ जावे । न करे कि
हा थिरताइ ॥ सुण ॥ ६ ॥ शिरावणी की वक्त आइ। पास न कुछ खावाइ ॥ दूध राव
ड्यो मेवा मिठाइ । स्हु रह्या स्थान घन्याइ ॥ सू ॥ ७ ॥ जिम २ दिन कर आवे उचो

। तिम २ घडे खुपाइ ॥ तडको तेज उपर से लागे । शरीर गयो कुमलाइ ॥ सु ॥ ८ ॥
॥ ॥ इन्द्र विजय ॥ भूख कुलीन अकुलीन करे । अरु भूख घरोघर भीख मगावे ॥ नी
चकी चाकरा भूख करावेर । निर्मळ पक्ष मे मेल लगावे ॥ भूख भमावे विदेश विपतवे
। दीन दुःखी मशकीन कहावे ॥ भूख समो नही दूःख जगत में । पापणी भूख अभक्ष
भखावे ॥ १ ॥ नेडो कोइ ग्राम न दीसे।लीजे सराजाम जाइ ॥ इम विचार करता जा
वे । दिवस रह्या थोडाइ ॥ सूण ॥ ९ ॥ कुलग्राम एक आयो एतले । गया ते तिणरे
माइ ॥ धर्मशाला मन गमती देखी । उपाधी दीधि ठाइ ॥ सुण ॥ १० ॥ दिन थोडो
सो रह्यो जाण ने । गेंवू करी चपलाइ ॥ खान पान लेवा गयो ग्रामे । निशी मे न जीमे
याइ ॥ सूण ॥ ११ ॥ तिण अवसर तस ग्राम पटेल्यो । यौवन मद छावाइ ॥ परवारानो
लम्पट मोटो । नाम मुकव कहाइ ॥ सु ॥ १२ ॥ एक रुप दुजो बळ वतो । धन स्वजन
बहु लाइ ॥ अज्ञानीने जाती हिणो । कम क्यो करे मस्ताइ ॥ सु ॥ १३ ॥ ॥ श्लोक॥
मराठी ॥ अधीच मर्कट तशातही रुप प्याला। झाला तशात जरी वृश्चिक दंश त्याला॥
झाली तयास तदन्तर भूत बाधा । चेष्टा बहु मग किती कपीचा अगाधा ॥ १ ॥ ॥ढाल
॥ ते तिहा आयो तव फिरवाने । कु मित्रोने सगाइ ॥ धर्मशाला में सन्टरी देखी ।

भर यौवन दिव्य काइ ॥ सु ॥ १४ ॥ मुकुंद कामातुर तब थइयो । ए मुज स्त्री जो थाइ
। वैभव सुख विलस्यु इण साथे ॥ सफल जन्मतो म्हाराइ ॥ सु ॥१६॥ कोइ दाव उपाव
करीने । करु म्हारा वश मांइ ॥ पटेलण बणावू इणने । इच्छित सुख थताइ ॥ सु॥ १७
॥ इम विचारी बोले सतीसे । इहां तुमसे न रहवाइ ॥यहतो शिरकारी थाभेछे । निकलो
झट बाराइ ॥ सु ॥ १८ ॥ कहे लीलावती सुणो भाइ । हम नोकर गयो गाम मांइ ॥
ते आया से सरजाम हम । मेलसां अन्य जागाइ ॥ सु ॥ १९ ॥ देर करण का काम न
हीं है । काम वार अबी शाइ ॥ जाग इहां अच्छी नहीं वसे । तो इज्जत म्हारी जाइ ॥
सु ॥ २० ॥ जो तुम से नहीं वजन उठे तो । उठाइ हमारा सिपाइ ॥ ये कहमो तिण
जागा मांइ । झेल वसी ले जाइ ॥ सू ॥ २१ ॥ अहो भाइ किम करो तुम घाइ । मे जा
तिकी लुगाइ ॥ आदमी आया मालम पडसी । किण स्थान निशें रहाइ ॥ सु ॥ २२ ॥
कहे पटल हम थादा माइ । जागाहेजी सुखदाइ ॥ कोइ तरहकी चिन्ता मत करो। तिहा
वेघूं म पहुचाइ ॥ सु ॥ २३ ॥ तारिक्षण भट अपणो बोलाइ । सरजाम उठवाइ ॥ एक ज
णो ते हय लय चाल्यो । से अबला करे काइ ॥ सू ॥ २४ ॥ तेहने लारें गइ लीलावती।
बाडा मे दी बेठाइ ॥ पेरायत नोकर बेठायो । ए जावा नही पाइ ॥ सू ॥ २५ ॥ कहलि

लावती नोकर म्हारो। आती धर्मशाल मांइ। कृपा करीने इहां भेजजो। ढील न होवे जराइ ॥ सु ॥ २६ ॥ हो कहीने गयो मूकधो। चिंतग तारा ढाल मांइ ॥ आग यात सुणा उतपातनी। ऋषि अमोलख गाइ ॥ सुणो ॥ २७ ॥ ● ॥ दुहा ॥ गेंदु खातिम नीर ले इने। धर्म शालामे आप ॥ लीलावती दीठी नही। मनमाही धस्काय ॥ १ ॥ कोइ शत्रु आवन। लेगया सेहन घर ॥ के इहां कोइ हरण करी। फिकर हुवो केइ पर ॥ २ ॥ मूकन्द वेस्यो टेलसो। पूछे अति नरमाय ॥ कहो शिरकार हम बाइजी। इहाथी गया किण ठाय ॥ ३ ॥ मुकद कहे अबी इहा। आयो एक जुवान ॥ करी मस्करी ते नार सग। दीधो तेन स्थान ॥ ४ ॥ तेऊठी गइ तास सग। दीठी महरे नेण। अबकाड जाणा नहीं। कथा मिथ्या इम वेण ॥ ५ ॥ ढाल २ जी ॥ इण वाने केशर उद रही ॥ दह० ॥ गेंदू सुणी अचर्य हुवो। किम बोले हो यह ऐसी यात के ॥ बाइ साहेब ऐसा नही। किमथयो ए विष मा उत्पात के ॥ कपटी सूं पूरो नहीं पडे ॥मां ॥ १ ॥ तत्क्षिण ढूंढण चालीया। चारु कानी हो कोस दो कोस माय के ॥ ढूंढ्या पतो लागो नही। पाछो सूतो हो धर्म शाला में आपके ॥ क ॥२ ॥ निद्रा पण आवे नहीं। चिन्ता हो त्रितडप जे अनेक के ॥ सती शिरोमणी बाइजी। नही वाछे हो अन्य नर ने प्रेम के ॥ क ॥

॥ ३ ॥ पण ए किम बोलीयो । इणरी व्रष्टी हों मुने दीसे हराम के ॥ लाज्यो नहीं इम
बालता । रवे हात्रे हा कोइ इणराही काम के ॥ क ॥ ४ ॥ काले पत्तो लगात्रस्यू । सूतो
हो इम करतो मन्योग ता ॥ इम विचार विचार में । निद्रा आइ हो मूख थाकेने जाग
तो ॥ क ॥ ५ ॥ लीलावती जोवे वाटडी । गेंदूने हो गया हुइ बहू वारतो ॥ बोले तिण
पहरादार थी । जाइ लावो हो भाइ नोकर हमार तो ॥ क ॥ ६ ॥ पेहरा दार कहे बाइ
ते । अजु ताइ हों आयो दीसे नायतो ॥ पटलजी जासा कह्यो । वो आवेगा तो भेजूगा
इण ठाय तो ॥ क ॥ ७ ॥ फिर कहे लीलावती । भाइ बजार में करो चौकस जाय के
॥ वेर घणी हुइ तेहने । इहा लावो हो हुं लागू तुम पायतो ॥ क ॥ ८ ॥ भट कहे इम
किम करो । मालकणी हो होसो ग्राम का आपके ॥ आपने एकली छाडने । नहीं जावू
हो में कहूं छू सापके ॥ क ॥ ९ ॥ लीलावती कहे इहा रहो । करजे हो अम्बमाल रखवा
ल नो ॥ में जाइ लायू जोइ न । पाछी आस्यूं हो अबी इहा ही चालतो ॥ क ॥ १० ॥
ते कहे हू जावा दू नहीं । नोकर की हो नकरो फिकर लगार के ॥ ये होसो मालक ग्रा
म का । घणा नोकर हो रहसी हुक्म मझार तो ॥ क ॥ ११ ॥ सती कहे तुम्ह बोली मे ।
भाइ मुजने हो कुछ समजे नाय के ॥ किम्ा बेठाइ इहां मने । कहो मनरी हो सहू वात

समजाय के ॥ क ॥ १२ ॥ जट कहे ते पाटेलजी । तुमने वेसी हो घणा गया मेष्ह घा
प के ॥ पटेण फरसी तुम भणी । समजाहो अय रहो सुखमाय क ॥ क ॥ १३ ॥ मन
मनीं मजा मान जो । कइ नोकर हो रहसे हुकम हजूर क ॥ राजी हुवा दिखा मन वि
पे । घुत्र पटेल हो करमी कह्यो मंजूर के ॥ क ॥ १४ ॥ ० ॥ मनहर ॥ अल्प पैरासी
वेस । उछासी कगाल माने । दिल मांहें जान ।मुज सम न कमावू हे ॥ खेड चीन्त रहे ।
पेडे खावे जो गुड के कधी । दूसरे को जाने खिन । मेंदी माल खावू हे ॥ लाखें का
उथेला सदा । होता है जिनो के आगे । उन को कथा जाने नागे । जन्म के गमावू है ॥
अरल की लट ओर । अंगद वाबुर जानो । सागर सक्कर खानो । अमाल या पोमावू है॥
१ ॥ ० ॥ ढाल ॥ इम सुणी कोधा तुरी हुइ । पगथी हो उठी शिर लगी झालके ॥ क॥
अरर अकारज मोटो हुयो ।आयो वीसे हो अव म्हारे काल के ॥ क ॥१५ ॥ अर दुष्ट इण
कारणों। थे कीनो हो अवलाथी कपट के ॥ फसांइ इहां लायेन । जिम सीसर ने ग्रह घा
ज झपट के ॥ क ॥ १६ ॥ अरे दुष्ट निफल तू इहां थकी । विन कारण हो मुज किम
सताय के ॥ ते कहे हु जावू नही । कधी घडथी हो शिर होवे जुदायके ॥ क ॥ १७ ॥
जो तू इहासे जासी नहीं ॥ तो फोडस्यं हो अवी म्हारो सीस तो । इम सुणी से डरपी

यो । कहे धाइ हो तुम मत करो रीसके ॥ क ॥ १८ ॥ में कह्यो तुम मुख भणी । थांरे
हो नहीं आयो दाय ग ॥ तो थेंइ दू खीया हुसो । इण मांहे हो म्हारो कांइ जायके ॥क
॥ १९ ॥ इम कहीते उठ चल्यो । धाडा के हा दियो तालो लगाय के ॥ पटलने जाइ क
या । त सुणने हो कछु गिणती न लाय तो ॥ क ॥ २० ॥ मुझ वशमा आइ पडी । कर
स्यूंहा एक क्षिणमा वशतो ॥ तीजा हुल्लाल सीलरासनी । युंग ढाल्ज हो कहे अमोल
शीलसततो ॥ क ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ लीलावती चित चिन्तवे । धास पडी कूवध ॥ अ
म शालथी नीसरी । भाभर में पडी अन ॥ १ ॥ आगे कीसो होसी माहेरो ॥ शील रह
मी किण पर ॥ आत्मघात रखे नीपजे ।अहो दैव कीजो खेर ॥ २ ॥ निशा पडी तम व्या
पीयो । कोइ नहीं तस पास ॥ एकान्त स्थान बेठकर । मन में करे विमास ॥ ३ ॥ इण
भव ता कीधो नहीं । स्वपना में अन्याय ॥ पर भवनी बीतक कथा । जाणे श्री जिन रा
य ॥ ४ ॥ स्वपन' में नहीं जाणती । नहीं सुणी ऐसी बात ॥ ते दु ख म्हारो जीवडो ।
भु कहे साक्षात ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ री ॥ ललित छन्द ॥ जगत् पति प्रभू सरण था
यरा । एसां वक्तमें तूही माहरो ॥ सज्जन साथ तो सर्व छूटीयो । अरर कर्मने सुख छूटी
या ॥ १ ॥ राज साथधी सब दूरी रही । सुखकी वातता स्वमसी भइ ॥ किणरीं सहायता

माहेरें नहीं।अरर गति केहवी माहेरीयइ ॥२॥ दुष्ट शत्रू की किम बिगडी नीति । क्षसी जा
तिकी नहीं ऐसी रीति ॥ भाडायती जिसो उठ आवीयो । अरर शूराना सग भगावियो ॥
६ ॥ प्राण के पति सारना करी । रासी ने समय गया पर हरी ॥ न जाणो किहा जाइ
ने वस्या । अरर कर्मथी दू खम फस्या॥४॥कमी एक कोसतो चालवातणो। काम न पड्यो
हिवे किम चालणो ॥ वनमा वास तो किम करो नाथजी । हिवणा कोनहै आप साथजी
॥ जराक वायू थी शीत लागती । अब शीतनो किस्तरे भागती ॥ तनक तापक्षायीस्याम
हावता । हिव किण परे धूप खोवता ॥ ८ ॥ सयन करता सदा सुख माल गादीये। हिवे
रहवा भणी कुण जगा दीये ॥ यों परदेशा तणा दु ख छे घणा । क्व पार होव सी अहो
आपना ॥ ९ ॥ इष्ट देव से पेहीर बीनती । राजा साहेब ने दु ख होवो मती ॥ सहाय
उनकीसदा कीजिये ।गरीब अबला की खबर लीजीये ॥१०॥ धर्म शाल मां गहू जो आव
सी । खान पान की वस्तु लावसी ॥ मुझे न देखसी तो खेद पावसी । अरर सेह तणे
मने सां फावसी ॥ ११ ॥ कुलंछनी कवा मने जो जाणसी । किसी कल्पना मने ते आण
सी ॥ सस्प भेदनो कुण बतावसे । अरर दर्द तास कुण मिटावसे ॥ १२ ॥ इम कल्पना
अनेक आवती । मोहणी बसे छाती भरावती ॥ सेसले गेहमां खड वड तो हुइ । ऊपर

नोल कोल फिरख्या अइ ॥ लीलावती सुणी धैर्य मन धरी । इण घर माहे ने कोरहे खरी
॥ १३ ॥ द्वार ढिग रही उच्चश्वर कही । कोण सदन में जवाव न वइ ॥ बहु वार इम
सती पुकारीया । उत्तर न मिल्यो धैम धारीया ॥ थर २ धूजीये अग जेहनो । शरर
छुटीयो पसीनो वेहनो ॥ ज्वर अगमा तात्क्षिणे चढी । धूजती एकान्त जाय न पढी ॥
१५ ॥ समुद्र सारखी तरगो आवती । दु:ख भय थकी उर धडका धती ॥ दुशाला विषे
अंग छिपावती । ज्ञान जोगसे मन समजावती ॥ १६ ॥ भूख प्यास तो लागी अति
घणी । किणने कह दु:ख कुण तिहां धणी ॥ पूरा कृत पाप उदय आवीया । अरर मने
तेही आइ सतावीया ॥ १७ ॥ अर्हंत सिद्धन साधुजी तणा । धर्म आसरो म्हारे घणो
॥ एह सकट प्रभू वगी निवारजा । गरीब अबलानी अर्ज धारजो ॥ १८ ॥ तिउ खन्ड
तिहू ढाल ए भनी । ललित छद मे सती नी कथनी ॥ अमोल ऋषि कहे आगे सांभलो
। मुकद राम का मन को आमलो ॥ १९ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ धाडापट खुलवा तणो । सुणियो
सती अवाज ॥ चिन्ते गेंदु आवीयो । धैर्य आवी त्यांज ॥ १ ॥ हर्षी कहे भाइ कौनहे ।
मुकद कहे तवार ॥ भय म धरो को मन विषे । हू छू माम सिरदार ॥ २ ॥ लीलावती
कह भाइजी । चाकर म्हारो जह । अजु लगण आयो नही । खबर जाणो ते केह ॥ ३ ॥

नोकर आप पेठावी यो । ते में गेंवू काम । भेजो पजारे जोसवा । ते नहीं आयो आम ॥
४॥ कृप करी म्हारा परे । मिलावो मुज नोकर । मुकद राम तथ छर्पने । जवाब देवे क्षण
पर ॥ ५ ॥ ७ ॥ डाल ४ थी ॥ किण विध तिरसीरे चैतनिया थारि आत्मा ॥ यह ॥
सज्जन सुणजो हा । सत्यवन्त सतीकी मारता ॥ आ ॥ नोकर थाणा जोवाने हम ।
फिन्या घणा पजार ॥ धर्म शाला के प.से उभा । पत्ता न पाया लगार ॥ स ॥ १ ॥ एक
मनुष्य में जोवा भेजी । आयो हुं इहां चाल ॥ ते अथी तस जोइ लासी ।डे कैसी सहु ह
शल ॥ स ॥ २ ॥ लीलावती कहे भाइजी थाणो ।मनस्यूं में उपकार ॥ परपकार किया
धा भाइजी । सुखिया हूवे संसार ॥ स ॥ ३ ॥ पटेल मिष्ट पयण प्रकास सुम कृपा
धि सुख पासे ॥ जो म्हारो क्यो करसोतो । तुम आरम सुख पासे ॥ स ॥ ४ ॥
भूजी लीलावती मन मांहिं । सीतल पपन उपारे ॥ पतिवृता का वृतन भग ।।ते
हुक्म सिर म्हारे ॥ स ॥ ५ ॥ जो मुज लायक होणे सरीखो । भाइजी काम में कर थुं
॥ पचन थिचारी उपारजो भाइ । योग होसीसो आपरस्युं ॥ स ॥ ६ ॥ लम्पटी कहे
तिण माहे काइ । योगा योग न दीसे ॥ प्रिय म्हारा पर प्रेम धरीने । पूर्ण करो जगीस
॥ स ॥ ७ ॥ चमक्यो चित कु वयण सणीने । अग [illegible] ॥ डंडो विचार क

सातोंय । सबोध इण पर दीधो ॥ ८ ॥ अहो पटेलजी हो शूद्ध माइ । के कोइ अमलज
पाधो ॥ परस्त्री ने प्रिये घोलावो । जरा विचार न कीधो ॥ स ॥ ९ ॥ यह नहीं थाणो घ
र भाइ । केफ मे भूली आया ॥ परदेशी माणस हम उतर्यां । बोलण विचार न लाया ॥
स ॥ १० ॥ शुद्धमे आइ आँख उघाडों । यह घर देखो केहनो ॥ तुम घर तुम नारीने
ओलखो । मुद्रित खोली नयनो ॥ ॥ स ॥ ११ ॥ परस्त्री ने पर घर माही । यह वचन
न उचरिये ॥ दोष अठारा कह्या केफ का । ते करवो पर हरिये ॥ स ॥ १२ ॥ ❋ ॥
॥ श्लोक ॥ निद्रा हांस्य अप्रतीतं चिंत भ्रम । मूर्छो वर्चाल वचैल ॥ मोर्हे व्यासी मर्द
छक प्रेमाव प्रितीहीनी कैलह ॥ बुद्धि विनाश मुंक्त्स विकैल्ता कैमातूर ॥ धुंम्रण निर्य
पेरवस्य केफ दोष अष्टादश ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ मुकव कहे में अमल न पीधो । भाग
माजुम नही खाइ ॥मदन तणो म्हारे नशो चढियो । ते तुमथी उतराइ ॥ स ॥ १३ ॥
गाढा लिंगन करने म्हारी । मदन केफ उतारो ॥ मुजतन घरने सपत सहुनी । मालिकी
तुम कर धारो ॥ स ॥ १४ ॥ वार २ निर्लज्ज वचन सुण । सती क्रोधे प्रजलानी ॥ अरे
नीच तुझ लाजन आवे ।बोले अयोग जबानी ॥ स ॥ १५ ॥ इण कारण तू गरीब गाइने
। इहां लाइ फसाइ ॥ इसे रस्ते चल्यो पटेल्या । किम रहसी ठकुराइ ॥ स ॥ १६ ॥ तु

ज मे न लक्षण उत्तम नरना । ए नीच जात का कामो ॥ ग्राम पति परभी सहोदर । किम करा ग्रंथी हरामो ॥ स ॥ १७ ॥ सुकुन्द सय जरा गरम होइने छडे अगि सुणरी रपाणी ॥ म्हाने नीच यणायेछे पण । थारी होसी धूल धाणी ॥ स ॥ १८ पाछे तू पस्तावो करसी । थारो धान्यो थासी ॥ तिण कारण कर कहणी म्हारी । तो सु स हुन्जिन पासी ॥ स ॥ १९ ॥ लीलावती कह अरे जट तू । कू यचन मत सुनावे काला मुह कर निकल इहाथी । क्यों मुज मार्यो चावे ॥ स ॥ २० ॥ मुकन्द कहे क्ष म्या कर हिवणा । ढाल चौथी में जावू । इम कही गयो मुकन्द बाहिर । कहे अमोल आगे सुणावू ॥ स ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ द्वारे कुल्य लगायने मुकन्द गयो निजघर ॥ लीलावती तिण समे । फिकर पिशाच लियो घेर ॥१ ॥ सकल्प विकल्प चितहूवो । नयन छूटी जल धार ॥ दु ख हृदय मावे नहीं । उमगी निकले बहार ॥ २ ॥ किहा पीयर किहा सासरो । किहा सहाय करणार ॥ मार्ग में अण चिन्तीयो । पडीयो दुःख महा भार ॥ ३ ॥ दु ख पेसो नहीं सह सकू । करुं किम भगवान ॥ आत्म हित्या करता थकां । भवर होवू हैरान ॥ ४ ॥ इम चिन्ता करता थकां । निद्रा आइ तेवार ॥ रात्री गइ रवी प्रगट्यो । करियो धर्म विचार ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ५ मी ॥ मुज विन तड़ो अन

सती सिरोमण साची । काची नहीं लगार ॥ आं
धारो साहिब ॥ यह ॥ सुणो सज्जन सती सिरोमण साची । काची नहीं लगार ॥ गणी साहेब की सघर जो करणी । कि
॥ प्राते गेंद धर्म शालमा । मनमे करे विचार ॥ गणी साहेब की सघर जो करणी । कि
हां मिलासी करतार ॥ सुणो ॥ १ ॥ ग्राममे फिर्यां घणी चोकस कीनी । पूछयो घणा
थो विचार ॥ कुबुद्धि धी डरे सहुमाणस । न कह्या किण समाचार ॥ सुणो ॥ २ ॥ ० ॥
छपय ॥ कुबुद्धी नम नरजेह । तेहने शरम न आवे ॥ धन जोबन के जोर । तोरं अभि
मान जणावे ॥ अकृत्य करे न डरे । लडे लाजमत से जाइ ॥ लाजवत शरमाय । जाय
ते अधिक पोमाइ ॥ नागा से आगा रहो । जो यश सुख की आस ॥ नित्यानन्द वर्ते
असेल । तोड कुबुद्धि की फास ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ त्रिन चख्या परगाम सणीत ।
। चाल्यो जोवा काज ॥ अन्य ग्राम का दाना नरथी । पूछे कुल ग्राम समाज ॥ सुणो ॥
३ ॥ वृद्ध दाखे तिण ग्राम के मांहीं । न्याय नहीं है लगार ॥ मुकन्द पटेल्यो
जार लंपटी । काम तेहने अकत्यार ॥ सुणो ॥ ४ ॥ अङ्गिन्त आकार बताया
तेहने । ओलखीयो तिणवार ॥ अरे दुष्ट तेहीज कु बुद्धि । मे तबही जाण्यो विचार ॥
सुणो ॥ ५ ॥ अबे सुस्ती को अवसर नाहीं । करणो घणो उपाय ॥ निनक हलाल करु
इण अवसर ॥ जे पाल्यो मुज ताय ॥ सुणो ॥ ६ ॥ इम निश्चय कर शिघ्र तिहांथी

कुल्ग्राम आयो तेह ॥ छिप कर रहियो ।किण ने कहियो । हिवे लीलावती गत केह ॥ ७ ॥ ते दिन ऊगा पटेल मूकन्दे । दासी लीसी बुलाय ॥ बूढी कूडी रुडी सेुटी । वेररम्य कतरी खाय ॥ सुणो ॥ ८ ॥ लालच देइ कहे वाडा माहेली । नारी ने तु समजाय ॥ म्हारा वश मा शिघ्र थाय । तू तेसो कर उपाय ॥ सुणो ॥ ९ ॥ भाजन भोगवया थक छुइ छे । श्रेष्ट लेइजा आहार ॥ और माँगे सो मंगाइ दीजे । जिम घर मुज पर प्यार ॥ स ॥ १० ॥ भोजन थाल रसाल लेइने । चाली बुढी हर्षाय ॥ डगमग करती मस्तक धुजावती । आइ नोरा माय ॥ सुणो ॥ ११ ॥ द्वार शब्द सुणी डरी लीलावती । रखे दुष्ट ते आय ॥ पण बुढी डोकरी वेखीने । धैर्य मनमां लाय ॥ सुणो ॥ १२ ॥❀॥ श्लोक ॥ धुर्ते वेश्या वैको वन्ही । अँही नारी थेंद्री फलम् ॥ व्यापारी वृती धनवमस्त । पर शोभित अतश्च विष ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ सती पास वृती आइ बेठी । ऊंच वचन बोलाय ॥ वच्चवय वारक तस जाणी । सती दावी कही वतलाय ॥ सुणो ॥ १३ ॥ इण सकट मा हे दादीजी । आपको आसरो मोय ॥ इण वाडाथी मुक्त करावो । औरन वाच्छु कोय ॥ सुणो ॥ १४ ॥ हु छु आपकी धर्मकी पुत्री । लज्या रखो माय । इम कही रुवती पगे पडी कहे॥मूज नोकर वो मिलाय॥सुणो॥१५॥ डोकरी बोले खारक तोले।पुत्री मतकर तु स।

धैर्य धरत् जराक मनमे ।सब आपूं तुज सुख ॥सुणो१६॥थारो मॅन मान्यों सह्हु करस्यू ।रीव मत मुज पुसी॥उठबेगीलेशीतल्जलप॥मुख धोले पेलीयत्री॥सु॥१७॥मन गमतापक्वान लाइ् छुाते मुक्त डर छोड॥थोडी जीवने कर ममाधी॥फिर पूरुं तुझ कोड ॥ सु ॥१८॥ सती कहे मुज खाणो पीणो । सूजे नहीं इण ठाम ॥ पहिली मुजने इहां थी निकालो । जिम पामू आराम ॥ सु ॥ १९ ॥ कहे डोसी में कह्यो तुज पहले । चिन्ता न करणीं लगार ॥ थारो कह्यो में तो जब करस्यू । कर पाहिलां थे अहार ॥ सु ॥ २० ॥ पाव पडी कहे लीलावती । मा तुझ कह्यो क५ प्रमाण । तत्क्षिण मुख धो खावा बैठी । गले न उतरे धान ॥ सु ॥ २१ ॥ डोसी मुख अवलोकी बोले । तु दु खी दीखे अपार ॥ पण म्हारा हुकम में चालीतो । दु ख न रहसी लगार ॥ सु ॥ २२ ॥ इम मीठी२ वात बणावे ।सती समजे सत्य सब । प्रेमाद ढाल कही ऋषि अमोलिख । सुणो डोसी गत अब ॥ सुओ ॥ सुणो ॥ २३ ॥ ● ॥ दुहा ॥ करजोडी लीलावती कहे । हुकम फरमावो सोय ॥ ते हु खुश होइ करुं । जो मुज लायक होय ॥ १ ॥ हर्षी तब वृद्धिका भणे । शुण शाणी हित वात । इण मामका पटल्के । राजा तुल्ये न आस ॥ २ ॥ रुपतो माधव सारिखो । प्राक्रम भीम समान ॥ शूर सिंह समानहें । कलाए गुरु अभिधान ॥ ३ ॥ गज गाजी, वाहण

घणा । नोकर केइ हजार ॥ और सुख सपती छे घणी । करो तेह भरतार ॥ ४ ॥ फिर भवा पोडो पिलगमे । करो नित्य नव सिणगार ॥ काम कवा कुछ मत करो । लूटो मजा ससार ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ॥ ६ठी ॥ यातो नाम धरावे माजीरे ॥ यह० ॥ इम डोकरी की सुण वाणीरे । लीला वती क्रोधे भराणी ॥ म्रास सुख में को थूकी दीधोरे । कुल्लो पाणी को कीधो ॥ १ ॥ दूरी फेंकी दीवी ते थालीरे । आख्या माहे छाइ लाली ॥ थर२ अग धूजण लागीरे । निशक बोले ज्यों लागी आगीरे ॥ २ ॥ में तो तुजने जाणती डोसीरे । कांइ अक्कल थारा मां होसी ॥ बूढी नी बुद्धि गइ बूडीरे । तूतो निकसी अतिही कुडी ॥३॥ मेतो जाणती तुजने माजीरे । म्हारो जीव थयो पेखी राजी ॥ या दाना पणा को डर लासीरे । मुज नै इण सुख थासी ॥ ४ ॥ एतो सज्जन पनो करसीरे । पर भवको डर दिल धरसी ॥ होसी पुण्य पाप जाणन हारीरे । दया लासी मन मझारी ॥ ५ ॥ तेतो सर्व धात हुइ ऊंदीरे । तूतो निकली कुबुद्धिनी कूंडी ॥ जे म्हारे हुती आसारें । ते तो पडिया अवला पासा ॥ ६ ॥ खोटा कर्म मांहे मन थारोरे । चढालणी सरीखो जमारो ॥ इण धन्दे कठास्युं लागीरे । तूए बुद्धि किम थारी जागी ॥ ७ ॥ पेसो दुती पणो करसीरे । यो पाप किहां जाइ भरसी ॥ साठी में बुद्धि थारी न्हासीरे । इण कारण ली

नी कोठी ॥ ८ ॥ घोला माहे पड गइ धूलीरे । तुंतो पर भव को घर मूला ॥ त्वचा नन की ल्टकाणी । थारीं अकल हुइ धुल धाणी ।। ९ ॥ वचन कहाडती नही शरमाइरे । थारी जिभ्या किम चली थाइ ॥ दानी तू नानी स्यु खोठीरे । आगे भव मा उठासी पोठी ॥ १० ॥ थारो मुख देख्या पाप लागेरे । थारों नाम लिये दु ख जागे ॥ इण कारण मुख कर कालोरा दे जल्दी इहांथी टालों ॥ ११ ॥ ते डोसि कहे रिसाइरे। गाल्या क्यू दे व शाणी थाइ ॥ इण माहे म्हारो काइ जासीरे । थरा किया तूही पासी ॥ १२ ॥ में कही तुज सुखकी वातोंरे । थारा कर्म मे लिखीछे लाता ॥ तूतो छिवे घणी पस्तासीरे । जय थारी पूरी कुन्दी थासी ॥ १३ ॥ में तो तुज ने सुख देवा आइरे । तूंतो आइ छे दुख लिखाइ ॥ में तों चहाती थारो सारोरे । कर्म आगे किणरों वारो ॥ १४ ॥ लीलावती कही रीसाइरे । घड २ मत कर बूढी थाइ ॥ थारा वयणे मुज तन छीजेरे । तूतो मुखडो वन्ध कर रीजे ॥ १५ ॥निकले नी इहा थी वेगीरे । के म्हारो जीव तुं लेगी ॥ विनवो लाया क्यों आइ रे । किण बुढी तुजने पठाइ ॥ ११ ॥ बुढी कहे या में चालीरे। पाछे फोड जे थारी कपाली ॥ थारा जिभ्या तणा फल लेसेरे । देखे थारी गुमराइ किम रेसे ॥ १७ ॥ इम कथा तू नही समजेरे । पटेल साथे जूता फाग रमजे । अबी पटेलजी इहां आ

सिरे पारी गुमराइ सथी गमासी ॥ २८ ॥ डोसी मुख मचकोडी चालीरे । रीसे धूजे अग न कपाली ॥ याडाने तालो लगाड्ने । मुख घड २ करती जाइ ॥ १९ ॥ यह काया डाल प्रकाशीरे । हिवे धुडी लगत्या लगासीरे ॥ पहे अमोल सील सहाइरे।आइ सहु खिसाटल जाइ ॥ २० ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ मुकुन्द पटेल निज घर विषे । घणिया मनका राम ॥ लीलावती मरघा भली । अधिको लामो चाव ॥ १ ॥ ते तले आवी डोकरी । घडती २ तिण पास ॥ उत्सुक हो पुछे मुकुन्द । वीतक करो प्रकाश ॥ २ ॥ कोपासुर डोसी वदे । तेतो घडी उटेल ॥ मीठासे वश न हुवे । कून्दी कर पटेल ॥ ३ ॥ मनोहर। मीठी २ वाणी कही । उन्न २ उसे लही । कदर अधिक दइ । हित शिक्षा दीजिये ॥ मूर्ख त्यों त्यों अकडाय । लाने नहीं हित थाय । लडन सन्मुख थाय । तासूं काहा कीजिये ॥ ऐसे से काम क्ख । जान वूज पडे जय । निकालना कोइ डय । दूर डर रीजिये ॥ नहीसो न डर वासू । विन मोल पहे तासू । मधर हु करे तासू । ठक्कर हु लीजिये ॥ १ ॥ ● ॥ तूतो जात मरदकी । ते अबला कहवाय ॥ तुज सरीसा घली भणी । सहजे वश ते थाय ॥ ४॥ इम लगती लगाधने । धृद्धिका निज घर जाय ॥ लीलावती रीजाघमा।मुकुन्दराय सज थाय॥

५ ॥ ॐ ॥ ढाल ७मी ॥ क्षमा व्रत जोवो भगवत नोजी ज्ञान ॥ यह ॥ खुर मदन ६
रावीयोजी । पीठी अग कराय ॥ उगटण मजन करीजी । भाले तिलक लगाय ॥ दुष्ट
जन ने न छाडे दुष्ट स्वभाय ॥ आ ॥ १ ॥ जरी जर तार भयों सज्योजी । सहु अगे पो
शाक ॥ भूषण हेम मणी जड्याजी । पेहरी हुआ चाक पाक ॥ दुष्ट ॥ २ ॥ तेल सुगधी
अतर आदिजी । फूल गजरा गल पेहर ॥ तंबोल मुख राचीयोजी । हुवो ते इन्द्रनी पे
र ॥ दुष्ट ॥ ३ ॥ छिब विन कव आथमेजी । पट पटी लागीरे मन ॥ घटिका वेरण हो
रहीजी । नलपी रह्यो तस मन ॥ दुष्ट ॥ ४ ॥ कामातुर व्याकुल थयोजी । तन मन नरहे
ठाम ॥ ततलेरवी पश्चिम छिप्योजी । आयो सादामें जाम ॥ दुष्ट ॥ ५ ॥ लीलावती सम
की घणीजी । तत्क्षिण हुइ भावधान ॥ थर २ अग कम्पी रह्याजी । मनमा अर्हत ध्यान
॥ दुष्ट ॥ ६ ॥ मुकन्द ऊभो स मुखेजी । सती नहीं सामे जोय ॥ ॥ क्षिणन्तर ते बोलि
योजी । कर जोडी नमी सोय ॥ दुष्ट ॥ ७ ॥ मुज उभा वार हुइ घणीजी । तुम न बो
लावो कम। इम निर्दयी किम हुइ रह्याजी । धरो न जरासो प्रेम ॥ दुष्ट ॥ ८ ॥ जो अप
राध मुज थी हुवो तो । कजि शिघ्र प्रकाश ॥ विना गुन्हे रुसी रह्याजी । भली न लाग
हास ॥ दुष्ट ॥ ९ ॥ कोपातुर सती हुइ जी । बोले सुण चन्डाल ॥ सन्मुख मत आ

म्हारे जी । जो चहावे खुश हाल ॥ दुष्ट ॥ १० ॥ पांच पड़ी मुकन भणेजी । इम निष्ठूर
मत थाय ॥ प्रिय दयाकर माहेरीजीं । नहीं तो मुज जीव जाय ॥ दुष्ट ॥ ११ ॥ मांगे
सो अर्पण करु जी । तुजथी दूजी नवात ॥ सती कहे मत चवालिये जी । देअे मुजने घ
छात ॥ दु ॥ १२ ॥ ज नर वचना पायहाजी । लापर ते कहवाय । सच कहे देशे मांगी
यो मुज । पदलसी तो नहीं थाय ॥ दुष्ट ॥ १३ ॥ इम सुण मुकन्द खुशी हुवो जी ।
जाणे ललचाणा है मन ॥ कहे सांगो जो चाहीये तुम । पक्को म्हारो वचन ॥ दुष्ट ॥ १४
॥ धन वस्त्र गहण तणी जी । म्हारे कमी नहीं काय ॥ हूं गुलाम छूं तुम तणो जी ।
कहूं सो देवु लाय ॥ दु ॥ १५ ॥ सती कहे भाइ मुज भणी जी। धन सपत नहीं चहाय
॥ इण स्थान थी कहाडी ने मुज । चाकरने दे मिलाय ॥ दुष्ठ ॥ १६ ॥ जो तूं साचो
वचन को छे । तो इचो देमोय॥ मर पाइ वीरा सहू में।कहूं छू पग पड तोय ॥ दु ॥ १७
॥ इम सुण पटेल मुरजावीयो जी । कहे किम बोल एम । में दु:खियो हुयो घणो अत्र ।
घर थोडो सो प्रेम ॥ दुष्ठ ॥ १८ ॥ सती कहे सुखी थो न हुवे जी । ज्यावा पासी दु:ख
॥ जिन २ छल कियो सती तणो जी। जो तू तस सन्मुख ॥ द ॥ १९ ॥ सत्रण का वश
शिर गयाजी । पशोस कियो नारी वेस ॥ कीचो कीचक को नीकल्ये। जी । मणी रथ

मरण लहेश ॥ दूह ॥ २० ॥ इम घणा दु ख पाइयाजी । परस्री ने मयोग ॥ तुज हेत
कारण मे करूं छु । मत कर यह मन्योग ॥ दुह ॥ २१ ॥ पटेल कहे हु भोगवुगा । तुज
कारण सहु दु ख ॥ पग पडु हुं थावरेदे । गाढा लिंगन सुख ॥ दूह ॥ २२ ॥ नरमाइकी
धी घणी में । पडीछे मुज वश आय ॥ गपोडा में समजु नही मे । मान के नहीं मुज
पाय ॥ दूह ॥ २६ ॥ अब हूंतो रह सकू नही छू । कर हूंतो सत्कार ॥ सीधाथी माने
नही तो । पेहि मूज आपार ॥ दूह ॥ २४ ॥ देखा सहायक कुण हुवे तुज । इम कही
पकडन जाय ॥ भैय बाल अमोल कहेजी । जामो सहायक कुण थाय ॥ दूह ॥ २५ ॥
॥ दूहा ॥लीलावती चिल्लवाइ । उठवे पाछा पा। ॥ सीलरक्षक सहाय हुइ । देवो दूहथी
बचाय ॥ १ ॥ गेंदू हूतो हूंकडो । हाक पिछाणी तेह ॥ बाइ साहेब इण स्थान मे । दूह
कोइ दू ख देय ॥ २ ॥ तत् क्षिण भीत उल्लंघने । आवी पडीयो माय ॥ सोंटो मारी मू
कन्द ना तत क्षिण दीधो गुडाय ॥ ३ ॥ अरर कर नीचे पड्यो । गेंदु बेठो उपर॥ थपड
मुकी लातथी । कुस्ती करी भली पर ॥ ४ ॥ मुकुन्द उर घर को पड्यो । प्रगटयों कोइ
देव ॥ शुद्ध बुद्ध सहु भुली गयो । पाप तणा फल लेव ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ८ मि ॥ में
तो म्हाके पीयर चाल्या ॥ यह ॥ लीलावती इम जों हर्षाइ । ए कूण आयो चलाइजी ॥

इण वेला मृत प्राण बचाय । सील सहाइजी ॥ माविंयण सुणजोजी । पाप तणा फल क
दया माइ । कोइ मत लुणओजी ॥ स आं ॥ १ ॥ मुकुन्द तणी सब दया आइ । रखे
मारे मरजाइजी। कहे सती माइ छोडवोइणने ।दया लाइजी ॥ स ॥ २ ॥ इश्वरी हुकम
राखण कारण । सेहने छोडी दीधोजी ॥ तत क्षिण पाय पड्यो आ सती ने । बोले इण
विधोजी ॥ स ॥ ३ ॥ माताजी यो गेंदू छूं मे । भेटी आणन्द पायो जी ॥ जो लीला
घती घणी हर्षाइ । भलो भाइ आयो जी ॥ स ॥ ४ ॥ किम मुजने जाणी इण जागा ।
प्राण थें महरा बचायाजी । गेंदु कहे इहा बात करण को । अवसर नायाजी ॥ स ॥ ५
॥ पटेलनी पागडी खोलीने । मुसक्या ऊधी बान्धी जी ॥ लटका दियो वाडाने बाहीर
। वृक्षनो फेन्वी जी ॥ स ॥ ६ ॥ ततक्षिण तुरी सज्ज कराइ ॥ सती उपर बेठाइ जी ॥
भरत पुर के मारग चाल्या । देरन काइजी ॥ स ॥ ७ ॥ दिन ऊगा मुकन्दना सज्जन ।
घरमे तस नही जोइ जी ॥ ढूंढ्यो ग्राम में पतो न पायो । मिस पुछ्याइ जी ॥ स ॥ ८
आया बाडा में तो नहीं पायो । रक्त पड्यो तिण ठायो जी ॥ मन माहे घणो चैम भरा
या बाहिर आयो जी ॥ स ॥ ९ ॥ वृक्ष शाखा प लटकतो मुकन्द । एकनी द्रष्टी आ
योजी ॥ हाक मारी सहुने बोलाय । तेह बतायो जी ॥ स ॥ १० ॥ दोडी आया जो

अश्चर्य पाय । घान्धीने कुण लटकाया जी ॥ खोलता गाठ खुले नहीं ॥ तोडी नीचे ठाया जी ॥ स ॥ ११ ॥ वेशन नहीं एक मुख्यमा रहीयो । मारथी अग वन्ध गइयोजी ॥ थेसतथी शुद्ध किंचित नाहीं । वडर रहीया जी ॥ स ॥ १२ ॥ बाबा भोपा बैद्या बुलाया । जोतपी जोगी आया जी ॥ निजर का सहू मत प्रमाणे । दोष बतायाजी ॥ स ॥ १३ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ जोतपी ग्रह देखी । मेख मीन रास पेखी । अग्गुली के बेढा गिणी । कू ग्रही बतावेहै ॥ नाडी ग्रही वैद्य जोय । वायू शीत उष्नप होय । बावा जोगी डोरो बाधे । व्यंतर सतावे है ॥ फकीर तो जिन्द केवे । भोपा धुणी आखा देवे । चन्डी मन्डी भेरु भुन । कइ सका लावे है ॥ सर्व धन केरी आस । सत्यासत्य करे माकस । अमाल ज्ञानी ढोंग वेस । कधीन भरमावे है ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ झाडा डोरा ओपधी मतर । नकुला करवा लागाजी ॥ भाग्य जोग तिण आख उघाडी । पूर्व पुण्य जागा जी ॥ स ॥ १४ ॥ घरे उठाइ निणने लाया । हिपाजत बहुती कीधी जी ॥ पाप तणा फल हाथो हाथ । मुक्ते इण विधीजी ॥ स ॥ १५ ॥ घणा दिना में [illegible]की थाइ । पण ऊठण नहीं पाइ जी ॥ गदू हाथका सोंठा खाया त । साले घणाइजी ॥ स ॥ १६ ॥ घणा मास मा हुया साजप । पण नहीं छोडी अन्याइ जी ॥ अंतेन काल से सगत पाप की ।

किम भूलाइ जी ॥ स ॥ १७ ॥ ज्ञानी जन ए वातसुणीने । पर स्त्री सग पर हरसी जी । ते दोनों लोके सुख भोगवी । जगो वधी तरसी जी ॥ स ॥ १८ ॥ धन्य २ सती लीलावती ताइ । सकष्ट मे स्थिर रहाइ जी॥ गेंदू पण धन्य सेवक साचो । हुवो धक्के स हाइ जी ॥ म ॥ १९ ॥ मुक्द तो इहा रहे सुख मा । सती गेंदू मग जाव जी ॥ मर्द गालण ए ढाल अमालख । सहूने सुणावे जी ॥ स ॥ २० ॥ ● ॥ दुहा ॥ सती तुरग गेंदू पगे । भरत पुर मारग जाय ॥ तम गयो रवी प्रगट्यो । तव तस चित स्थिर थाय ॥ १ फिर कहे लीलावती । में तिण घाडामाय । किम जाणी गेंदू कहो । ते कही बीती तांय ॥ २ ॥ घजारथी आइ जोडया। आप नहीं पाया मुज ॥ चौकस की घणी ग्राम में । कोइ न दाग्यो गुज ॥ ३ ॥ परगाम थी जाणियो । पटेलकी कू चाल । इहा आयो निशी रया । सुणी में आप पुकार ॥ ४ ॥ सेवा साधी शक्ती समी । ते सहु जाणा माय ॥ भ लो किया भाइ क्षिस थी । लीनी मुज बचाय ॥ ५ ॥ इम घाता करता थका । आया उदरू आगार ॥ सुखडी दोनो भोगवी । पीयो जल चित ठार ॥ ६ ॥ आगे जावण सज्ज हुवा । तेतल कर्म पसाय ॥ उपसर्ग अचिन्त उपजे । सुणो श्रोता चितलाय ॥ ७ ॥ ● ॥ ढाल ९ मी ॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ यह० ॥ देखो कपटीरे दुष्टी नी दुष्टता ।

कपटी घपटी मारे जी ॥ अयोग्य काम जो ते करता थका । मन सका नहीं धोरजी ॥ वि
देखो ॥ १ ॥ तिण समय विजय पुर नामे नगर थी । दुमुख नो मसी जेहो जी ॥ वि
स्वामी बीजा आदमी साथले । जावे भरत पुर तेहो जी ॥ देखो ॥ २ ॥ अनुक्रमे
फिरता जी चौकस कारणें । किहा पतो नहीं पायो जी ॥ हार्यो थाक्या
फिरीने चालीया । होणहारने सायोजी ॥ देखो ॥ ३ ॥ चलता फिरताजी आया
जलागरे । तुरी चढी लीलावती जाइजी ॥ हर्ष्यो कुरुदत्त ए कुण अप्पछरा । सुन्दर
अद्भूत होइजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ निश्चय होसीरे यह लीलावती । चौकस कीजे जाइ जी ॥
जो निकले यह अपण ने चावती । तो सफली मेहनत थाइजी ॥ देखो ॥ ५ ॥ कहे सा-
थी थी उतावल मत करो । सहू जन चुपका रीजोजो ॥ चोकस करु में कला करी इहा
। ते सहु देखी लीजे जी ॥ देखो ॥ ६ ॥ साथी कहे जी हम बोला नहीं। तुम मन आवे
सो कीजेजी ॥ हम चाकर छाजी राज हूकम का । खुशी थी खबर करीजे जी ॥ देखो ॥
७ ॥ कूरुदत्त आयोजी तब सेरीता ढिगे । पूछे गेंदू थी तामोजी ॥ किहा थी आया जी
जावो किहा चली ॥ गेंदु उत्तर दे जामो जी ॥ देखो ॥ ८ ॥ कुरनामें गाम थी हम
इहां आवीया । जयती पुर जाणो जी ॥इण बाइरो पीयर छे तिहा । ले जाइ पहों चाणो

जी ॥ देखो ॥ ९ ॥ पुन गेंवू कहे तुम छो किहां तणो । किसो गाम चल जावो जी ।
हमने पूछो छो कहो किण कारणे । पछी भेद वखाणो जी ॥ देखो ॥ १० ॥ कपटी कुरु
वच कहे सिइ सुणो । भरत पुर थी हम आया जी ॥ रायजी भेज्या विजयपुर हम भणी
। जिहा चन्द्रसेण राय।जी ॥ देखो ॥ ११ ॥ भरतपुर नाम सुणी लीलावती । मनमें घ
णी हर्षाणी जी ॥ कुरुवच्छ सामें जोवे मुलकती । बोले मधुरी वाणी जी ॥ देखो ॥ १२
॥ भरतपुर थी आया भाइ तुम । जिहा सज्जन सेणराणा जी ॥ सुणी कुरुवच्छ हर्ष्यो अ
ति घणो । काम फते हुवा म्हाणाजी ॥ देखो ॥ १३ ॥ छा बाइ साथ सज्जन सेणजी ।
मूजने विजयपुर भेज्यो जी ॥ आप किम जाणो हम राजा भणी । ते कृपा कर कहज्या
जी ॥ देखो ॥ १४ ॥ लीलावती कहे तुम कुण तिहा तणा । ते कहे में फोज धारो जी
॥ म्हारे साथे ए माणस वइ । भेजीयो छे दरबारोजी ॥ देखो ॥ १५ ॥ बाइ तुहाराजी
नाम फरमावीय । सती कहे तुम नहीं जाणो जी ॥ सज्जनसेणजी काका माहरा।सुणीक
। वच हरखाणो ॥ देखो ॥ १६ ॥ कहे कुरुवच्छ में तो ओलख्या । तुम लीलावती बाइजी
ए दिसा देखी में मन चमकीयो । एकला किम रहाइ जी ॥ देखो ॥ १७ ॥ नेना श्रुत
हो कहे लीलावती । कर्म गत खोटी आइजी ॥ विजयपर पर ...
॥

गे निकल्याइ जी ॥ देखो ॥ १८ ॥ पत्तो नहीं छे श्री महाराजरो । हमे भरत पुर जाता जी ॥ तुम मिल्या सन्मुख ए चोखो हुवो । तिहा तो को नहीं पाताजी ॥ देखो ॥ १९ ॥ आपण सहू संग चाला भर पुरे । हुवो मुजने आधारोजी ॥ गेंदू पण जाणो होसी मजना । कपट पो कुण लहे पारोजी ॥ देखो ॥ २० ॥ सहु जन एकठा मिलिया हर्षथी । तीजा खन्ड नी दाखीजी ॥ ढाल विविधरस भरने ए कथी । अमोलख ऋषि भाखी जी ॥ देखो ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ कुरुदत्त हर्षी तदा । पकडी अश्वलगाम ॥ नेत्र आश्रु निमारतो । पाल करी प्रणाम ॥ १ ॥ अहोर घणो खोटो हुवो । पडी विपता आय ॥ होणहार होनव हुये । चाल नहीं उपाय ॥ २ ॥ अन फिकर नहीं कीजीये । चलिये अपणे गाम ॥ निहा तुम सुखथी रिजीये । काका काकी धाम ॥ ३ ॥ हु रजा लइ राज की । जास्यू चोखम काम ॥ चन्द्रसेण महाराजने । जोइ लास्यू ठाम ॥ ४ ॥ दिवस रह्यो अब थोडलो । करणो किहां विश्राम ॥ पहतो वन निहामणो । चलिये कोइ गाम ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १० मी ॥ आउखो टूटाने सान्धो को नहीरे ॥ यह ॥ कुरुदत्त कहे लीलावती भणीरे । चलणो पेलो कानी गामरे ॥ तिहा पहचान हे आपणीर । रात रहस्या तिण ठाम रे ॥ देखो कपटी तणी कपटाइरे ॥ कपटीने दया न लगारेरे ॥ आ ॥ १ ॥ घोडाने तत

क्षिण फेरीयेंरे । विजयपूर मणी कियो मुखरे ॥ स्यान करी माथी वारनेरे । सब जणा पाया सुखरे ॥ देखो ॥ २ ॥ गेंदू कहे ऊंवा क्यों चलोरे । यो मार्ग विजयपुर जायरे ॥ भरतपुर तो इदर रह्योरे । तुमको खबरहे की नायरे ॥ देखो ॥ ३ ॥ कुरुदत्त कहेरे मूर्खा रे । तुजेन खबर नहीं कांयरे ॥ हमतो हमारे गाम चालो थारे । थने आणो होतो आयरे ॥ देखो ॥ ४ ॥ मुजेन मूर्ख किणपर कहोरे । उदर भरत पुर नायरे ॥ में थघु वक्त प मार्गेरे । मानो जरा मुज वायरे ॥ देखो ॥ ५ ॥ कुरुदत्त तब कोपी कहेरे । चढ २ किण कामरे ॥ हम तो इणही रस्ते जावसांरे । तुजा घारे थारे गामरे ॥ देखो ॥ ६ ॥ गेंदू घभराइ तुरी कने गयोरे।हडपकडी लगामरे ॥ अहो सिरकार मानो म्हरिरे । फेरे तुरगने तामरे ॥ देखो ॥ ७ ॥ करुदत्त क्रोधातुर होइरे । धको देइ कियो दूरर ॥ साथी से कहे मारो इण भणीरे । यो करे घणी मगरुररे ॥ देखो ॥ ८ ॥ बाइ साहेब ने लेयनेरे । तु किहां भागी जायरे ॥ हराम खोर तु कोण हेरे । इम कहता मारण धायरे ॥ देखो ॥ ९ ॥ तब गेंदु चित चमकियोरे ॥ अरर हुवो खोटो कामरे ॥ विश्वास थी मार्यो गयारे । दगो हुवो सही आमरे ॥ देखो ॥ १० ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ कपट विहुणा मानवी । केम पतीरय जाय ॥ मयूर मुख मधुरो लवे । सांप सपूछो साय ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ यह छे शन

तणा मानवीर । साथ हे घहुला लोकर ॥ आपण तो रह्या पक्लारे । करणो किस्यो इहा थाकरे ॥ देखो ॥ ११ ॥ पाछो तो पग नहीं देवणोरे । जिहालग पिण्ड माहे जीवरे ॥ निमक हलाल इहा करूरे । पाड़ शर माहे रींवरे ॥ देखो ॥ १२ ॥ ऐंठो लेडने सामें थयोरे । देखा मार भूज कोणर ॥ तुम नारी ककण चुरवारे। मोठो मुज । फर ए त्रोणर ॥ देखो ॥ १३ ॥ इम दोनों लडवा लगारे । गेंदू एक ते अनेकरे ॥ मारी मस्तक में जोर थीरे । कुरुदत्त ने दियो गुडायरे ॥ देखो ॥ १४ ॥ सब उलटी पडया गेंदूपरे । मारी शिर ने मायरे । रक्त धार छूटी तवारे । गड्ढ पडया मुरछायरे ॥ देखो ॥ १५ ॥ कुरुदत्त ने साधय कियोरे । शीतल करी उपचाररे ॥ ऊठी कुरुदत्त क्रोधातुरारे । जोसे करे यों ऊचाररे ॥ देखो ॥ १६ ॥ मारोरे मारो दुष्ट नेरे । साथी वार तस केहरे ॥ हम म्हारी नक्षाम्यो तेहनेरे । ते पडी मुरदानी देहर ॥ देखो ॥ १७ ॥ कुरुदत्त खुशी हुवोरे । फेका दियो म्वतमायरे ॥ लीलावती इम देखनेरे । अतिही गइ घबरायेर ॥ देखो ॥ १८ ॥ विल २ ती वोले जोर थीरे । फोजदार करो इम केमरे ॥ किम मार्यो मुज आदमीरे । ठरो जरा करो क्षेमरे ॥ देखो ॥ १९ ॥ हु सावध करु तेहनेरे । तिण कियो मुजपे उपकाररे ॥ इम कही उतरण लगीरे । कुरुदत्त कह ललकाररे ॥ देखो ॥ २० ॥ चुप चाप

बैठा रहर । इम कहा अश्व चलायरे ॥ प्रीण रक्ष ए हुइरे । अमोल तीजा स्नन्द मायरे ॥ वेसो ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ वयण सुणी कुरुवत्त का । चमकी सती मनमांहि ॥ नोकर होइ माहेरा । किम बोले कियो यह अन्याय ॥ १ ॥ पुछे आहो फोजदारजी । बोले वचन विचार ॥ कहे स्पु हूं काका भणी । नोकर न्हास्यो मुज मार ॥ २ ॥ कोपातुर कुरुवत्त भणे । कुण हेरी फोजदार ॥ चुप जाप बैठी रहे । नहीं तो होसी खुवार ॥ ३ ॥ लीलावती घबरा गइ । अरर हुइ ये घात ॥ नहीं नोकर काका तणा । शत्रु तणा देखात ॥ ४ ॥ कूवाथी निकली करी । पडी समुद्र में आय ॥ धिकर कर्मए म्हारा । किस्यों क-रों जिन राय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाळ ११मी ॥ जय जिन राया २ । जय सद्गुरूजी धर्म ध तावा ॥ यह ॥ जोवो २ भाइ जोवो२ भाइ । कपटी कैसी करी कपटाइ ॥ आ ॥ रुवंती सती चिन्ते मन माइ । आगे आपणी गत कैसी थाइ ॥ जोवो ॥ १ ॥ एक आसरा यो तेमी विरलाइ । हे अर्हत अब सरण थाराइ ॥ जोवो २ ॥ कुरुदत्त तब साथी ने चेताइ । छोडी रस्ता ऊवट चालो मेरे भाइ ॥ जावो ॥ ३ ॥ रखे कोइ चोकस करे आइ । पत्तो आपणो लाग्या दु स थाइ ॥ जोवो ॥ ४ ॥ सहु जन रस्तो छोड चाल्याइ । सती मनने समजाइ ॥ जो ॥ ५ ॥ होणहार सो चूके नहीं । वक्तपर कोइ होसी सहाइ ॥ जो ॥ ६

अश्वर्य धर पूछ तिण ताइ ॥ तुम कुण मुजने ले जावो किण ठाइ ॥ जो ॥ ७ ॥ कुरु
दत्त तब खरी बताइ । कस्वरथर्य ना हम छा सिपाइ ॥ जो ॥ ८ ॥ सोंपसा विजय पुर
लेजाइ । ते तुमने पटराणी बणाइ ॥ जो ॥ ९ ॥ सुख भोगवजो तिहा नित्य थाइ ॥
सुण सती रोमांचित थाइ ॥ जो ॥ १० ॥ चिन्तें मुर्खणी में हाथे फसाइ ॥ गेवू वीथी
धात पहिलां फिराइ ॥ जा ॥ ११ ॥ जिनका दु:ख थी में घर छोड्याइ । ते दुःख म्हारे
आगे दोड्याइ ॥ जो ॥ १२ ॥ कुरुदत्त थी कहे अति नर माइ । अहो म्हारी दया जरा
करो भाइ ॥ जो ॥ १३ ॥ मैं तुमारो बिगाड्यो कुछ नाहीं । क्यों फसावो गरीब गाइ
तांइ ॥ जो ॥ १४ ॥ कृपा कर छोडी दो इहांइ । एकली रहस्यू जंगल मांइ ॥ जो ॥
१५ ॥ कुरुदत्त बोले जोस भराइ । हमतो नहीं छोडांगा कदाइ ॥ जो ॥ १६ ॥ पुन पग
पडे सती करे नरमाइ । अहो शिरदार करो इणी कृपाइ ॥ जो ॥ १७ ॥ कहे कुरुदत्त
क्यों बहर लगाइ । नहींछोडां२ कोड उपाइ ॥ जो ॥ १८ ॥ साथीने कहे अश्व चालो
दोडाइ । जरा दूरा चल काढांगा राइ ॥ जो ॥ १९ ॥ इम चलतां ग्राम खेडो आइ ।
फूटी धर्म शाल थी धाराइ ॥ जो ॥ २० ॥ उतरिया सहु जन तब त्यांइ । कुरुदत्त बि
छोना कर पोढ्याइ ॥ जो ॥ २१ ॥ मार्ग थाक ऊपर मार खाइ । तेहथी ज्यरं अग

लीलावती घेर्वी एकांत जाइ । दु खियाने किम आवे निद्राइ
गयो भराइ ॥ जो ॥ २२ ॥ पहिली तो पुरी गइ थी कष्टाइ । गेंदू वियोग तस घणा सालयाइ ॥ जो
॥ जो ॥ २३ ॥ रोवणो उमटी छाती भराइ । कुरुवच्च डरथी लेवे ढवाइ ॥ जो ॥ २५ ॥ इण
॥ २४ ॥ दुटोरे पाने पडी आइ । रखे सील मुज भांगे कवाइ ॥ जो ॥ २६ ॥ सूती चमकी वार२
जागी थाइ । इण लीलावती निशी खुटाइ ॥ जो ॥ २७ ॥ आगे गेंदू की सुणो कथाइ ।
ढाल रुंधे की अमोलख गाइ ॥ जो ॥ २८ ॥ ● ॥ दुहा ॥ रजनी शीतल व्यापी तदा ।
इन्दूप्रभा रण थाय ॥ गेंदू पडयो थो खेतमे । लागी तस तन आय ॥ १ ॥ शीतल थी
शान्ती हुइ । चेतन्यता सब आय ॥ हुइ बेठो चउदिश जुवे । विचार करे मन माय ॥
२ ॥ विश्वास घात करी पापीये । राणी जी भोलप जोग ॥ दु:खीया तो दोनों भया ।
पडयो अचिन्त्य विजाग ॥ ३ ॥ हिवे इहां सुरतावण तणो । अपणे अवसर नाय ॥ पतो
लगे राणी जीरो । जोवू हिवणा जाय ॥ ४ ॥ भेष बदलने चालीयो । जोतो ग्रामानु ग्राम
॥ पह कथा मत भूलजो । हिवे लीलावती काम ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १२ मी ॥ सुमतो
सदा दिलमें धरो ॥ यह ॥ दिन कर जब प्रकट भयो । कुरुवच्च हुवा होंश्यार ॥ श्रोता॥
ज्वर जोग चालण तणी । तनमें शक्ति नाय ॥ श्रोता ॥ कर्म तणी गती सांभलो ॥ कर्म

जघर ससार ॥ श्रो ॥ आ ॥ १ ॥ लीलावती का केकाण पे । कुरुदत्त ने बैठाय ॥ श्रो ॥ अश्व चलायो वेगथी । सनीने पगे चलाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ २ ॥ ककर काटा पग चुपे । चालता पग अथडाय ॥ श्रो ॥ ठोकर लगे रक्त नीकले । किण थी कह्यो नहीं जाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ३ ॥ मेहल गलिचा छोडने । चलण काम पड्यो नाय ॥ श्रो ॥ उघराणे पग चालणो । शिघ्र तुरी लराय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ४ ॥ चल२ जलदी चाल तूं । उपर सिपाइ को ताप ॥ श्रो ॥ थाकी घणी इम चालता । उपर थी पटे ताप ॥ श्रो ॥ ५ ॥ स्वेदे ततू भींजींया । सुरती गइ कुमलाय ॥ श्रो ॥ श्वास उरे मावे नहीं । अतिही गइ घवराय ॥ श्रो ॥ ६ ॥ पांव ऊठे नहीं जरा भरी । बैठ गइ तिण ठाय ॥ श्रो ॥ पांव प डी भणे सहू भणी । भाइ मुज थी न चलाय ॥ होभाइ ॥ क ॥ ७ ॥ एक पांव भरवा तणी । मुज में शक्ति नाय ॥ होभाइ ॥ कृपा करी मुज छोडीये ॥ रोइ कहे चिल वि लाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ८ ॥ कहे भट नखरा क्यों करे । सीधी२ चाल हो ॥ भाइ ॥ मोटा पणो इहा नहीं चले । पाछ२ धीरे हाल हो ॥ भाइ ॥ कर्म ॥ ९ ॥ कुरुदत्त कहे यों घोलो मती । यह है अति सुकुमाल हो ॥ भाइ ॥ मै पण हैरान हुवो घणो । काइ करणो भर काल हो ॥ भा ॥ क ॥ १० ॥ यो सामे मंदिर केहनो। इणमें ही करो मुकाम

हो ॥ भा ॥ मुजेने साता हुयां थकां । काल जास्यां निज गाम हो ॥ माइ ॥ कर्म ॥
११ ॥ फूटा देवालय विषे । रह्या सहु जन आय हो ॥ भो ॥ कम्बल ओढी कुरूच
पड्यो । सती बैठी एकान्त जाय हो ॥ भो ॥ क ॥ १२ ॥ पेट पूरण ने कारणे । चन्द्रा
न नी करी तैयार हो ॥ भो ॥ वेंधी मसाला घृत पुरी । कांही न लागी वार ॥ भो ॥
क ॥ १३ ॥ शुद्ध थे वुहा ॥ हस्तना पुर से ऊपनी । चन्द्र तणे अनुहार ॥ अभि सेजा
पोढती । उपर दे प्रहार ॥ १ ॥ क्षिण२ सोवे क्षिण ऊठे । ले निद्रा न लगार ॥ तेतले
भोगी आवीया । गहणा लाया चार ॥ २ ॥ ● ॥ ढाल ॥ लीलावती ने कारणे । थाल
करी तैयार हो ॥ भो ॥ घृते पुरी बाफलो । व्यंजनादी संस्कार ॥ भो ॥ कर्म ॥ १४ ॥
शीतोदक छाणी करी । लोटो भर दियो तास हो॥ भो ॥ लीलावती जीमण लगी । पण
गले नहीं उतरे ग्रास हो॥ भो ॥ क ॥ १५ ॥ गांठ गले हुइ उष्नथी । थाक्या दुःखे शरीर
हो ॥ भो ॥ थोडो खायो बड जोरी थी । ऊपर पीयो नीर हो॥ भो ॥ क ॥१६॥ पेट भरी
सहु जीमीया । मिल बैठा एक ठाम हो ॥ भो ॥ चिलम तम्बाखु फूकतां । करता बात
हुवा काम हो॥ भो ॥ क ॥ १७ ॥ ❁ ॥ इन्द्र जिन ॥ नाचत कुदत ताल बजावत। खु
शी होतहे सब कामक्षा ॥ दोडत पोडत मोडत तोडत । लावे कमाइ परदेश से भक्षा ॥

राय शाह वादस्याह पेगम्बर हुक्म उठावत वडे २ रमा ॥ स्याल रसाल पसदे करे जय अमाल पढे पेटम अम्रा ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ लीलावती सती एकली । आगली करती फिकर ॥ श्रो ॥ अघ काइ हासी माहरो। सुणती तेहनी जिकर ॥ श्रो ॥ क ॥ १८ ॥ सन्ध्या समय घर्यो अहारजे । सहू मिलीगया खाय ॥ श्रो ॥ सती की मनवार वरी वणी । पण तिण स्वायो नाय ॥ श्रो ॥ क ॥ २० ॥ विस्तर विछाइ सूइ रह्या । रात गइ एक जोम ॥ श्रो ॥ तिहा थी थोडा अतर पर । होतो छोटो सो ग्राम ॥ श्रो ॥ क ॥ १२ ॥ न्टत्या राग तिहा साभल्यो। कुष्दत्त निद्रामें जोय ॥श्रो ॥ वीजा जन कहे चालीये । तमासो अच्छो हत्य ॥ श्रो ॥ क ॥ २२ ॥ हिवणा देखी आवस्या सहू गया तव चाल ॥ श्रो ॥ अमोल कहे मारध सती । ए हुइ रौसी ढाल ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ सती सुती धात तेहनी । सुणी सर्व देइ कान ॥ सहु जन गया जान ने । तरिक्ष णहुइ सावधान ॥ १ ॥ ऊठी चउ तरफ जोइयो। कोइ न दवलमाय ॥ कुरुदत्त पण निद्रा वश। रह्यो अछे घुरराय ॥ २ ॥ तय मन में सा चि तवे । एसो न मिलसी दाव ॥ दुप करथी रचाय तणा । करु हिव उपाव ॥ ३ ॥ इहां रह्य थीम्हारा सील का होसी विनाश ॥ सगत तजिया एहनी । पूरसे जिन दव आस ॥ ४ ॥ जीव जावे तो डरनहीं । नहीं

जावो देनू सील ॥ अल्प काल को दु स्वये । काटी पामस्यू लील ॥ ५ ॥ ● ॥ इन्द्र वि
जय ॥ राज जावो मध फाज जावो । समाज जावो तोहि नहीं डरुरी ॥ दु स्व सहु अरु
मृत्व सहु । तन दहु ज्वाला में पडरी ॥ जीव वमू सच रीव स्वमू । शिताग्ने रमु भय
नाय धरुरी ॥ अमोल अतोल यह समय लही । कभी शील को स्वडन नाहीं फरुरी ॥ १
॥ ० ॥ इम चिन्ति त्रिछोणा तणो । गोटो वीर्घी कार ॥ करी दुसालो औढाणियो ।
जाणे सूती नार ॥ ६ ॥ पच प्रमेष्टी स्मरकर। साहस मन में धार ॥ पिछले रस्ते नीकली
। चाली उजड मझार ॥ ७ ॥ ● ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ गाय २ घाटा रखा ॥ यह ॥
वन में राणीजी चालीया । काइ कोइ नहीं सहनी लार ॥ कर्म गति बांकडी ॥ आ ॥
तम छायो दीसे नही काइ । रस्ता का सुम्मार ॥ कर्म ॥ १ ॥ पाच सात पगला भरी ।
पुन पाछी फिरने जोय ॥ कर्म ॥ रखे पाछल ते वुटिया कोइ । पकडण आया होय ॥ क
र्म ॥ २ ॥ पवन जोग तरु पत्र को । काइ शन्दज तिहा थाय ॥ कर्म ॥ धस्की छिपे द्रुम
आसेर । कोइक आयो दिखाय ॥ कर्म ॥ ३ ॥ सुकुमाल पग मांखण समाने । पहरण न
हीं पग पोपे ॥ कर्म ॥ कांटा गोखरु काकरा । काइ लाग्या उड जाय होंस ॥ कर्म ॥ ४॥
मोटा २ पत्थर तणी काइ पग में लागे ठेस ॥ कर्म ॥ राप जो चारा माहली ते । अग

मे जाने पेस । ॥ कर्म ॥ ५ ॥ पग पडे थोर जाली विषे । सब थर २ धूजे अंग ॥ कर्म
माटा वृक्ष शिला थकी । फांइ शरीर करे कधी जग ॥ कर्म ॥ ६ ॥ पहरण वस्त्र झीणा
घणा । घोचाथी फाटा तह ॥ कर्म ॥ शीतल प्रचन्ड पवनथी । तिहां थर २ कम्पे देह
॥ कर्म ॥ ७ ॥ स्वपद के ही वन वासिया । सती नेडा होइ जाय ॥ कर्म ॥ सिंघ चिता
सियालिया । गिरि दरा रह्या गुंजाय ॥ कर्म ॥ ८ ॥ शब्द भयकर तेहना । सुणी हृदय
जाय थर राय ॥ कर्म ॥ पग पडे खड्डा विषे ते लचकावे मोचाय ॥ कर्म ॥ ९ ॥ भय प
श्वात है मन में । तहथी न ले विश्राम ॥ कर्म ॥ झाडी सघन अति घणी । तहथी न शि
घ्र चलाय ॥ कर्म ॥ १० ॥ अंबर लीरा उतर्या ने । चीरा पड्या शरीर ॥ कर्म ॥ तीन
जामे हुवा भागतां । पण हीयो धरे नहीं धीर ॥ कर्म ॥ ११ ॥ प्रकाशी भानू प्रगट्यो ।
पेखयो पहाड उतंग ॥ आबू गिरि औषधी भर्यो । काइ भय हुवा तव भग ॥ कर्म ॥१२
॥ धैर्य आइ मन में । थाकज लग्यो ते वार ॥ कर्म ॥ वट वृक्ष पुष्करणी । सिला पट म
नुहार ॥ कर्म ॥ १३ ॥ विश्रामो सती लिया । फाइ दुखे छे सघलो अंग ॥ कर्म ॥ वन
देख विहामणो । तस चित थयो तव भग ॥ कर्म ॥ १४ ॥ कर कपोल धर वेठीछे । का
इ । द्रष्टी भूमिये ठाय ॥ कर्म ॥ चिन्ता कइ चित उपजे । काइ आंर्न रही छे ध्याय ॥

कर्म ॥ १५ ॥ योतो वन सिंहासणो । अब रहणो किण घर जाय ॥ कर्म ॥ क्षुधा पण लागी अछे इहां करणो कांइ उपाय ॥ कर्म ॥ १६ ॥ किहा राज सुख महारा न । किहा प्राणेश्वर होय ॥ कर्म ॥ निराधार रही एकली । अब आगे किस्योक जोय ॥ कर्म ॥ १७ ॥ पवन शरीर ने लागता । काइ सूजी गया तमाम ॥ कर्म ॥ चीरा पड्या झगर फरे । अग्निनी परे जास ॥ कर्म ॥ १८ ॥ नशार बान्धा गइ । ने रगर पडी छे गाठ ॥ कर्म ॥ जन्म भर में एहवो काइ । दु ख नो नहीं सीखी पाठ ॥ कर्म ॥ १९ ॥ क्षिण रोवे क्षिण जोवती ने । क्षिण सावे क्षिण धठ ॥ कर्म ॥ इण पर लीलावती मने । काइ सह कर्म अ खेर्ट ॥ कर्म ॥ २० ॥ शील सहाइ सती तणे । तेहथी सहायक मिले इहां आय ॥कर्म॥ किंया ढाल खन्ड तीसरे । कांइ ऋषि अमोलख गाय ॥ कर्म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ कुरुवच्च का साथी सहु । जोइ रूपाल खुशाल ॥ एक जाम निशी रयार । तेहि अस्थान आय चाल ॥ १ झोका खाता नींद में । पडिया दिशो दिश तेह ॥ भानु उदय नहीं जागिया । कुरुवच्च जागी केह ॥ २ ॥ बोलाया बाले नहीं । तब लीलावता ने जगाय ॥ तेहि पण उठी नहीं । तन तस हाथ लगाय ॥ ३ ॥ लीलावती कर ना लगी । तव ते गयो धस्काय ॥ लात मारी साथी भणी । घावरी सहु ने उठाय ॥ ४ ॥ दोडी जोइ चउपखे ।

पत्ता न लागयो लगार ॥ पस्ताइ सहू चालीया । जोवण सती ते धार ॥ ५ ॥ ● ॥ढाल ॥ १४ मी ॥ असाढ मूती अणगार ॥ यह० ॥ ऊजाड वन के माय । घट वक्ष की छांय ॥ कर्म वश ॥ लीलावती रही एकलीजी ॥कपाल हा । लगाय । धात केइ याद आय ॥ कर्म वश ॥आर्त आवे वली २ जी ॥ १ ॥तिण अवसर ने मांय । वृद्ध बाइ चलाय ॥ कर्म ॥ सती तिण ने देख लीजी ॥ दुर्बळ तेहनी काय। एक करे काठी साय ॥ कर्म ॥ धीरपे आवे ते एकलीजी ॥ २ ॥चादी वरणा केश । वट पडिया छे विशेष ॥ कर्म ॥ भाले ककू लगाधीयो जी ॥ सल पडिया छे कपोल । आँख्या ऊडी खोल ॥ कर्म ॥ तिक्षण प्राण घाली ठनीयोजी ॥ ३ ॥ गलमा तेहने पोत । लडा लटके बहूत ॥ कर्म ॥ राडा मणी चूडी कर विवेजी ॥ कमर थोडीसी थाक । ताम्र कुंभ तस खाक ॥ कर्म ॥ सूर्त सुहामणी दिखेजी ॥ ४ ॥ भारती तेहना नाम । देव धर तेहनो धाम ॥ कर्म ॥ विजयपुर छोडी रेवताजी॥ वारी लेघण काम । आवी रही ते वामै ॥ कर्म ॥ पुष्करणीपे चित देवताजी ॥ ५ ॥ ज लागरॅ कने आय । सन्मुख द्रष्ठ लगाय ॥ कर्म ॥ आश्चर्य धर उभीरहीजी ॥ देखे मेखा नेमेख ।मन में चिन्ते विशेख ॥ कर्म॥ ए कुण बेठी इहा सहीजी ॥६ ॥ जलदेवी घमदेवा होय । इन्द्रकी अपछरा कोय ॥ कर्म ॥ के विद्या धरणी खरीजी ॥ सूरती अति मनोहर

। गहणा मोल अपार ॥ कर्म ॥ वस्त्रकि शोभा सिरीजी ॥ ७ ॥ क्यो बेठी इण अस्थान
। उदास मुख को धाम ॥ कर्म ॥ किस्यो दु ख छे ए मनेजी ॥ साहस धारी मन । पूछ-
ण भणी ततक्षिण ॥ कर्म ॥ डोकरी आइ सती कनेजी ॥ ८ ॥ मिष्ट वयण कहे एम ।
थाइ छे तुमने क्षेम ॥ कर्म ॥ किहां रहणो छे तुम तणोजी ॥ इहां आया किण काम ।
कोन तुमारा ग्राम ॥ कर्म ॥ दु ख दीसे तुम मन घणोजी ॥ ९ ॥ लीलावती सुण वात।
दु खथी छाती भर आत ॥ कर्म ॥ बोलन मुख से नीसरेजी ॥ श्वास न मावे उर माय ।
रोवण लगी चिल्लाय ॥ कर्म ॥ दु खी दु ख किम विसरेजी । ॥ १० ॥ डोसी दु खणी था
य । वेठी पास तस आय । क ॥ बोले अत स दया धरजी ॥ रोया से काइ होय । वन
मां सांभलें कोय ॥ कर्म ॥ बोल मुजथी दु ख किसरीजी ॥ ११ ॥ इम सुण सती धर
धीर । कहे नेण पूछे नीर ॥ कर्म ॥ अहो माताजी मामलोजी ॥ मुज सम दु खणी न
कोय । किंचित आधार न होय ॥ कर्म ॥ दुर्भागणी में याभलो जी ॥ १२ ॥ जन्म तां
आइ हुती मोत । तोक्यों दु खणी होत ॥ कर्म ॥ तिर्यंचणी जो हुइ हुंतीजी ॥ बोलता
छाती भराय । मनकी नाही कहवाय ॥ कर्म ॥ टपकर आंशू चूतीजी ॥ १३ ॥ वसुधी
[illegible] रोवण लगीजी । बुद्धी कहे धर हाथ ।

चालो महारी संगात ॥ कर्म ॥ नेडो झूंपडी इहा जगीजी ॥ १४ ॥ रहो हमारे घेर । अ
घ मत कर थाइ वेर ॥ क ॥ जाणो बेगी मुज भणीजी ॥ नहीं पुछो गुप्त बात । जो तू
कहणी न चहात ॥ कर्म ॥ तूं पुत्री छे हम तणीजी ॥ १५ ॥ राखस्यू जीवन प्राण । हु
कम करी प्रमाण ॥ कर्म ॥ और कहो किसी कहुजी ॥ जो बच ने बदलो फेर । तो सोग न
खाया केह पेर ॥ कर्म ॥ हम कैसा ते जाणसी सहूजी ॥ १६ ॥ लीलावती सुणी वचन
। खुशी हुवो तस मन ॥ शील सहाइ ॥ जाणी धर्मात्म डोकरीजी ॥ भृद्धिका भर लियो
नीर । सती सग ली धीर ॥ शील सहाइ ॥ आइ तबही झोंपडीजी ॥ १७ ॥ देत्र घर ते
वार । पूछे हर्षी अपार ॥ शील ॥ प बाइ किहांथी लावीयाजी ॥ भारती कहे लज्जा कर
। मैं गइथी जल आगर । शील ॥ तिहां प बाइ पावीयाजी ॥ १८ ॥ दु खी देखी इण
तांय । लाइ छू पुत्री बणाय ॥ शील ॥ अभय वचन देइ करीजी ॥ डोसो तनुजा तस जाण
। आदर दीयो प्रेम आण ॥ शील ॥ पतुज घर जाणोम्बरीजी ॥ १९ ॥ लीलावतीने आइ धारा देखी
तिणरी पीर ॥ शील ॥ रहे सुखे तिणहि कनेजी ॥ मिल्या तीनो गुणवत । प्रिति जमी अत्यंत ॥ शील ॥ स
ती निज धीतक भनेजी ॥ २० ॥ मे पण कहु सुण धीय । हमारी बीती तीय ॥ कर्म ॥ मुज पुत्र महूर्था
तुज समीजी ॥ कखरय दुष्ट राय । राखी तहने भरमाय ॥ कर्म ॥ पुत्र ने केद दियो दमी

जी ॥ २१ ॥ घर वार लुटीलीध । हमने फहादी दीध ॥ कर्म ॥ आइने इहां रह्या जी ॥ धारो हुयो आधार । मत कर कोइ विचार ॥ चरित्र केइ होसे कह्या जी ॥ २२ ॥ इम वडा २ पर पड्या दु ख । पुन ते पाया सुख ॥शील ॥ तिम तुज दु ख विरला वसी जी ॥ इम धर्म कथा में मन रमाय । सनी सुखे काल बीताय ॥ शील ॥ तीनो रहे भला भात थी जी ॥ २३ ॥ जे शील में द्रढ रेह । तेतो सुख सदा लेह ॥ शील ॥ कर्म कदापि दु ख न्हेजी ॥ थोडा काल के मांय । सुख यश घणोइ पाय ॥ शील ॥ सत्य जाणो क पि कहेजी ॥ २४ ॥ एथयो तीजो हुल्लास ॥ अमोल कियो प्रकास ॥ शील ॥ धन्य२ स ती लीलावती भणीजी ॥ जोग जुगतथी रसाल । हुइये पुँर्वकी ढाल ॥ शील सहाइ ॥ शील तणी महिमा घणीजी ॥ २५ ॥ ० ॥ खन्ड सारास- हरी गीतछन्द ॥ लीलावती राणी । गुण खाणि ।सती सिरोमण जाणिये ॥ सक्ट समय आत्मा वश कर । शील रा ख्यो शाणीये ॥ मुकुन्द मद मति मदा तेहना फन्द मा जे नही फसी ॥ कुरुवत्त करी कु मत देवल छत्त थी तेखसी ॥ १ ॥ गेंदू हजुर्या गुणवंत । ले सहायत आगे आवसे ॥ व क्ता प्रकासे श्रोता हुल्लासे चरित्र चितमा लावसे ॥ तीजो भाग मनोहर राग श्रुती सार [illegible] । गावे गवावे सणे सणावे । ते नित्य मगल लहे ॥ २ ॥ ० ० ०

परम पुज्य श्री कहानजी ऋपिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्म चारि मुनी श्री अमालख ऋपिजी महाराज रचित चन्द्रसेण लीलावती चरित्रका लीलावती प्रबन्ध नामक तृतीय खन्ड समाप्तम् ॥ ३ ॥

॥ दुहा ॥ जगपत आदि अर्हंत जी । सिद्ध साधु गुण व्रत ॥ केवली भापित धर्मको । सरण लहु मन स्वत ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप ॥ शिव सुखका दातार ॥ चउ स घ को सरण लही । चउ खन्ड करु उचार ॥ २ ॥ जादव यश उज्वाली यो ॥ श्य म सुन्दरा कार ॥ पशू दया ले राजुल तजी । प्रणमु नेम कुवार ॥ ३ ॥ विचित्र रस विचित्र कथा । हेइन खन्ड क माय ॥ आदि अन्त साम चन्द्र को । चरित्र इणमें कथाय ॥ ४ ॥ श्वामी भक्ति कारणे । कैसो सकट सय ॥ बुद्धिवन्त निर्लोभिता । चिन्तित सुख तह लेय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ श्लोक मन्वा का त ॥ पर स्त्रि मातेव कचिदपि नलोभ पर धनं । न मर्यादा भग क्षणमपि न नीचेषु पिरति ॥ रिपोश्वर्य धिय विपदि विनयस्य पदिसिता । दिन स्व तत्रांत भरत नियता यस्य सि सदान् ॥ १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ विजपुरे गुप्त स्थान में । चन्द्रसेण कामन्त्रिस ॥ तीनों सखा विर्धा करी । पूर्ण करण जगीश ॥ ६ ॥ सोम

जेहनी शोभा अती ॥ होसु ॥ जेह ॥ ३ ॥ तिण वगिचा माहे । भवन सिरे पेखीयो ॥
होसु ॥ भव ॥ साता कारी स्थान । सचीवें जीवेखी यो ॥ होसु सचीव ॥ विश्रामों तिहा
लेया । आहार अल भोगी या॥होसु ॥ अहा ॥ करी बिछोना शयन । तिहा सुखथी किया
॥होसु ॥ तिहां ॥ ४ ॥ तस पुरना शिरदार । प्रताप सेण जाणिये ॥ होसु० ॥ प्रता ॥
न्याय निति गुण धाम । प्रजा तात मानिये ॥ होसु ॥ प्रजा ॥ अम्ब फेरण ने काज ।
ग्राम बाहिर आवीया ॥ होसु ॥ ग्राम ॥ हवा खावण ने बाग । तेही चित चावी या ॥
होसु० ॥ तेही ॥ ५ ॥ फिरता उध्यान ने माय । सदन पर द्रष्टी गइ ॥ होसु० ॥ सद
॥ साम चन्द्र ने देख । आश्चर्य अतिलइ ॥ होसु ॥ आ ॥ शिघ्रथी मिलवा काम । सन्मुख
चल आवता ॥ हो ॥ सन्मु ॥ सचिवजी तस देख । अति हर्षावता ॥ होसु ॥ अति ॥
६ ॥ ऊठ धाया सन्मुख ।छुली नमन कियो ॥होसु० ॥ छुली० ॥ राजेश्वर मधु वयण ।
घणो आदर दियो ॥ होसु० ॥ घणो ॥ आवेव्या बगला माय । पूछे राजे भरु ॥होसू ॥
पूछे ॥ दीवानजी पकला आप । किम हुवे वेशे फरु ॥ होसू ॥ किम ॥७॥ कहो विजय
पुर ना हाल । नृपाल चन्द्र हे सुखी ॥ होसु ॥ नृप ॥ इम सुणी दिलखाय । हृदय हुवो
दु खी ॥ हों सू ॥ हृद ॥ दु खीं देखी तस राय । बात छोडी दइ ॥ होसु ॥ बात ॥८॥

किम उतर्या इहां आय । छोडि घर आपणो ॥ होसु ॥ छोडि ॥ चालो रावला माय । न करो दूजा पणो ॥ होसु ॥ न । मसी हुवा लार । राय हुक्म दियो ॥ होसु ॥ राय॥ मचिव को मराजाम । भट रथ में ठयो ॥ होसु ॥ सचि ॥ ९ ॥ गजा रूढ दोनो होय। मध्य वजारथी ॥ होसु ॥ मध्य ॥ आया महेल मांय । सहु परिवारथी ॥ होसु ॥ सहु ॥ भाजन भक्ति करी । राय प्रधानकी ॥ होसु ॥ राय ॥ सुख शैया बैठा आय । वात पुछे आनकी ॥ होसु ॥ वात ॥ १० ॥ हम साहूजी चन्द्रमहाराज । सपरिवार है सुखी । हो सु ॥ सप ॥ प्रधान कहे नहीं भाग्य । सुखी हु कहु सुखी ॥ हो सू ॥ सुखी ॥ इम सुणी वचन । नृप विस्मय भया ॥होसु॥नृप॥ काणछे जग समर्थ । चन्द्र ने दू खी किया ॥ होसु ॥ चन्द्र ॥ ११ ॥ सचीव कहे कर्म गत।विचित्र महारायजी॥ होसु॥विधि॥ त्रगा वाज मे राज।पार कुण पायजी ॥ होसु ॥ पार ॥ चन्कपुर को कल रथ । धाडती आवीयो ॥ होसु॥ग्राम ॥ १२ ॥ एक दम सु० घाडे ॥सन्ध्या समय अचिन्त्य । ग्राम में भरावीयो ॥ होसु ॥ तब गया राणी राय । खबर नहीं जेहनी करी धाम धूम । शैन्या सहु तेहनी ॥ होसु ॥ तब गया राणी राय । खबर नहीं जेहनी ॥ होसु ॥ खबर ॥ खबर करण ने तास । हु प्रदेश चालीयो ॥ होसू ॥ हू ॥ शा तावे मगो राज । ते हम मन सालीयो ॥ होसु ॥ ते हम ॥ १३ ॥ प्रताप सेण सुण वात ।

मने मुरजाविया ॥ होसु॰ ॥ दुष्ट कन्करथ राय तेहना वाय फावीया ॥ होसु ॥ तेह ॥ एकदा चन्द्र महाराय को पत्तो लगावीये ॥ होसु ॥ पत्तो ॥ फिर हम सहु मिल एक । के शत्रु भगावीये ॥ होसु॰ ॥ शत्रु ॥ १४ ॥ इम भेद करता वात । निशा व्यापो गइ ॥ होसु ॥ निशा ॥ सूना सुखे निज२ स्थान । सुख शैया मही ॥ होसु ॥ चतुर्थ हुलास की ढाल श्वाती तारा तणी ॥ होसु ॥ श्वाती ॥ अमोल ऋषि कहे आगे । पारिक्षा बुद्धि की भणी । होसु ॥ परि ॥ १५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिणही राते तिण पुर विषे । आयो फोइक न्याय ॥ राज पुरुषों चोकस करी । मूल हाथ नहीं आय ॥ १ ॥ वादी अन प्रति वादी को । मही भट लेआय ॥ आया राज शभा विषे । पसरी बात ग्राम माय ॥ २ ॥ सहश्रा गम परजा तदा । आइ शभामें भराया ॥ देखा न्याय किण पर हुवे । प्रकटे तस्कर साय ॥ ३ ॥ नृप प्रधान जागृत हुइ । शुची करी नित्य नेम ॥ भोजन आदि निवृत हुवा । हुवो कचेरी टेम ॥ ४ ॥ सोम चदने साथ ले । आया शभा मा राया । सिंहासणे वेठा भूपती । मंत्री मही ने ठाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ जी ॥ सुणो चतुरजी । श्री मंदिर परमात्मा पासे जाव जो ॥ यह ॥ सुणो श्रोता हो । न्याव करण की रीत प्रधान तणी इहां ॥ बुद्ध भारी हो । सोमचन्द समान और कहो है किहा ॥ आ

॥ नृप प्रधान बेठा आइ । सहु शभा चुपकी थाइ । तिहांथ। प्रधान ते बलाइ । अरजी
करे ऊभा थाइ ॥ सुणो ॥ १ ॥ आज न्याय अन्भ तणो । कल्लोल पुर कशथो सुलामणा
। कामेतं न्याइ तिहा तणा । पण नीवेडो न हुवो एह तणो ॥ सुणो ॥ २ ॥ निण थी
भेजा इण ठामे । माक्षी दार कोइ नहीं थामे । स्त्री कर्यो असमत्र कामे । ते सुणो राजे
श्वर आमे ॥ सुणा ॥ ३ ॥ विद्युमति श्री मति थाइ । मृत्युक तनुजे लेकर आइ । नृप
फ़रे बुलाया तिण तांइ । दोनों सन्मुख आ ऊभी रहाइ ॥ सुणो ॥ ४ ॥ विद्युमति इण
विध बोले । मुज शाकण आ श॒ तोले । मे गइथी बाहिर कामोले । ते पीछे आइ मुज
घर खोले ॥ सुणो नृपतजी । न्याय इण झगडा को साहेबजी कीजिये ॥ अहो मही पत
जी । सत्य असत्य तणो खुलासो ढीजीये ॥ आ ॥ ५ ॥ मुज पुत्र सूतो थो पालणा
माही । इण आइ ने लीयो उठाइ । गले नख देइ मार्यो तिण तांइ । रोवा लागी खो
लामां सुवाइ ॥ सुणो ॥ ६ ॥ याना कहे हिव न्यावज कीजे । इण दुष्टण ने शिक्षा दिजे
। गरीबनी की दया लीजे । बादण का बोलणो पहीज ॥ सुणो ॥ ७ ॥ श्रीमति कहे
सोगन खाइ । में इसो काम कीनो नांइ । बिन कारण कलङ्क मुज शिर ठाइ । में निरा
धार गरीब गाइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ मुज इज्जत की रक्षा कीजे । इण त्रास ने पुरी विचा

रीजे । कर जाडी कहु मुज नन कीज । प्रति बावग बाले सत्य मानीजे ॥ सुणो ॥ ९॥
इम कही दोनों चुपकी रहाही । शभा जन न्यायपर चित ठाइ । सोम चन्द ऊभा थाइ।
बोल्या नृपतस कर नरमाइ ॥ सुणो ॥ १० ॥ महाराजा तस्दी नहीं लीजे । यह हुकम
म्हारे उपर कीज । न्याय करण की रजादीजे । नहीं होवेतो आप सुधारीजे ॥ सुणो ॥
११ ॥ भूधव कह खुशी थाइ । शभाजन मान दो या ताइ । यह सुज्ञ घणा चतुर न्याइ
। न्याय नीवडो करसी ख्याइ ॥ सुणो ॥ १२ ॥ सोमचन्द दोनोंने बोलावे । दोनो स्त्रिया
ऊभी रहावे । त्रिचारी मन्त्री फरमावे । सोगन इष्ट ना दीरावे ॥ सुणो शभाजन हो ॥
न्याय ॥ १३ ॥ जो कधी बोलसो खोटो । तो मा जना में पडसी टोटो । सीपाइ नो खा
मो सोंटो । आयुष्य नहीं फिरहे माटो ॥ सुणो ॥ १४ ॥ फिर पूछो विद्युमति ताइ । ते
बोली सोगन खाइ । इण मार्या मुज बालक ताइ। झूट होवे तो करो जे इच्छाइ ॥ सुणो
मन्त्रीजी ॥ न्याय ॥ १५ ॥ कहे मन्त्री थें मरतां दख्या । विद्युमति कहे नहीं पख्या । म
न्त्री कहे तब इम किम लख्यो । नारी कहे नख की गले रेखा ॥ सुणो ॥ १६ ॥ फिर
प्रधान इण पर कहे । इणरो नाम तु क्यों लवे । दूसरी मार्यो यों माप देवे । झूटो आल
शिर क्यों ठवे ॥ सुणो ॥ १७ ॥ विद्युमति कहे महाराजा । में बाहिर गइ पाणी काजा।

आइ देखो घर माजा । इण रिवाय न क्यों अकाजा ॥ सुणो ॥ १८ ॥ इम सुण प्रति
वादण बोलाइ । साची बोल इहां बाइ । ते कहे नीची ग्रीवा ठाइ । सुणो सत्य होवो मु
ज सहाइ ॥ सुणो॥१९ ॥ अहा निश इणरे घर में जावुं ।म्हारो पुत्र है मन मनावु ।नित्य
खाले लेइ रमावू । नहीं देखु कभी तो दुःख पावू ॥ सुणो ॥ २० ॥ कल फजर गइ इण
घर आडी । माहें गइ द्वार ऊघाडी । इण ने में हाकज पाडी । पुत्र तन पर नहीं देखी
साडी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ डाकण ने तिण पास गइ । काया शीतल लागी ताइ । तब श
का मुज मन लइ । नाक हवा न निकलेइ ॥ सुणो ॥ २२ ॥ तब अति में घबराइ । खो
ल रोवणो लगाइ । ते तले ले पाणी प आइ । गाल्या दवण लागी मुज ताइ॥ सुणो
॥ २३ ॥ पीछे की में जाणु नाइ । जे जाणी जैसी सुणाइ।किंचित झूट इणमें नाइ। कलङ्क
उतारो कृपा लाइ ॥ सुणो ॥ २४ ॥ शभा सुणी ऊपभी रही । पूर्वा तारों की ढाल कही
। सचीवजी बुद्धि अधिक सही।अमोल कहे आगे सुणो जही॥सुणो ॥ २५ ॥ ●॥ दुहा ॥
सोम चद कहे श्री मती भनी । तू क्यों गइ तस धाम ॥ पर घर स्त्रीने जावनो । जुक्तो
नहीं विन काम ॥ १ ॥ सुना घरमा जायन । येह किंयो अन्याय ॥ इसी सका मुज उप
जे । बोल सच्च अब वाय ॥ २ ॥ ते बाम्हरी कहे मसी जी । ताणो मत एक पक्ष ॥ में

कारण कहू ते सुणी । न्याय करो हो दक्ष ॥ ३ ॥मुज पति फरजन्द कारणे । मुज अग्रह
पारणवा पद्द ॥ कुशी स्वभाव है इण तणो । तेहथी जुदी रहू मह ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इन्द्र
धीजय ॥ सुमकोधार वरितो नार । दुष्ट करेह कार । दवे दुःख भारी ॥ खावण पेरण
सावग जेवण । रोवणो न मिटे निश दीह मझारी ॥ रीसाय भगजाय धुरकाय दमाय ।
गाल्यों विराय सुणे झकमारी ॥ इज्जत जाय पीछे पस्ताय । अमोल समजाय मत परण
नो नारी॥१॥०॥ढाल॥पति प्रवश सिधावता।अग्रह कर करी चताय॥ नित्य प्यारो पुत्र स
मालज । निण नित्य जावू म्हाराय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ३ री ॥ पारस सेलडी ॥ यह ॥
अहा शाणा सुणजो । पुछो सोम मंत्री तणी ॥ आं ॥ दोनो भामनी से कहे मन्त्री ।
मुज कया करो प्रणाम ॥ महीने हु साची जाणू । कहे विद्युमती ताणा हो ॥ अहो ॥
॥ १ ॥ जो कहा मो अभी करु म । साच के नहीं अँच ॥ पुत्र को बदलो मुजेन दि
रातो । पूरी करिन जाच हा ॥ अहो ॥ २ ॥ श्रीमती से मेसी घोले । करसी में कहू ते
ह ॥ करजोडी कहे पहिला भाखो । कारण म्त्री मेह हो ॥ अहो ॥ ३ ॥ योग्य काम हु
मा तो करश्यू ॥ अयोग नहीं कराय ॥ सोम मंत्री म व नर सुगजो । शिरकार यों फर
माय ॥ अहो ॥ ४ ॥ वस्त्र तजी ने होवो दिगम्बर । होइ मध्य बजार ॥ हीरी थी उघा

न धक्ष पे । पग पिच निकालो लार हो ॥ अहो ॥ ५ ॥ विधुमति उतावली तारक्षिण ।
वस्त्र दिया उतार ॥ श्री मन्त्री कहे मुज से न होवे । हिरणा न्हाखो मार हो ॥ अहो ॥
॥ ६ ॥ सोम समीत्र खुश हो कहे नृप से । न्याय हुवो महाराज ॥ श्रीमन्ति नारी निर्दो
पी । विधुमति गुन्हगार हो ॥ अहो ॥ ७ ॥ लज्जा भूषण है सहुजन को । भामनी केतो
अधिक ॥ मरणा धाया नहीं छोडी लज्जा । या नागी हुइ समिक्ष हो ॥ अहो ॥ ८ ॥ अ
श्चर्य मुझ ने साहब मोटो । सगी मा मार बाल । कारण काइ जरूरज होणो । येसी क
रीये निकाल हो ॥ अहो ॥ ९ ॥ शभा माहे स्यू एक पुरूष तत्र । ऊभो हुवो तत्काल ।
गरजी कहे ध्यान २ मेमीश्वर । कियो साचा न्याय एकमाल हो ॥ अहो ॥ १० ॥ मन्त्री
कहे त तुम किम जाण्या । त कहे सुणा महाराय ॥ मे हू इणरेघर पाडोसी । जाणू वा
त विगताय हो ॥ अहो ॥ ११ ॥ परस्यू विधूमति घर बाहिर । सूतो हु निशी मझार ।
सवा येम यमनी ध्यनि कुम्या ।आयो काइ क जार हो ॥ अहो ॥ १२ ॥ थापद्वार लगा
इ ए आइ । लीनो तारक्षिण माहे ॥ भूर्ली द्वार ढकेन गये माहे । काम क्रिडा लगाइ हो
॥ अहो ॥ १३ ॥ दीप प्रकाशे हु सहु जाणूं । पालक गेया लागयो ॥ भोगमें असराय हूती
जेहे कोधानल पस्य जाग्यो हो ॥ अहो ॥ १४॥ जार अमद थी पद्मनी आ । अधुरो त

स घत्राइ । पटकी पालणे गइ सेजापर । कर्मे व्याकुल थाइ हो ॥ अहो ॥ १५ ॥ पुन
त थ्या राश लाग्या।पुन जार इणन कहाई।।धसमसतीआ तेने धत्राइ।तस गइ तथही ताडी
हो ॥ अहो ॥ १६ ॥ तीजी वार ते रोवा लाग्यो । तवए असूरच थाइ ॥ विष अन्धी
मार्या पुत्र ने । गल नख लगाइ हो ॥ अहो ॥ १७ ॥ यह हकीगत निजरा देखी । तेसी
म दरसाइ ॥ धन्य २ इम कहु प्रधान ने ॥ न्याय कियो राम साइ हो ॥ अहो ॥ १८ ॥
सहु शभा सुण अश्चर्ये पाइ । विश्रुमति ने धिक्कारी ॥ न्हाखी खेत्रम श्रीमती ने । पहोंचाइ
घर सत्कारी हो ॥ अहो ॥ १९ ॥ देखी तिम बुद्धि मत्री की । नृपादि सहु हर्षाया । सु
ख रहे मत्रीश्वर इहां । पयठाण पुर माया हो ॥ अहो ॥ २० ॥ यह कथा तो रही इहा
ही । हिवे विजयपुर की कहाइ ॥ अभीचमारो तणी ढाल ये ॥ ऋषि अमोलिक गाइ हो
॥ अहो ॥ २१ ॥ ❀ । दुहा ॥ एक दिन विजयपुर नगर में । करी दरबार तेयार ॥
कम्वरथ न दु मुख जी बैठा सहु परिवार ॥ १ ॥ हर्षित हृदय नृप कहे । साभलो सघ
ला लोक ॥ बुमुखजी जी बुद्धि थकी । मिल्या वांछित थाक ॥ २ ॥ बकसीस लक्खी पौं
शाककी । वी मत्रीने राय । शभा सहु वहावा करे । दुमुख माने अकडाय ॥ ३ ॥ कहे
हम चाकर राज का । कग ते थाडो होय ॥ लायकी जाणे आपसा । मुज सम हे जग

कोप ॥ ४ ॥ गाजे धाजे मसीने । दिघा घरे पहों घाय ॥ माने चढियो दुमुख्यो । करण लग्यो अन्याय ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल ४ थी ॥ मानव जन्मर । रत्न तेने पायोरे ॥ यह ॥ सुनो भाइर दुमुखकी अन्याइरे । को खोटी कलाइ ॥ सुना ॥ आं ॥ राज मसी लम्पटी दानो । तस शिर अंकुश नहीं कोनोरे ॥ मदान्ध ते थाइ । सुणी रूडी लुगाइ । तस पकड मगाइ ॥ सुना ॥ १ ॥ इम जाणी चन्द्रसेण के कामेती । सुख सेन लक्ष्मी घर चेतीरे ।' सहु आपणी नारी ॥ दी पीयर पुगारी । दोनो रह्या तिहांरी ॥ सुनो ॥ २ ॥ एह समाचार दुमुख जाणी । मन माह रीस आणीरे । चिन्ते मन माहीं । दोनो दुशमन ताइ । रवू फेर कराइ ॥ सुनो ॥ ३ ॥ राजा पासे राते आया । सत्कारी कने बेठायाजी ॥ पूछे नृपाला । लीलावती का हवाला । कहो पाइ न हालो ॥ सुनो ॥ ४ ॥ दुमुख कहे तब उदास होइ । सुमट आया सहु जोइजी । तस पत्तो न पावे । सुण राय घबराय । निश्वास न्हखाय ॥ सुनो ॥ ५ ॥ में जाण्यो थे लाया हासो । मुझने दियो थो भरोसो जी ॥ तिण सुधरी काजे । किया सहु इलाजे । पण मिलीन आजे ॥ सुनो ॥ ६ ॥ तेह थि ना सहू भपत सुनी । लाय लागी दिल दूनीजी ॥ प्रधान तब भासे । तुम भाव राणी पास । मुज पण दुःख दाखे ॥ सुनो ॥ ७ ॥ नृप धैर्य राखो मन माह । हू लासू

पत्तु लगाइजी ॥ धाणी भूप भगासु । घचन मस्य जणासु । ज्यादा किस्यो कछु थासु ॥
सुना ॥ ८ ॥ पण एक पहली घदा घरत कीजे । शत्रु स निडर नहीं रीजे जो । चन्द्रसेण
धा मिन्दार॥दानों माम मक्षारो॥त छे हॉशारो॥सुना॥९॥जो लीलावती ग्राममें आसी॥ते म्वयर
न धीला जी । वैरसी का उपचारा । तेहने वैदमे डारा । फिर फिकर न लगारो ॥ सु ॥
१० ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ हस्ती अकुश मारण । केस हस्तेन घाजीना ॥ श्रृगणा दृड हस्तेन
। म्द्र हस्तन दुर्जना ॥ १ ॥ ढ्र ॥ इम कुछ कारी दुमुख लगाइ । रजा लेइ निज
घर जाइजी । दूजा दिन ऊग्यो ज्यार । करी शभा तैयारे । नृप मशी बेठारे ॥ सु ॥ ११
॥ पुछ राजा जाणा ता मताव । काइ वेरी रयो इण ठावो जी । तर मशी दरशावे, ।
राजन इहा रहाव । धेंश शैन्य धीशाव ॥ सु ॥ २ ॥ हाइ वेरी ते जपना कहीजे ।
छूहान त म छाडाज जी ॥ नृप मह्र पठाव । दोनो पकडी मगावे । मट घस मस जावे
॥ सु ॥ १३ ॥ जगे भट सुम्व सेण आना जाइ । सम ज्या मतलघ माइ जी ॥ अगिया
री कम नाडी । तिन भट भजा हाडी । दा भडारि ने छाडी ॥ सु ॥ १४ ॥ मन्डारि
घम दया भट पागा । म्वीन शिघ्र सिधाया जी ॥ ज्यो हाथ नहीं आवे । तारी पीयर
नार । निश सुम्व रहाव ॥ सु ॥ १५ ॥ सुम्वसन न भट पकड ल जावे । कनकरथ सामे

लावजी ॥ केवे तस साल्या । दुख मन तस साल्या । फस्या अवसर पाल्या ॥ सु ॥ १६
॥ जिन मुवाराम कैद तस डाल्या । तिहा द्वार शे या पति माल्याजी ॥ सुरग तस जा
णीं । मन हर्ष भराणी । निकल्या शैन्याणी ॥ सु ॥ १७ ॥ दुरा जाइ रात सराय में
रहाइ । गेंदू चल तिहां आइजा । तेम राख छयाइ । पेचान न थाइ । सुखसेन घोलाइ ॥
सु ॥ १८ ॥ तुम कौन किहा थी इहा आया । तब गेंदू दरशाया जी ॥ में गरीब महारा
जा । फिरुं पेटक काजा । इहां आयो छू आजा ॥ सु ॥ १९ ॥ वचन सेंदो लग्यो तिण
तांइ । कहें गेंदू सरीसा जणाइजी । ते पण ढिग आइ । शैन्या पति ओलख्याइ । दुख
उमटी आयाइ ॥ सु ॥ २० ॥ रोवता गेंदू ने राखीं । पूछे राणी राजा किहा वाखीजी॥ते
कहे सेवार । राणीजी या मुज लार । भरतपुर जांतारे ॥ सु ॥ २१ ॥ कुल मामे कपट
फन्दे फस्याइ । तिहांथी महाराणी छोडाई जी ॥ त्यांथी आगे जा ताइ । मिल्या शत्रु ना
सीपाइ । तिण करी कपटाइ ॥ सु ॥ २२ ॥ भरतपुर का वपया राणी भरमाया । पाछे ते
प्रगटाया थी ॥ में झगडा लगाया । पण घणा ते रहाया । मुजे मार गिराया ॥ सु ॥
२३ ॥ लेगया त्रिजयपूर राणी जीताइ। शील थी सावच हुं पाइजी।हिमणा आयो चलाइ
। आय मिल्या मुख पाइ । आप किहांथी आयाइ ॥ सु ॥ २४ ॥ सुख सेण बीती प्रात

सुणाइ । सुख सूता रानों तिण ठाइ जी । अनुराधा ताराईं । ढाल अमोल गाइ । आगे सुणा नित लाइ ॥ सुणो ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ प्रात थयां जाग्रत थया । गेंदू शैन्या पति जाम ॥ चिन्ते राणी सहाय ने । चला विजयपुर गाम ॥ १ ॥ जो मिले ते मार्गमे विषे । तो लस्या राणी हाथ ॥ मगदूर नहीं छ नेहनी । जो अपणे सामें थान॥ २ ॥ जो पहोंचा हांसी शहर में । तो पण करस्या उपाय ॥ उद्यम थी कार्य हुवे । सुस्ती नो अवसर नाय ॥ ३ ॥ मज हुवा चालण भणी । थयो भानू प्रकाश ॥ तेतले तिहा खुणा विषे । पत्र पड्या देखाय ॥ ४ ॥ शैन्या पती लइ वाचीयो । अर्थ नहीं समझाय ॥ दुसरी दा वांचण लग्या । दीर्घ द्रष्टी फलाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ श्रीजिन आया हो । सोरठ देश मझार ॥ आ ॥ शत्रुंजय पुरथीहो त्रिवानन कर प्रणाम । कुशल चावलदाता तणी । दन शाभाव छे । लाभाये मेरा मन । वासु गत शह वा भणो ॥ १ ॥ सपी या वहुलाहा । जे जगत प्रकाश । आस फास तूटी नहीं ॥ दुजी नार थी हो । अर्धथयो मुज नन । जमिन अक्ष रुस्या संही ॥ २ ॥ दीर्घ न पीतावो हो । पानी दिदो लाय

रतक्ष यो भान मेरम पीठ क रम्सेस प्रयाग करी कोइ न जाने ज्यो बोतिन धम्म गिनूग.
थाय चक्षुहीन कालमे ॥ रहीस पीठ हा । पसो अलक्ष अ्य । धन्य होस्यु ते ताल मैं
स्वाग म स पार मैं मैंह मैन उनको दक्षिण मे भेजे यो न मिले पसो
॥ ३ ॥ काभा जाहन हो । रक्षक हुश्रा प्रयाण । यम दिग मे पठावी या ॥ छायन पडेहो
कमी हैं म्हारी रतना इस मिराम हागा त्यक्तित शरीरको बचना शीत ताप स
। एह रास्त्र दभ्भ ताम । त्तासन हावे फावीया ॥ ४ ॥ गेह घचाजो हो । जाडा ताता थी
तुमारा स्या मया रमना उत्तर देना पसादी गुस तुमारे हमारे पिच
तुम । धर्म मूल सदा रास्व जो ॥ दाहिण दिगनेहो ।सन्मुख दजो इण पर । तुम हम विच
भगवान है
हरि सासजो ॥ ५ ॥ पत्र पठन्ता हो। जिमर अर्थ समजाय । तिमर क्रोध व्याप्यो घणो
॥ मूछन चावे हो । अरुण नत्र तप होय । वरण पलट्यो मुखड़ा तणो ॥ ६ ॥ पूछे गेंद
हो । विस्या लिस्या इण माय । किम जोस तुम तन व्यापीया ॥ इम सुण वाणी
हो । शैन्या पति ते घार । नेत्र नीर वर्षावी यो ॥ ७ ॥ अहोर म्हारी हो । शक्ति हुइ
निकाम । जाणी आम चुपको रहु ॥ मुज मालिकनी हो । ले कोइ पत्नी नो नाम । त
क्षिण यम दाढे दहु ॥ ८ ॥ किम कर गेंदू हो । नहीं अबी वलको है काम। समता धरी
कल कीजिय ॥ दुष्ट लम्पटी हो । रच्या कैसा उपाय । लाय उठे छे पह याचता ॥ ९ ॥

नाना मस्ती हो । दोनो लम्पटी यह ॥ धाडो डाल्यो इण कारणे ॥ कुमुख वागीलो हो गर म्याट परपच । राणीजी अग धारणे ॥ १० ॥ गइ राणीजी हो । निश्चय विजय पुर माय । चाला तिहांइ ढील न कीजिय ॥ आज कालज में हो । पहोंचा तिहा राणी सा हन । अपण पण ग्यनर लीजिय ॥ १ ॥ जा मिल मार्ग हो । तो हावे रुडोजी काम । लागाया सती भणी । गेंद्र भास्वे हा । ते तो नर घणा श्याम । तिहासी चाले आपणी ॥ १२ ॥ सुख मण क य हा । साभल शाणार मित । दोय जिहा सो जाणी ये ॥ ❀ ॥ इन्द्र विजय ॥ दाना कर मिल तार्ली बाजती । दा पग से चहाव महां जावे ॥ दा नय ना म मय जग दखत । एक नेत्र का काना कहवाव ॥ दो पुष्प मिल वश चलावत् । निशा भ्रांसर मिल वर्षावी थाव ॥ एककी टक रह नहीं कहु । अमोल दोय जहा सा घर आवे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जप दाना में होय हावे ता घणा जार । चूर कू सरपी तिल घाणी म ॥ १६ ॥ हिम्मत गम्वा हो । कार्य उद्यमथी हो हाय । मज्जार उद्यम प य चागीया ॥ इम धर हिम्मत हा । दोनो शूर तत्काल । विजय पुर मग पग न्हाखी या ॥ १८ ॥ चउ दिग पेखत हा । आया विजय पुर पास । ग्राम बाहिर देवालय रह्या ॥ मजठन रहवा हा । दाना रूप पलटाय । शिष्य गुरू जोगी भया ॥ १५ ॥ ऊन आटा

नी हो । माटी जटा वणाय । गिर शिखर जो शिरे ठवी । सिंदुर टीको हो । रुद्राक्ष मा
ल गलात्रिपेने शोभवी॥१६॥लगोट कसीयो हो चग उतग ववन । घूणी धकाइ मुग्व आग
ले ॥ भभुत रमाइ हो । घोटो चिमटो घर पास । गांजा चिलम भय स्वाग ले ॥ १७॥
भिक्षा ने मिसे हो । वक्त वे वक्त ने माय । खपर ले गेंदू जावइ ॥ गली २ घर २ हो ।
अलख जगाह न जोय । राज महल मांइ आवइ ॥ १८ ॥ इम फिरता हो । न लागी स
घर लगार । चिन्ता करे दोनो तदा ॥ फोडो मोम्यो हो । राज घराणा को कोय । तेह
थी कार्य होय सदा ॥ १९ ॥ इण उपाये होय । गेंदु ने सिखाय । जाय नित्य राज द्वार
ते ॥ घुणी जगा वे हो । लगावे ललकार । करामात करे केइ जहार ते ॥ २० ॥ पतो
वातज हो । भाइ रही इण ठाय ॥मुल्जो मतीअमोलख कहे॥ढाल रोहणी हा । तारा सं
ख्या पे होय । आगे चन्द्र सेणकी सुद्ध लहे ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ तिण काले ते अव
सर । कनकपुर मझार ॥ चन्द्र नृप कारा गृह । करे काल प्रसार ॥ १ ॥ चिन्ते चित मे
एकदा । जे शत्रु थी माग्यो डर ॥ तह तणा राजज विपे । मण्या केदी कर्म कर ॥ २
॥ जिहां लगन ओलखे । तिहां लग छुटको होय ॥ तो कार्य करी सकु । नहीं ता सगा
नहीं कोय ॥ ३ ॥ अहो कर्म विचित्रता ॥ राजा को हुवो ख्वार ॥ सुवर्ण स्थान लाहो प

ढ्यो । दुगधी ए ठोर ॥ ४ ॥ तुच्छ अन्न निगब्यन्जने । भु शय्या शोक रमण । निर्बल
ता अति क्षिन घदन । करते एम समण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ढाल ६ ठी ॥ पास जिनेश्वरर म्वा
मी ॥ यह ॥ शाणा सुणजो हो चित लाइ ॥ चन्द्र नृपनी हकीगत भाइ ॥ आ । पुर्व
मचित पुण्य सजोग । मिले हैं अशुभ माहे शुभ जोग ॥ शाणा ॥ १ ॥ कारा गृह पर
एक सिपाही । पहरो देवे टैम पर आइ ॥ ते तो हुंतोजी गुण माहीं । पण कर्मे ए नोक
री पाइ ॥ शाणा ॥ २ ॥ दयालु मयालु ने मिलापु । दु खिया ने शक्ति ये सुख आपु ॥
ल तो साभलज केदीयों करी । पर सुख देखी ने मन हर्षेगी ॥ शाणा ॥ ३ ॥ एकदा रा
त्रीये पहरा पर होतो । केदी भणी चउ पास जोतो ॥ सर्व घदी जनरे सुता । चन्द्र सेण
जागता हुता । शाणा ॥ ४ ॥ ते शिघ्र आयाजी नृप पासे । मिष्ट गिराथी इम प्रकासे ॥
तुम जागोछो हजु भाइ । तुम ने निद्रा क्यों नहीं आइ ॥ शाणा ॥ ५ ॥ चन्द्र सेण भा
खे हो सुण शाणा । नहीं चिन्ता ते नीद घोराणा ॥ दुजो काम म्हारो छे कांइ । आवे
निद्रा तो लेवू भाइ ॥ शा ॥ ६ ॥ भट तव भाखे हो सुणो भाइ । तुम मन ऐसी चि
न्ता कांइ । जेहथी निद्रा गइ छे रीसाइ ॥ सुख चहावो तो वेघो सुणाइ ॥ शाणा ॥७॥
मही घर चिन्ते हो मन माही । आपण शत्रु राज के माइ ॥ रखे सच कहता हो दुख

धाइाइम चितीकहे क्या कहु भाइ॥ शाणा ॥ ११ ॥ भट मास्वरे मत छिपावो । किंचित
न्र म्हारो मत लावा ॥ अन्य वृत जेसो मुज मत जानो । मुज जाती को ब्राह्मण मानो
॥ शाणा ॥ १२ ॥ म्हारा गुण मुज मुख कहवा । ये तो युक्त नहि सुख देवा ॥ तुमे
दु खी दखी मुज लागे । तेहथी पूछु छू तुम आगे ॥ शाणा ॥ १३ ॥ तूम बोली गुण दे
खी मे जाणा । छो कोइक थे मोटा राणा ॥ तुम बीतक सुणी शाकि सारू । करस्यू तुम
दु ख ने हु निवारु ॥ १४ ॥ ७ ॥ इन्द्र विजय ॥ ताराकी जोत में चन्द्र छिपे नही । सू
र्य छिप नहीं बादल छाया ॥ रण चढ्यो राजपुत छिपे नही । प्रिती की रीति छिपे न
छिपाया ॥ चचल नारी का नेण छिपे नहीं । दाता छिपे नही मगत आया ॥ कवी गग
कहे सुन शाह अकबर । कर्म छिपे नहीं भभूत लगाया ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ चत्र से
ण कवे हो सुणो भाइ । या अश्चर्य कथा या सुणाइ ॥ कारा महि का होजे सिपाइ ॥ ते
हने हृदय दया क्षिम रहाइ ॥ शाणा ॥ १५ ॥ बाले विप्र ए साची भाखी । जेस दखी
तेसी दाखी ॥ पण मुज भणी न अजु पहचान्यो । तेहथी कहु चरित्र म्हानो ॥ शाणा॥
१६ ॥क्ख रथ राजजी का बाप॥मुज तात ने दीजागीरी आप॥मुज बाप मुवा याते खोसी।
हु मुज तन नही सर्यापो पोपी॥ शाणा॥१७॥ सुरग पसि के म्हारी प्रीती । तिण मुज दीना

फरी घती ॥ वसू हिरण मारुवी आवे । खातों नख धी उगराये ॥ शा ॥ १८ ॥ आब
लूला पगु प्राणी । तन दवू हु हित आणी ॥ वृद्ध वय दूजो न सूजे काइ । तेहथी आयु
खुटावू छांइ ॥ शा ॥ १९ ॥ यह मुज विरतत तुमने सुनायो । कहो थाने जो होवे इ
च्छाया ॥ ढाल अमलपा नागर्थी कहीये । अमोल चन्द्र नृप आग सुख लहीये ॥ शा ॥
२ ॥ ० ॥ दूहा ॥ अघनी पस चित चिन्तवे । प भविक प्रणाम । इणने दु:ख दर्शावता ।
होसी अपणा काम ॥ १ ॥ नतले पियुख घालीयो । मुज मन दु:ख अपार ॥ शिघ्र कहो
शीलक कथा । सशय चित निवार ॥ २ ॥ थार म्हारे बीचमें । साक्षी श्री भगवान ॥ किं
तिन कपट जो में करुं । ता पहू नर्क के स्थान ॥ ३ ॥ और नहीं वश म्हारा । कहो जो
इच्छा होय ॥ निश्चय मया म्हार मन । तुम नृपत छो कोय ॥ ४ ॥ अत्यन्त्य अग्रह जा
णन । कह नर चन्द्रसेण ॥ सुण भाइ म्हारी कथा । सुखियो कर मिला सेण ॥ ५ ॥ ०
॥ढाल७ मी॥सतगुरु निर्वाणी२॥यह ॥सुनो भाइ कर्म कहानी कर्म कहानी चन्द्रसेण राजा
नी ॥ शा ॥ आ ॥ चन्द्रमण मुत नाम कहीजे । विजय पुरी रहवानी ॥ दुष्ट कंस्वरथ करी
चगाड । छंगी नगर महानी ॥ सुनो ॥ १ ॥ रात समय अचानक आइ । चोर तणी मती
ठानी ॥ राज साजन छोड म निकल्यो । दगाथी हुया हैरानी ॥ सु ॥ २ ॥ रन वन अट

री में जा पडियो । ग्याया फल पीयो पानी ॥ इहा तण भट पकडी लाया । चोरज मुंजने
नानी ॥ सु ॥ ३ ॥ विप्र भट तय पग लागी कहे । क्षमीयो मुज नादानी । विन पहुचा
न दु ख म दीना । बोल्यो कम जवानी ॥ सु ॥ ४ ॥ अय काइ फिकर करो मत । मिल
सा सपत पुरानी ॥ यह बुद्धि आप अच्छी थापरी । राखी बात छिपानी ॥ सुनो ॥ ५ ॥
हाण हार हाती जो हुइ ॥ न चिन्तो बात गुजरानी ॥ उभय पांव कीजो मुज सामे ।
शडी तादू थानी ॥ सुनो ॥ ६ ॥ बाहिर निकल सीधा पधारो । रहजो मा इन ठिकानी ॥
पाछी सपत पावो स्वामी । सार कीजो तव म्हानी ॥ सुनो ॥ ७ ॥ धराधव कहे बात
विच रो । वेडी काट्या म्हानी । किछा पतीन मालम पडिया । कुन्दी करसी थानी ॥ सु
॥ ८ ॥ कहे ब्राह्मण फिकर न कीजे । यहा पोल तणी राज ग्यानी ॥ गजराज सा गढक
होजावे तो । थारी कोइ घटानी ॥ सु ॥ ९ ॥ म्हारी फिकर न करो जरामर।पग झट करो
मुज कानी ॥ चन्द्र नृप पग लम्बा कीना । शस्त्र ला शिघ्रानी ॥ सु ॥ १० ॥ बेडी तोडी
बाहिर कहाडया । द्वार लग पहोंचानी ॥ वक्ते याद करीजो स्वामी । कह आ बेठ्यो ठिका
नी ॥ सु ॥ ११ ॥ गुप्त मार्ग अन्धार में समता । आया गाम बारानी ॥ सीधाइ ते वनमें
चाल्या । मग न विम्वे नजरानी ॥ सु ॥ १२ ॥ विषम झाडी में आ पहीया । रवा आगि

या चमकानी ॥ जाणयो ग्राम तणा ए दिशा । लहु विश्रामो स्यानी ॥ सु ॥ १३ ॥ तस अनुसार शिघ्र चालतां । पड्या ग्वाडमां जानी । शरीर टोंचाणो मस्तक फूटयो । लागी चाट सिह्लानी ॥ सु ॥ १४ ॥ पानी माहे वस्त्र भीना । जे विया ते विप्रानी ॥ सावध होइ आगल चाल्या । विपम पहाड ते जानी ॥ सु ॥ १५ ॥ रखे पडूहु वीजे स्याने । तेह डरे पन्ड मुकानी । हाथ से मार्ग जोता जावे ॥ कम्मर लगी दुःखानी ॥ सु ॥ १६ ॥ स्वपद आपदे हाथ आवे । जेहरी जीव वन म्यानी ॥ पुण्य जोग कदइ दश करे नहीं । जीव जावे घघरानी ॥ सुना ॥ १७ ॥ गुफा माहे सिंह गुजावे । जावे पहाड मर्जानी ॥ जाणे नृप ए आइ खावे । तिथी खुटीं आयुष्यानी ॥ सुना ॥ १८ ॥ आगल मार्ग अतीही विपमो । जागा नहीं जानानी ॥ शिलापट एक माटो थाको । बेठा तिण पर जानी ॥ सु ॥ १९ ॥ कम्मर सीधी करवा लाट्या थाक्या लम्बा तानी॥ आल्स आयो निद्रा घेरानी।मनमें रही उठानी ॥ सु ॥ २० ॥ गुडया पडिया पवर्तथीं त । गुडता चाल्या ते ठानी ॥ पकडन ने नहीं आसरा काइ । गया चित अकुलानी ॥ सु ॥ २१ ॥ कक्कर गोखरु तिक्षण कोरथी । शरीर गया सडनी ॥ खाइ माठे खजडी आइ । गही तास द्रवतानी ॥ सु ॥ २२ ॥ तिण आसर रहा पडीते । वायु अग भरानी । टोंचणो सहु अंग सूजीयो । वीजली तन चम

फानी ॥ सुनो ॥ २३ ॥ शीतल पवने थर२ कंपे । दु ख अग अगानी ॥ इण परे ते रात
मुदाइ । गति विचित्र कर्मानी ॥ सुनो ॥ २४ ॥ छल्या पापनी वेदनी मुक्ति । काल मघा
तीरानो ॥ कहे अमाल आग हिव सुणिये । सतनृप पुण्य वानी ॥ सुनो ॥ २५ ॥
७ ॥ दुहा ॥ प्रभात प्रकाशीया । दीसण लाग्यो नेण ॥ बेठां हुवा नृपती । पेखता तत्क्षे
ण ॥ १ ॥ खाइ ऊंडी अति घणी । तास किनारे झाड । त झाली कहाडी रात म । पड़
ता टूटता हाड ॥ २ ॥ ० ॥ श्लोक ॥ न रणे शत्रू जलाग्नि मध्ये । महा रणे पर्वते
मस्तकवा ॥ सुप्त प्रमत्य विषम स्थितवा । रक्षती पूण्यानी पुरा कृतानी ॥ १ ॥ ●॥ दुहा
आयुष्य पुण्य का बलर्थ । आज बच्या मुज प्राण ॥ हिव आगल होसी किसो । जाणे
श्री भगवान ॥ ३ ॥ किहा प्रिया किहा मसवी । पतो नहीं तास मुज ॥ म्हारो पिण तस
कुणकहे ।जे मे मुक्या गुज ॥ ४ ॥ चित स्थिर कर समरण कियो।मगलिक महा नवकार ।
जिके तो प्रगट हुवा । झल झलाट दिनकार ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल८ मी ॥ मैं मुख देख्यो
गोडी पारसपो ॥ य० ॥ सुणो हो चतुर नर पुण्य मयल जग । दु ख मिटी सुख थायजी
॥ आ ॥ सूर्य तेज प्रभाव भूपनी । श तरू ता हुइ दूरजी ॥ अकडानो अग रग मव छूटी
प्रफूल्लित भयो नूरजी ॥ सु ॥ १ ॥ पहाड ऊंचा अति भयकर दीसे । खाड झाड असराल

जी ॥ चडन की शक्ति नहीं अगमें । दुःख भोगी तन हुवो लालजी ॥ सु ॥ २ ॥ तिहा
ही शुद्ध भूमी कर करथी । फर पग खुल्ला कधिजी ॥ आलस मोटी सुस्ती भगाइ । आ
गें चालण चित दीधजी ॥ सु ॥ ३ ॥ क्षिण२ अन्तर ले विसामा । चमके सघलो अगजी
॥ भूख प्यास पण घणेरी । तेहथी चित होवे भगजी ॥ सु ॥ ४ ॥ याग फल लेइ खाया
। पीया झरणारा नीरजी ॥ आधार थोडो हुवो तेहनो । स शक्त हुवो शरीर जी ॥ सु ॥
५ ॥ ग्याड उलघता पहाड प चडया । निशी रह्या तरु पर तेहजी ॥ तीन दिवस इम नृप
खुट्या । थाकी घणी तस देहजी ॥ सु ॥ ६ ॥ आगल आयो मैदान मोटो । रमणिक
उध्यान रुवजी ॥ फल्की यथ बहु वृक्ष मनोहर । साता कारी विसेखजी ॥ सु ॥ ७ ॥
आबू जाम्र लिम्ब फल आमली । दाडिम सीता फल जी ॥ रामफल निगोद केतोडी
बील पलास्या । द्राम अंगुर नी बलर्जी ॥ सु ॥ ८ ॥ बड पिंपल उम्बर ने बरदी फल ।
नारगी फणस कचनार जी। चपा चमली गुलाब केवडा।जाइ जुइ मोगरा गुल जार जी ॥
सु ॥ ९ ॥ पत्र पुष्य फल करीने भरीया । हरीया ६णा शोभायजी ॥ पक्षी नाना किडा
कर तिहां । मजुल शब्द गुंजायजी ॥ सु ॥ १० ॥ तोता मेना सारस सालूकी । चकवी
चकवा चकार जी ॥ चिडीया बहु रंगी कमेडी कबूतर । तीतर परेवा मोरजी ॥ सु ॥ ११

॥ झरणा झर रह्या ज्यो टूटयो । जाणे मुक्ताफा हारजी ॥ कुंड पुष्करणी कूवा सर नाला
देख्या लग मना हार जी ॥ सु ॥ १२ ॥ ॰ ॥ गाथा ॥ नाणा दुम्म लगाइ न । नाना
पख्खी निसेवी य ॥ नाणा कुसम स छिन्नं । उझाण नदणो वमे ॥ ३ ॥ ॰ ॥ ढाल ॥ मो
टी सीला घटारी मटारी । जाण विछायो चोरंगजी ॥ तिण उपर नरपतजी विराज्या ।
मन देखी हुवा वगजी ॥ सु ॥ १३ ॥ थोडी देर विश्राम लइने । पेट पूजाके काज जी
॥ मधुर नरम न पुष्टिदायक । फल लइ खोला माजजी ॥ सु ॥ १४ ॥ सब अवाज आ
या पाणी को । तिण दिस रायजी जायजी । मही सरीता सागर ८नीता । तिहा बेठा
फल खायजी ॥ सु ॥ १५ ॥ पाणी की कल्लोल निरखता । मगर मच्छी ने कच्छजी ।
फरी कपिणी निज यालक लेइ । बेठा नृप पास स्वच्छजी ॥ सु ॥ १६ ॥ इत्यादी तमा
सो देखी । नृपती दु ख गया मूलजी ॥ पेट भरी फल अहारज कीधो।पाणीपी कियो कुल
नी ॥ सु ॥ १७ ॥ तेह पचासण ठेहले तिहा नृप । वन थी जोय हर्षाय जी ॥ दीर्घ सि
लपट देखी भूधव। सूता तिणपर जायजी ॥ सु ॥१८॥ चिन्ते शोभा किण इहा निपाइ ।
मनश्री मनो हार जी ॥ इम अनेक विचार करता । निद्र वश हुवा जार जी ॥ सु ॥ १९
॥ एक थकाने रात उजागरो । फल थी पट भराणो जी ॥ निश्चिन्त स्थान एकान्त से

नाइ । निद्रा में नृप घेराणो जी ॥ सु ॥ २० ॥ इहाइ सहायक मिले आइ सारा । ते सु
णा आगे अधिकार जी ॥ पूर्वा अर्न उत्तरा का ताराकी ॥ ढाल अमोल उचारजी ॥ सु॥
२१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ तिहा थी अति ढूकडी । भील पल्ली थी सुखदाय ॥ पल्ली पती सहु
परि नार थी । रहतो था सुख मांय ॥ १ ॥ तिण समय से सज हुयो । रेशमी धोती कस
॥ जरी पोशाक हम कडदारा । अग चग कृष्णश ॥ २ ॥ तीर कमान कर में ग्रही । अ
पणा भेसी सग ॥ खेलण आयो उद्यान मे । धरतो चित उछरग ॥ ३ ॥ तिणही वन
फिरता थका । आया राजा पास ॥ सूरत सेंदी देखकर । मनेम करे हियास ॥ ४ ॥ हे
काइ पुण्य घत जीव यह । पण दुःख पाया पूर ॥ जाग्या थी सहू पूछस्यु । बेठ्यो तिहा
हप उर ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल९ मी ॥ मील पर समकित खुल रही । दयापर दोलत झुक
रही ॥ यह ॥ पुण्यो दय हावे पादरा । कांइ पुण्य बडो ससार हो श्रोता ॥ पुण्य थकी
सपन मिले काइ । चिन्तीत पडे सहू पार हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ १ ॥ पहर दिन बाकी
रह्यां । काइ जाग्या चन्द्र भुपाल हो श्रोता ॥ आलस तज बैठा भया कांइ । निद्रा थी
चक्षुलाल हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ २ ॥ पल्ली पतने ओलखी । कांइ अश्चर्य थया न्रपाल हो
श्रो । अहो रामजी किहा थकी । तुम इहा आया चालहो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ अति

आश्चर्य घन चर पति । कांइ ऊठी कियो जुहार हो श्रोता ॥ स्वामी जी आप किहां थकी
। इहा विराज्या पधार हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ हर्षा नन्द ना आं सुडा । कांइ आया
उभयने नयन हो श्रोता ॥ आज सारो वाडा माहरो । कांइ पक्षीपत कहे वयनहो श्रोता
॥ पुण्य ॥ ५ ॥ पुन नृप पूछे किहां पकी । तुम आया इहा वन मांय हो श्रोता ॥ परि
वार सहु तुम सुखी अछे । बैठा सहु दो सुणाय हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ कर जोडी
पक्षीपत भणे । कांइ सांभलो आप सिरकार हो स्वामी ॥ तमारा चरण
प्रताप थी। हमो सहु छां सुख मझार हो स्वामी॥ पुण्य ॥ ७ ॥ पक्षी हमारी इहां अछे। सप
रिवारे इहा छे वास हो स्वामी ॥ आपकी धरणी प सहु । अने हमे सहु आप का दास
हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ ❀ दुहा ॥ दूर रहे ते न घटे । उत्तम मनकी लाग॥सो जुग
पाणी में रहे । न बुझे चक मक आग ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ नृप पूछे पक्षी पत ने । था
विजय पुर छोड्यो किण वार हो मित्र ॥ प्रधानजी आदि किहां अछे । ये जाणो तो क-
रो उपाय वो मित्र ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ भिल व्रिप कहे जिण रातरा । कांइ शमु ये ढाली
धाड हो स्वामी॥तिण दिने हु इहां आवी यो।पाछे सुणिया सहु दिया काढहो ॥ स्वामी॥
१० ॥ सुणीने में पठावी या कांइ । जोवा ने लौक ... ता नहीं लाग्यो कोइ

रो ॥ काइ मेहनत छुई सहू फाक हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ कृपणो भण्यो कहतो हू
नो । कांइ हम ने मार्ग माय हो स्वामी ॥ वेपारी पङ मिल्या हूता । पण पाछो नहीं त
राय हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ राय कहे ते तो दुइज हता । पण अशुभ कर्म ने जोर
होमित्र॥ पकडी ले गया कनकपुर कांइ ।सीपाइ कर चार हो मित्र॥ पुण्य ॥ १३ ॥ कारा
गृह मुक्ति करी । मुझ भूख्या हुवा दिन चार हो मित्र ॥ होण हार टले नहीं । कांइ की
धा कांइ प्रकार हो मित्र ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ पसाइ रामा भणे । कांइ म्हारी जात गिवा-
रहोस्वामी । एकला आपो मल न । गाडा गया गाम मझार हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥
नृप कहे तिण नहीं आलख्या । उन में नहीं कथा पूछ्या भद हो मित्र । तो पण स्वा
गतकी घणी । तुम किंचित गत करो खेद हो ॥ मित्र ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ पछी पती क
इ पुण्य थी । कांइ आप का होवा दर्शन हो स्वामी ॥ मन वांछित फल सिद्ध हुवा । हि
यो हुवा प्रसन हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ नृप निश्वासा न्हांखीया । कांइ मुख कीयो
उदास हो स्वामी ॥ तस्कर पती इण पर भणे । आप मत करो कोइ विमास हो ॥ स्वामी
पुण्य ॥ १८ ॥ होण हार जो हो गयो । अब नहीं कमी लगार हो स्वामी ॥ १९ ॥ सं
मे हम अच्छा दाइ । थीम हजार जूजार हो स्वामी ॥ पुण्य ॥ २० ॥ सुणी भूप कहे सुणो सहु-

मलावसा । अने करस्या शत्रू का नाश हो श्वामी ॥ थोडा दिन में कहे वयनहो श्रोता
रमो सुख वास हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ २० ॥ सुणी वचन पछी पत के श्रोता ॥ परि
र्य लाय हो श्रोता ॥ भरणी कृता कासतारकी । यह ढाल अमोल सुणाय हो
पुण्य ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर तिहां आवीया । कृष्णा मण्यो दोइ भील ॥
आया पोवी चन्द्र नृप ने । कहे पती ने धर लील ॥ १ ॥ यही ते धैप... छे । मि
ल्या था जगल माय ॥ रामाजी कहे गाडा भया । एह नृप चन्द्र महाराय ॥ २ ॥ तुम
छाडी गया एकला । पीछे पाया घणो दु ख ॥ चमक्या हम दोनो साभली । प्रगमी बो
ले मुख ॥ ३ ॥ क्षमा अपराध एह हम तणो । जेम अजाणे कीध ॥ चन्द्र मधुर स्वर इ
म कहे । ए हम कर्म की विध ॥ ४ ॥ अजाणे तुम मुख भणी । दीनो घणो सतोप ॥
हम सुण दोनो मन विप । पाया घणोहि तोप ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १०मी ॥ राघव आवी
या हो ॥ यह० ॥ तेह वन रमणीक जाणी । राय को लाग्यो मन ॥ तंबू डेरा बंधाया ति
हां । रहने को राजन ॥ सुगुणा सांभलो हो । चन्द्र सेण पुण्य प्रकाश ॥ आं ॥ १ ॥ श
रीर को निर्मल बनावे ॥ कियो मर्दन तेल ॥ स्नान औपध आदि सेवी । पोढ्या सुखम
मल पेल ॥ सु ॥ २ ॥ एकदा रामाजी विचारे । निज मुख्य सामन्त बोलाय ॥ आपण

चाकर राजा का । सेवा करो वक्त पाय ॥ सु ॥ ३ ॥ ते पण कहे यह धर्म अपणो । न
याइ इण माय । वक्त सेवक सेवा साधो ॥ श्वामी ने सुख उपजाय ॥ ४ ॥ सतोष वनृ
पती चितवे । रणांगण मा काल ॥ सहु सूर ने करा भेला । नृप खुश होसी भाल । सु
॥ ५ ॥ ओर जोगी करी सझा । जची सहु के मन । ते प्रमाणे सज्ज हुवा सहु । सामा-
न दूजे दिन ॥ सु ॥ ६ ॥ नफर पास वजावे ढोल ने । वहु ऊचस्थाने जाय ॥ सुणी सुर
ते धनुष्य बाण ले । रणा गणे भग आय ॥ सु ॥ ७ ॥ क्षिण तरे सहु आइ जमीया ।
दो दश सहंश्रे तहा भील ॥ करी अर्जी चन्द्र नृप ने । रामाजी आदि मिल ॥ सु ॥८ ॥
देखीये श्वामी शेन्य आपवी । है केवी दुरवंत ॥ आप हुकमे एक क्षिण में । आणे शत्रु
अत ॥ ९ ॥ राय आया तम्बू वाहिर । ऊचस्थान खडा रेय ॥ देख समोह प्रवल चगा
। अन्द अग व्यापेय ॥ सु ॥ १० ॥ केइ कर तरवार वरछी । फरसी खड्ग कटार ॥ वदू
क तमचा पिस्तुल तोमर । गुती शोटा धार ॥ सु ॥ ११ ॥ इत्यादि तारह २ का । जु
दा २ शस्त्र हाथ ॥ धनुष्य बाण ने गोफणी तो । छजी सहु ने साथ ॥ सु ॥ १२ ॥ स
तोपा णा नृप देखी । रामो भाखे इम । प्रमेश्वरनी साखथी । आप फरम कहु जिम ॥ सु
॥ १३ ॥ कपट इण से कभी न करस्यूं । पालस्यु पुत्र जेम ॥ मही पत कहे सुणो सहु

ही । मुज वयण न फिरे केम ॥ १४ ॥ ए सहु मुज प्राणसे ज्यादा । राखस्यु उम्मर भ
र ॥ जिहां सूधी ए नहीं चले । तिहां सूधी न अन्तर ॥ सु ॥ १५ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥
चलंतिमेरु मंदिर कदाचित । चलती धरणी ग्रह चन्द्र सूर्य ॥ सत्पुरुष वाक्य नेव चलती
। प्राणांत राजन् धर्म वदती ॥१॥ ● ॥ढाल॥ तब पल्ली पती सहु भीलोने।हाक मार कहे
एम ॥ इष्ट देव ना समें खाइ सहु । बोलो अटल शुद्ध प्रेम ॥ सू ॥ १६ ॥ चन्द्रसेण है
नाथ हमारा । रहस्या आणे सदाय ॥ किंचित दुःख थावा न देस्यां । मूडकी जो जाय ॥
सु ॥ १७ ॥ सहु जननमकरीने। कहे इम प्रकार ॥ आप हुकम प्रमाण म्हाणे ।चन्द्र सेण
शिरकार ॥ सु ॥ १८ ॥ जय २ कार गर्जाव रव जिम हुओ।तव तिण स्थान॥मगल को स
हु ते दिन मानी । कीना मिष्ट खान पान ॥ सु ॥ १९ ॥ चन्द्र नृप कहे आजथी नित्य ।
सहु आणो इण जाय । एक प्रहर संग्राम नी कला । सीखिये धर लाग ॥ सु ॥ २० ॥
कबूल कर सहु गया स्थाने । नित्य वक्त ।सिर आय ॥ राजेश्वर अति चुप धर तस ॥ वि
विध कला पढाय ॥ सु ॥ २१ ॥ निशाणा मारण जास प्रकृती । सहुथी होंस्यार ॥ गुस
रहाइ गुजरीती । सिखाते ।नित्य घडी चार ॥ सू ॥ २२ ॥ भलि पस थया चन्द्र नृप ।
मत जणो तम आशो मान ॥ कार्य साधन आपणो । तस विश्वासीनिर जान ॥ सु ॥२३॥

सुख रहे चन्द्र नृप तिहां । आस धरत अपार ॥ और सज्जन मिले इहा । त आगे अ
धिकार ॥ सु ॥ २४ ॥ खन्ड चतुर्थ अमोल भाख । शत भिर्पे विन्दू हीण ढाल ॥ सती
लीलावती तणा । आगे सुणियो हवाल ॥ सु ॥ २५ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ हिवे महा सती
लीलावती । देव घर भारती घेर॥काल कमण करे सुखे॥आपसे प्रेम बहु पेर ॥ १ ॥जाणी
गुणवन्त दम्पती । दाना ने धर्म वन्त ॥ एकदा निज सत्य वारता ॥ सती तास भणन्त
॥ २ ॥ सुणी वे नो अश्चर्य हुवा । अहो महाराणी आप॥कर्म घेर्या आया इहां । रखे को
गमो संताप ॥ ३ ॥ क्षमजो गुन्हो जे हमतणो । जे कीधो अजाण ॥ लीलावती कहे आ
रता । मात पिता ने समान ॥ ४ ॥ सुख पामी तुम थी घणो । भक्ति न मुजथी होय ॥
अवसरे उपकार फेडस्यु । क्षमजो अपराध मोय ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल ११ मी ॥ तीर्थ ते न
मूर ॥ यह० ॥ इम सीनो ने आपसे । रहे सम्पसेरे । बीताडे ते वार ॥ कर्म गती साभ
ळोरे ॥ पुत्री सरीखी जाणने । माया आणनेरे । जाप तो करे अपार ॥ कर्म गती सभ
ळोरे ॥ १ ॥ एकली पेठण वे नही । कथा कही । पुराण तणी रस भर ॥ कर्म ॥ सती
गण जनक जननी परे । भक्ति करेरे । नवणे पहुवो अवसर ॥ कर्म ॥ २ ॥ उपर थी खु
शी रहे । मन दु ख वहेरे । विसरे किप भोग्या सुख ॥ पति चित क्षिण२ सभरे । नहीं

याव करे । जिम चकवी भानु मुख ॥ क ॥ ३ ॥ ● ॥ छपय ॥ सज्जन अतसे खुच रहे
। मिले केइ सज्जन समाना ॥ तिनकी होड नहोय । कनक पित रग एक जाना ॥ परि
क्षक मूल न गुन । जोय जिन अनल तपाना ॥ पदले नहीं जेरग । भोगवे विपती नाना
॥ तिनकी याद कहा कीजीये । जेह कभी विसरे नहीं । अमोल सखे सज्जना । विरला
जग पावे सही ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ कब ऐसो दिन आवसी । पती पावसीजी । कब पु
रसी मुज आस ॥ कर्म ॥ ४ ॥ जाग्रत हो आर्ती करे । मन समरेरे। ज्ञान थकी समजाय
॥ कर्म ॥ इम काल अती क्रमें । इन्द्रि दमेरे । करे तप अनेक शोपे काय ॥ कर्म । ५॥
मन रासे दोना तणो । ते माना घणो । सती तणो उपकार ॥ कर्म ॥ तेतले कर्मना जो
गथी । कोइ रोगथीर। वृद्धिका हुइ वीमार ॥ कर्म ॥ ६ ॥ शीत ताप रक्षा करण । नहीं
को सरणरे । स्थान वस्त्र ते पास ॥ कर्म ॥ ओषधी पण किहां थी करे । वनमे वसेरे ।
क्षिण शरीर थयो तास ॥ कर्म ॥ ७ ॥ चाकरी सती करे घणी । जे मक्ते घणी । पण न
वसके आयु माग ॥ कर्म ॥ आशु नेडो जाणने । हित आण नरे । कराया पच्चखाण ॥
कर्म ॥ धर्म कथा समला वइ । जिन गुण कही । वंधाव्यो भातो सुज्ञाण ॥ कर्म ॥ ८ ॥
काल समय कालज करी । शुभ रीति धरीरे । इच्छो ए पण आधार ॥ कर्म ॥ कोफरो

अर्ति करे घणो । हिवे कुण मुज तणोरे । सती धैर्य वे ते वार ॥ कर्म ॥ ९ ॥ जेजे जीव पू
जी लावी या । ते पावीया जी । घधे घरे न लगार ॥ कर्म ॥ एकलो जीव आवी यो ।
तिम जावीयो जी । नहीं जगे को राखनार ॥ कर्म ॥ १० ॥ ● ॥ स्लोक ॥ एकाकी जा
यते प्राणी । तथै काकी विलाय ते ॥ सुख दुःख सथै काकी । भुक्त कर्म वश भूव ॥ १
॥ ● ॥ ढाल ॥ सती पण चिन्ता करे । कर्म इण पेररे । छोडे नहीं मुज लार ॥ कर्म ॥
किंचित सुख जो कधी बने । कर्म तेह हनेरे । ए हुइ तीजी वार ॥ कर्म ॥ ११ ॥ आपस
में थाता करे । एकेक आसेरर । आपा किया पाप करुर ॥ कर्म ॥ ते इहा उदय आवही ।
सुख जावहीर ॥ कर्म ऐसा निष्ठूर ॥ कर्म ॥ १२ ॥ आपसमे समजा वाइ । ज्ञानज दइरे
। रोयो दुःख नहीं जाय ॥ कर्म ॥ जो सुख रह्या नहीं । गया वहीरे । तिम दुःखही वि
रलाय ॥ कर्म ॥ १३ ॥ पुरुष पाल ते वृद्ध सही । सती बाल वइ । दोनोइ सुख माल ॥
कर्म ॥ आश्रय नारी नारी तणो । होवे घणारे । षणियो खुटावे कमल ॥ कर्म ॥ १४ ॥
तो पण कर्म धाया नही।आगे सुणो सही।इहा पण जे थाय।कर्म।मूलतारा तणी।अमोलख भणी
जी।आगे सुणो चित लगाय।।कर्म।१५॥●।।दुहा॥तिण अवसर तिण वन विषे।धाडायतोकि टो
ली एक। भटकती थाकी आइ तिहा । गुप्त सुख स्थान देख ॥ १ ॥ ते पावीयी कुछ अन्तर

। उतर्या लियो विश्राम ॥ भोजन पान नो सज करे । पाया जरा आराम ॥ २ ॥ मालि
क ते टोली तणो । उंचस्थान को पेख ॥ बिछा बिस्तर सुतो थको । चउ वाजू रख्यो दे
ख ॥ ३ ॥ तिण अवसर लीलावती । जल भरवाने काम ॥ आवी ते पुष्करणिये । बैठा
माज घट ताम ॥ ४ ॥ याद आवी माजी तदा । लगइ इहांथी लार ॥ आसरो हूतो घ
णो । कर्म करी निरधार ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ॥ १२मी ॥ धम्मो मगल महि मानीलो ॥
यह० ॥ तस्कर पति त्रिग पेखता । लीलावती द्रष्ट आय ॥ अविलोकी अनोपम छबी ।
नयन गया ललचाय ॥ १ ॥ जो यो विचित्र गति कर्मकी ॥ किहां न छोडे तेह ॥ अट
वीमा सती रहे । तिहां पण आवी पुग्या तेह ॥ जोवो ॥ २ ॥ आहा यह अपच्छरा इ
हां । कहां से आइ चलाय ॥ धन देवी के विद्या धरी । मेरवान मेस पे स्थाय ॥ जो ॥
३ ॥ माधव केशव ते बोलाइयो । देखो यार यह नार ॥ ऐसी मैंने देखी नहीं । कौनहै
करो विचार ॥ जो ॥ ४ ॥ मनुष्य शब्द सुण ने सती । जोयो द्रष्ट लगाय ॥ धारयती
न देखने । गइ मन में घबराय ॥ जो ॥ ५ ॥ तत्क्षिण जल भर ने चला । धरती चित
रुइ धेम । रखे आया ते पापीया ॥ खोसी ले म्हारो क्षेम ॥ जा ॥ ६ ॥ जाती जोइ स
ती मणी । माधव मन अकुलाय ॥ दर पण आवे चित मे । ए माटे घरकी देखाय॥जो॥

२ ॥ कहे केशव के गुप्त तुम । जावो इसके सग ॥ पता लावो क्हां रहे । कैसा है ६२
का ढग ॥ जो ॥ ८ ॥ पीछे केशव चल्यो । दखी झोंपडी रही दूर ॥ यह वश आणी स
इजहे । हर्ष्यो मुख को नूर ॥ जोवो ९ ॥ जल्दी२आय कर । कहे सुनो राज साव ॥ ८
टाटि की झोंपडी । उसमें रहे जनाव ॥ जोवो ॥ १० ॥ मधव कहे फिकर नही । देखेंगे
जाती वक्त ॥ आजतो यांही रेवेगे । थक गयेहैं शक्त ॥ जोवो ॥ ११ ॥ भोजन पान इ
च्छित किया । लाया लूटी माल ॥ ते समाली जमा कियो । मन में लीलावती ख्याल ॥
जाओ ॥ १२ ॥ सध्या हुइ रवी छीप्यो । महु तस्कर हुवा होंशार ॥ समेटी सरा जामने
। चालण हुवा तैयार ॥ जो ॥ १३ ॥ लीलावती ने वृद्ध ते । बैठा प्रणकूटी धार ॥ कहे
नृप फीकर कर मती । थोडा दिवस मझार ॥ जो ॥ १४ ॥ दुष्टकस्वरथ को नाश कर ।
वन्दनेस लेसी राज । तुमन ते भूलेनही । लेसी जरुर बेलाज ॥ जो ॥ १५ ॥ इत्ते तो
तिहा सांभल्या । मनुष्य पाद झणकार ॥ चमकी लीलावती भणे । पिता साव होंशार॥जो॥१६
॥ तेतल ते आवी पछ्या । लियो मद्द ने बान्ध ॥ हाया जोडी घणी करी । जरा न दीं
गा ध्यान ॥जो ॥ १७ ॥ ऊदी सुशरशा बांधने । दी यो वृक्ष ने लटकाय । थर २सती
लपती थकी । छिरी झोंपडी में जाय ॥ जो ॥ १८ ॥ मधव बड २ तो थको । गयो कू-

टी ने मांय ॥ कर गृही सती तणों । खेंची बाहीर लाय ॥ जो ॥१९॥ आगलगाइ झोपडी भणी । मनमे घणा हर्षाय ॥ थारों काम अपना हूआ । अब ठेरना नही थाय ॥ जो ॥ ॥ २० ॥ ● ॥ श्लोक ॥ बालका दुर्ज्जने श्चौरो । वेर्धा विप्रेश्च पुत्रिका ॥ अर्थी नृपो ऽ ती थी मेश्यैं। नविदु सह्य शा वशा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ लीलावती ने लेय ने॥निर्भय चा ल्या जाय ॥ आनुराधा पूर्वा उतरा मिली । ढाल अमोक गाय ॥ जोयो ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ गामडा लूटता थका ।चाल्या आगे जाय ॥ साइ आइ उंढी तिहांतस ऊग्यो दिन राय ॥ १ ॥ गुप्त ते स्थानक ज पने सहु लियो विश्राम ॥ बिछायत विछायने । बेठा माधव ता म ॥ २ ॥ केइक तो लग्या काम में । केइ निद्रा गस थाय ॥ पेट पूजा केइ करे । नि र्भय सहु रहाय ॥ ३ ॥ सती बेठी एकान्त में। धरती आर्त ध्यान । नेणाथी वारी झरे । व्याकी हुइ हेरान ॥ ४ ॥अहो २ कर्म गति म हेरी । विषमी बहु जणाय ॥ सुख इच्छाहू ती गइ । आयुष्य रयो हिग आय ॥ पा ॥ ● ॥ ढाल ॥ १२ मी ॥ पके घर ताल लागी रे ॥ ए० ॥ कर्म गति ओय लोजो जी । शोष केने मनी दीजो जी ॥ आं ॥ माधव दे खी सती भणी जी । मूछें देवे ताव ॥ एह राणी होसी म्हारी जी । पूरस्यूं सारा चाव ॥ कर्म ॥ १ ॥ एक कसबा का ठाकर मे मारी । लस्यूं तहनो राज । फिर पोलीसी फोज

जमाइ । होस्यू अन्य नृप साम्राज्ञ ॥ कम ॥ २ ॥फरामात स सपको घश कर । वनूगा
मे राजान ॥ फिर तो सब करेगा मुजरेसी । यह रुपवती मेरी जान ॥ क ॥ ३ ॥ कुँमर
सण छोडेगा मेर । घडेगा फिर परीवार । शोक शली इम मन माहे । करे अनेक विचार ॥
कर्म ॥ ४ ॥ततले राते लूट्या ग्राम का । मिलिया भील अनेक ॥ पसो लगाता आइ प-
होंचा तिहा । लीना तस्कर देख ॥ कर्म ॥५ ॥घेरो वियो साइने चौपासे । एक दम श
स्त्र चलाय ।तेतो सहू निश्चिन्त रह्या था। दिया घणा नेगुडाय ॥ कर्म ॥ ६ ॥ मोटीरसि
ला गुडाइ । किया किधा चकना चूर ॥ भागणको कोइ जागा नही । जावे किहा मग दू
र ॥ कर्म ॥ १ ॥ गोली एक लगी माधव के । तेना छूटा प्राण ॥ मन कर्म का विचार
जु जुवा । प्रत्यक्ष एक प्रमाण ॥ क ॥ ८ ॥ ● ॥ मन हर ॥ मन कहे पकान खावूं ।
तन को पूष घणा वू । कर्म के रामडा पावू । ते न पुरी पेट भरी ॥ मन
के दुशाला ओढू । सहाली सेजाप पोढु । कर्म के कम्मल तोडू । रहजे भूंइ परी ॥ मन
रहवा मेहल चाव । भूषण वदन भावे । कर्म भाखसी मेठावे । लोह बेडी पगे धरी । मन
कर्म की लडाइ । साधु ज्ञानी ने समजाइ अमोल चिन्तित पाइ । मोक्ष लो कर्म हरी ॥
१ ॥ ● ॥ ढाल॥ चोर तणो द्रव्य लूटशाजी । उत्तर नलागालोक॥लीलावती सरी मनमे ।

आगे थिस्यो होसी थाक ॥ कर्म ॥ ९ ॥ गुफा देखी एक छूकडोजी । पेठी तिणरे मांय ॥ जिम २ शब्द आवे लोक को । तिम २ आगे जाय ॥ क ॥१० ॥ अधा घोर में बैठ न जी । आर्त करे अपार ॥ अहा कर्म गति माहरी । कैसी उदय हुइ इण वार ॥ क ११ ॥ जे जे सहायक होवे महाराजी । ते ते पावे दुख ॥ हुं कैसी हु अभागणी । किया पाप घणा में रूख ॥ क ॥ १२ ॥ तात समान थो डोकरो जी । राखता पूरो प्रेम ॥ पुत्र वहू पतनी विरहा । अब म्हारो पण गयो क्षेम ॥ क ॥ १३ ॥इम केइ विचारनाजी । करती नण नितार ॥ गरमीयेजीव असु जा वीयो । जिह्वा हवा न आवे लगार ॥ क ॥ १४ ॥ कान देइने सांभलेजी । शब्द न आवे लगार ।तब जाण्यो महूननगया । अब निकलू इणरे वार ॥ क ॥ १५ ॥ आहते मार्ग भूली गइजी । भटके गुफाने माय ॥ कही लगे माथा थिपे । कइ ठोकर खाइ गिरजाय ॥ क ॥ १६ ॥घावेंथ हुइ अति घणी । तव जोयो प्रकाश ॥ तिण अनुसारे नीकली जी । दूसरे रस्ते खास ॥ क ॥ १७ ॥ बाहिर आइ पेखतीजी । आटवी महा भयकार ॥ जागा पण सेंधी नहीं । जाण्यो निकली बीजे द्वार ॥ क ॥ १८ ॥ जुथ विछोडी कुरगनीज्यों । रही तिण वन में फिर ॥ लागे कांटाने कांकराजी । कोइ नहीं तस तीर ॥ क ॥ १९ ॥ भूखी प्यासी था

की घणीजी । स्वपद अपद भयकर । गहन वन अवला वलीजी । देस्या लागे डर ॥क॥
॥ २० ॥ फल भभा जोइ करीजी । पीयो निर झरणारोनीर॥बैठीवृक्ष तल कहे अमोलख
। अस्लेषा मघा ढाल स्थिर ॥ क ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ पूरा कर्म मुक्या विना । सुख
किहा थी पाय ॥ एक मिटे दूजो हुवे । कर्म इम सदा सताय ॥ १ ॥ तिण अवसर कुरु
दत्त ते । दुसुस्वना मत्रीस ॥ आया भमतो तिण मार्गे । लीलावती नी जगीस ॥ २ ॥
तरु तले त एकला । बैठी लीलावती जाय ॥ अन्ध नेत्र वज्रा पुत्र जों । हार्षित हियडे
थाय ॥ ३ ॥ दखी लीलावती तेहने । चस्काइ धूजे थर २ ॥ हाहा कर्म कष्ट महा.रा ।
भागी जावू किण पर ॥ ४ ॥ जहने दगो देनीसरी । पडी फिर तेहने हाथ ॥ अव मुश-
किल है छूटका ॥ मरण थी जगनाथ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ जासिडा जात्रा
निन्याणु करीयरे ॥ म० ॥ सतीरे माय सफ्ट आवर । भलां आवे ते विरलावे ॥ स० ॥
॥ आ० ॥ कुरुदत्त अति हर्षाइरे । साथी दाराने चेताइरे । अहो हुवा परमेश्वर सहाइ ॥
न ॥ १ ॥ते देखो लीलावती बैसीरे । छुपके भग आइ कैसीरे । पण अपनी करामात पे-
सा ॥ स० ॥ २ ॥ लीवी दाव उपाये मिलाइरे । दारी घणी मेहनत थी पाइरे । रखे उ
न किहां भगजाइ ॥ स० ॥ ३ ॥ सहू कहेवे फिकर रहीयेरे । अव हम किम जावा दइयेरे

। यार २ भूल नाभइंय ॥ स ॥ ४ ॥ सहु आइ तिणने घरीरे । गैयाने वरगडा पेरीरे । नेहतो भपथी हागइ हेरी ॥ स ॥ ५ ॥ ऊष्ठरी शक्ति रही नाहिरे । अग २ पसीना छूटा उरे।मन में परभेश ध्याइ ॥ स ॥ ६ ॥ कुरुदत्त पहे क्रोध भराइरे । तूं भागीने किहां जा रा।प्म लारे तुज लागाइ॥स॥७॥देखकेसी आइ ने पकडीर।अवर जासाथने जकडीरे।देखा वि म अय मेले छकडी ॥ स ॥८॥ उठाइ तुरग प वेठाइरे।चोकानी फेरी सीपाइरे ॥रहो हों स्यारी से मेरे भाइ ॥ स ॥ ९ ॥ इणने भोली मत जाणोरे । यह है महा कपटकी खा नारे । अय गइ तो ग्वराधी तुम मानो ॥ स ॥ १० ॥ सहु कहे अय तावे हमारेजी । तुम फिक्र न रखा लगारेजी । चाल्या विजयपुर मार्गे जवारे ॥ स ॥ ११ ॥ मन माहे सह षणा रर्जार । अय एते हुइ जाणे वाजी रे । करे याता मार्गे गाजी ॥ स ॥ १२ ॥ क्षिण विश्वास नहीं तस करतार । शारा सिर पेहरा यदलतारे । कुरुदत्त फिकर घणी धरता ॥ स ॥ १३ ॥ इम विजय पुर तेआयारे । रात पठा गाम मांयारे । जे कुमुख मार्ग यताया ॥ स ॥ १४ ॥ ते गुप्त रस्तले आयारे । काइ अन्य जाणन नहीं पायारे । गुप्त मेहल में तास छिपाया ॥ स ॥ १५ ॥ दी कुमुख ने जा यधाइरे । लायो तुम पटराणी साइरे । पीसी स पर्ली विस्तारी सुणाइ ॥ स ॥ १६ ॥ सुण कुमुख घणो हपायोरे । ततक्षिण गुप्त मेहल मे

आयोरे । लीलावती देखी आनन्द पायो ॥ स ॥ १७ ॥ हिवे जन्म सफल मुज थासीरे । घणा दिन की इच्छा विरलासीरे । इम तरग केइ विमासी ॥ स ॥ १८ ॥ शाबासी दी कुरुदत्त तांइरे । हिवे प्रधान लेस्यू बनाइरे । हु घनू नृप दिन थोडा माइ ॥ स ॥ १९ ॥ मथी सीपाइ ने इनाम दीनारे । घात करण शक्त मना कीनारे । तेपण प्रभू सोगन लीना ॥ स ॥ २० ॥ यह घात रही इण ठाइरे ॥ ढाल जेष्ट मूला मिलाइ । अमोल सती के सत्य सहाइ ॥ स ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा । मगध देश पयठाण पुर । प्रताप सेण नृप गह ॥ सोमचन्द्र मशीश्वरु । सुखे रह छ तेह ॥ १ ॥ चिन्ते चितमें एकदा । हु निकल्या जिन काम । तझनी चिन्ता परहरी । छब्यो सुखे ए ठाम ॥ २ ॥ धिक्कार होवो मुज भणी । स्वामी भक्तिये प्रमाद । हिव विलम्ब करनो नहीं । सजणो यह विखवाद ॥ ३ ॥ राय राणी जिहा लगे । नहीं मिले मुज तांय ॥ तिहां लग अथ मुज भणी । इम रहणा निहा नाय ॥ ४ ॥ इम निश्चय मन में करी । नृपतीनी रजा लेय । चाल्या आगे सचीव जी । विगे मन पानी मय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १५ मी ॥ न्याल वेकी देशी में ॥ धन्य सवक जे जग विषे जी । काइ आवे मालिक के काम ॥ सफल सही सफट हरेजीर काई । तास रहे जग नाम ॥ ध्रु य ॥ १ ॥ मार्ग चलतां मशीश्वरुजी काइ । मन में करे विचार

॥ नृपती और राणी तणी जी २ काड । सुधीने लागी त्गार ॥ धन्य ॥ २ ॥ किहा जाइ
रहा होसी जी का३ । पहाड खाड ग्राम माय ॥ साथ नहीं कोइ तिण तने जी । दम्पती
भिला के जाय ॥ धन्य ॥ ३ ॥ भरत पुरतो ज्यावे नहीं काइ । पडती वक्त के मांय ॥
राणी पण साथे नहीं २ काइ ॥ सग्राम में थगियाथ ॥ धन्य ॥ ४ पुरुष पास राजा अछे
जी कांइ । सही सखे कधी दु ख । पण सुख माल राणी लीलावती२काइ । जन्म थी मो
गव्या सुख ॥ धन्य ॥ ५ ॥ शीत ताप किम सेवसीजी काइ । किम करे पगथी विहार ॥
सुखना विभागी सहू छूवाजी२कांइ । दु खमां दियो न आधार ॥ धन्य ॥ ६ ॥ इम अनेक
विचार में कांइ । काटण लागा पन्थ ॥ आगल रन एक आवीयोजी २ काइ । सघन भया
नक कन्थ ॥ धन्य ॥ ७ ॥ उतग पर्वत विषम छेजी काइ । न पडे रवी प्रकाश ॥ तिह
शुद्ध आइ मधीने जी । चमक्या देखी ताम ॥ ध ॥ ८ ॥ द्दु आयो किहा नीसरी जी का
इ । हाणहार सो होय । पेखता आगल चाल्याजी । विषम झाडी में सोय ॥ ध ॥ ९ ॥
पुरी मण्डल रथी आवीयोजी काइ । क्षुधा लागी तेवार ॥ भोजन करण विराजीया जी २
काइ । पेखी बारी अगार ॥ ध ॥ १० ॥ पासे भासो ज खोलीयो जी कांइ । भक्षण कि
यो विचार ॥ तब कर्म माइ किन्याजी । अणचिन्त्या तेवार ॥ ध ॥ ११ ॥ टोली कीसांइ

नर तणी जी कांइ । दोडती त दिशा आय ॥ लगोटी तग साधवाजी । अन्य वस्त्र नही पाय ॥ धन्य ॥ ११ ॥ चोटी मोटी सिर परे जी काइ । शस्त्र तिक्षण हाथ ॥ दीसे राक्षस सारीखा जी । प्रचड तन सहू साथ ॥ धन्य ॥ १२ ॥घेर्या आइ मस्री सने जी काइ । शस्त्र वस्त्र दूर डाल ॥ धाप्या मजबूत तेहने जी २काइ । करे कांइ ते घणा माल ॥ धन्य ॥१३ ॥ ० ॥ इन्द्र विजय ॥ कहना माने जिसी को कीजीये । नहीं माने तहा यात क्या कामकी॥ दुष्ट अनार्य अविनीतसे घालीया।हानी होवे आवरु अरु दामकी ॥ कहतां सुल्टी जो उलटी ग्रह । हीये वस तस व्रष्टी हरामकी ॥यश सुबुद्धि आराम के इच्छक । मोन रहो अमोल ते ठाम की ॥ १ ॥ ० ॥ढाल मृत्युक पशू तणी परे जी कांइ। घसीटता लेजाय ॥ छीलाय त्वचा नसीकी जी२कांइ।अग सूल पेसे रक्त वहाय ॥ धन्य ॥ १४ लटकावे उल्ट खधा परे जी काइ। धस्के देवे न्हाक ॥इम चाल्या जाव रण वन माजी२ काइ । समजे न तेहनी भाख ॥ धन्य ॥ १५ ॥ देवालय एक आवीयो जी काइ । मनुष्य हड्डी यो ढग जोय ॥ सोमचन्द घवरावीया जी । आव आयो मरणोय ॥ धन्य ॥ १६ ॥ न्हाख्या एक खाड(विपेजी काड । चन्डिका ने कहे तेह ॥ वल लाया माता तुम भणी जी२कांइ ।काल देश्या भक एह॥१७॥ इम कही सहू सूइ रह्या काइ।नींदे रघुराय ॥ म

त्री अवसर देखने जी । तटके बन्ध तोड़ाय ॥ धन्य ॥१८ ॥ भागा तिहाथी जीव लेय ने जी कांइ । भोपो आग्यो एक तब ॥ जावती देस सिकार ने जी कांइ । खिझायो हुवो गजब ॥ धन्य ॥ १९ ॥ केइ ऊठी लारे भम्या । जी काइ प्रधान लगाइ दोड ॥ मनुष्य वृन्द आगे देखने जी २ काइ । भरायो तिणमें भय छोड ॥ धन्य ॥ २० ॥ मनुष्य मन्द देखी करी जी । भोपा भागी गया तत्काल ॥ अमोल रुपिये यह भणी जी २ काइ मूल मृग आदरा ढाल ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ सचीव पेठो नर वन्द में । ते देखी हर्षाय । दोचार नरमिल करी । तत्क्षण लीयो उठ साय ॥ १ ॥ बन्धन बान्धी उठ तस । दीयो नाव में डाय ॥ अश्चर्य पाया मसी घणा । यह कोन करसी काय ॥ २ ॥ फास तोडी हू भागीयो । पडियो अग्नि मांय हाहा कर्म गति माहारी । आगे २ धाय ॥ ३ ॥ सुणी बात सहू जन तणी । केयक नर जाण्या तास ॥ अन्य देश लेजायने । बेंचे यह नरखास ॥ ४ ॥ मुझनेदूर किहा बेंचने । बनावसी ए गुलाम ॥ इच्छा ए निज पूरसी । मूं मांग्या ले दाम ॥ ५ ॥ होणहार सो होवसी । फिकर किया काइ होय ॥ इम धैर्य धारी रह्यो । आगे सुणो सहू लोय ॥ ६ ॥ ● ॥ ढाल १३ मी ॥ पाडव पांचो वदता ॥ यह० ॥ ते केयक नर हर्षित हुवा । नर लाग्या घणा हायरे ॥ चा

ला ह्त्व धना करा । लवा अपण कर आय ॥ सुज्ञ नर साभला । मसा नी हकीगत भा इ ॥ जी ॥ आं ॥ १ ॥ नावा लाया वाहण विगे । सहू नर भर्या तिणरेमाइजी ॥ वधन छोड्या सहू तणा । जल मग किम भागी जाइ ॥ सुज्ञ ॥ २ ॥ जहाज चलाइ समुद्र में । सहू जन बेफिकर भयाइ जी ॥ कीनो नशो मदिरा तणो । सहू केचक पड्या मुरछाइ॥ ॥ सुज्ञ ॥ ३ ॥ सचीव जी चिन्ते अवलोयने । ए अवसर छूटको थाइजी ॥ तोही जीतव आपणो ॥ नहीं तो गति होसी पशुसाइ ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखता जलनिधी विषे । एक काष्ट वहतो आइजी ॥ मखो तेहने प्रधानजी । यह होसी मुजने सहाइ ॥ सुज्ञ ॥ ५ ॥ जेष्टिका मही नौका थकी । ते काष्ट आरुढ थयाइ जी ॥ जहाज ने टकी लकडीने । बहू जोर से धका दिधाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ कोसधकोस तेहथी गया । आगे कपाट ते स्थम्याइ जी ॥ धका देवण आश्रय नहीं । जल कलोले रह्या घूमाइ ॥ सु० ॥ ७ ॥ जल काटत ते जेष्टि थी । धीरे २ आगल चाल्याइजी ॥ करपद थक्या इम हालता । पाछी झकोल घेरी लेजाइ ॥ सु० ॥ ८ ॥ उर्ध अधो धावा लाग्या । तेतले घृख जलचर आइजी । लेगयो पटिया पातलमें । प्रधान रह्या देखतांइ॥सु०॥९॥निराधार हुवा सोमजी।भुजथी सिन्धू तीरण लगाइजी ॥थाकी ने अशक्त हुवा।तव निरास सुस्ता रहाइ ॥सु० ॥१०॥ उछली आय झकोल

थी । तने पृथ्वी फरस लगाइजी ॥ उठ शिघ्र आया बाहीरे । ओस तोय गया भराइ ॥ ॥ सु ॥ ११ ॥ उंधा लटक्या मुंम ने । नीर सहु नीताऱ्याइजी ॥ उतरी सुम्वाया वस्त्रने सतोष ते मन ने लाइ ॥ सु० ॥ १२ ॥ अवतार नवे जानें आवीया । रवी उष्णथी शीत भगाइजी ॥ धैर्य धरी चल आवीया । एक टूकडा पुरने मांइ ॥ सु० ॥ १३ ॥ सुवर्ण मु द्रापी कर विषे । बवी नाणो तास वणाइ जी ॥ भोजन वस्त्र तेहथी लिया । द्रव्य तिहां सर्व थाइ ॥ सु० ॥ १४ ॥ ❋ ॥ इन्द्रविजय ॥ लाज रखे केइ काज करे । मोटा जो वजे बहु मावर दइया ॥ सिख परिवार बणे के हजार । नारी धरे प्यार लेत बलइया ॥ सबदेश प्रवेश रहे कीर्ती हमेश । दिन में केइ वेश रु माल चरइया ॥ कहे अमोल रहे वर बाल । बणे सुर तोल जो गांठ रुपइया ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ ग्राम बाहिर सराय में । रहा मंत्रीसर आइजी ॥ तब आया एक प्रदेशीया । ते सेंवासा देखाइ ॥ सु० ॥ १५ ॥ पेछाणी अनुमानथी । दोनों का हीया हुलस्याइजी ॥ अहो बुद्धि सागर मत्रीश्वरु । आप किहांथी आया ए ठाइ ॥ सु ॥ १६ ॥ ते कहे हू भरतपूर थकी । जिण दिन वि जयपुर आयाइ जी ॥ अशुभोदय तिणही निशी । वेरी घाडा आय हाल्याइ ॥ सु ॥ १७॥ प्राते जोया विजय पुर विषे । राय राणी सुज न पायाइजी ॥ चिन्त्यो जासु किम स्वामी

क्ने । साय त्रिण लीधां थाइ ॥ सु ॥ १८ ॥ इम चिन्ती निकल्यो हूं जोवया । जोवतो
आयो इण ठाइजी । आप किहांथी पधारीया । किहा राय राणी दो बताइ ॥ स ॥१९॥
सोमचन्द्र निज बीती चरी । आदि अन्त दीधी समलाइजी ॥ आयुबले रह्यो जीवतो ।
पुण्य बले हुवा आप सहाइ ॥ सु ॥ २० ॥ हिवे दोनों मिल सोभसा । चन्द्रसेण ली
लावती ताइजी ॥ रेवंती तारा अर्धनी । ५ ढाल अमोलख गाइ ॥ सु ॥ २१ ॥ ● ॥
॥ दुहा ॥ सुखे सूता दोनों तिहां । दूजे दिन प्रभात ॥ राय दम्पती ढूढवा । दोनों च
ल्या सघात ॥ १ ॥ मोटी अटवी में पड्या । एकेक को आधार ॥ बुद्ध विनोद धर्म च
री । करता करे प्रसार ॥ २ ॥ रुदन सुणि विस्मय हुइ । आया तिहां वृद्ध जोय । ब्रह
बन्धन से बाधीयो । वृक्षे लटके सोय ॥ ३ ॥ करुणा व्यापी छोडीयो । दीनो खानने पा
न ॥ माथे लेइ सेहन । आगे कियो प्रयान ॥ ४ ॥ पूछ्याथी ते वृद्ध कहे । कर्मोदय म
हाराय ॥ धाडाती मुज बान्धी गया । दीवी झोंपडी जलाय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १७मी।
॥ खयर नहीं है जग में पलकी ॥ यह० ॥ आगे जातां तीनों तांइ । वन मनहर आया॥
यास्या विश्रामो लेवा कारण । बेठ्या सुखे छांया ॥ पुण्यवन्त सुखिया जग माइ । पुण्य
वत ने पुण्यवत मिले फल चिन्तित इच्छाइ॥आं॥१॥तिहाथी थोडेक्षी अन्तरे।चन्द्रसेण राजा।

राखी पूरो ध्यान ॥ पुण्य ॥ २ ॥ दोदेशसहश्र भलि
न ॥ भील शैन्य सिखाइ सुधोर । राखी पूरो ध्यान ॥ पुण्य ॥ २ ॥ दोदेशसहश्र ने अश्वदीना ॥ पु०
था शूरा । दोय भाग कीना ॥ दश हजार पायदल अने । देशसहश्र ने अश्वदीना ॥ पु०
॥ ३ ॥ रामा ी फोजपाति बणाया । कृष्णा स्वार श्वामी ॥ मणियाजी पायदल पत बणि-
या । फरवा सिद्ध कामी ॥ पु० ॥ ४ ॥ गुप्त प्रगट साकट गरुड जुह । वम उठ चूकाणा
॥ इत्यादि संग्राम कलामा । हुवा ६णा शाणा ॥ पु० ॥ ५ ॥ पातरायजी विचक्षण प
णाथी । सदा खवर लेता ॥ एक प्रहरनी नित्य करे कसरत । ते वक्त सिल्या थेता ॥ पु
॥ ६ ॥धूम धाम तो लागी घणेरी । धूंवो धेराणो ॥ सरघेनी नालीं नर शब्दे । गुज र-
ह्यो राणो ॥ पु० ॥ ७ ॥ तेह भयंकर नाद श्रवणकर। हेरा गिरी त्यागी ॥ सूर जम्बूक आ
दि केइ स्वपद । छिप्याकेइ भागी ॥ पु० ॥ ८ ॥ अक्षय धर चिन्ते वो मंत्री । यह कौ-
न हे राजानो । किण साथे रण महारण माही । संग्राम मढाणो ॥ पु० ॥ ९ ॥ ते तले
एक कुरग ताइ । केसरी म्रही जाइ ॥ चन्द्रसेण द्रष्टी गत होता । दिले दया आइ ॥ पु
॥ १० ॥ ॥ श्लोक ॥ प्राणीना रक्षण श्रेष्ट । मृत्यू भीताहि जतव ॥ आत्मोपम्य चि
जानाती । रिष्ट सर्वस्य जीवित ॥ १ ॥॥ढाल॥ तुर्त अश्वचढ सेलें सबाही । सिंह लारे
मागा ॥ ते तीनो के पाम्न प्रोश्न । । चल्या गया आगा ॥ पू० ॥ ११ ॥ कुतामें मायो

पशुपत ने । हिरण्यो छिटकाया ॥ दोनों जुदी २ दिश मे न्हाटा । दोनों पचाया ॥ पु०
॥ १२ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ हेम धनु धरा दीना । दातार सुलभ मुवि ॥ दुर्लभ्य पुरुषो
लोके । य प्राणि अभयप्रद ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ चन्द्रनृप ने मागा जेइ । पाछेथी
रामो । अश्व दोडाइ लारे थइयो । श्वामी भक्ति कामो ॥ पु० ॥ १३ ॥ सोमचन्द्र ने रा
मो आलम्बी । अश्व ने स्थमायो ॥ छुली २प्रणम्यो मसीने । हर्षे उभरायो ॥ पु० ॥१४
मसी ऑलम्बी कहे रामाजी । तुम किहां इण ठामो ॥ ते कहे चन्द्र सेण महाराजा ।
कियो इहां मुकामा ॥ पु० ॥ १४ ॥ नृप नाम सुण अति आणन्दी । पूछे किहां श्वामी॥
त कहे हिवणा गया सन्मुख थइ । ऑलख नहीं पामी ॥ पु० " १५ ॥ रामो तुरी दो
डाइ जाइ । दी रायन पधाइ ॥ प्रधान साहेब नाथ पधार्या । सुणी भूप हर्षाइ ॥ पु० ॥
॥ १६ ॥ केकाण फिराइ राजा आइ । दोना सामाधाइ ॥ नणे सेण मिल्या हृदय मे। सुक्षा
रस दुल्याइ ॥ पु० ॥ १७ ॥ दोनों पडिया राय पगावर । नृप तस उठाइ ॥ गाढालिंगन
देइ मिल्या । हर्षांश्रु वर्षाइ ॥ पु० ॥ १८ ॥ सहूजन आया हरा माइ । शेन्य सलामी
कराइ ॥ एकान्त वैठी निज २ वीती । चरी सहू सुणाइ ॥ पु० ॥ १९ ॥ कर्म गति की
देख विचित्रता ॥ खेदाश्चर्य थाइ ॥ भोजन पान किया एक स्थान । आनन्दे रहाइ ॥ पु

२० ॥ आदि अन्त सोम चव चरितनो । चतुष्कन्ध पाइ ॥ ढाल चन्द्र कलौं विभाखी ।
अमोल पुण्य फल्याइ ॥ पु० ॥ २१ ॥ ॥ छन्द सारांश हरीगीत ॥ मन्त्री सोम
यों न्याय उत्तम । नृप आज्ञा न रीजा दीया ॥ स्वामी काज तज सुखसाज । मार्ग वि
ति पाम्रीया ॥ भोपा कैचक दुष्ट थी बच । बुद्धि सागर मिलाविया ॥ वृद्ध छोटी पुण्य
ादी । चन्द्र नृप ढिग रहाविया ॥ १ ॥ पछी मैं राजा भीलसाजा । मन्त्री सग सुखश्री
है । महा सती लीलावती । गेंदू शेन्या पति विजयपुर सहे ॥ सबू को मिलाप पुण्य प्र
ाप । आगे श्रोता अमोलिक कहे ॥ गावे गवावे सुणे सुणावे । तह नित्य मंगल लहे॥२

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के
बाल ब्रह्मचारी श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
शील महात्म प्रबन्ध चतुर्थ खण्ड समाप्तम्

दुहा ॥ आदि नमु अर्हंत को । सिद्धाचार्य उपाध्याय ॥ साधू पंच प्रमेष्टि को । वदू सी
नमाय ॥ २ ॥ पारस मणी से अति श्रेष्ट । पार्श्व नाथ भगवान ॥ भक्त बनावे आप
सम । तासु नमु शुद्ध ध्यान ॥ २ ॥ पंचवृत सुमति धरा । पंचायण पच त्याग ॥ पचा

गीरी पच वश करी । पचमी गति दे भाग ॥ ३ ॥ अभय सत्य दत जत अममत्व । वृत पंच प्रधान॥अधिक जानो शीला तेहमां । ताहि को यह बयान ॥ ४ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ वन्हिस्तस्य जलायते जल निध कुल्यायते तत्क्षणा, न्मेरु स्वल्प शिलायते मृग पति सद्य कुरंगायते । व्यालो माल्य गुणायते विष रस पियूष वर्षायते । यस्यागेऽखिल लोक वल्लभ नम शील समुन्मीलति ॥ १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ शील रक्षण सङ्कट समन । सग्राम सज्जन मिलाप ॥ ये अधिकार इण खण्ड मे। वैराग्य शूरत्व विलाप ॥ ५ ॥ रस सरस फरस श्रव ण । नयण वयण लेचन ॥ धार सार अपार यह । शील फील ने पन ॥ ६ ॥ विजयपूर नयरी विषे । शैन्या पति सुख सेन ॥ गेंदू उभय योगी भेष में । परियटन करे दिन रेन ॥ ७ ॥ अर्ध पक्ष थयो तेहने । लक्ष निरक्ष ने मांय ॥ दक्ष चक्ष समक्ष कर । ते तब बहुली ठाय ॥ ८ ॥ पत्तो किहा लग्यो नहीं । तब चिन्ता बहु होय ॥ राणी साहेब मि ल्या नहीं । रह्या ग्राम सहु जोय ॥ ९ ॥ ● ॥ ढाल १ ली ॥ जोबन धन पाहुणा दिन चारा ॥ यह० ॥ सुणो शैन्यपति की अकल तुम भाइ । लीलावती को पत्तो यों लगाइ ॥ सुणो ॥ आ० ॥ एक दिन शैन्य पति गेंदू ने सिखाइ । मेल्यो गाम के माइ ॥ कोइ राजा को नोकर मेलाइ । लावो इहां बुलाइ ॥ सुणो ॥ १ ॥ चिमटो खप्पर हाथ में लेइ

। चाल्या अलख जगाइ ॥ राज महल के माहे एकान्त । बैठो धुणी लगाइ ॥ सुणो ॥
॥ २ ॥ त तले कुमुख रसोइयो । विप्र दण्डवत क्यों आइ ॥ आशीर्वाद दे गेंदू बोले ।
तुमसा गरीब दिखो भाइ ॥ सुणो ॥ ३ ॥ हमारे गुरुजी बडे करामाती । देते क्षिण में
दु ख गमाइ ॥ कीमीया भी केइ जानते हेग । वेत वस्तु चहाइ ॥ सुणो ॥ ४ ॥ करामा
त हे मोटी जक्त में । सब को इसकी इच्छाइ ॥ बडे २ पडे इस झगडे में । नशीब जैसे
फल पाइ ॥ सुणो ॥ ५ ॥ इम अनेक तरह तस भरमाइ । सगले गुरु कने आइ पछाग
दण्डवत कीनो । पूछी सुख साताइ ॥ सुणो ॥ ६ शैन्य पति जागी कहे हम सुखी हे । दु
निया के फन्द छिटकाइ ॥ तुम्हारे जैसे भक्त जनों पर । होती है गुरु कृपाइ ॥ सुणो ॥
॥ ७ ॥ लोभ अनेक दिया तिण ताइ । मोटी है जग में आसाइ ॥ गभीरता तस देख
ण काजे । नवी २ घात सुणाइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ गेहरो साचो प्रतीत दार चातुर । वचन
न वदले कदाइ ॥ इत्यादि गुण देखी तेहमा । एकदा सत्य जणाइ ॥ सुणो ॥ ९ ॥ हम
तो नहीं हे जोगी भाइ । बने हैं सतीके सहाइ ॥ तुमभी सहायक होवो तो । सुखी
हो घणासो पुण्याइ ॥ सुणो ॥ १० ॥ लीलावती का पत्ता लगाणा । सुखी करणी तिण
ताइ ॥ विप्र कहे मुज शक्ति जो भक्ति । चूकस्यू नहीं हू कदाइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ शैन्य

पति कहे विचार दु मुस्वका । सुणो सो दो हमने जणाइ ॥ ते कहे ठीक करस्यू इम गु
त हू । भेद न जाण न पाइ ॥ सुणो ॥ १२ ॥ इम कही निजस्थान विविध आ । रसोइ
ताजी बनाइ ॥ तब मुख कहे थाल परुसी । लेजा मेहल के मांइ ॥ सुणा ॥ १३ ॥ मा
ग सो तस म्हारा वीजे । अच्छी २ अग्रह कराइ ॥ और कछू बातज नहीं करनी । विप्र
सुनी हर्पाइ ॥ सुणो ॥ १४ ॥ त कासो तैयार कर चाल्यो । साथे दियो दूजो सिपाइ ॥
विप्र मेहल में देखी सती दु ख में । करुणाथ की हीयो भराइ ॥ सुणा ॥ १५ ॥ मनवा
र करतो कहे विप्र । निश्चिन्त जीमो तुम बाइ ॥ थाणा मन मान्या सहू होसी । थोडा
दिनरे माइ ॥ सुणो ॥ १६ ॥ भातो अण थोडो खा सती । दीवी थाली सरकाइ ॥ लेइ
विप्र शिघ्र आयो रसोडे । शिघ्र सहू काम निपटाइ ॥ सुणो ॥ १७ ॥ शैन्या पती पासे
आइ दासे । आज लीलावती बाइ । दुमुख गुप्त रखी है महल में । मैं आयो हिवणा जि
माइ ॥ सुणो ॥ १८ ॥ गेंदू ने दासी को रुप बनाइ । भेज्यो तस लराइ । मेहल बतावो
अरी इणन। जिणमे महाराणी छिपाइ ॥ सुणो ॥ १९ ॥ बामण गुप्त मार्ग ला तिणने ।
दीनो मेहल बताइ ॥ वदोबस्त पुक्त जावा न पायो । कियो शैन्या पती ने ताइ ॥ सुणो
॥ २० ॥ सुण शैन्यापति हर्पाया । अब करस्या उपाव साराइ ॥ प्रथम ढाल ए पंचम ख

॥ दुसा ॥ दु मुख प्रीत गोयने ॥
न्की । अमोलख ऋषि गाइ ॥ सुणो ॥ २१ ॥ श्री ॥ किण पे-
किया ध्यान मिणगार ॥ धीवराजा मांगे धणा । धण लीलावती प्यार ॥ १ ॥ किण पे-
ना रवी आय में । जावु मनावु तास ॥ दुष ध्यान इम ध्यावतो । ऊभो महल न पास
॥ २ ॥ लीलावती सती तदा । सोग सागरर माय॥ पूर्व पश्चात विचार या । रखी हे गा
ना लगाय ॥ ३ ॥ छिने हू पर वश थइ । पडी दुष्टार वश आय । अन्याइ ए पापीया ॥
किण विध मानसी राय ॥ ४ ॥ ऐसा महा सकट समय । शरण श्री जिन राज ॥ रखा
कीजो माहारी । रखीयो महारी लाज ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल २ जी ॥ थिणजारी ॥ सगी प-
णिया भरन केम जाना ॥ यह० ॥ तुम सुनिया पात हमारी । नहीं करना थिगर थिचा-
री ॥ आ ॥ दू मुख महलमें आया । लीलावती ने मान्न भगाया जी । ऊभी नीची द्रष्टी
धारी ॥ नहीं ॥ १ ॥ दु मुख कहे मुज ने पहचानो । कनक पुर नरश्वर मुज जाणोजी ।
जग निरखोनी इण वारी ॥ नहीं ॥ २ ॥ तव सती धैर्य धर भाखे । पर नर म्हारे श्री
राखे जी ॥ नहीं ओलख म्हारे तुम्हारी ॥ नहीं ॥ ३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ मती गात भ्रात
पुत्र पती । तज नर वीजा सात ॥ मरी निजर जावे नहीं । ता ओलख की शी यात ॥
॥ १ ॥ ० ॥ ढाल ॥ कहे दु मुख म मत पूर आया । त भूल्या तुम दिन घणा थाया जी

॥ भलो खुशी छे तबीयत थारी ॥ नहीं ॥ ४ ॥ मनचिंतित तुम सुख पासो । मोटे पुण्य थी मिल्यो यह वासो जी । तजी फिकर हर्ष लो धारी ॥ नहीं ॥ ५ ॥पुण्ये चिन्ता मणी कर आवे । ते सुखसे नहीं छिटकावे जी । क्यों के सुख नी सहूने इच्छा री ॥ नहीं ॥ ६ ॥ केइ स्त्री जाणे छे पइवो । महारा पती गुण मिष्ठ मेवो जी । नहीं तिण सम अन्य दूजारी॥नहीं ॥ ७ ॥ पण जो ते खोटो होवे । पाछे तेहथी मन नहीं मोड़वेजी । कहो सखी वात यह महारी॥ नहीं ॥ ८ ॥ होणहार जो हूवो । अब म्हारा सन्मुख जुवो जी । नहीं लावो जरा शंका री ॥ ९ ॥ तब लीलावती यों दर्शावे ।तुम बोली समज में न आवे जी । काइ बात पे रखा उचारी ॥ नहीं ॥१०॥ दु,मुख कहे मुज मन की था जाणी । पण छिपावो शरम मन आणी जी । तुम चेरो फूल्यो ज्यो गुल क्यारी ॥ नहीं ॥ ११ ॥ में कामाभि थी बल तो । प्रिय तुजसजोगे तल मल तो जी ।सीचो आलिंगन रूपी बारी ॥ नहीं ॥ १२ ॥ लीलावती आवी रीस तांइ । कहे इम बोलणो तुमको नाहीं जी । तुम छा माणस मोटा री ॥ नहीं ॥ १३ ॥ तेथी मोटी बुद्धी राखो । खरी खोटी विचारी भाखो जी ॥ परस्त्री ने किम कहो प्यारी ॥ नहीं ॥ १४ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ आत्म वत्सर्व भूतेषु । पर द्रव्येषु लोष्ट वत् ॥ मातृवत् पर दारेषु । य पश्यती पंडिता ॥ १ ॥ ● ॥ दुमुख

गर्भ में भराइ।थालें मूछे ताव लगाइ जी। । कोण दूजो होड करे म्हारी ॥ नही ॥ १५ ॥
म्हारा प्राक्रम जरा देखो। यो राज क्षिणमे लियो पेखो जी । दिया चन्द्र नृप ने नगरी
॥ न ॥ १६ ॥ तव लीलावती कहे सुणिये । स्वगुण स्वमुख नवि थुणिये जी ॥ इम हो
वे नहीं गुण धारी ॥ न ॥ १७ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ संपूर्ण कुभो न करोती शब्द । अर्धो
घटो घोष मुपैति न्युन ॥ गुणी नराण नकरो गर्भ । गुणा विहूणा, बहू बद यन्ती ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ काग हंस की जोडी न आवे । निर्गुणी घणा फुलावे जी ॥ यह प्रत्यक्ष
दीसे यहां री ॥नही ॥ १८ ॥ तेइ कृत्घनी होइ । न्हाखे तस्कर जिम धाडाइजी । ते
प्राक्रमी न लगारी ॥ नहीं ॥ १९ ॥ चोर जार अंते दु ख पावे । ढाल युग्ग सती दर्शावे
जी ॥ कहे अमोल्य धन्य सत्य धारी ॥ नहीं ॥ २० ॥ ● ॥ दुहा ॥ शैन्यपती अवसर
लखी । कागद लिखिया दोय ॥ कहे गेंदू से शिघ्र जा । अवसर साध य जोय ॥ १ ॥
एक दीजे लीलवती भणी । एक कख रथ नृप हाथ ॥ दूत रुप धारी जयो ॥ ओलखे न
को जात ॥ २ ॥ गेंदु झट सावध हुइ । दूत नो रुप बणाय ॥ दोनो पत्र ले चा
लीयो । सती ने गेह ढिंग आय ॥ ३ ॥ दु मुख औलख्यो स्वरथी
। तताक्षिण तिहा थी चाल ॥ आयो कख्रथ मेहल में । को न

सकियें पाल ॥ ४ ॥ नृप सन्मुख ते पत्र धर । अण घोल्यो फिर्यो भट ॥ लीला
वती ना मेहल ढिग । आवी ऊभो पट ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ३ री ॥ प्रभु विसुन तिलो
जी ॥ यह० ॥ कपटी मित्र चरित्र। श्रोता साभलोजी ॥ कपटी झूठा ना सिरदार ।न मेले
अमोलजे ॥ आं ॥ राय कागद खोल वाचीयोजी । तात्क्षिण पाया भेद ॥ दुमुख घर ली
लावती । मिलवा की उपनी उम्मेद ॥ श्रोता ॥ १ ॥ ॐ ॥ पत्र में का श्लोक ॥ नृपश्च
कांक्षा इन्दू अर्धङ्ग । । स्व मित्र दुमुख गृह गुप्त स्थान ॥ ते मित्र वंचक वर मिष्ट माषी ।
सावध २ अहो कवरथ ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ तात्क्षिण सेवक बुलायनेजी । मेल्यो दुमुख
के घेर ॥ अधी लावो वोलायने जी । क्षिण मत करजो देर ॥ श्रोता ॥ २ ॥ उत्तर देता
दुमुख सतीने । जित्ते भट ते आय ॥ हाक मारी कहे चालीये जी । राजा साहेब बुलाय
॥ श्रोता ॥ ३ ॥ दुमुख कहे चल आवूछु जी । ते कहे चालो सग ॥ राज उतावल की
यणी । कयो निद्रा करवा भग ॥ श्रो ॥ ४ ॥ सती भणी दुमुख कहे । हू हीवणा आवूं
जाय ॥ इम कही गया राय भवन में जी । गेंदू अवसर पाय ॥ श्रो ॥ ५ ॥ पहरादार रो
त्या कहे । राय कंवरथ भेजो मुज ॥ पत्र देइ अधी जावस्यूं । रोक्या कमवक्ती तुज ॥
। श्रो ॥ ६ ॥ ते चुप रह्यो गेंदू गयो जी । जो लीलावती ढर पाय । पापी पाछो आयो

दिल । पण दूजो कोइ जणाय ॥ श्रो ॥ ७ ॥ कागद धर कहे वाचजो जी । पाछो फिर्या तत्काल ॥ शैन्यापति पास आय ने जी । किया सघलाहि हाल ॥ श्रो ॥ ८ ॥ गेंदू गया लीलावतीजी।सहु महल का जडिया कपाट ॥ सुती एकान्त जायने जी । मनमें धरती ओ चाट ॥ श्रो ॥ ९ ॥ दुमुख आया वेसने जी । राय दियो सन्मान ॥ पास वेसाड़ पूछे हि न थी । साचो कीजो पयान ॥ श्रो ॥ १० ॥ तुम कह्यो । सुखसेन ने जी न्हास्य केद के मांय ॥ तह तिहांथी भागी गयो । बीजो शत्रू पायो नाय ॥ श्रो ॥ ११ ॥ लीला ती किहा अछे जी । में सुण्यो छ तुम गेह ॥ दुं मुख तब इम कहे जी । आपथी गुप्त कु- छ छेह ॥ श्रो ॥ १२ ॥ सोगन महाराज आपका जी । पत्तो नहीं लाग्यो तास ॥ मोक ल्या भट फिर आवीयाजी । कीधी घणी तपास ॥ श्रोता ॥ १३ ॥ घवरावी कस्तरथ कहे जी । आज हुआ में निरास ॥ मेनथ सहु निर्फल हुइ । इम कही न्हास्यो निश्वास ॥ श्रो ॥ १४ ॥ दु मुख कहन घवरावीये जी । आपछो महा पुण्यवन्त ॥ पकडी मगावु तेहनी । फरस्यू लीलावती कन्त ॥ श्रो ॥ १५ ॥ इम गप्पा मारा करींजी। खुशी करी नृप तांय ॥ आज्ञा ले शिघ्र आवीयोजी । लीलावती मेहल मांय ॥ श्रो ॥ १६ ॥ पढ लग्या भाली क री जी । पुकार पट ठपकार ॥ पाछो उत्तर नहीं मिल्याजी । चिन्ता व्यापी अपार ॥ श्रो

॥ १७ ॥ निरास होइ आयो घरेजी । सूतो ते सुख सेज ॥ निद्रातो आवे नहीं जी । उष्ण अग हुवो तेज ॥ भा ॥ १८ ॥ काम ज्वर अग व्यापीयोजी । न्हाखे उडा निश्वास ॥ गाली देस रायजीने । बोलावी भागी आस ॥ श्रो ॥ १९ ॥ पक्षी घणी लीलावती जी । मूती पट लगाय ॥ फजर चोक्स करस्यू सही जी।न्हांखु कपाट तोडाय ॥ श्रोता ॥ २० ॥ इत्यादि विचार में जी । निद्रिस्य थेया तेह॥आभिढाल अमोलख माखी।वक्के बुद्धी सुखदेह॥ श्रो॥२१॥०॥दुहा॥दुसुख गया पछे।कस्तरथ करे विचार॥दुसुख कपट मुजथी करे।छिपाइ लीली नार ॥ १ ॥ गोरी नारी थी कहे।करो एक तुम काम ॥ प्रासे कोइ मिस करी । जावा सचीव के धाम ॥ २ ॥ लीलावती चन्द्र नी प्रिया । लाया तेह उडाय ॥ पतो तास लगाय जो । राखी किहा छिपाय ॥ ३ ॥ काइ उपाय समजायने । जो तस करे मुज वश ॥ तो तुज पटराणी करुं । स्वेछा रहो अहो निश ॥ ४ ॥ गोरी कहे करस्यूं सहु । आप हुक्म प्रमाण ॥ वचन रवन पक्का करी । सूत्या सहु निज स्थान ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल ४ थी ॥ मत ताका हो नार विराणी ॥ यह० ॥ चन्द्र सखी जब गइ विदेह में । दिनकर जोत प्रकटाणी ॥ उठ लीलावती करी समायिक । चित कर एकण स्थानी । ज दोनो भव सुख दानी ॥ सुणो श्रोता बुद्ध सेनाणी ॥ आं ॥ १ ॥ गाथा ॥ दिवस २ लक्स । देह सुवण

स्स स्यान्डिय एगो ॥ इयारो पुण सामाइयं । कोयी न पहु पए तस्स ॥ १ ॥ सामाइय कु
गतो सम भावं । सावउ अ घडीय दुग्गं ॥ आउ सुरस्स यन्धइ । इति अमिताइ पलिया
इ ॥ २ ॥ यांणेवंकोडीओ । लेंक्खेंगुणसाठे सेंहेंस्सं पणवीस ॥ नेवंसय पेंणवीस । सतह अ
इ भाग पालेयस्स ॥ ३ ॥ ० ॥ ढाल ॥ स्मरण सज्झाय प्रति क्रमणादि । कियो तदा
धर्म ध्यानी ॥ समायिक पारीने चिन्ते । रासी पत्र दियो आनी । किस्यो लिखीयो त
म्यानी ॥ सुणो ॥ २ ॥ खिडकी खोली पाछली मेहल की । जोइ चारों कानी ॥ कोइ
नर निजरे नहीं आयो । तव ते पत्र खोलानीं ।वांचे बुध्दि लगानी ॥ ३ ॥ पत्र – श्लोक॥
यदि निच्छती मुम्च स्वमातं । व्याधी यन्त मम तुमः ॥ विलम्य न क्रुरुते वक्ष । सुखे हे
तव कथंतीमी ॥ १ ॥ ० ॥ ढाल ॥ वाच पत्र अचर्य अति पामी । ए लिखे मनो गि
स्यानी ॥ मातु शब्द थी दीसे आपणो । पण बोल्यो नहीं वानी।कारण किस्यो जावे पिछा
नी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ इम विचार में बैठी सती तिहां । देखी पहरा वाला नी । तास्क्षिण
दुमुख ने कह्यो आइ । ते तब चित हर्षानी । कहे कर काम शिघ्रानी ॥ सुणो ॥ ५ ॥
भट खिडकी को न्हाख तू तोडी । उपाव कोइ लगानी । फिर हरकत नहीं होसी आवा
की । करस्या फिर मन मानी ॥ भट तोड्यो तास्क्षिणानी ॥ सुणो ॥ ६ ॥ शुभ धुप आइ

चडीयो भींत पर । कमाड धर्यों मचकानी । सुण भडको लीलावती डरपी ।ले कपाट लगा
नी । खेंची तस कडी सानी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ कुदा में फसी करांगुली । खेंचता चकवाणी
॥ कमाड छूट्यो पाट्यो भाग्यो । जोइ सती पस्ताणी । उपाय कियो दुष्टानी ॥ सुणो ॥
॥ ८ ॥ क्षणणाट व्यापी अगुली में । सूती एकान्त जानी ॥ सूजी घटका मेलण लागी
। ताप गयो अग भरानी । मादी पडी साचानी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ भट चट भोजन थाल
सजीने । दुमुख हुकम प्रमानी । आयो मार्ग पायो नहीं पेसण । तब संतरी कहे वानी ।को
इ जाइ पाछानी ॥ सुणो ॥ १० ॥ दुटी थारी के मार्गे होइ । जायो खोलो पटानी । सि
महो जाइ पट खोलीया । भट आयो मायानी । लीलावती सुती दिखानी ॥ सुणो ॥ ११
॥ चिन्ते ढोंग के साची मादी । कहे उठो महाराणी । जीमीलो ए भोजन लायो । तब
सती कहे तानी । क्षुधा नहीं मुज ने लगानी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ ताप शक्त आयो भाइ
मुजने । पटे अगुली घयरानी ॥ मिबुद्धे कहे भावेसो जीमी । पीयो थोडो सो पानी ।
सुख पासो जीवानी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ भलां भाइ तुज किया थी खावु । जीमण लगी
यात मानी । पण गले ग्रास नहीं उतरे । उतारे घुटके पाणी । मदन गयो दुखथी कुम
लानी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ थोडा खाइ थाल सरकाइ । पडी सिछोना स्यानी ॥ ले विप्र ग

यो घोलण न पायो । साथे थो अन्य प्राणी । साथी मांदी पहचानी ॥ सु० ॥ १५ ॥
ु मुख से पूछे आ कुरुदच । कहो जी निशानी कहानी ॥ दुमुख कहे ते तो जयर दगा
गज । सुती पट लगानी ।घोलाइ हुयो हैरानी ॥ सु० ॥ १६ ॥ आज फजर खिडकी से
ऊभी थी । ते पट न्हस्यो तोडानी ॥ अब जावण की हरकत नाहीं । जास्यूं आज
निशानी । मनास्यु लालच मीठी बानी ॥ सु० ॥ १७ ॥ नहीं तो फिर बलत्कार करीने
। करस्यू मे मन मानी ॥ यह निश्चय लियो ठानी ॥ सु० ॥ १८ ॥ करनो किस्यो राजा
लोर पडीयो । पूछ्यो थो राते धुलमनी । अटम सटम थी समजायो । अब करनी तस्य
ानी । वनु में राजा वा रानी ॥ सुणो ॥ १९ ॥ तुमने अब प्रधान बनावु । देर नहीं है
विनानी ॥ कुरुदच खुशी हो केनोकरो शिघ्र मेहरवानी । जावुं हु म्हारे ठिकानी ॥ सु० ॥
॥ २० ॥ दुमुख लीलावती वश करवा । चिन्तवे केइ तारानी ॥ पञ्चम ढाल रसाल
ोता । अमोल ऋषि से गवानी ॥ सती ने शील सुख वानी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ● ॥
दुहा ॥ भींतान्तर ते विप्र रही । सांभली सघली बात ॥ काम सर्व समेटने । शे
पपती विग आत ॥ १ ॥ कही बात सहू मौहने । आज यामनी मांय ॥ दुष्ट दूमु-
सती परे । करसे महा अन्याय ॥ २ ॥ लीलावती बिमार छे । हुं वेखी आयो नेण॥

थीजो नर साथे हतो । बोली न सकीयो वेण ॥ ३ ॥ करनो हो सो कीजीये । हे जी आ
ज को काम ॥ सती का सहायक होय के । राखो कोइ तरह माम ॥ ४ ॥ तम व्याप्या
तीनो जना । रुप वदल तात्क्षिण ॥ लीलावती का मेह ढिग । ऊभा आ प्रछन ॥ ५ ॥
॥ ७ ॥ ढाल ६ ठी ॥ नागजी सुतो खुटी ताणरे ॥ य० ॥ भाइजी सध्या समय लीला
वती तणो जी कांइ । उतर्यो तन थी वुखाररे भाइजी ॥ वेठी हुइ सती तदाजी काइ ।
मन में करती विचाररे ॥ भाइजी ॥ १ ॥ नाथजी सुणियो म्हारी पुकाररे स्वामी । मे अ
पराध किस्यो किया हो नाथजी ॥ नाथजी सक्ट आवे वार वाररे प्रभू । नवा २ अण
चिन्तिया हो ना० ॥ २ ॥ ना० दुष्ठ मुज लारे पड्यारे प्रभू । अधार एक दीसे नहीं हो
॥ ना० ॥ ना० अब रहसे किम शील हो प्रभू । प्राण इक्षा जासे सही हो ना० ॥ ३ ॥
ना० नेण झरे तस नीररे भाइ । क्षिण २ जोवे द्वारने हो ना० ॥ ना० अबी आवसी दु
ष्टरे कांइ । नहीं करसी को विचार ने हो ना० ॥ ४ ॥ भा० दुमुख जी ते वाररे भाइ ।
सज सिणगार वनडा वण्या हो भाइजी । भाइजी आया लीलावती मेहलरे कांइ । हर्षित
हीये मन मण्या हो भा० ॥ ५ ॥ भा० सती देख धस्कायरे काइ । थर २ अग धूजण
लग्यो हो भाइ ॥ भा० तात्क्षिण ऊभी होय जी काइ । मत भेग डर मन में जग्यो हो ॥

म्यू मह्रे प्रिय । डरु नहीं तिणथी लगाररे ॥ का ॥ कृपा करा मुझ ऊपर री प्रिय । गाडालिगी कर प्याररे का ॥ १५ ॥ का० मुज वैभव तूं देखरे प्रिय । एकदा आपि प्राणरे ॥ का० ॥ १६ ॥ का० कायर कपटी दारिद्रीरे प्रिय । चन्यानी तज आसरे का० ॥का० शूर युद्धि वत ने प्राक्रमीरे प्रिय । जो मुज सरीखा विलासरे ॥ १७ ॥ का० पति नि दा श्रवण सुणीरे भाइ । सती अग ऊठी झालरे भा० ॥ दुष्ठरे दगा बाज घाडतीयारे । तूं म्यां व नाथ ने गालरे दुष्ट तू ॥ १८ ॥ दुष्ठरे मुज नाथ ना चरण रजकीरे तू । करी न मके होडरे दुष्ट तू ॥ दुष्टर कालो मुख कर जा अयेरे दुष्ट । जाणी में थारी खोडरे दुष्ट तू ॥ १९ ॥ भाइजी दुमुस धडधडी वोलीयोजी काइ । तू भरी गुमानरे मायरे का० ॥ का० चन्याथी हल्को गिने मुजे । शुद्ध खल सम जाने श्वानरे का० ॥ २० ॥ का० मो नी तणा ज देवरे। ते पूजा इच्छे जूता तणीरे का० ॥ इम तू न समजे मीठासथी । अब मलरकार की आयणीरे का ॥ २१ ॥ भा० इम कही पकडण जायरे । तब लीलावती रो से भरीरे भा० ॥ भा० मुजथी रहीये दूररे इम कही पछा पग रही भरीरे का० ॥ २२ ॥ भा० जिनेश्वर है मुज सहायरे । कांइ तुज दुष्ट को अन्त लावसीरे भा० ॥ जो सुख इच्छे तो घर जायरे । नहीं तो पाछ घणो पस्तावसीरे भा० ॥ २३ ॥ भा० ते पापी समजे नहीं

जी काइ । कर घर्या आइ सती तणोरे भा० ॥ मा० सती पुकार करी तदाजी काइ । र
ओ नाथ छूटो घणोरे नायजी ॥ २४ ॥ माइजी सत्य को रक्षक सरयरे काइ । अणी पर
होव सहीरे भा० ॥ माइजी ते लेखो आगे सुणरे भाइ । अमोल ढाल पंछी कहीरे भाइजी
॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ शेन्यापति क्रोधे भर्यो । गेंदूने आदेश ॥ देय कर कमधक्की वु-
ग की । पाछे श्वास न लेय ॥ १॥गेंदू दोडी ततक्षिणे । जोरे सोंठो जमाय ॥ धस्काइ ध
धरणी ढल्यो । दीनों मुख बधाय ॥ २ ॥ पाद मुष्ट लाठी करी । मारदी वे शुस्मार ॥
दया धरी सती वदे । अहा मुज सत्य रक्षवार ॥ ३ ॥ दया धरी छोडी देवो । न करो
मानव घात ॥ तात्क्षण मारनो बन्धकर ॥ कर पद भेगा वन्धात॥ ४ ॥मुख मांहे वस्त्र भ-
री । उत्त कडी लटकाय ॥ लीलावती ने लेयने । आया जिण दिश जाय ॥ ५ ॥ सती
ओलखी दोनों ने । आनन्द पाइ अपार ॥ शेन्यपती कहे विलम्ब को । अवसर नहीं ल
गार॥ ६ ॥अश्वे सती ने वेठाय ने । भर्तपूर मार्ग जाय ॥ छिवे दूमुख कवरथ की । कथा
णो चित लाय ॥ ७ ॥ ढाल ७ मी ॥ निंदक तू मति मरजेरे ॥ यह ॥ शाणा साभली
जोरे । कपटी झूटा होय ॥ शा० ॥ आ । केवरथ नी राखी पर्सी । गोरी नारी प्रभा
त ॥ यय हुकम न याव फिरी । दूमुख के मेहले मात ॥ शा ॥ १ ॥ चौदिश फिरती जो-

वतीजी । लीलावती न वेखाय ॥ तब तिहां ठसको सुणीने । ठची ग्रष्टी लगाय ॥ शा ॥
॥ २ ॥ ग्रन्थ्या दुमुख अवलोकनेजी । औलख्यो मुखडो जोय ॥ जाण्यो फल व्यभिचार
का । ते हिवडे हर्षित होय ॥ शा ॥ ३ ॥ मख मुखथी कहाडीयोजी । दूमुख्व जोइ ते बा
र ॥ शरमायो मन में घणा । मिष्ट धीरो करे उचार ॥ शा ॥ ४ ॥ अह्वा बाइ देखो कि
स्योजी । तस्कर बान्ध्यो मोय ॥ शिघ्र छोडावो मुज भणी । ज्यों जीव सुख में होय ॥ शा
॥ ५ शरम लाइ राजा तणीजी । मन्थी छाडण जाय ॥ छूट न काइ उपाय थीजी । स
थ ते छुरी ले आय ॥ शा ॥ ६ काटी गाठ नीचे पड्यो जी । छोड्या बन्धन ताम । अग
सहु अक्डावियो । गांठ पडी अग तमाम ॥ शा ॥ ७ ॥ नोकर ने भोलाय ने जी । गोरी
गइ निज स्थान ॥ चिन्ते धन्य लीलावतीजी । खन्ड्यो दुर्जन मान ॥ शा ॥ ८ ॥ दुमुख
तेल मशाल वियोजी । कइ लगाया लेप ॥ सिकताव आदि करी जी । खुल्यो अग रह्यो
चप ॥ शा ॥ ९ ॥ लक्डा नो सारो रह्यो जी । आयो राजा पास ॥ विस्मय पाइ पूछे रा
जा। किम हुवो तन नाश ॥ शा ॥ १० ॥ दुष्ट न छोडे दुष्टताजी । कीजे क्रोड उपाय ॥
जाती स्वभाव जावे नहीं जी । जीव भलाइ जाय ॥ शा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ प्या
ज लसुन लिम्ब काज । खात मृग मद सक्कर पाज । वारी गंग चन्दन दट्टाज । सुगन्धीन

ायगा ॥ श्वान पुछ पट मास । राखे बन्ध रहे बाँकास । शूकर तज मेवा रास । गन्ध
गौही खायगा ॥ खारी खत में अनाज । मुकटे भूषण साज । निरदयी जार का राज ।
रह पस्तायगा ॥ कहे यों अमोल ऋषि । ऐसे ही जा दुष्ट शिष्य । ज्ञानादी गुण को त्रिया
। व्यर्थ ही गमायगा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ढाल ॥ दुमुख कहे आप सुख के काज । करी कठि-
ण उपचार ॥ लीलावती ने पकड मगाइ । तेहथी तथ बिमार ॥ शा ॥ १२ ॥ औषधी क
रण गुप्त में राखी । आप बुलायो मुज ॥ रखे उतावल काम बिगाडे । यों न कह्यो मैं गुज
॥ शा ॥ १३ ॥ काल रात तस समजावा । गयोथो तेने पास॥आप तणा गुणतस बताया
। जगाइ नेहनी आस ॥ शा ॥ १४ ॥ तेतले दो नर चुपके आइ । ब्रढ लियो मुज बान्ध
॥ मार मारी पछ हाल किया मुज । लेगया तक सान्ध ॥ शा ॥ १५ ॥ गोरी जी आ
छोडीयाजी । हुयो कुछ आराम ॥ सेवा में हाजर हुइ में । कियो बीतक तमाम ॥ शा ॥
॥ १६ ॥ राय कहे ते कोणयाजी । ले गया किण ठाम ॥ दूमुख कहे ते भट चन्द्रना ।
जासी भरतपुर गाम ॥ शा ॥ १७ ॥ नृप कहे किम हाथे लगा तें । दाख्वो सुख उपाय ॥
मसो कहे शैन्य सजी चालो । भरत पूर महाराय ॥ शा ॥ १८ ॥ दूर रही जणाव स्यांजी
। वो शत्रु हम लाय । नहीं आ संग्राम करो जी । ते बनी शिघ्र आय ॥ शा ॥ १९ ॥

नृप कहे किम आप सी जी।प्यारा पुरुष जमात ॥ वुमुख कहे तस पुत्री नहीं ते । ते प्रधान
नृ१ थात ॥ शा ॥ २० ॥ बाप ताम बांधो हुइ जी । घर२ मांगे धान ॥ तिण कारण ते
दशी आपने । मानी नृप ते वान ॥ शा ॥ २१ ॥ कन्क पुर थी शैन्य मंगवा । भेज्यो
दूतसे वार ॥ महा सेन परमारा आज्यो । भरत पुर ने वार ॥ शा ॥ २२ ॥ इहा पण ते
कर सजाइ । ढाल सप्तमी मांय । कहे अमोल आगे सुणिये । सती तणो जे थाय ॥ शा
॥२३॥●। दुहा॥ लीलावती का लय कर । तीनों चाल्या जाय ॥ नरमी लीलावती वदे ।
शैन्यापाती नें ताय ॥ १ ॥ उप कार अपार मुज पर किया । राख्यो सीलने प्राण ॥ व-
क्त ऊरण होवसु । अहा गेंदू गुण खाण ॥ २ ॥ हिवे खबर राजेन्द्र की । कहो वसे कि-
ण ठाय ॥ शैन्यापति कहे वश मात जी । पता पुण्य हम नाय ॥ ३ ॥भरत पुर भेली
आपने । जास्यां चोक्स काज ॥ नेना भूत निश्वासले । सती वदे किम मिल राज्य ॥ ४
॥ विश्वासे तस तीन ते । दिन आयो मध्यान॥मडप ग्राम तने त्रिषे । जोवे उतरवा
स्थान ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ८ मी ॥ धर्म जिनेश्वर मुज हियड वशो ॥ यह० ॥ जुग देव
वाणी कन्नी जाग देखी तिहा । रजा मांग तेवार ॥ ते हर्षी कहे सुखे बिराजीये । आप
ही को घरबार ॥ १ ॥ मीठा बोलारे कपटी जाणीये । धीठा तेहना जी चित ॥ अरीठा

उपर विविस्र दीसे घणा । माय कठिण कुमित ॥ मी ॥ २ ॥ ● ॥ अरल छंद ॥ रात
दिसी म राच के भोलां प्राणीया । मीठा घाला धूर्त जात में जाणीया ॥ हियडो न वी
ज हाय अजाणपा माणने । पण हा । हांसी जगत में हांस के दुर्जन जाणस ॥ १ ॥●॥
॥ ढाल ॥ चउ तिहां उतर्याजी भक्ष निपाइया ॥ जीम्या सहु हर्षाय ॥ घाता करतां
तिनो आपस में । जुगदेव सुगे गुप्त रहाय ॥ मी ॥ ३ ॥ त तब हर्ष्यो र प लीलावती ।
श्वरय नृप जह चडाय ॥ इनाम वधेरे जे सोंपे पहन । हू करु पह उपाय ॥ मी ॥ ४ ॥
चोंथें पहर त जावण सब थया । धणिक कहे अनी नरमाय ॥ जीमाया विन जावा दूं
नहीं । त तब मानीजी वाय ॥ मी ॥ ५ ॥ नशा तणो तस अहार जिमाड्यो । सुता सहु
हो अचेत ॥ अवसर जोइ वेश्य निशा विषे । जगाया हेला जी देत ॥ मी ॥ ६ ॥ उतर
न देता बिछोना सत तब ।अबर सती ने उठाय॥ ऊडे भूंवारे सुलाइ जायने । ढुंढ्याथी
नहीं पाय ॥ मी ॥ ७ ॥ तास दूसालो ने जल लोटीयो । न्हाख्यो उकरडे जी जाय
। सूनो जाइ कपटी स्थान के । पिछली रयण जब रहाय ॥मी॥८॥जावण जाग्यारे तीनो
जाइया । लीलावती न देखाय ॥ जाण्या सही नीत गइ अबी आवसी । भानू इम प्रगटा
य ॥ मी ॥ ९ फिरिया गाम में चौकस की घणी । नहीं मिल्या हवा उदास ॥ जुगदेव

पूछरे किम दु ख तुम धरा । कह्या तव धात्या प्रकार ॥ मा ॥ १० निश्वास न्हाखी ते क
हे खोटो हुयो । चालो जोवाजी गाम ॥ फिरता आयाजी ते उकरडीये । कुम घूसो देखी
नाम ॥ मी ॥ ११ ॥ कहे शैन्याधिश शगु लारे पछ्या । लेगया इहापी उठाय ॥ निर्फल
मेहनत सहू हुइ आपणी । गेंदू कहे किम मनाय ॥ मी ॥ १२ ॥ इहां को दुष्टी हरण कि
ये हुवे । जुग देव कहे सुणो राय ॥ किंचित वैम नथरो इहा तणो । झट जोवो वैम जि
हां आय ॥ मी ॥ १३ ॥ ते तिहु चाल्या जी पुन भरत पुरे । लीलावती जागी होय ॥
गेर अन्धारो जो चमकी चित्ते । गेंदु पुकारे सोय ॥ मी ॥ १४ ॥ उत्तर न मिलता ते डर
पी अति घणी । उठी फिरे भींत सहाय ॥ फिरे अथडातीजी मार्ग मिल नहीं । घबराइ
चिल्लाय ॥ मी ॥ १५ ॥ दीपक लेइ जुगदेव आइयो । मीष्ट वयण बोलाय ॥ सती तस
पूछे साथी किहां म्हारा । ते कहे सुण वाइ वाय ॥ मी ॥ १६ ॥ ते मार्या था दुशमण
तुज तणा । मारता राते तुझ ॥ में छोडाइ छिपाइ इहायने । सुणी सती गइ धूज ॥ मी
॥ १७ ॥ आइ बाहिर कोइ दीठो नहीं । रोवण लागी ते वार ॥ बतावो माइ साथी मा
हरा । में जावू तेहनी लार ॥ मी ॥ १८ ॥ बाइ गया ते न मालुम किहा । चल हूं देवु
पहोंचाय ॥ घोडो कसाइ बेठाइ उपरे । विजयपुर लेजाय ॥ मी ॥ १९ ॥ चिन्ते चित्तमा

रिउ कमरम्थ ने । लेम्यु इछित इनाम ॥ अनजान मार्ग जोवे'त चली । सती मन माहे
विश्राम ॥ मि ॥ २० ॥ जे जे हा तथ त हावे सही । जोवो आग विचार ॥ ढाल ए अ
म्मी नी पत्रम स्वन्डनी । अमाल करी उच्चार ॥ मी ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥ ते काले
रिजप पुर में । दुसुम्य कुरुदत्तने केम्या॥बलस्कारे यह दुःम्ख लियो। हाथे न आइ ते हे ॥ १
॥ शर्मी कर कुरुदत्त कह । पहावह तुम प्राक्रम ॥ कुसुम्व केहेर दासा पर । क्षार न देवे
मम ॥ २ ॥ पुन जाइ हव शिम तू । मरत मार्ग'मांय ॥ परभारो तस सिएपुर । लेजा
म्मन छियार ॥ ३ ॥ ने भरमाइ रायने । भरत पूर जावू शेन्य संग ॥ तिहा पूरो कर रा
र ने । पूरस्यू थारी उमंग ॥ ४ ॥ सुण हर्ष्यो कुरुदत्त मन ॥ पुर्वना नर संग लय ॥ भ
त पुर मारग चालियो । लीलावती प्रहणेय ॥ ५ ॥ भूपे कुसुम्व समजायने । शे
र कराइ तैयार ॥ भरत पुर भणी चालीया । मत्र मता ते वार ॥ ६ ॥ ● ॥ढाल९मी॥
रो गयोरे जोबन पाछो नहीं आवे ॥ यह० ॥ आगे जाता कुरुदत्त ताइ । लीलावती
ली सामे आइ ॥ दसी ने घणा हर्षावे । सुणो सुगणा आगे जे थावे ॥ १ ॥ ओह
ी थर २ कॉपी । ज्यों केहर ने कुरंगी आपी । तत्क्षिण कुरुदत्त नेडो आवे ॥ सु ॥ २
॥ लीलावती कहे सुण मेरा ताइ । मुज हणरे हाथ मत वतो भाइ । कुरुदत्त तब धम

इण मार्ग थे किहां जावो । कुरुदत्त
तावे ॥ सु ॥ ३ ॥ जुगदेव कहे तुम कुण थावो । हम कसरथ के भट थाव । जुग
प दरसाव ॥ सु ॥ ४ ॥ तूं कोण इने किहां लेजावे । ले जातो नृप पास भाइ । इम
र फहे हर्षावे ॥ सु ॥ ५ ॥ में तुम अरी हाथे छोडाइ । अग भेद घणा छूव्याइ
सुण सहु एकस थावे ॥ सुणो ॥ ६ ॥ लीलावती अति मुरजाइ । अब जीवणरी न आसाइ
। नेम प्रनाल नीर थावे ॥ सु ॥ ७ ॥ तीजी वार हाथे आइ । कुरुदत्त चित द-
। कर्म से छूटी लीली किहां जावे ॥ सु ॥ ८ विजय पुर में ते आया । जुगदेव तस छोडे नहीं । लागी
गा ठाया । छानी लेजावू नृप न खबर पावे ॥ सु ॥ ९ ॥ दोनो ने दिया समजाइ ।
दोनारी लडाइ । कोटवाल सुण दोडी आवे ॥ सु ॥ १० ॥ मटले सती
लीलावती सिपायां ने भालाइ । कसरथ नृप कने पहोंचाव ॥ सु ॥ ११ ॥
भरतपुर मग चाल्या । कुरुदत्त ना तब मन माल्या । जुग देव खिलखाइ घरे जावे ॥ सु
॥ १२ ॥ कुरुदत्त मिल्यो सिपाया ने जाइ । दे लालच वश कीधाइ । सहु मिल शैन्य
गाछे जावे ॥ सु ॥ १४ ॥ गोरी सुणी दासी पास चरी । लीलावती ने लेजावे भट धरी ।
तास घट में दया आवे ॥ सु ॥ १५ ॥ वैरागण बणी भगवा ततु पहरी । मुख भभुती
कर कंठ माल छरी । तत्क्षिण लीलावती पूठ धावे ॥ सु ॥ १६ ॥ ग्राम बाहिर थोडी दूर

आइ। शेन्यापती गेंदू मिल्या तिण सांइ । गोरी पुछे सरल भावे ॥ सु ॥ १७ ॥ अहो भा
इ तुम ने मार्ग मांइ । कोइ आदमी देखी लुगाइ । शेन्यापती ने यैम आवे ॥ सु ॥ १८
॥ सुन्र सेंण पूछे अहो धाइ । क्यों वेराग लियो योवन वय मांइ । गोरी वेरागण फरमा
वे ॥ १९ ॥ धर्म करण की घक्त याइ । पढती वय कुछ थावे नाहीं । पुन शेन्यापती बो
लावे ॥ सु ॥ २० ॥ किण नर नारी ने दुढो येन । तब गोरी कहे मिष्टवन ॥ चन्द्र अग
ना लीलावती कहवाय ॥ सु ॥ २१ ॥ कंवरथ भट भरतपुर लेजाय । ते छोडावा
म्हारो मन चहावे । इम सुणी तीनो ते हर्पावे ॥ सु ॥ २२ ॥ हर्ष्या देख पूछे गोरी । तु
म कुण कहो सत्य छे जोरी । हित वांछक जाणी गेंदू दरसावे ॥ सु ॥ २३ ॥ हम चाक
र चन्द्र सेण तणा । सती सहाय करना हम मना । चउ मिल भरतपुर मग जावे ॥ सु॥
॥ २४ ॥ यह वात तो इहा रहो । हिवे चरि चन्द्र नृप नी केवु कही । नवमी ढाल अ
मोलिख गावे ।, सु ॥ २५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ भील पह्लीपे इन्दुरायजी । करी फोज होंशार
॥ एक दिवस येठा एकला । सज्जन मिलण विचार ॥ १ ॥ तब ते देवधर डोकरो । नृप
ने एकला जोय । लुली मुजरा कर नृप ढिग । आइ येठो सोय ॥ २ ॥ मिष्ट वयण पुछे
रायजी । किस्यो नाम छे तुम । कहा किण कारण आवीया । किम दीसे मन शुम ॥ ३

॥ वृद्ध कहे गती कर्म की । कहता न आवे पार । जिम कया तिम भोगव्या । चाली आ
भूभार ॥ ४ ॥ धैर्य वह अवनीश कहे । सीधी तरह कह्यो वात ॥ रोया राज मिले नहीं ।
हिम्मत से मह थात ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १० मी ॥ नमू अनंत चौवीसी ॥ यह० ॥ ते
वृद्ध तव भाख । सांभलो श्री महाराज ॥ मुज कर्म तणी गति । कहूं हूं आपने आज ॥
१ ॥ कन्क पुर निवासी विप्र छे महारी जात । लडाइ करणने आयो कस्वरथ सगान ॥ २
॥ परिवार बुलाइ रह्यो विजय पुर माय । एक दिन मुज वेधु। कारण रावले जाय ॥ ३ ॥
स्त्री लम्पटी राजा । जबरीय घाली घरमाय॥हमने बाहिर कढाव्या । पुत्र केद में ठाय॥
४ ॥ रह्या वन में जाइ । तिहा हम पुण्य पसाय ॥ लीलावती नामे महा सती । रही ह
मारे घर आय ॥ ५ ॥ सुणी नाम प्रिया को । चन्द्र राय हर्षाय ॥ बेठा होइ पुछे । ते
हिवणा किण ठाय ॥ ६ ॥ स्वामी अचानक एकदा । पल्या बादायती आय ॥ प्रणकुटी
जलाइ । मुजने वृक्षे बन्धाय ॥ ७ ॥ लेगया पश्चिम दिशा।गवती सतीने ताय ॥ ते वात
यार आइ । नैणा नीर भराय ॥ ८ ॥ तव रामजी आया । भूपने देख्या उदास ॥ पू
छयाथी शशी राय । वृद्ध परी करी प्रकाश ॥ ९ ॥ लेइ स्वारने प्यादा । बुद्धिसागर म
सीश्वर लार । वृद्ध कहे सेनाने । देख्या गिरी शिखर ठाय ॥ १० ॥ फिरी ढूंढी थाक्या

। पण नहीं लाग्या समाचार ॥ सहु आया उदास हो । न मिली करे उचार ॥ ११ ॥
सुणी चिन्ता मराइ । तय एक कासीद आय । पत्र मेली सामने । मुखथी वात सुणाय
॥ १२ ॥ में जातो कन्क पुर । राणीजी जोवा काम ॥ सिंह विणास्यो सूमट । मार्गे पड्यो
गर ठाम ॥ १३ ॥ तस पासनो पत्र । ए लेइ आयो महाराज ॥ और मार्ग ग्राम में । सु
णीया एक अवाज ॥ १४ ॥ चन्द्र सेण लीलावती । जो देवे पकडी लाय ॥ तस कंस्वरथ
राजा । इच्छित इनाम वक्षाय ॥ १५ ॥ इम कही ते पेठो । नृप क्रोधा तुर थाय । सो
म मसी पासे । पत्र तेह वचाय ॥ १६ ॥ लिखत विजय पुरथी । कंस्वरथ महाराय ॥ कन्क पु
र में महासेन । मानो चित्त लगाय ॥ १७ ॥ विजय पुर वश भयो । भागी चन्द्र सेण
राय ॥ सासरा के आसरे । छिप्या भरत पुर जाय ॥ १८ ॥ भरतपुर वश करवा । जावा ह
म इणवार । तुम शैन्या संग ले । आ औ आठ दिवस मझार ॥ १९ ॥ मिती फागण सुदी
अष्टमी ने वीतवार । वसकत कुमुखका । वांचो सप्रेम जुहार ॥ १९ ॥ सुणी समाचार इ
म । रुठो चन्द्र नृपाल ॥ थर २ अंग कम्प्यो । रोसे अंनन नेत्र लाल ॥ २० ॥ कहे पकी
रत ने । सहु शैन्य शिघ्र करो सज्ज । इच्छित वक्त मुज । आइ माइ यह अज्ज ॥ २१ ॥
नप भरी बजाइ । सहु भील तात्क्षण आय ॥ चन्द्र कुमार रही । एकुंन इम सुणाय ॥ २२

॥ अहो सुणीयो सूरा । इंचा दिन सीख्या जेह॥ते कला अजमावण । वक्त आयो छे एह ॥ २३ ॥ कंस्वरथ अन्याइ । फोज करी तैयार । भरत पुर लेवाने । जावे धरी अहकार ॥ २५ ॥ त शत्रु आपणो ।मुज काज अन्यने सताय ॥ अब नाश तस करस्यूं । तुम सणी लेइ सहाय ॥ २६ ॥ अहो शूरा सूराइ। बतावा मुज प वार ॥ इम सुण सहु बोल्या । न्म नृप की जयकार ॥ २७ ॥ सहु शस्त्र बखतर सज्या । शूरत्व में मद मस्त ॥ चन्द्रनृप सघाते चाल्या । महूर्त प्रसस्त ॥ २८ ॥ एह वात इहां रही । हिवे भरतपुर अधिकार ॥ ढाल पंचम खण्ड दश । अमोल करी उचार ॥ २९ ॥ ● ॥ दुहा ॥ तब भरत पुर नयर में । सज्जन सेण राजान । गुण सुन्दरी राणी कहे । चिन्ता मन असमान ॥ १ ॥ प्रधान गया विजय पुरे । बीत्या बहुला मास ॥ तस घरका चिन्ता करे । मुज पण होय विमास ॥ २ ॥ न लाया लीलावती । न भेज्या सभाचार ॥ कारण काहीं कळे नहीं । तब नृप करे उचार ॥ ३ ॥ निश दिन उपजे विचार मुज ॥ पेखी आज लगवाट ॥ प्रात भेजी कासीद ने । मंगावू खबर दु खकाट ॥ ४ ॥ प्राते भरत नृपती । बेठा सभा मां आय ॥ धार्यो किस्यो होवे किस्यो । सुणो सुस चित लाय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल११मी ॥ सुणो सुगणारे तुम गुणवन्त मुनि को सेवो ॥ यह० ॥ सुणो शाणा हो तुम वात एक

चित लाइ । होणहार की, अजव गति है भाइ ॥ आं ॥ गग दत्त शेन्या पती कहे सुणो
महा राया । सोमादीया अरणा समाचार पठाया ॥ कोइ कखरथ भूपत अपणी भूम में
आया ॥ करे दु खी प्रजा ने किसा वैर उपाया ॥ सु ॥ १ ॥ इम सुण सज्जन नृप आश्चर्य
मन अति पावे । नहीं अरी को अपना ए कुण दुष्ट चढ आवे ॥ ते तले आतो दूत एक
देखावे । रग बग तस अजव आइ पधारे ॥ सु ॥ २ ॥ कन्क पुर का कखरथ महाराया
। जे विजय पुर पत इया चेला कहवाया ॥ ए वेश मुज आपके पास पठाया । वो उत्तर
जल्दी साच विचारी राया ॥ सु ॥ ३ ॥ शेन्या पती । तब कागद कहाड सुणावे । कखर
थ सप्रेम एम जणाव ॥ हम शत्रू नृपचन्द्र थांके राज भरावे । त लाइ सोंपा मुज जो तु
मने सुस चहावे ॥ सु ॥ ४ ॥ नहीं तो सज्ज शेन्य हम सामे आजावो । हम प्रवल थ-
तुला तुम फत नहीं पावो । साच विचारी शत्रू महारा पठावो । फिर सुखे राज करो ग-
मती मोज मनावो ॥ सु ॥ ५ ॥ इम सुणी समाचार आश्चर्य नृप आति पाया । चिन्ता
व्यापी कोप अग उभराया ॥ अर इण दुष्टी मुज पुत्री जमाइ सताया । ते इहां नहीं आ
या न जाने किहां सिधाया ॥ सु ॥ ६ ॥ सबरा मडप में इणन रोस भराणो । ते पापी
जाटाण साध्यो है टाणा॥किम भागा प्राक्रमी चन्द्र सेण महा राणो।आश्चर्य मोटो पण हिव

पिछले रस्त मगाया । कहे जे तुज पतिन हू आयो के आयो ।नवी जनीना बुग्भ कस्वरथ
ने पायो ॥ सु ॥ ८ ॥ दूत तैसोइ कस्वरथ कन्न आइ । बीती हकीगत दी वताइ चताइ ॥
ते शैन्य सज्ज ऊभो रणांगणे आइ । तन बल अणिका बल्की धरी शुमराइ ॥ सु ॥ ९ ॥
सजन सेण निज फोज न सज्ज कराव । गज गाजी रथ पायदल सज्ज शिघ्र आवे ॥ श-
त्रु चक्कर'भल भलाट मन छकाव । यह २सह्रू कूवतशुरत्व अग भराव ॥ सु ॥ १० ॥ नृ
प ऊचा ऊभा रही कहे सूणो सह्रू शूरा । तुम शिक्षा भुक्त ले सकल गुणे हुवा पूरा ॥ त
सार निकाला तो करा श॰ चक चूरा । फिर भरतपुर से मुण अरीजन रेवसी दूरा ॥ सु॥
॥ ११ ॥ सह्रू जय जयारव बधाया प्रयाण कराया । धरणी थरर पग भार रजे नभ छा
या ॥ ग्राम क बाहिर रणांगण मांह्या आया । सज्ज ऊभा सन्मुख सग्राम करण उमाया
॥ सु ॥ १२ ॥ ते बेला ह्वातवता जोग सुणो हो शाणा । मगध देश पयठाण पुर का
राणा ॥ निज पद्मी सगे सज्जन मिलण उमगाणा ।कुछ शैन्य सघात भरत पुर किया परिया
णा ॥ सु ॥ १३ ॥ सुखे मुकाम करता भरत पुर के पास । वाइ कटक मिल्या जो उदा।
मन में विमासे ॥ यह किस्यो जुलम इहां कारण नहीं भासे । कोइ सुभट बुलाइ पूछण

राया तास ॥ सु ॥ १४ ॥ त कहे कनक पुर पत कंवरथ प राजा । विजय पुर ने लूटी
लूटण आयो इहांजा । माग चन्द्र सेण लीलावती वरो आजा । आया सज्जन सेण वेर
लेवण के काजा ॥ सु ॥ १५ ॥ इम सुण प्रतापसण नृप ने रोस भरायो । भलो हुयो
यह दुशमण मरवा सन्मुख आयो । नहीं स्वपर शैन्य थाडीसी सग्घाते लायो । पण अ-
न्याइ को नाश करु इण ठायो ॥ सु ॥१५॥ सुसमाराणी ने सुभट संग्घ ते वेइ । परवा-
री भरतपुर मांय घर भजेइ ॥ आप आयो शैन्य में सज्जन नृप भेटेइ । कहे करो पिशुन
को क्षय विलम्ब किसी छेइ ॥ सु ॥ १७ ॥ इम देखी सहायक सज्जन नृप हर्षाया । दू-
जोग अग में सज्जन शैन्ये भराया ॥ यह ढाल एकवश अमाल ऋषि सुणाया । न्याय वत
सील वत फते सदाइ पाया ॥ सु ॥ १८ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ सज्जन कवरथ राजीया । शू
र सह शैन्य परिवार ॥ ऊभा रणांगण विषे । वैर भाव दिल धार ॥ १ ॥ आगण सहु
सुधाविया । कंटक कंकर दूर ॥ नहखावी पूर स्वादने । जल सींचन रज पूर ॥ २ ॥ ह-
द्दी अन्ते रोपीया । निज सनाण निशाण । नव रंग नेजा फर रहे । भलके जरी ज्यों भा
ण ॥२॥ प्रथम हुकमे सज्ज हुवा। मछू मक्कर ने सभार॥शस्त्र सेंठा सहावीया।पट अंतरथी कहाड॥
३ ॥ दूसे हुकमें धार्पीया । पूरा सह निशाण । गजपी गज रथ रथ मिल्या । रथ पायक मि

ल्या अण ॥४॥ तीजो हुकम होता थका मडाणो सम्राम॥जय प्राजय जेहनो हुवे । सुणो
महू चित ठाम ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल १२ मी ॥ खडका की देशी॥दोनों शैन्यामजी । सन्मु
ख हुवा इष्ट भजी । अश्व गज रथ सुभट भारी ॥ रण भरी बाजी रही । शरणाइ सण
का दइ । शूरा शूर मद छक लिया धारी ॥ सुणरे भूप तुज धूप मम बल घटा। ढांकू दि
ग में क्यों घबरावे ॥ आ ॥ १ ॥ मयगल मद भर्यो । गडस्थल मकरन्द झर्यो । काली
घटा ज्यू विघूहोदा चमके ॥ गज २ मिली धमशाण स्मशाण करे । जोरथी धरणी थर २
धमके ॥ सु ॥ २ ॥ तुरग कुरग संग । पलाण छ नवरग । मही पर पाद स्थिर नहीं रवे
॥ शेले तेगे जे धरी । भीडीया अरीअरी । कोपया कठिण वचण केवे ॥सु॥३॥सग्रामी स-
ग्राम में । बेठा धनुष्य धरी । घुघरा घणणण झण झणाट थावे ॥ वृषभ तुरी जोतरी ।
होंस मन में धरी । राणा ने राणा सामाजी जावे ॥ सु ॥ ४ ॥ शूर शस्त्र सजी । जाय
रिपु दल लजी । गजीरशब्द हुकार करता ॥ खजर खड्ग नली । तेज जिम बीजली । पा
यक भट तणा प्राण हरता ॥ ५ ॥ तोप ना धोप थी क्षाप गगने भयो । गोळा का टो
ळा २ जी आवे । केइनो समचय भक्ष करी बीबी धरा भरी । धुम्रथी गगन में छत्त छा
य ॥ ६ ॥ इम रण रढ झड । धडथी शिर जुदा पडे । रक्त का खाल खललाट ववे ॥ अ

मिये कादम्र जो कायर रोरव फरे । फोला हल गगन त्यां गुंज रेवे ॥ ७ ॥ प्रताप सेण
नी फोज फटी घणी । फिकर मनरे मांह भराव ॥ जरा हटीया जवा । जाणी सज्जन
तदा । पोतानी शैन्य शिघ्र पहोंचाव । ८ ॥ फाज घटी जाण दुमुख कहे ताणने । मारो
२ थिस्यो सामो जोवो ॥ इम शब्द सुणी फोज हुइ शूरी घणी । सज्जन शैन्य पग पाछा
देवे ॥ ९ ॥ भरतनो राणो भराणो साचमें।लाज भगवान अब किम रसी ॥ तो पण मा
र २ कर सामा धसे । पुण्य प्रबल तस हार फेसी ॥ १० ॥ तब चन्द्र राज सहू भील क
साज । रण सिंघो गरणाज शिघ्र चाल्या आवे ॥ कनखरथ देख करी । इम्यों हीये भरी ।
जाण महा सेण कन्क पुर थी धावे ॥ सु ॥ ११ ॥ फोज भीलां तणी । पाहिले शूरी घणी
। देख शत्रु भणी । रोश चढिया ॥ हुक्म पामी चन्द्रनो । जण अहमेन्द्रनो । कनखरथ शे
न्य में जाय पहिया ॥ सु ॥ १२ ॥ ते भरोसे रह्या देखी अचम भया । होंश उडगया ।
गजन थावे ॥ यह केण आवीया । किसो चित चहावियो। कन्खरथ दुमुख घभरावे ॥ सु ॥
॥ १३ ॥ यह किण तणो लस्कर मनतणा तस्कर । किण वेर शैन्य आपणी काटे ॥ अब
किस्यो कीजिये । शरण किण लीजीये । भागण जाग नहीं चोकोन वाटे ॥ १४ ॥ इम्यों
सज्जन प्रताप नृप देख इम । दोइ रस्ता रोक जाय अडिया ॥ तीजी तर्फ चन्द्र चौथी त

ऊ सरीता गहरी । कस्वरथ बीच में फस रहीया ॥ १५ ॥ धों धों तोपा सणो । गजा
हूयो घणो हृदय शत्रु तणो स्थिर न रेवे ॥ दबा दब गोला पडे । मरे घणा लड थडे ।
अरर अ अ शब्द केवे ॥ १६ ॥ कुन्डलाकार कबाण खेंचने बाण । कान लग ताण ।
त्राण हणता ॥ अचूक तीर भीलनो । अरी हीये चीरनो । आछो बुरो जरा न गणता ॥
१७ ॥ खेंच तरवार । दुशमण परिवार ने । सहार करवा झणणाट तेगा ॥ चमके विघुत
म । वेंरी मन धम धम । देखी कायर प्राण छोडे वेगा ॥ सु ॥ १८ ॥ मदद बन्दूक की
गोली अचूक की । उर हीय शिर भेदी जे जावे ॥ फटाफट झटा झटा कटा कट कड प
डे । बनचर रग रण में मचावे ॥ सु ॥ १९ ॥ चन्द्र नृप रोस धर्यो । वीर रस तन भर्यो ।
बिजली मग दूर जो सामे आवे ॥ आभ विद्युत परे । क्षिणे इस उत फरे । चकोर चक्षु
रक्त रोशे जोवे ॥ सु ॥ २० ॥ कपा कप लपा लप अस्सी चलावतो । सणण तीर सण
गाट जाते ॥ ले भक्ष केहना शत्रूनी देहना । थरर धूजी शत्रु शैन्य दावे ॥ सु ॥ २१ ॥
शत्रु का भाषण सुण्या त्रासण तणा । तिम मीलोंने घणो बधीयो जोरो ॥ घणी अणी
का कटी जोड कन्क पुर पति । शाकि गई मुख को उतर्यो तोरो ॥ सु ॥ २२ ॥ बाकी र
ही शैन्य तिण शस्त्र न्हाखी दिया ।शरण छा २ कियो शोर ॥ कस्वरथ धस्काइ पस्ताइ जो

वे विरा श्रउ। आभार न थीसे कोइ त्या और ॥ सु ॥ २३ ॥ रामापक्षी पति करी चप
ता अति। कन्क पुर कन्त ने बाथ लायो ॥ शाम तस मुख कर्यो। चन्द्र सन्मुख धर्यो।
जीत तणा डंको दिरायो ॥ सु ॥ २४ ॥ चघ हुवा संग्राम आराम पाया सहू। सील स
त्य का चिन्तित थइया ॥ ढाल खटका तणी अमोल ऋषि भणी। आज थी सहू दुख
दूर गइया ॥ सु ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ दुमुख भाग्यो तत्क्षिणे। छिप ऊभो एक स्थान
॥ मेंव करे तनयी घणा। निबल निरास हैरान ॥ १ ॥ कुरुदत्त लीलावती लइ। आयो
तिहां चलाय ॥ जो संग्राम करीयो घणो छिपतो २ जाय ॥ २ ॥ एकन्त शुभ स्थान में।
लीलावती ने बेठाय ॥ ढूंढतो आयो दुमुख ने। पूछतो एकान्त पाय ॥ ३ ॥ कुरुदत्त ने
पेखने। आदरे दिग बुलाय ॥ कहो कार्य किण पर भयो। कुरुदत्त तब दर्शाय ॥ ४ ॥
लि आव्या लीलावती। शुभ रखी ते ठाम ॥ यथाइ आपण भणी। ढूंढतो आयो आम ॥
॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १३ मी ॥ मेहलां में बैठी हो राणी कमलावती ॥ यह ॥ दुमुख कहे
रे इहां क्यों लावीयो। शिष्ट पुर लेगयो नहीं केम ॥ ते कहे मुझ बस नहीं रह्यो। राय
भट घरी काय पेम ॥ साभलरे भाइ। शुभ सुधाइ छोडे नहीं ॥ आं ॥ १ ॥ चारु केमा
तिण [illegible] में। [illegible]

टाय ॥ सां ॥ २ ॥ कुरुदत्त तिमही कियो । लीलावती रखी डेरा माय । थान्यो एकात
जाइ साइ रह्यो । लीलावती भगवा चहाय ॥ सां ॥३॥कुल गामथी साथे लग्या। मुकद पटल
न वार ॥ अवसर जोइ पेठो तम्बू में । धवरी सती अपार ॥ सां ॥ ४ ॥ कहे प्रिया मुज
आलम्यो । हूं छू मुकद पटेल॥ दुष्ट फन्दे तुज फसी देखने । छोडावा आव्यो थारे गेल ॥
॥ सां ॥ ५ ॥ चालो शिघ्र सग माहेरे । पटेलण तुज ने वणाय । मन मानी मोज भोगवे
। सुण सती कोपी कहे वाय ॥ सा ॥ ६ ॥ लम्पटी वेशरमी भूलीयो । जे तुज दीयो जी
वित दान॥ पाछा आयो मरवा भणी । दुमुख आया जे टाण ॥ सां ॥ ७ ॥ पटेल मसी।
रमण न दीये । तव कुरुदत्त ने जगाय ॥ कुरुदत्त कोपे आइने । दी तस मुढकी उडाय
॥ सा ॥ ८ ॥ मसी मरीयो जाणने । मुकद माम्यो जीव लेय ॥ दुमुख गया तम्बू विषे
। लीलावती धस्केय ॥ सां ॥ ९ ॥ अति नरमी दुमुख भणे । प्रिये अब मती सताय ॥
तुज तात ने भगाइया । फते मुज सम्रामे थाय ॥ सा ॥ १० ॥ तुज काज उपाय स
किया । अन दे मुन आराम ॥ सती कहे दुष्ट किम वदे । तुझ अजु बुद्धी न आइ ठाम
॥ सा ॥ ११ ॥ इम झोड चाली आपस में । दुमुख तस पकडण जाय ॥ सती दोडे इत
उत तम्बू में।ते तल महायक आय ॥ सां ॥ १२ ॥ मुकन्दने सामा मिल्या । सुक सेन

सह परिवार ॥ मुकन्द कहे नरनाय ने । करो मुज पर उपकार ॥ सां ॥ १३ ॥ म्हारी ना
री ने चोराइने । दुष्ट रखी तपू माय ॥ मार्यो म्हारा मत्री ने । आप देवो ते छडाय ॥
ना ॥ १४ ॥ सुम्व सेन साथ तस थया । आया तपू पास ॥ लीलावती नो शब्द सांभ
ळी । पाया अति हुलास ॥ सां ॥ १५ ॥ तम्बु फाडी तब फेंकीयो । लीलावती जोइ
पांय ॥ दुमुख न खबर पडी नहीं ।काम अन्धते थाय ॥ सां ॥ १६ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ नेत्रे
जन्मे निशी विनम् क्रोध मंहकार स्तथा । मैंया लोभो प्रेमे द्वेषे मोहे त्रिले योवेन मदता
॥ चिन्ता मतिभ्रंष्ट नर क्षेण अंपमानी यथा । क्षुधा तृषा विपय लुब्ध वीसती अन्ध मु
शरीत ॥ १ ॥ पकडी टांग धरणी पाडीयो । लियो ऊध मुख बधाय ॥ मुकुंद देख खु-
शी हुवो ॥ हिव मुज कर प्यारी आय ॥ सां ॥ १७ ॥ शैन्यपति पूछे राश में । कह कह
तुज प्रिया कोन ॥ हरतो अंगुलिये शास्त्र सती भणी । बांधीयो तस जोवो होण ॥ सां ॥
॥ १८ ॥ ● ॥ मनहर ॥ कर्म करे नर पीठा । तिण वेला लागे मीठा। शिक्षा नहीं माने
पीठा । गुरु हित जनकी ॥ मुरत न पके । तहा लग विप मधू चखे । पुण्य जब थके ।
तब लग मुख अंजनकी ॥ कोइ नहीं काम आवे । करे सोही दु ख पावे । पाछे तेह प
स्तावे । लग जब सजन की ॥ देख जरा नेत्र खोल । अमोल बोल हीये तोल । छोड पा

रहोम होले।वात यह सज्जन की॥१॥❀॥ढाल ।ततक्षिण यान्धीयो तेहने।कुष्ववत्त द्रष्टी आय ॥
तिणने पण ताथे कियो ।इम सहु वश थाय ॥सा॥१९॥गोरी आइ लीलावती कन्न।प्रेमे हुल्र
मी घतलाय ॥ रुप भेष पेसी तेहना । सती मन अश्चर्य पाय ॥ मा ॥ २० ॥ गोरी कहै
वीतक कथा । हू थोघरकी नार ॥ कम्वरथ किया केमे । सासु स्वसुर दिया कहाड ॥
ना ॥ २१ ॥ तुम सु मिलण भेष पलट का हू आइ या लार ॥ सती सुणी हर्षी घणी ।
इण सासु सुसरा को उपकार ॥ सां ॥ २१ ॥ वनमें राखी मुज पुत्री ज्यूं । ए मुज भो-
जाइ समान ॥ आणन्दी राखी कन्ने । हूवो आधार जरा प्रान ॥ सा । २२ ॥ शेन्यापती
नमी सती भणी । कहे हु जायू इण वार ॥ आप ततथी दुष्ट लडे । करु सेवामें इण वार
॥ सा ॥ २४ ॥ गेंदू विप्रन गोरी भणी । देइ पुरी समाल ॥ चाल्या शेन्या सन्मुख ।
अमाल यह तेरमी ढाल ॥ सां ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ प्रतापसण अश्चर्य धरी । आया
सज्जनसेण पास ॥ त सहायक कुण आवीया।राखी वाजी निज खास ॥ १ ॥ तेतले निज
राजा मिलण । बुद्धी सागर तिहा आय । निज प्रधान अवलोकने । भरत राय हर्षाय ॥
२ ॥ किहा थी आया सचीवजी । किसीये शेन्या लार ॥ ते कहे चन्द्रसेण रायकी।हुइ फते
इण वार ॥ ३ ॥ ते सहू शेन्या तहनी । लीयो वक्त वेर ॥ सुणी दोनो राय हर्षिया ॥

हुइ पुण्य की गैर ॥ ४ ॥ चालो शिघ्र मिलवा भणी । कियो वडो उपकार ॥ आज मनो
प सिद्ध हुवा । तुठया पुण्य करनार ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १४ मी ॥ आज आणद घन
मार्गाश्वर आया ॥ यह ॥ पुण्य थी सज्जन मला यावे । तव हृदय हर्षावे रेलो ॥ पुण्य
थी आणद सहु जन पावे । पुण्यने जगत् सरावे लो ॥ पु ॥ १ ॥ बुद्धी सागर सैन्य स-
माला था । करो चूक इण ठायारे लो ॥ दोनो नृप मिलवा को धाया । चन्द्र नृप अनु
राग आयारे लो ॥ पु ॥ २ ॥ सुसरा साहू ने चन्द्रजी जोइ । हर्षे हीयो उमग्योहरे लोरे
॥ गाढालिंगन देइ मिलिया । ऊंचासण वठा सोहरे लो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ सज्जनजी पुछ
चन्द्रजी से उमाह । किहा लीलावती वाइरे लो ॥ मिलण हीयो मुज अति उमगाइ ।
सुणी चन्द्रनी छाती भराइरे ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ तब जाण्या नहीं भमला सगो । भया सहु
चित भगोरे ॥ और सहु इहां जमीयो रगो । एक नहीं अनुग्मगोरे लो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥
सुकसेण भरत रांया में आया । सज्जन नृप नहीं पायारे लो ॥ पुछ्या थी कहे चद मि
लण ने धाया । सैन्या धीश भी उमंगायारे लो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दोडी आया पख्या चन्द्र
नृप सरणो । ओलखी हर्ष उभराणोरे लो ॥ हृदय भीड्या तस चन्द्र राणो । सोमचंद्र
कह नेह टाणोरे लो ॥ पु ॥ ७ ॥ सर्व मिल्या आज पुण्य की माणी । पण एक स्वामी

मोटी रहाणीरे लो । पतो नहीं किहां लीलावती राणी । तब शैन्या पति बोले वाणीरे लो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ महाराणी जी न वाग के माइ । छु बेठाइ आयो इण ठाइरे ॥ सहू कहे भली वानी घधाइ । चन्द्र उठ मिलवा धाइरे लो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ राया राणा आदि बहु जन चाल्या । लीलावती मिलण मन माल्यारे लो ॥ चउ दिसथी नर दाड हाल्या । त लीलावती भाल्यारे लो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ ओलख कोइ की त नहीं पाइ । धस्काइ मन माइरे लो ॥ शत्रूनी जीत थइ दीसे थाइ । म्हारी खबर यां पाइरे लो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ अब लेजासी पकडी मुज तांइ । शीलन भग कराइरे लो ॥ तिणथी भय मरणा इण वक्ते । इम चिन्ती निघा चुकाइरे लो ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ ते तिहु जोताथ हर्ष उमराइ । अपणा सज्जन ए आइरे ला ॥ ते तल लारस्यू गइ लीली थाइ । कूवागे काठे माइरे ला ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ तमलेता मय आया ते ठामो । शैन्या पती पूछे तामोर लो ॥ किहा महाराणी शिघ्र बतावो । तिहु लार जावे जामोरे लो ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ अश्चर्य अती पाया मन धस्काय । कहे अबीथा इण ठायारे लो ॥ बाता करता किहा सीधाया । भू पेठाके गगने उडायारे लो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ सहु जन सुण अति घबराया । अचंभ हो विलखा यारे लो ॥ चन्द्रादि सहु देखण धाया । मुखर शिशर जायारे लो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥

लीलावती ऊभी अगडे कांठ । सरणा चारों समारेरे लो । वृत अति चार सहू आलोया । परमेष्टी मन धारर ला ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ नहीं मरु हू दु ख थी घबराइ । मरुं सील रक्ष नाइर ला । वैर विरोध नहीं किंचित किणथी । इम कही छुटी मेलो काइरे लो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ तनल चन्द्रसेण निकल रथा आया । प्रिया पेखी हर्षायारे लो ॥ पडती झाली बाधर माहीं । सतीरा नण मींचायार ला ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ कहे दुष्ट मत छीना मुज ताइ । सती सताया नाहीं भलाडरे लो ॥ क्यों म्हारे तूं लार लाग्याइ । छुटण जग तडफाइर ला ॥ पुण्य ॥ २० ॥ चन्द्र कहे दुष्ट में साचा साचा । तुजने देइ अरी डाचारे लो ॥ भागा क्षत्री पुत्र में हाइ । साचो माथा तमाचारे लो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ बैठा तिहा खोला में सोवाइ । लीलावती वचन आलग्याडरे लो ॥किंचित नग खाल निश्चय भयाइ । आनन्द नी आइ मुर्च्छाइर लो ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ पती पतनी आदि सहू मिल्या माला । पचम खन्ड चउद ढालोरे ॥ ऋषि अनोलख कहे उजमालो ॥ पुण्ये सुखे विशालोर लो ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ सोमचन्द्र नृर राणी ने । दुडता तिहा आय ॥ दम्पति जा पकण भगा । आणन्द उरनहीं माया ॥ १ ॥ करी समिक्षा सतीक्षणे । सहू सज्जन ने बोलाय ॥ दाडी आया सहु तिहा ॥ जो जोडो हर्षाय ॥ २ ॥ शीत सुगन्धी उपचार सब ।करिया

यहु प्रकार ॥ सावध हुइ लीलावती । नर गम जोया अपार ॥ ३ ॥ पति अक्ति निज त-
न विलो । लज्जित हुइ अति मन । तन वस्त्र ने समरी । अलगी हुइ ततक्षिण ॥ ४ ॥
बहु दिवसे सहू सज्जना । आइ मिल्या एकस ॥ ते सुख तस आस्मज लखे । के तो केव
ल पत्र ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल १५ मं ॥ असके तो हेले बुदी जीतले मारुजी ॥ यह० ॥पुण्य
फल्या सज्जन मिलो श्रोताजी ॥ पूण्ये सव सुख पाय हो सुणिये श्रोताजी । आपसमें अ
वलोकता । श्रोताजी ॥ आणन्द उर नहीं मांयहो । सुणिये श्रोताजी ॥ पुण्य ॥ १ ॥
गुण सुन्दरी राणी सुणी श्रोताजी । अतिही मन हर्षाय हो सु० ॥ रथा रूढ होइ ततक्षि
णे श्रोताजी। ते बाग में शिघ्र आय होसु० ॥ पुण्य ॥ २ ॥ लीलावती चरणे नमी श्रो० ॥
उठाइ हृदय लगाय होसु० ॥ नेणा नीर वर्षावती श्रो० ॥ हित मित वयण बोलाय होसु०
॥ पुण्य ॥ ३ ॥ दुर्बल तन जो सती तणो श्रो० ॥ जाण्यो दु ख भोग्या पूर होसु० ॥
सती कहे गती कर्मनी श्रो० ॥ अब सहू दु ख हुवा दूरहो ॥ सु०॥ पुण्य ॥४॥ रथा रूढ दो
नो भइ श्रो० ॥ गोरीने पास बेठाय होसु० ॥ वास दासी वृन्द परवरी श्रो० ॥ राय भवन
मांय आय होसु० ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ तेही बगीचा माह ने श्रो० ॥ विछी, बिछायत बहु रग
होसु ॥ चन्द्रादी नृपती सहू श्रो० । बेठा मिली सहू संग होसु० ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ रामा

जी ने सुक्मननी श्रो० । लाया अरि वध माय होसु० ॥ कम्वरथ दूमुख कुवतो श्रो० ।
मुछर चउ ऊभा रह य होसु० ।' पुण्य ॥ ७ ॥ अणिगा धीश पूछे नृपने श्रा० । कह्यो क
ग यारि किनी गत होसु० ॥ यह कट्टा शत्रू आपणा श्रो० । हृदय भरीया कूमत होसु ॥
पुण्य ॥ ८ ॥ सोमचन्द्र कहे इण भणी श्रो० । हिवणां राखो केद मांय होसु० ॥ वज्रास्त
रो करा श्रा० । जिम भागवा नहीं पाय होसु० ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ हुक्म ते सीश चढायन
श्रा० । कर पग शृंखल बधाय हो० ॥ बहू भट चोकस न ठव्या श्रो० रामाजी भणी
भोलाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १० ॥ चउ पस्तावे अति घणा श्रो० ॥ कीधा कर्म करी याद
होसु० ॥ सहायक कुग हुवे इण समे श्रो० ॥ किस्यो होय किया विष वाद होसु० ॥ पुण्य
॥ ११ ॥ ● ॥ कुंडलिया ॥ जो मत पाछे ऊपजे । सो मत पहिले होय ॥ काम न विगड
आपको । दुर्जन हसे न कोय ॥ दुर्जन० ॥ सोग चिन्ता नहीं आवे ॥ लज्जा चित नहीं
जाय । नहीं पस्तावो थावे ॥ दाख सत अमोल सोल हीये जोय ॥ जोमत० ॥ १ ॥ ●
॥ ढाल ॥ घटी घधाइ सिष्ठान नी श्रो० । मबीयान बधाय होसु० ॥ ऊय ख्वनी का नाम
सु श्रो० ॥ अमर रह्यो गर्जाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ शुभ महूर्ते सहू सज्ज हुवा श्रो०
॥ नृप तिहु गजा रूढ होय होसु० ॥ प्रधान पण नवमी ठिगे श्रा० ॥ इन्द्र समा रच

साहय होसु० ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ शैन्या सहु भेगी करी श्रो० । पनत्तर ग्रामिक शूर होसु० ॥ अनन्द भरीया ऊछले श्रो० । याजे मंगल तूर होसु० ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ भरत वसी आणन्दीया श्रा० । नगर सजाइ कराय हो सु० ॥ माचा ऊंचा वान्धीया श्रो० । बहु रंग ध्रजा फरराय होसु० ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ जोवा जन जनी बहू मिल्या श्रा० ॥ नयन हृदय माल सम होसु० ॥ कर पास शिर्शा वर्त करी श्रो० । देखी नृपने रख्या नमहोसु० ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ मेघ धारा ज्यों वर्षावता श्रो० । हीरण सुवर्ण द्रव्य दान होसु० ॥ पुर जन मोतीये वधावीया श्रो० ॥ नृप रखे सहू को मान होसु० ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ इण ठाठे आया मेहल में श्रो० ॥ राज शभाने मझार होसु० ॥ बैठा सहूजन आयने श्रो० ॥ हृदय पे अपार होसु ॥ १८ ॥ अठाइ महोत्सव माडीयां श्रा० जीमाया सहु जन तांय होसु० हासल सहु माफी किया श्रो० ॥ योगी वकसीस बकसाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ प्रेमातुक ते दपती श्रो० । लीलावती चन्द्रसेन दोय होसु० ॥ मिलीया निज वीतक कथा । सुणीने विस्मित होय होसु ॥ पुण्य ॥ २० ॥ सती परसंस्यो गेंदू भणी श्रो ॥ तीनदा राख्या भुज प्राण होसु० ॥ गुणी गुण तिहा ऊचर्या श्रो । फेडन ने मिल्यो टाण होसु ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ सुखे रहे चन्द्र नृपती श्रोताजी । स परि वार श्वसुर घरहो सु ॥

ओपधात्री सवन करी श्रो । शरीर क्रिया भली परहो सु ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ नित्यानन्द
नरनी रखा भ्राताजी । पंचम खन्डरे माय हो सुणेये भ्राताजी ॥ ढाल पंचदशीं ए मइ
श्रोताजी । पुण्य अमोल सुख पाय हो सुणिये श्रोताजी ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ ● ॥ खड सा
रास हरी गीत ॥ धन्य२ सती लीलावती यश कीर्ती कहु कहां लग ॥ कुसुख अनीती क
री अती कुकृत्य पण तही डगे ॥ वृत न खन्डयों धैर्य न छन्डयो । सुकसेन गेंदू सहायथी
सगे । सहू सुख पाई दुख गमाइ ॥ अब पुण्य दिन२ जगे ॥ १ ॥ चन्द्रसेण राजा मील
साजा लइ दुशमण हटावीया ॥ सहू सज्जन मिलीया दुख टलिया ख सुर घरे रहाइया
॥ पंचम खन्ड सहू सुख मन्ड निज मति अमोलख ऋषि कहे ॥ गावे गवावे सुणे सुणावे
तेह निरय मंगल लहे ॥ २ ॥ ● ● ● ● ●

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री
अमोलख ऋषिजी रचित सील महात्म पर चन्द्रसेण लीलावती चरित्र का पंचम खन्ड
समाप्त ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ तीर्थ नाथ तीर्थंकर । सिद्ध गणाधर सूत्र धार ॥ श्री

गुरु । सर्व को कर नमस्कार ॥ १॥ श्री महावीर वीरार्थप ॥ बली अरि कर्म किय नाश
॥ शाशण पत के पद नमता।पटम खण्ड प्रकाश ॥ २ ॥ छे वृत धर छ काय रक्ष । छे रि-
पु कि । जिन दूर ॥ छे अवश्यक छ शुद्ध करे । छे छन्दी छे शुत शूर ॥ ३ ॥ प गुणव-
न्त क पम्बज पद । मुज मन धेट पद लोभाय । पटम हुल्लास आरभता । बुद्धि विशुद्ध
र पसाय ॥ ४ ॥ पुण्य उम्बो लावे जीवने । पुण्ये सवे धर्मार्थ ॥ रुष सुख स्वानी पुण्य
है । होवे जीव समर्थ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ सर्वोत्तम गतिर्विदायक गोत्रेर्तीर्थ कर द
त्र । मु फेर्गमन धर्म लभ्यस्से सौभाग्य सूरूप शौर्यता ॥ बुद्धि बल कुल शील स्वजन
शुभ श्रादि सुख समागम । सर्व सुइच्छित सपजे जग जन यस्य मन्यी पुण्योतम ॥
॥१॥❀॥दुहा॥ पुण्य प्रगट ने दुष्ट बढ । पुर प्रवेश बक्सीश ॥ मुनि दर्श सद्बोध सुण
। पूर्व भवान्स जगीश ॥ ७ ॥ कुमर जन्म अणगार जन्म । आत्म साधन शिव गत ॥ स
मासी पाटावली । पट स्वन्ह पह कथत॥६॥धार सार श्रवणी कथा।आचर श्रय आचार॥ टा-
र असार के प्यार या । कर विचार उचार ॥ ७ ॥ वसुधा पति वर्सु दिवस लग। बस्या
रबी पितो घर ॥ सुख विलस्या सुर सारिखा । पूर्व पुण्य अनुसार ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ढाल १
ली ॥ महार आज आण दन। त्रिन छर ॥ यह० ॥ देखो सज्जन पुण्य की सपदारे । पुण्य

फल्याथी भागी जावे आपदारेजी ॥ देखो ॥ आं ॥ भरतपुर मांहे श्वसुरघरेजी ॥ चन्द्र भूपती मन से सक्षा करेजी॥देखो ॥ १ ॥ मैं तो लुब्ध्यो छूं सासरा का सुखमांजी । बीत्या तोहि न जाणू पर दु खमाजी ॥ द ॥ २ ॥ जेसी मुज मन में लीलावती तणीजी । तेमी इच्छा प्रधान कटकाधीश नी जी ॥ दे ॥ ३ ॥ पण में नहीं पूछी तस बात ने जी । हा हा ! धिक २ म्हारी जातनजी ॥ दे ॥ ४ ॥ हिवे पुछु हू सहू कुटम्ब परीजी । फिर मित्रा ने शिघ्र चलणो खरी जी ॥ दे ॥ ५ ॥ सासरा में घणो रमणो नहींजी । एह वी शिक्षा नीती में कहीजी ॥ दे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ श्वशुर एह निवासी स्वर्ग तुल्यो नराणां। यदि भवन्ति विवेक पच पट दिनानी ॥ दधी घृत पय पूर्ण मास मेक । नन्तर भवती स्वर तुल्यो मानव मान हीना ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ इम विचारी बालाबीयाजी । दोनों मत्री आदर दे बेसाबीयाजी ॥ दे ॥ ७ ॥ कहो अन्य कुटम्ब अपणो किहांजी । शिघ्र चालणो सहू होवे जिहांजी ॥ दे ॥ ८ ॥ वली राज आपणो समालणो जी । वन्ध्या शत्रु को मद गालणोजी ॥ दे ॥ ९ ॥ दोनों कर जोडी ने इम कहेजी । भडारी सग कुटम्ब पारा पुर रहेजी ॥ दे ॥ १० ॥ तेह तणी फिकर नहीं कीजीयेजी । इच्छा होवे त्यों सुखे रसी जीयजी ॥ दे ॥ ११ ॥ नप कहे कलके चलणो सहीजी । [illegible]

हीजी॥दे॥१२॥सज्जन सेण नेपुछे हिवे सिधाइयेजी।कृपा करी आज्ञा फरमावीयेजी॥ दे ॥ १३ ॥
रह्या अमह किधो भर्त नृप घणोजी ।पण न मान्यो अवसर सहू मण्याजी ॥दे॥१४॥ रामाजी
न हुक्म फरमावीयाजी । सहू लश्कर तत्क्षिण सजावीयाजी ॥ दे ॥ १५ ॥ भरत राय प
ण शेन्या सज करीजी । पहोंचवा विजय पुर लग जरीजी ॥ दे ॥ १६ ॥ प्रताप सेणजी
पण तघ सज थयाजी । चन्द्र नृप ने पहोंचावा सग रयाजी ॥ दे ॥ १७ ॥ तीनो कटक
नीकट मिली ने चल्योजी । मही धुजी जाणे सहस्रनो फण हल्योजी ॥ दे ॥ १८ ॥ गुण
सुंदरी सुसमान लीलावतीजी । गोरी चारां प्रिती जमी अती जी ॥ दे ॥ १९ ॥ सज्जन
प्रताप ओर नृप चन्द्रजी जी । तीनो दीपे है जैसा महेन्द्रजी जी ॥ दे ॥ २० ॥ सरोवर
त्र जल सुखावताजी । पशु रथीमडल घन जिम छावताजी ॥ दे ॥ २१ ॥ घदा २ भूधव
ने नमावताजी । होइ पावणा माल निस खावताजी ॥ दे ॥ २२ ॥ दु'खी जन का दु ख
गमावताजी । जाचकाने निर्आचक बणावताजी ॥ दे ॥ २३ ॥ इम मोज मजा में जाव
ताजी । पारा पुर की सीम में आवताजी ॥ दे ॥ २४ ॥ वधाइ भेजी आगे मेंडारिनिजी॥
ढाल पहीली अमोल उच्चारीने जी ॥ द ॥ २५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ पारा पुर में ते समें ।
युग महीला एकान्त बेठी नेणा नीर भर । कह वीस्यो विरतत ॥ १ ॥ प्रेम सुंदरी शेन्या

रती तणी । अनग सुंदरी सचीव की जाण ॥ पाछे फिकर पती तणी । धरती आर्त ध्यान ॥ २ ॥ दिवस घणा हुआ नाथ ने । गया नृप जोवा काज ॥ हमू खबर लागी नहीं । मिलिया के नही महाराज ॥ ३ ॥ सोम चन्द्र सुत नानभ्यो । मात रुदन्ती जोय ॥ कहे में लावु चुला तातन । फिकर करे मत कोय ॥ ४ ॥ ● ॥ गाथा ॥ बालका नाहि मायाय॥भापाया य।पिता मपि॥औत्पाति काच भापाया।स वै भवति नान्यथा॥१॥दुहा ॥इम कही द्वारे आवीयो । त तले पुण्य पसाय ॥ चन्द्र नृपती पठावीयो । कासीद आयो त ठाय ॥ ५ ॥ दी बधाइ आइया । चन्द्र नृप सज्जन संघात । नाश कियो सहु अरी तणो । सहु सुणी हर्षीत ॥ ६ ॥ उर लगायो कुमार ने। फलिया थारा वचन ॥ बधाइ लाया पुर विषे । मिल्या सहू सज्जन ॥ ७ ॥ ढाल २ जी ॥ गाफल मत रहर ॥ यह ॥ पुण्य फल देखो । श्रोता जन पुण्य फल देखो । पुण्य बडा है जग माही । पुण्यवन्त नित्यानन्द पाइ ॥ पु ॥ आं ॥ थोडा दिवस सुख तिहा रहिया । फिर चलण हुकम नृप कहया । सहु परिवार संग लहिया ॥ काशमीर देश में आया । कनक पुर अनुक्रमे रहाया ॥ पु ॥ १ ॥ भीमा डिया उपद्रव जोइ । भाग आये महासेन पर सोइ । कहे अरी शैन्य आयो कोइ । लश्कर उनके पास भारा । लगी नहीं हमारी कुछ कारी ॥ पु ॥ २ ॥ महा सेन क्रोधे भराया ।

त। क्षण ।निज दल सजाया।चल चन्द्रनृप सन्मुख आया।। वखी जो अरदिल प्रबल।पेटमेमचगइखल
बल ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ सोच मनमें घबराया । में व्यर्थो सन्मुख आया । लडनेमे मरग मुज
पाया ॥ चून लूण जित्ती न मेरी फोजों । यहा क्या लग मरा खोजो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥
॥ कुंडलिया ॥ जबुक हरी देख नहीं । तब लग करे गुमान ॥ थडर करे शिखरी चढे ।
मान न किनकी कान ॥ माने० ॥ मगरुरी मनमें लावे । वन चर पशू गरीब । घुरराइ
तास डरावे ॥ अमोल बत्रे यों ढोंगी नर । सिंह देखत छोडे प्रान ॥ जबुक० ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ महासेन सामत पठावे । जाओ लाओ वरी कुण बात । यह अपने राज में आ
व ॥ सामन्त नम्य मन्त्री ने आइ । पूछे कर जोडी नरमाइ ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ कोन नृप
मी कहासे पधारे । फरमावो कारण क्या धारे । तब मन्त्री इम उच्चारे । यह चन्द्रसेन म-
हाराया । कखरथ डाला कैद माया ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ सामत भेद सब पाया । तत्क्षिण
महा सेनपे आया ।सहु वीतक हाल दरशाया ॥ सुनी महासन नरमी आइ । नम्या चन्द्र
सेन नृप साइ ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ रैन्या पती कैद ताको कीया । कनकपुर बाहिर डेरा दी
या । पुरजन सुणी हर्ष्या हीया । समाचार ग्रामो ग्राम पठाया । उमराव गामाधिप सबे
लाया ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ गेंदू सूभट कुछ सब लइ । खड मान में आओ तइ । जुग देव

भणी पकडेइ । कन्कपूर लेइ थांभी तास लाया ॥ कैदीयो मांहीं बेठाया ॥ पुण्य ॥ ९ ॥
सब उमराव सामत आया । चन्द्रनृप को सीस नमाया । निज स्थान सहु उतराया । श
भा की कीनी तैयारी । मन्डप एक सज्ज कियो सिणगारी ॥ पुण्य ॥ १० ॥ चित्र पडदा
लम्बा उलाया । मध्य सिंहासन बीछाया । चन्द्रनृप बिराज्या ते ठाया । प्रतापसेण सज्जन
सेण पास । मसी आवि सहु हुलास ॥ पूण्य ॥ २१ ॥ सहु यागस्थान बेठाया । पुर जन
सभाम भराया । नारीगण पटन्तर रहाया ॥ लीलावती आवी ऊचस्थाने । पुरी नारी भ
री मूमग म्याने ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तब सब केदी ने बुलाया । रामाजी सहुने लाया। एक
देश ऊच बेठाया। सहु जन धिकारे ते तांइ । करी जिन मोटीं अन्याइ ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
सोमचन्द्र तब ऊभा थाइ । नृपतने नमन कियाइ । सत्करी बचन सहु तांइ । कहे सुणो
सभा जन सारा । न्याय पावो मन मझारा ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ यह कस्वरथ नामे राणा ।
बिन बैर रोश भराणा । धाडा पाडी लुट्या पुर म्हाणा । व्याभिचार करण इच्छा धारी ।
र कर्म मया केदी इण नारी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ यह दूजा दुमुख जी जाणो । लम्पा
पट की ख्याणो । महासती लीलावती पे मोहाणो । मारण चार्यो कस्वरथ तांइ । कर्मे
स्या केदमें आइ ॥ पु ॥ १६ ॥ तीजा कुवरा मंत्री मोरा । विषय ... अपार

। सत्रीस होत्रण लालच त्रिल धारा।कुसगते केदी कहवणा। पाप का फल प्रगटाणा ॥ पु ॥
१७ ॥ चोथा पटेल प मुकन्द राम । मार्ग सती ठगी निकाम । घस्ये मनमें सदा हराम
। दुमरीदा करण आय अन्याइ । यधी घान महाणा पयाइ ॥ पु ॥ १८ ॥ पंचम जुग दे
त्र घणिक महा लोभी । इनाम इछा घर योभी । देनशो ठग्या शन्यापती घोभी । इना
म यह मोटो अन्न पाया । कर्मसे भाग किहा जाया ॥ पू ॥ १९ ॥ छहा शन्यपती महा
सेण । नहीं इणथी हमने लेण त्रण । पण व्यभचारी ना यह घेन । कस्तरथ राणीने वि
गाडी । इसो न करे काइ अगाडी ॥ पू ॥ २० ।। सातभी कुसीता राणी । हम चन्द्रनृप
त्रग्व मोक्षाणी । पण नहीं घश इच्छा पूराणी । कराग्रह डाल्या भूप ताइ । नारी जाणी
पकडी हम नाशीं ॥ पु ॥ २१ ॥ इम निज२ कर्म के जोग । सातों प पड्या सुवियोगे ।
उपार्जित फल प भोगे ॥ दोश नहीं म्हाणो ने किन केरा । राज नीती ज्यों कियो येरो
॥ पु ॥ २२ ॥ राजा सो रहा में चाले । पुत्र पर परजा पाले । अन्याइनी सगत टाले ।
तहने माने परजा सारी । चले तसे अज्ञा मक्षारी ॥ पु ॥ २३ ॥ जोंको धृष्ट राजा प्रजा
जान । तो तेहनो पक्ष न ताणे । करे पच पद्र भ्रष्टत्राने । यह नीती दरसाइ । ज्यों नृप
राष्ट सुख पाइ ॥ पु ॥ २४ ॥ इम कही घेठा प्रधानो । सहू न्याया न्याय पहचान्यो ।

यह पटम म्वड के म्यानो ॥ ढाल दूनी अमाल ऋपि गाइ । सुणी मजलस सहू हर्पाइ ॥
पुण्य ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ कखरथ राजा तणा । मोटा पांच उमराव ॥ कर जोडी ऊ
भा हूवा । नमीचन्द्र - भल भाव ॥ १ ॥ कर जाडी अर्जी करे । सर्व राठ यती तेह ॥
काशमीर सरणहे आप के । रखे हिवे देशो छह ॥ २ ॥ अन्याइ का राजमें । सहू अति
पाया दु ख ॥ ते फन्दे न पसावतां । ववा तात तुम सुम्व ॥ ३ ॥ पूछे शभा थी पचत ।
कहो चित ना सत्य चाव ॥ सहू कह मान्या अधिपती । चन्द्रसेण महाराव ॥ ४ ॥ जय२
ध्वनी सहू करी । अी अति दु खिया होय ॥ किया कर्म उदय भयां । सहाय न होय
काय ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल ३री ॥ मुक्तिरो मार्ग दोहीलो ॥ यह० ॥ पुण्य प्रगठ्या सुख
संपज । मिले सज्जन सयोग ॥ दु ख दाहग दूरा टल । सचो पुण्य सहु लोग ॥ पुण्य ॥
१ ॥ एकों शभा को मत जाणीयो । सहु चन्द्र नृप चहाय ॥ दुहाइ फिराइ तत्क्षिणे ।
सर्व धुंधवी बजाय ॥ पुण्य ॥ २ ॥ जेजे जागीरी जागिरदार की। कखरथ दाबी तह ॥
तीनी पीछी मभलायने । वृध्या सहुनो स्नेह ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ कारामह म्वाली कियो । जेम
रया चन्द्र राज ॥ सब केदी छूटी आवीया । जय२करता अवाज ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ वेत्रधर
र्धाधर ओलखी । लागो पिताजीरे पाय ॥ बृस हर्प्यो घणो चित में ।जन्म आधार य पाय

॥ पुण्य ॥ ५ ॥ गोरी अवसर देखन । तत्क्षण शमा माङ आप ॥ [illegible] सुसरा भरतारने । नीचा सीस नमाय ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ वैरागणरो भेष वेखने । सहू अश्चर्य पाय ॥ सा करजोडी चन्द्र नृपथी । भणे अति नरमाय ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ ए सुसरा ए पति मा हि रा । गया कखरथ लार ॥ विजय पुर वस्या सासू वहु गइ । रह्या तिहा स परि वार ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ अनीती करी कखरथ मुज। कियो पतिवृत भंग ॥ परवस्य स्यू करुं नात जी । अब किस्यो म्हारो ढग ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ कहो जलू ज्वाला विषे । तो पण हुं छू ते यार ॥ कृपा हुवे ने भला लगे । सो मिलावो परिवार ॥ पुण्य ॥ १० ॥ पुरोहित एक ऊभो हो भणे । सुणो नीती वुद्ध ॥ परवस्ये कृतव्य जे नीपजे । पश्चातापे ते हुवे शुद्ध ॥ पुण्ये ॥ ११ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ पर वस्य कर्त कर्म । अन्तारग निर्लिपितम् ॥ पश्चातापे न शुद्धन्ती । न तस्य जप तप ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ गण कारण मिलाइये । परिवारथी हण ताय । सहू कहे येही योग्यहे । साचित्र हुकम कराय ॥ पुण्य ॥ १२ शोभाग्य वेस पे राइने । दनी श्रीधर हात ॥ नृप आज्ञा ते मान ने । ले गयो गोरी सगात ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ तीनो ने बुलाइ लीलावती । राख्या आपणे पास ॥ सती उपकार भुले नहीं । वि नो सुख सहू तास ॥ पु ॥ १४ ॥ विप्र सिपाइ तुरग को । सुणी चन्द्रसेण नाम ॥ जाण्या

हाभी तेही जीत । आइ कियो प्रणाम ॥ पु ॥ १५ ॥ ओलखी तस शशी रायजी । कियो घणो सत्कार ॥ सहू समक्ष नृप इम कहे । याणे मुज पर उपकार ॥ पु ॥ १६ ॥ कनकपुर तस आपीयो । ते बक्सीस ने माय ॥ चक्र फरीया सुकृत्य । इम फलोदय पाय ॥ पु ॥ १७ ॥ और सहू ने सतोषीया । सदोबस्त किया सर्व ॥ आनन्द वर्त्यो राजा में । हुआ अठाइ पत्र ॥ पु ॥ १८ ॥ काल केतोही तिहा रह्या । श्रीचन्द्र भूपाल ॥ अमोल कही ढाल तीसरी । पुण्य सुख विशाल ॥ पु ॥ १९ ॥ दुहा ॥ निजपूर जावण रायकी । इच्छा हुइ ते वार ॥ हुक्म देइ शैन्यापति भणी । शैन्य कराइ तैयार ॥ १ ॥ तीहु राजा सर्व आदि । सातों केदी पण सग ॥ यथा योग्य वाहन रूड । चाल्या धरते रग ॥ २ ॥ सुखे मुकाम करता थका। मनाता निज आण । आया विजयपूर अनुक्रम। रह्या सहू सुख स्थान ॥ ३ ॥ वधाइ भेजी आगले । आया चन्द्र भूपाल ॥ सामान्तादि सहु भणी । जणाया ते हाल॥४॥ सहू सुण अति आणन्दिया । पूर सजाइ कराय ॥ पुण्यात्म सयोगने। हित थी सहू चित चहाय ॥ ५ ॥ ०॥ ढाल४ थी ॥ पोष दशम दिन आणद कारी ॥ यह० ॥ आज विजयपूर नगर के माइ ॥ हर्षित हुवे सब लोग लुगाइ ॥ आं ॥ व्रयिक भाविक घरा कराइ । मार्गने स्वप साफ किन्याइ ॥ सुगंधोदक दिया छिटकाइ । पुष्प बिछाइ

सुगंध मह काइ ॥ आ ॥ १ ॥ सिणगार्या हाट हवेली ताइ। नवा नव रंग चित्र विचित्र मर्याइ ॥ द्वजा पताका गुढी फरराइ । इंद्र पुरीसी पुरी ते बणाइ ॥ आ ॥ २ ॥ नर नारी सहु सज्ज थयाइ । षोडश सिण गारे अमर सुरी दाइ ॥ पुष्प फल कर दधी भात पाणी । कुंभशिर कन्नी बाल्क सहाइ ॥ आ ॥ ३ ॥ इत्यादिशुभ सकुन प्रेरक । शुभ द्रव्य ले गोरी सन्मुख आइ ॥ मञ्जुल दीर्घ मनोहर नादे । मगल गीत रही मिल गाइ ॥ आ ॥ ४ ॥ भूषण वस्त्र गान तानने । बार्जिंत्र थी रह्यो गगन गरजाइ ॥ जोता मार्ग ऊभा पूर गोपूरे । नृप दर्श ने नयन लोभ इ ॥ आ ॥ ५ ॥ तेतले राय सवारी आइ।पुरजन छलीर प्रणम्याइ ॥ मध्य बजार चाली सवारी । जय२ कारे सहूजन बधाइ ॥ आ ॥ ६ ॥ मुक्ता फल ना मेह वर्षाया। देखत गोरा गोरडी लाभाइ । ठाट पाट से आया भवन निज ॥ उत रिया राज शभा के माइ ॥ आ ॥ ७ ॥ राज सिंहासण चन्द्रजी बिराज्य । दोनो नृप बिराज्या नेडाइ ॥ प्रधानजी प्रधान पदस्थे । यथा योग्य सहू शभा भराइ ॥ आ ॥ ८॥ निजराणा किधा सहू खुशीका । बधाइ में बट मेवा मिठाइ ॥ सोमचन्द्र मत्री ऊभा होइ । कह सुणियो शमा जन स्थिर थाइ ॥ आ ॥ ९ ॥ होणहार की गति विचित्र । एक रात्री मे भेठी पदलाइ ॥ आखिर सत्यकी जय हुइ है। अन्याइ पडया केद के मांइ ॥ आ ॥

१० ॥ अथथी मांडी इति सूधी । सहु हकिगत की समलाइ॥सुन सहु जन अचर्य पाया ।
धन्य२ कहे नृपराणी क तांइ ॥ आ ॥ ११ ॥ सामचन्द्र और शैन्या पति को । काशमीर
देश दिया आधा आधाइ ॥ सोमचन्द्र मंत्री हुवा श्रीधर । शैन्यापति मत्री गेंदू थप्याइ ॥
आ ॥ १२ ॥ शिवपुर विप्र सीपाइने दीयो । भील परगणो दीया रामाजी ताइ ॥ बुद्धी
सागरेन देता आगीरी । सज्जन सेण देवावी नाहीं ॥ आ ॥ १३ ॥ रसोया विप्रने कुल
ग्राम दीयो । और बक्सीस यथा योग्य दीराइ । वस्त्र भूषणे सहूने सतोष्या । आनन्द म
गल रह्या वरताइ ॥ आ ॥ १४ ॥ सहू केदी ने जुदे२ स्थानक । नजर केद में दीना ठा
ई । आहार वस्त्र की साता सहू विध ॥ वदोवस्त किया पुक्ताइ ॥ आ ॥ १५ ॥ चारक
गाला खाली कराइ । अठाइ महोत्सव दिया मडाइ ॥ दान शाला मांडी घणो देशे ।
गेशे दुःखीया वनिके तांइ ॥ आ ॥ १६ ॥ सज्जनसेण ने प्रतापसेणजी । काल किचोइ
रह्या तिण ठाइ॥सहु प्रकारकी शान्ती वरती । लेइ रजा निज राजे ते जाइ ॥ आ ॥१७॥
हिवे चन्द्र सेण नृपती महा राजा । सती लीलावती सत्र सुख पाइ । पच इन्द्रिका सुख
भोगवे । एकदा क्षीर सिंधू स्वपन पीयाइ ॥ आ ॥ १८ ॥ जागी नृपने स्वपन जाणायो
व कहे होसी कुवर सुख दाइ ॥ स्वपन पाठक पण तिमही प्रकाश्या । अखुट द्रव्य व

क्रिया मिटाइ ॥ १९ ॥ नवमास थीया जन्म कुँवरजी । जन्मोत्सव दशोटण क धाइ ॥ गुण निप्पन्न सागर चन्द्र नाम दियो । वृद्धी हावे इन्दु ज्यों पच्च धाइ ॥ आ ॥ २० ॥ शाग म्ये सहु कला पढाइ । धर्म नीती भी अधिक सिखाइ ॥ परणाइ राजेश्वर कन्या । जुगराज पत्र दिया नेटाइ ॥ आ ॥ २१ ॥ राज काम सहू समाल्यो कुँवरजी । चन्द्र लीलामी निवरा थराइ ॥ जन्म सुधारण आग सुख कारण।धर्म ध्याने तन मन रमाइ ॥ ॥ आ ॥२२॥ दान द दवाये लव घणो लाषा । सील पाले तपे तन तपाइ ॥ शुभ भाव मार गाय अनाल्म्ब । पर्ट खन्ड ढाल चौथी सुख दाइ ॥ आ ॥ २३ ॥ ꙮ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर भूमन्डल । विश्वरूपि आचार्य ॥ चरण करण ज्ञानगुरु । तारण जग सिन्धु नार्य ॥ १ ॥ महावृम सुमती गुणेश्वर । जीत्या इंन्द्र कषाय । श्रेमगुप्ती आचार धर । छत्तीस गुण शाभाय ॥ २ ॥ मम दम खम उपसम धर । तप जप खप नित्य ठाय ॥ पंचेसय मुनिवर सग । विचर जन पद माय ॥ ३ ॥भव्य भाग्योदय आवीया । विजय पुरी न धार ॥ मना रमा उद्यान में । वन पाल जाता धार ॥ ४ ॥ उतर्या सहू मुनिवर तहा । ज्ञान ध्यान में लान ॥ वैयावच्च सज्झाय तप में । रम्या रत्त प्रवीन ॥ ५ ॥ꙮ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ कवित्त मार्ग माथ घिग २ ॥ यह० ॥ सुणो भवी धन्य २ मुनि राया ॥

निन जिन मार्ग दिपायाजी ॥ मनोरम बागीचाने शोभाया । माली हर्ष भरायाजी ॥ सु
॥ १ ॥ अन्डा सिणगारे तन सजाया । राज सभा माहे आयाजी ॥ कर जोडी नृप ने
ीस नमाया । बधाइ वधे उमायाजी ॥ सुणो ॥ २ ॥ गणिवर विश्व ऋषि मुनि सगे
। विराजा बाग में आइजी ॥ श्रवणी अरयान्या नरेश्वर । रोम राइ हुलसाइजी ॥ सुणो
॥ ३ ॥ तज सिंहासण वदन किनो । बक्सीस दीवी माली ताइजी ॥ राज चिन्ह वजी
त । भूषण । थांगलाव हिरण दिराइजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ वन रक्षक गया गेह हर्षाई । म
ीपत हुक्म फरमाइजी ॥ चतुरगणी सहु शैन्य सजवाइ । सहु चालो दरशन ताइजी ॥
॥ सु० ॥ ५ ॥ नर वर न्हाइ सिणगार सजीया । पेखी इन्द्र जावे लजीयाजी ॥ सामत
मसी आदि सहु आया । शशी तार परिवार छजीयाजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ मोंटे मयगले भू
प विराज्या । कुँवर मंत्रीश्वर साथेजी । और उमराव गयवर यथा योगे । चोपखे नर ना
थेजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ छत्र चमर आप ताप विराजे । अष्ट मगल आगल चाले जी ॥ अ
टोत्तेर शत हय गय आगे । कोतल भूषण मालेजी ॥ सु ॥ ८ ॥ पायक सहु मुख आगल
चाले । जय २ शब्द उच्चरताजी । तुरग स्वार लारे धर चाले । थइ २ नृत्य करताजी ॥
॥ सु ॥ ० ॥ तस पाछल रथ माहि बिराजी । लीलावती ने कुँवराणी जी ॥ [illegible]

ठाणी बहुली । भूषण रुपे इन्द्राणी जी ॥ सुणो ॥ १० ॥ अष्ट देश वेशनी बहुवासी । निज २ वेस सुहाइ जी ॥ निज भाषा में गीत गावे।गगन गयो गरजाइजी॥सुणो ॥ ११ ॥ प्रत्यक रथने अ ग वाजिंत्र । जुदी २ तरह झणकारे जी ॥ लारे शिवकाये शाह थिरा ण्या । निज २ घर परिवार जी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ अन्य अनक पुर जन सहू सजीया । इ च्छा जुदी२धरीजा । केइता मुनि दर्शन काजे । केइ जष्ट की नारीजी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ देश ना सुणवा प्रश्न पूछवा । जावा प्रपदा मिलण सज्जनो जी ॥ कितोल ठोल तमाशो पेखण । चाल्या मिल बहु जनो जी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ वाजिंत्र नादय अतलिख गाजे । नीशाण नेजा फरराव जी । मध्ये पुरे हो बहु ठाठ हर्षे ।चन्द्र वदन ने जावे जी। सुणो ॥ ॥ १५ ॥ बाग नडा आय मुनि देखाया । ऊभा तिहां सहू राही जी ॥ विनय विवेक मर्यो दा काजे । अभिगमन पच्च सचाइ जी ॥ सुणो ॥ १६ ॥ सचित वस्तु रखी सहू दूरी । अजोग अचित पण छाडीजी॥प् कपट सेडी मुख आगे उतरासण । नम्र भाव करे जाडीजी । सुणो ॥ १७ ॥ नहीं दुरा मनासन आया । पाचो अग नमायजी । तिखुत्तो विधीस्यू वन्द्या । आनन्द उर न समायाजी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ लीलावती आदि सहू नारी । ते प ण इण प्रकाराजी ॥ छह निजर केदी पण आया । पाप हरण ने विचारो जी ॥ सुणो॥

॥ १० ॥ पुरजन आवि प्रपदा भराइ । जोग आसन बेठाइजी ॥ मुनि मुख पखत ग्रस न-
हारे । नयण वयण विकसाइजी ॥ सुणो ॥ २० ॥ ● ॥ घन ॥ चकोर निशापति देख
वांदा । रवी दर्श कमल विकसाया ॥ घन गर्जे केक नृत्य ठाया ।युवती संग योवनी लुब्धा
या ॥ भ्रमर कुसुम रस लपटाया । राज हंस मुक्तासिन्धू पाया ॥ एस भवी गुणी मुनि
पास । अनाल मन हात है उछासे ॥ जी जिन तूही ! ! ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ पटम हु-
ल्लास यह धर्म प्रकाशक । ढाल पचम मन रंगजी ॥ कहे ऋषि अमोलख आग । धर्म क-
था उमगे जी ॥सु॥२१॥●॥दुहा॥ परिषद भरी मुनि आगले।वाणी सुण नउमगाय॥क्षुदित अन्न
नीर पिपा सित॥ जिमते लवल्या लगाय ॥१॥ आस निरासी कारणे॥तारण जगोव धी जत॥
वारण अघ सचित सघन । धारण गुग निज नत॥ २ ॥ निराच्छित यश शिष्य द्रव्य ।
इच्छित पराप कार ॥ मयुर स्वर वुठे घटा । गर्जारव तेमकार॥ ३ ॥ अक्षप विक्षेप धारणी॥
संवग वेराग्य पूर ॥ दव मुनिवर वेशना । सुणे श्रोत हर्ष नूर ॥ ४ ॥ ❀ ॥ढाल ६ठी ॥
चन्द्रायणामें ॥ प्रथम नमन करी श्री नवकार ने । वेये वेशना भव्य जीवोंको तारन । सु
णो श्रोता प्रमाद अगर्यो टारने । निश्चय कर जिन वाणी लो चित धारने । भव भ्रमण
मिट जाय पाय गति सारन ॥ पगदा ॥ जा तुम वाञ्छो होवा खेवा पारने ॥ सुणो हो

भव्य लोको । लावो लेवो जी अवसर पायके ॥ आ ॥ १ ॥ भ्रमण करत चौरासी लक्ष ज्योनि माय तूं । पर वश रहिया दु स्व अनन्ता पाय तू । क्षेस वदना नर्क माय अति स हाय तू । छेद भेद तिर्यंच गती में थाय तू । मनुज्य भिख्यारी दव सवक कहवाय तू ॥ पणहां ॥ इम चहू गति में भ्रमण करत इहां आय तू ॥ सुणा ॥ २ ॥ नीठ२ ये पायाहे नर देय ने । आर्य देश उत्तम कुल में जन्म लेयने । काया निरोगी इन्द्रि पूर्ण उयन । दीर्घ आयु निर्ग्रन्थ गुरुजी सेयने । सूस सुणो शुद्ध राखो श्रद्धा नयने ॥ पणहा ॥ धर्ममें प्राक्रम फोडे मुक्ति मिल जयने ॥ सुणो ॥ ३ ॥ काचा कुम्भ काच सीशी जैसी काय छ यत्न करता छिनमे छेह देखाय छ । सात धातू मल मूत्रसे उत्पन्न थाय छ । शुद्ध करण न क्यों मल२ न न्हाय छ । ऊपर चर्म विष्टित घिनता माय छ ॥ पणहा ॥ तप क्रिया थी काया प क कहवाय छ ॥ सुणा । ४ ॥ ० ॥ मनहर ॥ देख इस शरीर में । अनेक सुख मान रह्यो । इतना तो विचार । यामें कौन बात भलीहै ॥ हाड झाड घिच मास ' मास पिच नशा जार । पेटसी पिटारी तामे । थोडर मली है ॥ हाडनक हाथ पांव । हा डन क दांत नाक । हाडनक पिंजर में । हाडन की नलीहै ॥ शंकर कहे देख जन । या का तूं भूली मत । भीतर तो भगार भरा । ऊपरसे फली हे ॥ १ ॥ ० ॥ ढाल ॥ मात

पिता सुत भ्रात कुटुम्ब और कामनी । सघ स्वर्थ का जान खुशामत दामनी । बिन मत
लब नहीं कोइ सेवा कर श्रामनी । हुकम सहु उठाय धन लेवा हामनी । सब दूरा भग
जाय बिगडे काया चामनी ॥ पणहा ॥ मूर्ख रह्या लल चाय खोये खर्च नामनी ॥ सुणो
॥ ५ ॥ ● ॥ श्लोक शार्दुल० ॥ वृक्ष क्षिण फल तज्यति विहगा । शुष्क सर सारसा ॥
निगन्ध कुसुम तज्यति मधुपा । वर्ध वनात मृगा' ॥ निर्द्रव्य पुरुष तज्यति गणिका ॥
भृष्टे नृप सवका ॥ सर्व स्वार्थ वशा जगोपि रम्यते । नो कस्य को वल्लभा ॥ १ ॥ ● ॥
ढाल ॥ पच इन्द्रिना भोग रोग सम जाणीयें । फल किंपाक्नी ओपमा तास वखाणिये ।
भोगता लागे मिष्ट प्रणाम दु स खाणीये । मृग मपतग मीन कुंजर यह प्राणीये । एकेक
इन्द्री वश भर्या अज्ञाणीये ॥ पणहां ॥ पच इन्द्री वश जे तस गत किसी जाणीयें ॥ सु
गा ॥ ६ ॥ ● ॥ श्लोक उपजती• ॥ कुरग मतग पतग भृगा । मीन हता पच भिरेव पच
॥ एके प्रमादे सतसे हन्यतेय । सेवितया पच कथ चिरायु ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ आयुष्य
चचल जानो कुजर का कान जो । पाणी बुद बुदा अथिर पीपल का पान ज्यो । ओस बु
द बिंदु प्रम सध्या का भान ज्यों । क्षिणा२ होय बिनाश सबेरा भान ज्यों । बिश्वास
[illegible] पणहो ॥ क्यों रह्या अचेत समजकर काम जो ॥

सुणो ॥ ७ ॥ ० ॥ श्लोक ॥ आयुर्वर्ष सतेन्द्राणा प्रमिर्त । रात्रोतदर्ध गत ॥ तस्या धंस्य
तदर्ध मर्धम परम । बालत्व वृद्धत्व यो ॥ शेष व्याधी वियोग दु ख साहित । सेवादी भिर
नीयते ॥ जेव वारी तरग बुद२ समें सोख्य कुत प्राणी नाम ॥ १ ॥ ० ॥ ढाल ॥ जर
जारु जमीन जगमें अथिर है । इस काज लडे केइ भुप मरे केइ वीरहे । ।किनके साथ नही
गइ जला डाला धीर है । परिग्रह इसका नाम क्यों करता पीर है ।पुण्य से दग मिल जा
य पापे जावे सिरहे ॥ पणहा ॥ समाता रखे दिल माहे बडावे धीरहे ॥ सुणो ॥ ८ ॥ ●
॥ श्लोक ॥ कन्क कान्ता सुत्रेण वेष्ठित सकल जगत् ॥ता सुस पु षि मुक्तपुाहि भुजा दर
सेश्वर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ संसार माहे जे जीव ते सुखिया नहीं । धन वत तथा गरीब
दखो ब्रष्टे सही । गरीब करे धन आस धनवन्त चिन्ता गही । अहो निश धन्धा माहे
जाय जगकु वही॥निश्चिन्त जे होय छोड जग फन्द दही॥पणहा॥साधु निरागी जेह तेह सुखिया
मही मही॥॥सुणो॥९॥०॥गाथा॥०॥नवीसुही देवता देव लोए।नवी सुही पुढवी पइराय॥ नवी
सुही सेठ शन्या वईए।एकन्त सुही साहु वियरागी॥१॥०॥ढाल॥काया कुटम्बके काज अकाज
घणा के।सस स्थावर जे जीव प्राण तेहना हरे।पोते बान्धे कर्म पेट दूजा भरे । भोला सम
जे नय दुर्गत से ना डरे । काय कुटम्ब यहा रेय विसी जीव पर पडे ॥ पणहा ॥ समज

मेह सुजाण निर्ममत्व पद वर ॥ सुणो ॥ १० ॥ त्रण सरण नहीं काय जत्तमे तेराहै । मन मतलब क काज कुटम्ब तुज घेराहै । मुढ इसमे भरमाय कहे मेरा मेरा है । इस दु-
निया क मांय दो दिनका बसेराहै । कर सुकृत करणी जीव आय तेरे लरां है ॥ पणहां धर्म सदा सुख कार आधार घणरा है ॥ सुणो ॥ ११ ॥ ● ॥ श्लोक ॥ शिखरणी ॥ पि
ता माता भ्राता प्रिय सहचरी सुनु निवह । सुहृत स्वामी मथत्करी भट रथाश्व परिकर । निमज्जंत जतूं नरक कुहरे रक्षितू मलम् । गुरोर्धर्मा धर्म प्रकटन स्काऽपि नपर ॥ १ ॥ ●
॥ ढाल ॥ धर्म दोय प्रकार कह्या जिनराजर । पहिला सुम धर्म जाण सुणे भाख्या नाज
र । नव तत्व भेदानु भेद धार हीया माजरे । पट द्रव सत्त नय निक्षेप प्रमाणाजर । चतुर्थ गुणस्थान रह्या छे घणाजरे ॥ पणहा ॥ मोक्ष गामी निश्चय तेह वैठा धर्म जहाजरे
॥ सुणा ॥ १२ ॥ दूसरा चारित्र धर्म भेद दो जाणरे । सागारिक श्रावक वृत पहचानरे । अणुवृत है पांच तीन गुण ख्वाणरे । शिक्षावृत चार धार शास्त्र प्रमाणर । पचम गुणस्थानक स्फर्श सु भाणरे ॥ पणहा ॥ पदरह भवके माय निश्चय निर्वाणरे ॥ सुणो ॥ १३ ॥ दूज अणगार के वृत पाच मोटा सही । अहिंशा सत दत ब्रह्म निर्ममत्व गही । निशी आहार त्याग ए कदा मन्दे नहीं । माता ज प्रवचन धर्मुप ले पही । मर्याद में उपकरण रक्ख

ममता वही ॥ पणहा ॥ एक या तीजे भव मुक्ति तेही लहीं ॥ सुणो ॥ १४ ॥ इण प्रमा ग कमाइ धण सो कीजीये । सर्व देश वृत दोनों सदे सो लीजीये । अभय सुपात्र दान नित्य प्रत दीजीय । सम्यक्त्व युक्त सहू धर्म चैतन्य आदरीजीये । जिनागम रहस्य धार अनुभव सुधो पीजीय ॥ पणहा ॥ प्राप्त मानव भव सफल करीने जीजीये ॥ सुणा ॥१५ ॥ कहणा हमारा करना मरजी श्रोता तणी । जा मानेगा वात तो शोभा रहसी घणी । दाइ भव मिलसे चेन छूटसे दु ख अणी । नही तो चउगन माहे होसी फजीती घणी । हाम न रहसी वात पछतासो सुम्ब भणी ॥ पणहा ॥ चक्त गर चेते जेह तो हावे शिव धणी ॥ सुण ॥ १६ ॥ जब तक शरीर सशक्त तब तक होवे धरम । वृद्ध पणा जव आय होवे ताकत नरम । इन्द्रियों बल हट जाय चित्त में रेवे भरम । शुद्ध बुद्ध वीसर जाय रहे न जरा शरम । फिर मन में मुरजाय बान्ध उलटा करम ॥ पणहा ॥ अवसरे लेवे लाभ तो पावे गति परम ॥ सुण ॥ १७ ॥ ● ॥ श्लोक शार्दुल ॥ यावत् स्वस्थ मिद शरिर मरुज यावज्जरा दूरता ॥ या यच्चेन्द्रिय शक्तिर प्रतिहता यावच्चिरो वायुप ॥ आरम श्रेय सितावद्विही जन्ते कर्तव्य धर्मोद्यम । संदिप्त भुवनेहि कूप खनन प्रत्युद्यम किं दशा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ इत्यादि बहू भात उपदेश सुणावीयो । जिन वाणी रुप

ली

तोय श्रोतान पावीयो । भव्य जीव चत्रक समान हीयो उल्लसावीयो । जानाशा जिम कुम्र
री हीय मुरजावीयो । भव्य जीवांको मिथ्या ताप नशावीयो । ॥ पणहा ॥ स्याद वाद सद्रूप
य पन्थ यतावीयो ॥ सुणो ॥ १८ ॥ सुणी घणा जमन वैराग्य मनमें आणन। सम्यक्त्व
गरी तीन तत्व पहिचान ने । कइ श्रावक मत लिया हित जाण ने । केइ सयम लेवा चि
तमें ठाण ने । इम घणा उपकार हुवो विज्ञान ने ॥ पणहा ॥ नृप आदि सहू वन्दे मुनि
जग भाण ने ॥ सुणा ॥ १९ ॥ नमन विधी सु करी गुण मुख ऊचरी । बेठा वाहण आय
हर्ष दिलमें धरी । आया जिन दिस जाय साहू साथे करी । मार्ग में वाख्यान तणी करता
भरी । आया निजर स्थान गुन हृदय भरी ॥ पणहा ॥ मुनिराज महाराज ज्ञानादि गुण
तरी ॥ सुणो ॥ २० ॥ छट्टो उल्लास छट्टी ढाल ओछावणा । भव्य जन सुण वैराग्य मनमें
लावणा । शक्ति सम पच्चखाण चितमें ठावणा । वक्ता रस भर श्रोता आगे गावणा । ह
वहू वैराग्य रस दरसावणा ॥ पणहा ॥ कहे ऋषि अमोल राग चन्द्रायणा ॥ सुणो ॥ २१
॥ ०॥ दुहा ॥ दूसरे दिन ते नृपती । कराइ शेन्य सैयार ॥ पूत्र पर मय ठाठ ले । आइ
वन्द्या अणगार ॥ १ ॥ चन्द्रसेण कर जोडन । पूछे मुनिसे आम ॥ पुर्व जन्म की मुज क-
था । कृपा करी कहो स्वाम ॥ २ ॥ किस्या कर्म किया करें । केवी पाया दुःख ॥ राज

गयो क्स्वरथ कर । कुबुद्धी करी दुमुख ॥ ३ ॥ कृपा करी फरमावीये । जेहथी टले संदेह ॥ दुष्ठ कर्मी प्राणी सुणी । कर्म बन्ध डर लह ॥ ४ ॥ त्रिम्ब ऋषि कहे भूपति । सुणो पु ॰ त्रिरतत ॥ जे कर्म बन्धे जीवडो । ते मुत्तषा छुटन्त ॥ ५ ॥ ॥ ढाल७ मी ॥ श्री वीर जिन्द सासन धणी ॥ यह० ॥ मुनिवर कहे भव्य सांभलो पुर्व भव बाता । वैर बांध्या इण जीवडे । तिणथी दु ख पाता ॥ ज्ञानी मुक्त ती बक्त । दोष नहीं किणरो दरसाता । र्नी बात जे होय ते भवी जन ने सुणाता ॥ एक चित रख सांभला ए निंद्र वीकथा टार ॥ संवेग पामी अहो जीवां । लीजा सयम भार ॥ १ ॥ पश्चिम दिशीरे माय । देश सडिल मनोहर ॥ तिहा राय धानी ग्राम । साणव नाम छे सुख कर ॥ सम्राट त्रिम् नृप । न्याय ने नीती गुण धर ॥ कमलनी नामे नार । शील रुप गुण आगार ॥ बाणी नीधी प्रगन जी ए । सुखेर करे राज ॥ पुण्य प्रबल जग जेहने । तहने कमी कछू नाज ॥ २ ॥ तही नगरी माह वस धन पाल व्यवहारी ॥ धन धान्य घर पूर्ण । लक्ष्मी नामे तस नारी ॥ पूर्व पुण्य ने जाग । कुमर युगल जन्म्यारी ॥ रुप कला ए बुद्ध वन्त । नीती ए कुल उद्यात कारी ॥ मोटा हुइ यह कला भण्या । मत्री हुवा दोइके गेय ॥ धनवत को सुदव छे । श्रीवत्त चारुदत्तरे जाय ॥ ३ ॥ तिण नगरी में वणिक वसे वसुदत्त ए नामें । यशो

मती तम नार । नाम तेसा प्रणाम ॥ तेहना नदन दोय हरीचंद गुणचंद पाभे ॥ बुद्धि वंत
पुण्य वंत । भणी लग्या घर के फाम ॥ द्रव्य अल्प छे घर विष ए । करे तुच्छ वेपार ॥
दुष्कर हाय आजीविका । फिर ते नयर मझार ॥ ४ ॥ हरीचंद न गुणचंद । मैत्री छ प्रेम
यागे । सुनक्षस न परदक्ष चारों मिल कर वेपारा ॥ खावण पहरण लेन दण बहु आपसमें
प्यारा ॥ कदइ नात का अतर रखे नहीं त लगारो ॥ इम सुख थी काल निर्गमे ए । काल
रुताइ माह ॥ घनपाल नामे सेठजी । विदेशे कमाना जाय ॥ ५ ॥ धन दत्त श्रीदत्त
इम जाण । आया पिताजी पासे।।में जावा परदेश। आप रहा घरे उल्लासे॥ अब वय तुम तात
पुम जन्म्या शीं आसे । येही वक्त आवे काम । भाग्य पिताजी तपासे ॥ भाग्य परिक्षा प्र
रुा में । गया मनुष्य की थाय । बुद्धि वल चातुरी घडे । कमित हाय स्वाय ॥ ६ ॥॥
दुहा ॥ पान पदार्थ सुगड नर । अन मोल्याइ विकाय ॥ ज्यों२ प्रदेश सचरे । त्यों२ महें
गा थाय ॥ १ ॥ ॥ इम सुणी पुत्र वचन । पिता आणद अति पावा ॥ शुभ महूर्त स
वाय । नगरमें पडह वजाया ॥ अमुक दिन धनपाल कुमर परदेश सिधावे ॥ जो जासी
तम लार तास त राज विरासे ॥ वेपार करी वर्ष पांच मेंए । पाछा आसी इण ठाय ॥
इम सुणी वेपारी घणा । मनमें हर्षित थाय ॥ ८ ॥ हरीचंद गुणचंद दोनों । सुणी

पेता कने आया ॥ कर जोडी शिर नामी । पोताने विचार जणाया ॥ हम जावां धनदत्त
साथ । करण विदेश कमायां । आप प्रशादे कमाय । थोडा दिन रहसां आया । पुत्र व-
चन वसुदत्त सुण । शक्ति सारु धन देय ॥ होंस्यारी से रहजो सदा । विश्वासी इम के-
र ॥ ८ ॥ दोनों दोइ मित्र बुलाय । मन की बात जणाइ ॥ ते पण कहे तुम साथ। हमे
रण चाला भाइ ॥ तात नी आज्ञा लेय । लियो वित्त करण कमाइ ॥ हरीचन्द भेगा मी
ली।धनदत्त गेह चल्याइ ॥ बहु जन आया देखनेए । धनदत्त हर्षित थाय ॥ देशावर में
खपे जिसो । मालथी सकट भराय ॥ ९ ॥ सहु जणा हिली मिली । अंबू निध तीरे आ-
या ॥ मोटा मजबूत वाहणो लाया माल भराया ॥ शुभ सुकन शुभ महुर्त बेठा सहू जन
माया ॥ योग्यविधीये पूज तिहांथी वाहन चलाया ॥ निर्विघन ते चालता । थोडा दिनके
माय ॥ वरद्वीप में आवीया । वाहण कठ थो माय ॥ १० ॥ आपणो २ माल लेइ । सब
थले उतरिया ॥ जुदा २ गाडा मांय । जुदा २ माल ते भरिया ॥ उक्षीया नयरी मांय
सहु जण मिल सचरीया ॥ जुदी २ जोग हट सहू जन माडे करिया ॥ जुदो २ वैपार क
रता थका । जुदी २ बुद्धि चलाय ॥ वसुदत्त पुत्र ने पुण्य थी । कमाइ हुइ स्वाय ॥ ११
॥ थोडा दिनारे मांय । कोटी सोनैया कमाया ॥ ते देखी सहू साथ मन में आश्चर्य पाया

॥ तिहा का वेपारी नागवृत्त । हरीदत्त पासे आया ॥ रूप पुण्य ञिते देख । मन में अति
हरपाया ॥ निज पुत्री परणाववा । आमन्त्रण जस कीध ॥ अवसर ज्यो हरी चदजी । या-
नय न मानी टीघ ॥ १२ ॥ अति आडवर कर धूयी तिणने परणाइ ॥ धन दियो वली घ
णो । खुशी हुवा सुसग जमाइ ॥ हरीश्चंद्र मदन रेखा दोनो । विल्से सुख दमना साइ
॥ भाइ मर्थी चलावे वेपार । फिकर दिल में नहीं कांइ ॥ इम ठाठ इणरा दमके ए । ६
न पाल पुत्र वोय ॥ उदासी मन में धरे । पुण्य विना कांइ हाए ॥ १३ ॥ तिहा रहता
दिन घणा हुवा । धनदत्त ते वारो ॥ जाव। भणी परदेश ।माल कीधा तैयारा ॥ हरीचंद्र ने
कह्या ममाचार । ते हरर्या ते वारो ॥ गुण चद ने चेताया हुया चलवा तैयारो । नागदत्त
हट करी घणी । नहीं मानी तस वात ॥ माल भराइ रथ में । धनदत्त साथे जे आत ॥
॥ १४ ॥ सहू जणा मिली ताम । समुद्र के कांठ आवे ॥ अर्ध २ वाहण बाँट । ते मां
हें माल भरावे ॥ पुत्री पिता से मिली ने अधिको नेह जणाव ॥ जन्म विछोया जाण ।
नेणा नीर चहाय ॥ गिर कर ठवी नगदत्त तय । पुत्री ने शिक्षा देय ॥ मन उदासी घर
गो पछो । फिर आयो घर तेय ॥ १५ ॥ शुभ शुकन हुया आगल । चल्या वाहण ते वा
रो ॥ हरीश्चंद्र मदन रेखा । धनदत्त चलावे अपारा ॥ कमिली अ मा [illegible]

भयों यारो ॥ लालच वे गुणचद ने । फटायो वे विचारो ॥ त भोलो समज्यो नहीं । वगा
कटका के मांय ॥ धनदत्तरे हुक्में चले । एक दिन अवसर पाय ॥ १६ ॥ कुसुम नाम
का गुमासतो । तेहने तिहां बुलायो ॥ धन हरण विरतत लालच द तास चेतायो ॥ भाग
लेवण ले घचन । तिणरे हुकम में थायो ॥ श्री दत्त सग थन्ध्यो प्रेम । जाण भाइथी स
वायो ॥ इम सप कर श्री दत्त तव । हरी चद मारण उपाय ॥ कुबुद्धि उपाय ने । करण
लग्यो अन्याय ॥ १७ ॥ खाटलो एक लेय । वाहण वाहिर वन्धायो ॥ मिष्ट घचन धन
दत्त । हरीचद भणी बुलाया । भाग्रिक समज्यो नाय । खाट पर तास बेठायो ॥ धनदत्त ह
री चद दोय । घातना नाद लगायो ॥ कपटी श्री दत्त आयनेए । नाडो काट्यो तेह ॥
हरी चद उदधी में पड्यो । कर्म गति य जेह ॥ १८ ॥ उदधी में पडत स्मरण नवकारनो
कीधो ॥ पुण्य जोगथी तदा । काष्ट कटको कर लीधो ॥ तात्क्षिण हुवा स्वार । पाणी में
जाव सीधो । तीन दिन क माय । पार पाया जल्नीधो ॥ तिण वन माय जाय नेए । कि
यो फल फूल को अहार ॥ काल निर्गमन दु खथी करे । रहे तिण वन मझार ॥ १९ ॥
गुणचद इण पर देख । मन में रोस भरायो ॥ श्रीघर मारण काज । धम २ तो आयो ॥
धनदत्त श्रीदत्त दोय । तिण ने मार दबायो ॥ चारुदत्त मंत्री सहाय करण आयो तिण

।या ॥ तेतले गुणचन्द्र बांधने ए । चारुदत्त पकड्या जाय ॥ बंधन में तस बाधन दियो निहांहो छुडाय ॥ २० ॥ श्रीदत्त तिहां बेठाय । धनदत्त ओरी में आया ॥ चरुदत्त आश्रम आय । बंधन तटकें तुडाया ॥ फिर बन्धयो फिर तोड्या । इम तीन वार कराया ॥ फिर तोड्या तिण वध। पाणी में वीया बहाया॥इम हसी कर्म करे जीवडा । भुक्तना मुशिकल होय ॥ अमाल भणे ढाल मानमी । कर्म करो मत कोय ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ गुणचन्द चरुदत्त भणी । दिया समुद्र में डाल ॥ मच्छ पृष्ट जाइ पड्या । आयो नहीं जरा आल ॥ १ ॥ इतरे से मच्छ चालीयो दोइ बेठाहा होश्यार ॥ थोडी देरने अंतरे । मेहीपर कियो उतार ॥ २ ॥ तिण मनमें फिरता थका । हरीदत्त मिलियो आय ॥ देखीने हर्ष्यो घणा । मिल्या धरी उस्सहाय॥३॥ मदनरेखा सुनक्षेत्र की।पुछे हरिचंद्र बात ॥ ते कहे हम जागा नहीं । लार तुमारे आत ॥ ४ ॥ तीनों जणां तिहा रहे । करी पुष्प फल अहार ॥ हिवे पिछली वाहण तणी । चरी सुणो नर नार ॥ ५ ॥ ढाल८मी ॥ नम घाटी मांहे भटकत आयो ॥ यह० ॥ मदन लेखा ए तमाशो देखी । थरर धूजी देह ॥ अररर अब हारा किस्यो होसी । सज्जन दीधो छेह ॥ जोवो पूर्व विरतंत राजाजी ॥ जो० ॥ १ ॥ नक्षेत्र के पास ते आइ । करवा लागी विलाप ॥ सुनक्षेत्र कहे धरा धैर्य । काइ होवे,

किया सताप ॥ जो ॥ २ ॥ तेतले तो धनदत्त तेहा आइ । बाल इण प्रकार ॥ न ता पुत
हुसा दरिद्रिका । पुण्य हीण निराधार ॥ जो ॥ ३ ॥इम छां नगर सेठ का कुँवर । जोवा
हुम पिलास । तेह दारिद्री की आसा छोडो । पूरो सघली आस ॥ जो ॥ ४ ॥ सुनक्षेस
सुण रीस भरायो । लडवा हुवो हॉशार ॥ विश्वास घाती अरे महा पापी । क्यों बोल अ-
विचार ॥ जो ॥५॥ धनदत्त सुणी क्रोधातुर हो । पड्यो तिण ऊपर जाय ॥ सुशाक्या
यन्धी थप्पड मारी । मन में अधिक पोमाय ॥ जो ॥ ६ ॥ इम देखी मदन रेखा घबराइ
मरणो मनमें धार ॥ चुपकेथी ते ऊठी भागी । पडवा दरिया मझार ॥ जो ॥ ७ ॥
धनदत्त आडो तम फिरियो । ऊभी नीची दृष्ट धार ॥ भोगोप भोगकी करे आमसण ।
तहन वारम्वार ॥ जो ॥ ८ ॥ रीशाणी बाले मदन रेखा । अरे निर्लज्ज सिरदार ॥ म्हारा
ही कुटय को नाश करीने । इछे सुख्वे विचार ॥ जो ॥ ९ ॥ सतस हुइ तस जाणी धन
दत्त । एक कोटडी मांय ॥ बेठाइ बाहिर तालो लगायो । बेठो स्थाने आय ॥ जो ॥१०
॥ मदनरेखा अति आर्त करे मन । अहो२ कर्म प्रकार ॥ तात मात तो रह्या वेगल्या । घि
च हून्या भरतार ॥ जो ॥ ११ ॥ निशा व्यापी सम पसरत धनदत्त । आयो मदनरेखा
पास ॥ मधुर वचन थी तास सतोपि । करे भोगकी अरदास ॥ जो ॥ १२ ॥ मानेंनी रि

म भरी नव भाग्न । क्यों लाग्यो मुन लार ॥ कर कालो मुख वगो यहा थी । नहीं ता
मरु इण शार ॥ जा ॥ १३ ॥ दुष्ट धनदत्त तत्र रीसे भजली । मदनरखा धाध । ब्राह्मण
मै तल्याम उली । भागव तु प तू राड ॥ जो ॥ १४ ॥ अनसर विचारी वोल सुनक्षेस
। यह मा करस्यू काम ॥ दया लाइ तस वन्धन छोड्या । राख्यो तिणने तिहा स्थाम ॥
ना ॥ १५ ॥ मदनरखा गरमी थी घनराइ । आयुष्य पूर्ण थाय ॥ अकाम निर्जरा सील
प्रभाव । भवनवासी नी दवी थाय ॥ जो ॥ १६ ॥ न्नि ऊगा तस भरतने जोइ । दी गुस
जलमें पठरय ॥ पस्तावा किया हातन आयो कुछ । मेहनस निष्फल जाय॥ जो ॥ १७ ॥
मुनक्षेत थान ए जाणा ॥ माह वश होइ अन्ध । पडी मर्यो समुद्र के माहीं।भवनवासी में
हुयो उत्पन्न ॥ जा ॥ १८ ॥ हरिचन्द्र आदि तीनों वनमे । किया वनफल को अहार ॥
राग व्यापो मरीने तीनों । लिया भवनपती में अवतार ॥ जो ॥ १९ ॥ मदनरेखा देवी
हुइ हरिचंदकी । तीना सामानिक हुवा देव ॥ एक पल्य को सहु आयुष्य पाया । करणी
का फल लेव ॥ जो ॥ २० ॥ येह वात तो रही इहांही । हिवे ब्राह्मण नो बयान ॥ अष्टम
ढाल अमोलख दाग्वा । आगे सुणो धर ध्यान ॥ जो ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ बाह्मण तिहां
थी चालीया । पाप उदय हुया आय ॥ अयकाळे गाज वीजीयो । पवन रह्यो सणणाय ॥ १

॥ थरर जहाज धूजण लगी । मचो घणो अहंकार ॥ अहो कर्म किया प्रगट्या । लोक ख र यों थाय ॥ २ ॥ ● ॥ दुहा ॥ पाप छिपाया न छिपे । छिपे तो मोटा भाग ॥ दाबी डूबो न रहे । रूई लपटी आग ॥ १ ॥ ● ॥ दुहा ॥ कड़ा कड़ लकड़ी भागकर । उडीने दशोदिश जाय ॥ कुकर्मे वर्ज्या नहीं । ते डूब्या जल माय ॥ ३ ॥ धनदत्त आदि चारके । मछवा आयो हाथ ॥ पवन वेग ते चाली यो । सिन्धू तीर ते पात ॥ ४ ॥ चारोंइ तिहा उतरिया । गया न अटवी माय ॥ क्षुधा समावा कारणे । फल ते तोडी खाय ॥ ५ ॥ ●
॥ ढाल १ मी ॥ गानमरामा की देशी में ॥ फिरता चारु तिण वन विषे जी । तापस को रुख्यो एक ठाम ॥ जटा धारी बावा घणा । राख रमाइ अंग तमाम जी । करे धान्य जप प्रभु नामजी । तिणर आतम साधण स्यु कामजी । च्यारों आया आचार्य जामजी । बैठा करी छली प्रणाम जी ॥ सुणो राजिन्द्र पूर्व जन्मकी कथा ॥ १ ॥ तापसा चर्य कहे तहथी । तुम कहां स आया भाय । चहरादीम उदासिय कहो जे होवे मन माय जी । न कहे श्वामी सुणो हम वायजी । माले ले सिन्धु में रह्या आयजी । मारग में जहाज डुब्यायजी । नावा थी वारीपर थायजी । तुम दर्श हुवा पुण्य सहायजी ॥ सुणो ॥ २ ॥ तापस सद्बाध कहे तदाजी । फिकर न काजे भ्रात ॥ तन धन सपत कारमी । या पुण्य

थी भेली थातजी । पाप उदय आया विरलातजी । इने छोडे ते सुख पातजी । फिर
चिन्ता कभी नहीं आतजी । परभव मे मिले चढ़ातजी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ श्लो
शार्दुल ॥ आयुर्वारी तरग भगूतरग थी स्तूल तुल्य स्थिती ॥ स्तारुण्य कोरि कर्ण चचल
तर । समापमा सगमा ॥ यच्चान्यत्र मणी मणी प्रभृतिक वस्तुष तथा स्थिर ॥ त्रिज्ञा
यिति त्रिधीय नाम सुमता । धर्म सदा शाश्वत ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ इम उपदेश सुणी
योगी को जी । वैराग्य आणी मन ॥ योगाश्रमी चारों भया । ते आचार्य ढिग तत्क्षिण
जी । सीख्या रीति करी नमन जी ॥ करे नित्य आतम दमनजी । ज्ञान ध्यान ने नाम ज
पनजी । इम बीताबे से दिनजी ॥ सुणा ॥ ४ ॥ एक दिन श्रीदत्त वन त्रिपेजी । लवा
गयो कन्द अहार ॥ आवता जुगल पेखियाजी । कुरग सुन्दराकार जी ॥ तास करतो थो
सिंह सिकारजी । त वसी कष्ट प्रजारजी । आगे से क्यिो सिंह परिहार जी । मृग मान्यो
तस उपगारजी ॥ सुणो ॥ ५ ॥ कद फल लेइ आवीयो जी । चारों ही जीम्या साम ॥
दर्शना यरण घेरो दियो कियो तिहां आरामजी।श्री दत्त ऊठीयो जामजी।एक तापस उपक
रण तमाम जी । हँसी में छिपाया गुप्त ठाम जी। पाछे सूतो निज विश्राम जी ॥ सुणो ॥
॥ ६ ॥ तापस उठ जोया नहीं जी । उपकरण हुवो अधीर ॥ पूछे बतावो स्यिा किणे ।

जल छे महारो हीरजी ॥ श्रीदत्त हसी मेल्या तैरजी । इम हसे सदा फिर फिरजी । प
क अन्य तापस मिस पीरजी । हिल मिल रहे खीरे नीर जी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ पुप्प फल
तास लाड देवेजी । रखे दोइ जणा पास ॥ तप किया नित्य साचवे।सहन करे भूख प्यास
जी । मिल जयदेव मानी जासजी । रहे अभीमाने छक हुल्लास जी । दोइने पढी प्रेमकी
फासजी । वीती वात कही सहू खास जी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ एकदा अजाणे कोइजी । ता
पस पड्या कूप माय ॥ तहने कहाड्यो जीवतो । धनदत्त ते पुण्य बधाय जी ॥ वली भ
क्रिक भाय सवायजी । सहू तापस नी चित लायजी । करे सेवा साता उपजाय जी । ते
हथी सहू भणी सुहाय जी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ चारुदत्त सम भावथी जी । आरम साधन
करत ॥ तीनोइ मित्र ने ऊपर ते अधिको प्रम धरंतजी । हुकम प्रमाणे चरतजी । इम
चारोंना विरतंतजी । पाचामो मेलो श्रीदत्त मिंतजी ॥ सहू सुखथी काल वीततजी ॥ सु
॥ १० ॥ किनाक काल के अतरे जी । जुदा२ चवीया चार ॥ जोतपी एह विमाण में ।
एक पल्य माठ रो आयु धारजी । विलस सुख तिहा श्रेय कारजी । नाटक चेटक नव२
रसारजी । देवना सुख छ अपारजी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ हरीदत्त भवन थकी चवी जी । या
की रह्या पुण्य प्रभाव । कन्कपूर शोरी राजा घरे । जन्म्य हुवो ओछावजी । नाम कन्व

रप थावजा । भण्या कला नीती वरसावजी । तय हुड राज की चाव जी । गादी बैठा
धर उरसाव जी ॥ सु ॥ १२ ॥ मदनरेखा देवी चवी जी । पोलास पूर मझार ॥ जीनारी
राजा घरे कुमरी पणे लियो अवतारजी ॥ पुर्व भवने नेहा धार जी । परण्या कखरथ कुंवार
जी । कुमीता राणी नामे नारजी । रहे सुखे श्री भरतारजी ॥ सु ॥ १३ ॥ गुणचंद शि-
ष्ट पुरन निपे जी । रिष्ट ठाकर क गेह । कुमर नाम दुमुख दियो । मोटा हूवा तिहा तेह
जी । पूर्व भवनों अकर्प्यो स्नेह जी । मिन्यो कखरथ था जहजी । नसीयण्या प्रीती अछेह
जी । सदा तिण पासे रेह जी ॥ सु ॥ १४ ॥ सुनक्षेत्र तिहां क्षवी घरे । हूयो प्रेमसागर
को पूत । कखरथ शेन्यापति कियो । देख शरीर मजबूत जी । पूर्व स्नेह मयों ते सुतजी
। कुसीता से जम्यो नेह नूतजी । दानो कर्म से रख्या खुत जी । भोगवे राजने नूतजी ॥
सुणा ॥ १५ ॥ वरदत्त तिहा थी चवी जी । तिणही पुरक मांय ॥ कमलदत्त वाणिक घर
। कुरुदत्त नामे कुँवर थाय जी । दुमुखने मिल्यो आय जी । प्रिति जमी दोइ की सवाय
जी । चाले मिसके हुकम के माय जी । प पक्ष को अधिकार थाय जी ॥ सु ॥ १६ ॥
धनदत्त गृहदेव थी चवी जी । विजयपुर का राजिंद । विजयसेण धर ऊपना जी । नाम
दियो कुँवर चदजी । श्री पान्या चंपक कवजी । पिता मिल्या आइ सनिबन्ध जी । ये

... औरा को सुणो सवदजी ॥ सु ॥ १७ ॥ ...दत्त कपट भाव
राज बेठा घर आनन्दजी । लीलावती जन्म लीधजी । पू
थी जी । स्त्री वेद धारण कीधा ॥ भरतपुर जयसेण घरे । लीलावती जन्म लीधजी । पू
र्व स्नेह सवरा मन्डप रिधजी । याने तिहा वर लीधजी । हुइ प्रीती दोइ की प्रसिद्ध जी
। सुख विलसिया बहु विधजी ॥ सुओ ॥ १८ ॥ चारुदत्त इण ही पुरे। मही धर ठाकर घेर
। सुखसेण नामे पुत्र हुवा । ज्यां प्रिती फेरजी । किया शेन्या पति धर मेहर जी । पुण्य
विलसी सुखकी लेहर जी।सार कर शेन्या की खरजी । यह तप तणा फल हेरजी ॥ सुणो
॥ १९ ॥ तापस मित्र धीवर को जी । मान तण प्रसाद ॥ दासी पुत्र गेंदू हुवो । रहे
सदा में तज प्रमादजी । टाल्या केइ इणे विख वाद जी । बलवन्त अवसर उस्ताद जी ।
रत्न प्रिती दोइ स्यू नादजी । प जाणो सुख का स्वाद जी ॥ सुणो ॥ २० ॥ कुसमो गु
मास्तो विप्र थी चवी जी । कुल ग्राम को हुवो पटेल ॥ मृग युग भव भ्रमण करत ।
श्रीधर भारती हुवे पेहल जी ॥ तापस उपाधी चोरी खल जी । ते वेश्य जुग देव छेटल
जी ।कूवे काहाढयो तापस ठेलजी । ते तुरग भट विप्र की गेलजी ॥ सुण ॥ २१ ॥ओर
वाहणो हूक्या घणा । नहीं मर्जी करत क काम ॥ ते मर्या घणा सग्राम में । किहा तक
कहिये नामजी ॥ तापसा चार्थ मरण पामजी । हुवा रामो जी भील का श्याम जी । केइ

तापस हुवा भील धाम जी। वयावच की ते दियो आराम जी ॥ सुणो ॥ २२ ॥ यह कर्म गति देखला जी । चन्द्र नृप आदि शभा लोक ॥ धन हरण न्हास्या समुद्र में । तिण दु:ख सागर में विय। शोक जी । मदनरेखा तलघर में दी रोक जी । तेथी कारागृहे न्हास्या घोंक जी । कहाउथा तापस कूवा थी ढोक जी । छोडया बधन विप्रते थोक जी । ॥ सुणो ॥ २३ ॥ तापसनी सेवा किया जी । दियो सहू मिल साज ॥ कपटे लीलावती नारी हुइ । कवी पडी तेहथा लाजजी ॥ इम सहू कथा को सार लो आज जी । छोडो राग द्वेष अकाजजी । नहीं घालणा मर्म मोसाजजी । गत बधन भोगव्या आंजजी ॥ सु ॥ २४ ॥ भक्त या सुधारण तणी जी । जन्म सुधारो सेण । सयम धर्म समाचारो तो पावो अविचल चेन जी ॥ ये हित कर म्हाणा वेनजी । पष्टम ढाल नव केनजी । कहे अमोलख धारो एनजी । भव्य होवे समजे ततक्षेन जी ॥ सुणो ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ इम सुण मुनिवर देशना । भरम तम हुवो नाश ॥ हिया पो लगावता । जाति स्मरण प्रकाश ॥ १ ॥मन पेखी चमक्या चिते।अहोर कर्म को जोर ॥ बधती भक्त न समजिया । सुफण पडा कठोर ॥ २ ॥ बंध्या सोही भोगव्या । नहीं थां कोइको दोष ॥ हिवे डर आरम बंधथी । तज सहु जीवथी रोश ॥ ३ ॥ कर करणी साच मने । कर कर्म चक चूर ॥ तो फिर

दुःखीयो न हुवे । मिले सुख भरपूर ॥ ४ ॥ इम चिन्तीने दम्पती । ऊठ्या हर्षीने अपार ॥ विधी वदी गुरुराज को । इण विध करे उच्चार ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ढाल १० मी ॥ जम्बूक या मानलरे जाया ॥ यह० ॥ तहत वचन प्रभू आपका । इणोंमें संदेह नहीं लगार । व प्रभाह आप छो । यथा तथा कियो उच्चार ॥ धन्य२ जे जगे भाइ जे छोडे जग जंजाल ॥ आ ॥ १ ॥ सत्यवाणी सुखदाणी प्रभू । मे श्रद्धी मन वच काय ॥ प्रतीत आइ मनमे रुची । अब फरसणरी हुइ चहाय ॥ धन्य ॥ २ ॥ मुनि कहे अहो देवानु प्रिया । प्रति बन्ध न करो लगार ॥ सुख होवे जो जलदी करो । यो अवसर पामी सार ॥ ध ॥ ३ ॥ सुणी वचन हर्ष्या घणाजी । कर वदन नमस्कार ॥ आया तिण दिश चालीया । ते मनमे वैराग्य धार ॥ धन्य ॥ ४ ॥ निजस्थान आइ बोलाइयाजी । सागरसेण कुँवार ॥ कहे तुम राज करा सुखे । हम लेसा संयम भार ॥ धन्य ॥ ५ ॥ नेना श्रुत हो कुँवर कहे । तात । मुजने किनको आधार ॥ वय लघुछे माहेरी । किम उपढ राज को भार ॥ ध ॥ ६ ॥ राय कहे वच्छ सामलो । जगमें न किणको आधार ॥ एकलो आयो जीवडो । लायो शुभा शुभ कर्म लार ॥ ध ॥ ७ ॥ सार करे कोण कौन की । काल आया ले जाय ॥ सब धर्या दाइ रहे । पुण्य पाप का फल पाय ॥ ध ॥ ८ ॥ संयम में क्रिस्यो अधिक छे पिता ।

राम्या सपति भोग ॥ वृद्ध वय आयां थकां । फिर आदर जो आप जोग ॥ ध ॥ ९ ॥
चन्द्र कहे राज मोटा इण वक्त । में पायो अनती वार ॥ गर्जन सरी कुछ माहरी । सय
म थी होय उधार ॥ धन्य ॥ १० ॥ गाथा ॥ लब्भती विमला भोए । लब्भती सुर स
पया ॥ लब्भती पुत मित्तच । एगो धम्मो दुलब्भइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ पाव घडी की खबर
नहीं भाइ । कुण जाणे चौथो आश्रम ॥ योवन वय गयां पछे । नहीं बणी सके कोइ धर्म
॥ धन्य ॥ ११ ॥ ● ॥ शेर ॥ करना होसो जल्दी करो । यह वक्त दोडा जाता है ॥
सात घडी सिरपर रक्खी । क्यों करे कालकी वातां है ॥ ताकत तेजी घटे वदन की । फि
र बुढ्ढा कहलाता है । अमोल सास्वत सगले प्यारे । वो आगे मजा पाताहै ॥ १ ॥ ●
॥ ढाल ॥ हिवे तुम राज कीजीये भाइ । दीजे परजा ने सुख ॥ न्याय प्रमाणे चालणो
भाइ । टालणो दु खिया को दुःख ॥ धन्य ॥ १२ ॥ परस्त्री माता गिनो पुत्र । पर धन
गिनो पापान ॥ दुष्ट मग नहीं कीजीये पुत्र । आप समा सब प्राण ॥ धन्य ॥ १३ ॥ धर्म
नेम रखणो सदा । धर्मी को करो सन्मान ॥ छलवृती रहणो सदा । साधु वरसण सुणो
वख्याण ॥ ध ॥ १४ ॥ इत्यादि हित शिक्षा दइजी । करायो राजाभिषेक ॥ सागर सेण
राजा तणी । आण फेराय देश छेक ॥ ध ॥ १५ ॥ लीलावती पास मांगियाजी । चन्द्र

मेण भूपाल ॥ मती कहे आज्ञा दीजीये।हुं लइस्यूं सयम हाल ॥ ध ॥ १६ ॥ नृप कहे
तुम हो अछोजी । संयम दुकर काम ॥ तुमसे निभे तो भले लहो । नहीं होड करण को
धाम ॥ ध ॥ १७ ॥ सती कहे में परवस्य पणे जी । सहिया दु ख अपार ॥ तेसा सयम
में दु ख नहीं । होवे थाडाभें खेवा पार ॥ धन्य ॥ १८ ॥ सुणी चन्द्रनृप हर्षीया जी ।
दोहरा उत्कृष्ट भाव॥जाणी सागर राजीया जी । उत्सव मांडे ते ठाव ॥ ध ॥ १९ ॥ पुर
जन जाणी विस्मय हुवाजी । सहु कहे धन्य अवतार ॥ ऋद्धि ऐसी तज करी । सुधारे
अपणो जमार ॥ ध ॥ २० ॥ आणद वर्त्यो पुर विषेजी । ढाल दशमी के मांय ॥ अमाल
कहे आगे सुणो । किता सयम लेवा उमाय ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ● ॥ दुहा ॥ सागरसेण ना
मे नृपती । दिक्षा पत्री लिखाय । सेंदा छोटा मोट राजमें । सामंत हाथ पठाय ॥ १ ॥
कनक पुर पोलासपुर । भरत पयठाण पुर जाण ॥ सिद्दपुर कुल ग्रामादी । दीधी पत्री
आण ॥ २ ॥ सोमचन्द्र सुखसेण जी । प्रतापसेण मति साम्र । गेंदू आदि सहु सुणी ।
छाडी सहु फदाम्र ॥ ३ ॥ झट पट सव सज्ज होयने । लेइ शैन्य परिवार ॥ आइ चन्द्रनृप
भेटीया । पाम्या हर्ष अपार ॥ ४ ॥ नस्कार यथा योगो तदा । सागर नृप कराय ॥ खा
न स्यान सुख दे सहु।मगल रचा वृताय ॥५॥ ढाल११ मी ॥ सिद्ध चक्र जिन पूजोरे भ

थिका ॥ यह० ॥ चन्द्रनर पास सहु राजा आया । कर जादी सीस नमाया ॥ किम लवो
सयम कमी किमा छे ।किनी हुइ चित चहाया ॥ हो राजव वैराग्ये मन रमाया ॥ आ ॥
१ ॥ भात्र मुनि कहे अहा सुणा मतो । सि दु ख लग्या मुज लार ॥ मूलसे नाश करुं
हिवे तेहना । लइ संयम भारहो मत्री ॥वै॥२॥ अशाश्वत सुख मुजने मिलिया ।तहथी तृप
नी नहीं पामी ॥ शाश्वत सुख लेवा सयम छू । मिटावण प् स्वामी हो मत्री ॥ वैरा ॥
३ ॥ ए उपाव जो था फल हावे । तो मुन वेग पतावो ॥ तेह कर ससार मांहे लो भावूं।
गुरु थाणो चावो होम० ॥ वै ॥ ४ ॥ सर्व सुणी निरुत्तर थइया । कहे सुख होवे सो कीजे
॥ मोह उमटाणा नेणा नीर वहिया । विरह जाण मन छीजे हो राजंद ॥ वै ॥ ५ ॥ भूप
कहे सुणो प्यारा मत्रीश्वरो । तुम सजे पुन राज पाया ॥ नहीं तो कहो गती कैसी होती
सुन । सुधारण करु म उपायो ॥ होमत्री ॥ वै ॥ ६ ॥ पूर्व भवकी मुनि कही कथा । ते
सहु भणी सभलाइ ॥ सवेग्या जाणी नायेती गती यह । कहे भन्य ज्ञानी ताइ हो राजा
॥ वै ॥ ७ ॥ अज्ञान तप नणे प्रभाव । पसी मपत पाइ ॥ हिवे ज्ञान सहित जो करणी
कराते । देवा जन्म मरण मिटाइ होमत्री ॥ वै ॥ ८ ॥ यह सब सपत कारमी जाणो
एक दिन ता छिटकाणो ॥ शुभा शुभ कर्म साथे मावे । आगे फल तस पाओ होमत्री

॥ वे ॥ ९ ॥ ● ॥ काव्य ॥ चिखा दुप्पय चउप्पयच॥खित्त गिह धण धर्म्म च सव्वं ॥ स कम्म पयीउ अवसो पायाइ । परं भव सुदर पावग धा ॥ १ ॥ ● ढाल ॥ इण संपत में सुखजो माने । तेतो मुढ गिंवारो ॥ अल्पसुख आगे दु ख घणेरो । करो हित च्छू विचारो होम ॥ वे ॥ १० ॥ विनाशिकका त्याग करे तो । अविन्याशी सुख पावे ॥ जो विनाशी में लुब्ध रहे तो । दोनो हाथ से गमावे होमंसी ॥ वे ॥ ११ ॥ जो थाने अविछल सुख चाहिये तो । छोडो यो ससारो ॥ श्री विश्व ऋषिवर चरण भेटने । सफल करो अवतारो होमंसी ॥ वें ॥ १२ ॥ इम उपदेश सुणी सहू भूधव । प्रति बोध्या ते वारो ॥ हाथ जोड नरमी इम बोले । हम पण होवां अणगारो होराजा ॥ वे ॥ १३ ॥ तव नृप वैरी कैदी ने बुलाया । ते कर जोडी ऊभा सामें ॥ चन्द्रसेण खमाइने बोले । करो जिम तुम सुख पामे होमसी ॥ वे ॥ १४ ॥ सहू अरी नरमाइ बोले । आप वडा उपकारी ॥ राज सुख हम कुउ नहीं चाहवा । मरजी दिक्षा लेवारी होराजा ॥ वें ॥ १५ ॥ इम सुण चन्द परमानन्द पाया। सहू बरोबर बेठाय ॥ कुसीताने लीलावती पासे । पहोंचाइ भात्र जणाया होमसी ॥

* अथ—मनुष्य पशु धन धान खेत घर सब को छोड कर फक्त शुभाशुभ कर्म को साथ लेकर मनुष्य नर्कमें और भवमें जाता है वहां उन कर्मोनुसार दुःख सुख पाता है उत्तराध्येन म १३

वे ॥ १६ ॥ अन्य मंत्री गण भूपसे नृप कहे । सहू निज राजे पधारो ॥ निज२पुत्रने राज समर्पि । इहा आवो लेइ परिवारो हाेमत्री ॥ वे ॥ १७ ॥ इम सुणी नमी सहू शेंशी नृपने । मआइ जे घर आया ॥ ढाल एकवश पष्टम खडे । अमोल ऋषि गुण गाया होमत्री ॥ वैरागी ॥ १८ ॥ ० ॥ दुहा॥आप आपका कुँवर ने । कह्या सहू समाचार ॥ प्रश्नोत्तर हुवा घणा । आज्ञाली ते यार ॥ १ ॥ सोमचद्र अनगसेण ने । कन्क पुर राज दीध ॥ श्रीधर पुत्र अमरसेण ने । रत्नीम तेहना कीध ॥ २ ॥ सुखसण क्षिती चन्द्र ने ।पोलासपुर राज देय ॥ गेंदु ने साथे लियो । वैराग्य भाव उमंगेय ॥ ३ ॥ सज्जनसेण गुणचंद ने । भरतपुर पाट घेठाय ॥ बुद्धि सागर परज्जुनने । तास प्रधान घणाय ॥ ४ ॥ प्रतापसेण जगसेण ने । पयठाण पुर पत कीध ॥ सहू नृप निज२ नारीने । आप ने साथे लीध ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १२मी ॥ काकदी नगरी भली सरे ॥ यह० ॥ सैन्या परिवार सहु साथ लेइने ॥ सहु नृप विजयपुर आया ॥ सागर नृप सहूने सन्मानी योगस्थान उतराया ॥ घणा जना मेग स्या देखी चन्द्र नृप सुख पाया जी ॥ थ सुणजी शाणा । धन्य२ वैरागी लोकने ॥ आं ॥ १ ॥ सहु चतुर्वीर्स नर नारीने । वैरागी चन्द्र जाणी । चतुर वीस शिबका सजाइ सहस्र

त्तीया घणकी दुकान से सरे । ओगा पातरा मगाया ॥ लक्ष अष्टविया सोनैया । ते पण मन हर्षाया ॥ चोवीस लक्ष दे नापिक ताइ । खुर मुंडण करवाया जी ॥ थे ॥ ३ ॥ चतु रंगुल नी शिखाज राखी । लाच करणने काजे ॥ ऊग^ णा पीठी करी सर । साजिया सि णगट साजे । जुदार शिवीका के माही । स परिवार विराजे जी ॥ थे ॥ ४ ॥ गजगाजी रथ पायका सरे । तुरग शैन्य सजाइ ॥ कौतल आगे चालीया सरे । अष्ट मगल भल का इ । गोरडी गीत गाजिंत्र के नादे । गगन रह्यो गरजाइजी ॥ थे ॥ ५ ॥ मध्य बजारे चालीया सरे । देखे घणा नर नार ॥ कर जोडी गुण ऊचरें सरे । लुली करे नमस्कार ॥ मोह झाल उदय हुया सरे छूटे आंसू धारहो ॥ थे ॥ ६ ॥ ● ॥ इन्द्र विजय ॥ कोइ कहे धन्य इनके ताइ । राज मोहो तज संयम लेवे ॥ कोइ कहे यह सुख सायवी । प्रभु इनको भोगण नहीं देवे ॥ कोइ कहे जोग लिख्यो कर्म में । कोइ कह नाम राखण सेवे ॥ दुनिया दुरगी चाले चहू विध । आत्म तारण ले अमोल केवे ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ जयर नद। भद्दा भदंती।मुखर करे उचार॥बागके पासे आवीया सर।तजी सवारी ते वार॥●॥पच

• १ स चित वस्तु दूर रखी अचित अजोग वस्तु दूर रखा ३ उत्तरासण किया (मुख के आगे पल्ला लगाया) ४ दोन्हो हाथ जोडे ५ मनमें विशुद्ध विनय भाव धारन किया यह पंच अभिगम साचवन किये

अभिगम साचवी सरे । । मुनिवर पास पधार हो ॥ थे ॥ ७ ॥ विधी स्यूं
कीधी वधना सरे । प्रणामी करे उचार ॥ अलीता पलीता लग रह्या सरे । जली रह्यो
संसार ॥ जन्म जराने मरण के दु ख से। पार करो म्हाने तार हो ॥ थे ॥ ८ ॥ इशाण
कुणमें आय ने सरे । तजीया सहू सिणगार ॥ स्व हस्ते लोचन कर्यो सरे । पंच मुष्ट त
वार ॥ खोमयुगल वस्त्र विसे सरे । कुमरो मोल्या वारहो ॥ थे ॥ ९ ॥ साधु साध्वीका धा
रीया सरे । श्वेत वेश भेयकार । पंदरह साधु नव आर्जिका । शोभाया परिवार ॥ गणीव
राम आयेने सरे । छली कियो नमस्कारहो ॥ थे ॥ १० ॥ अति उत्सुक होइ प्रकाशे ।
तारोर महाराय ॥ जन्म जराने मरण लाय से लेमो म्हाने बचाय ॥ मुनिवर अवसर वेख
ने सरे । मधू गिरा फरमाय हो ॥ थे ॥ ११ ॥ आज्ञा मागी परिवार की सरे । ते नयन
श्रुत देय ॥ कर जोडी वैरागी वैरागण । उभा गुरुजी केय । जाव जीव सावद्य जोग का ।
नव कोटी त्याग छ्य हो ॥ थे ॥ १२ ॥ सत विराज्या साधू पके । सती साध्वी मांय ,
सफल दिवस ते आनता मरे । छूटी सर्व बलाय ॥ ज्ञान ध्यान तप संयम से । अब वेग
कर्म खपाय हो ॥ थे ॥ १३ ॥ सहू परिवार वंदन कर मुनिने । कर ओडी करे अरदास॥
आज तक को सहू गुनो माफ कर । वे वसी पूर जो आस ॥ फिरर बोला सुन सहू जन

। गया निज आवास हो ॥ थे ॥ १४ ॥ निजर ग्रामे सहु सिधाया।पालि सुम्य से राज ॥
धर्म कर्म नीतीसे आराधे । सुधारे सर्व ही काज ॥ खड दूणी ए ढौल अमोलख । कहे
धन्य २ मुनिराज हो ॥ थे ॥ १५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नविदिक्षित सती सत की । वृ
दिक्षित मुनिराय ॥ भक्ति करण उमगा रह्या । सयमें मन रमाय ॥ १ ॥ अहार पाणी
खादिम स्वादिम । वस्त्र पात्र वषा दान ॥ आमद उत्तम अति।मिष्ट गिराए सन्मान ॥ २
॥ प्रतिलेखन परिठाणिया । वैयवच्च करेय ॥ तेतो कराये नहीं । धर्म प्रेम वृद्धेय ॥ ३
॥ दूजे दिन आचार्यजी ॥ एकान्त स्थानक माय ॥ नवि दिक्षित ने बुलाइया । पधाये
आया हुलसाय ॥ ४ ॥ वदन करीने सन्मुखे । मर्यादे कर जोड । बेठा सत सती सहू ।
हित सीख सुणनकी कोड ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ मी ॥ सुगुणा साधू जी हो मुनि था
रा मन ने पाछो फर ॥ यह० ॥ मिष्ट गम्भीर उच्ची गीरा ॥ हो मुनिवर ॥ अचार्य जी फ
रमाय ॥ आत्म सयम सुख चाहनी । हो मुनिवर ॥ थारो शिक्षा मन माय ॥ ध य २
साधू जी हो मुनिवर । धन्य थारो अवतार ॥ आं ॥ १ ॥ शिक्षा दो प्रकार की ॥ होमु
निवर ॥ महनाते आचार॥असेवना छ ज्ञान की ॥ हो मु० ॥ थारो जे हित कार ॥ धन्य
॥ २ ॥ अपनो विनय मूल धर्म छे ॥ मुनि० ॥ नरमाइ सुसकार ॥ गुरु आदि वडा स-

गी ॥ होमु० ॥ रहणो अज्ञा मझार ॥ ध० ॥ ३ ॥ ꙮ ॥ गाथा ॥ विणओ सासण मूल
। विणओ निव्वाण साहगो ॥ विणओ विप्प मुक्कस्स । कओ धम्मो कओ तवो ॥ १ ॥ ●
॥ ढाल ॥ विनयथी ज्ञान वृद्धे घणो ॥ होमु० ॥ ज्ञानथी सम्यक्त्व आय ॥ सम्यक्त्व से
चारित्र फले ॥ होमु० ॥ चारित्र तपे मोक्ष पाय ॥ धन्य ॥ ४ ॥ ● ॥ गाथा ॥ विणओ
नाण । नाणाओ दंसण ॥ दंसणाओ चरणं । चरण हुंती मोक्खो ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥ ज्ञा
नाभ्यास पहिलां करो ॥ होमु० ॥ जिणथी तत्व जणाय ॥ दया तपस्या फिर हुवे ॥ हो
मु० ॥ फिर जीव मुक्ति जाय ॥ धन्य ॥ ५ ॥ ● । गाथा ॥ पढम नाण तओ दया । ए
व चिठइ सव्वसजए ॥ अन्नाणी किं काही । किंवा नाइ सेया पावग ॥ १ ॥ ● ॥ ढाल ॥
आचार मूल पच महा व्रत ॥ होमु० ॥ त्रिकरण जोग अराध ॥ त्रस स्थावर हिंशा तजी
॥ होमु० ॥ वीजो सहू ने समाधा ॥ धन्य ॥ ६ ॥ असत्य वचन सर्वथा तजी ॥ होमु०
॥ पाले स्वल्प सुखदाय ॥ सचित अचित त्रणादिक ॥ होमु० ॥ आज्ञा विन ग्रहो नाय
॥ धन्य ॥ ७ ॥ ब्रह्मव्रत नव वाड शुद्ध ॥ होमु० ॥ पालो इन्द्रि जीत ॥ परि ग्रह ममता
दरि हरो ॥ होमु० ॥ धर्मोप करण क्रम प्रित ॥ धन्य ॥ ८ ॥ शीत मात्र निशी ने समय
। होमु० ॥ पास न रखो चउ अहार ॥ यह छ व्रत शुद्ध पालीये ॥ होमु० ॥ ये मानि

मूल आचार ॥ धन्य ॥ ९ ॥ पेखी धनुष्य धरणी भणी ॥ होमु० ॥ चलणो धीमी चाल
। भाषा दोष सहु परि हरी ॥ हामु० ॥ बोलणो सदा सभाल ॥ धन्य ॥ १० ॥ दोष बे-
ताली टालने ॥ होमु० ॥ लो अहार वस्त्र स्थान ॥ मर्यादित उपाधी रखा ॥ होमु० ॥
निर्वध स्थान परि ठान ॥ धन्य ॥ ११ ॥ मन वचकाया गोपवो ॥ होमु० ॥ जों न कूमार्गे
जाय ॥ यह अष्ट वचन मात तणा ॥ होमु० ॥ पाले सदा ऋषि राय ॥ धन्य ॥ १२ ॥
क्षुधादि परि सह सहू ॥ होमु० ॥ सहणा सम परिणाम ॥ चउ कषाय पतली करो ॥ हो
मु० ॥ जो चाहो मोक्ष धाम ॥ धन्य ॥ १३ ॥ इत्यादि हित शिक्षा दीधी ॥ हो श्रोता ॥
सयमी ने सुखकार ॥ सुणीने हृदय धारजो ॥ होमु० ॥ जिम होवे खेवा पार ॥ धन्य ॥
। १४ ॥ बहु सुत्री थिवर बुलायने ॥ हो श्राता ॥ नव दिक्षित सुप्रत कीध ॥ भणाव
ान क्रिया वर्ता ॥ होमु० ॥ जिम होव कार्य सिद्ध ॥ धन्य ॥ १५ ॥ सती सुवृता जी
र्णी ॥ होमु० ॥ दी सतीया सभलाय ॥ प्रमाण वचन गुरु का करी ॥ हो श्रोता ॥ नि
ा २ स्थान सहु आय ॥ धन्य ॥ १६ ॥ थाडा काल ने माय ने होमु० ॥ सीखी हुवा प्र
ान ॥ नय कूची शास्त्र तणी ॥ हामु० ॥ यथा तथ्यली चीन ॥ धन्य ॥ १७ ॥ बहु सुत्री
।कमी तेज पुंज ॥ होमु० ॥ वाधी विवेकादि गुग ॥ जाणी गुरु आज्ञा दीनी ॥ होमु०॥

स्वेच्छा ए विचरो निपुण ॥ धन्य ॥ १८ ॥ परिवार गृही पोता तणो ॥ होमु० ॥ कियो
चन्द्र ऋषि विहार ॥ ढाल तेरे अमोलख भणी ॥ हो मुनिवर ॥ धन्य जे तारे ससार ॥
॥ धन्य ॥ १९ ॥ ० ॥ दुहा ॥ लीलावती धर्म लील में । तन मन गयो रंगाय ॥ आगम
सूत्रार्थ धारीया । प्रवीन अतीही थाय ॥ १ ॥ लज्जा सहासिक शूरत्व । चातुर ज्ञान आ
चार । क्षमा दया आदि गुणे । साहे तेज दिनकर ॥ २ ॥ भव्य गण तारण कारणे । वे
गुरुणी आदेश ॥ निज परिवार साथे लइ । स्वइच्छा विचारे देश ॥ ३ ॥ वचन सीर्श च
डायने । सतीया सग घणी ल्य ॥ विचारी सती लीलावती । धर्म दीपावे तेय ॥ ४ ॥ ●
॥ ढाल १४ मी ॥ पधाया श्री राम ऋषे ॥ यह० ॥ चौवीसी भूमन्डले । करता विचरे उप
कार ॥ वंदो भव्य भाव स्यूं ॥ जथा नाम तथा गुण । जुदा२कहु उचार ॥ वदो भव्य भा
वस ॥ १ ॥ चन्द्रथी अधिक चेन्द्र ऋषि ॥ सोम्य धर्म प्रभा प्रसार ॥ वंदो ॥ तारागण
सम मुनि गण । निकलंक मही मझार ॥ वंदो ॥ २ ॥ सज्जन ऋषि सज्जन छे कायका ।
। प्रताप ऋषि प्रतापिक ॥ वदो ॥ कस्तुरंथ ऋषि कांक्षा मोक्ष की । ए चारुं नृप गुणाधिक
॥ वदो ॥ ३ ॥ सोम्यस्वभावी सोमजी ऋषि । सुख ऋषि सुखकार ॥ वदो ॥ बुद्धि सागर
ऋषि बुद्धवन्ता । लक्ष्मी ऋषि किपा धीपार ॥ वदो ॥ ४ ॥ समसऋषि समस ससारथी ।

महासेण ऋषि मह सयण ॥ वंदो ॥ श्रीधर ऋषि वृत श्रीधर । गेंदू ऋषि गुण गेंदरयण ॥ ॥ वंदो ॥ ५ ॥ कुरु ऋषि क्रूर पणो हण्यो । मुँकुंद ऋषि मन आनन्द ॥ वंदो ॥ जुँगवे त ऋषि जग रक्षा कर । यह पन्दरह साधू समद ॥ वंदो ॥ ६ ॥ लीलावती सती लीली मयमें । धर्म की लीला बधाय ॥ वंदो ॥ गुणसुन्दरी गुणसुन्दर भर्या । सुसमाजी सुसे र मा रक्षाय ॥ वंदो ॥ ७ ॥ कुशीता सुशील इच्छा तजी । ए चारों राणी शोभाय ॥ वंदो ॥ अनग सुन्दरी वश अनग कियो । प्रेम सुखी को संयमें प्रेम ॥ वंदो ॥ ८ ॥ प्रधुन सुंद री प्रधुन हण्या । आनन्दी धर्मे आनन्द ॥ वंदो ॥ गौरी गौरव गुणोत्तम ॥ यह नव स तीयों का समद ॥ वंदो ॥ ९ ॥ सहु मुनि सती गुण गण भर्या । सहू सहू गुण भर पुर ॥ ॥ वंदो ॥ यत्किंचित गुण उच्चर्या । पुरन कथन भग दूर ॥ वंदो ॥ १० ॥ सम दम उप शम खम कर । जप तप खप अहो निश ॥ वंदो ॥ अचार विचार उचार ते । शूद्ध है वि श्वा बीस ॥ वंदो ॥ ११ ॥ प्रमाद विखवाद सवाद न । तजे भजे जिन आण ॥ वंदो ॥ गुणरत्ना आदि तप करी । करे कर्म की हाण ॥ वंदो ॥ १२ ॥ स्याद्वाद शेली मधु गिरा थी । दे मुनि सत्युपदेश ॥ वंदो ॥ लघु कर्मी सुणीने प्रबोधे । धारी धर्म की रेश ॥ वंदो॥ ॥ १३ ॥ कइ समकित उचरे । केइ लेवे वृत धार ॥ वंदो ॥ केइ वैराग्य पामीने । सयम

ले होवे अणगार ॥ वंदो ॥ १४ ॥ इम घणा जीवने तारता । टालता मिथ्या अन्ध ॥ व
दो॥मालता भुवडल परे । प्रकाशे ज्ञान प्रबंध ॥ वंदो ॥ १५ ॥ घणा वर्ष संयम पाली
यो । अवसर आयो जाण ॥ वंदो ॥ कश्मिर देश तणे विषे ॥ नवफूल पाटण वखाण ॥
॥ वंदो ॥ १६ ॥ लोए ताल पर्वत परे ॥ एकान्त स्थानक जोय ॥ वंदो ॥ सहू मुनि
अणसण किया । आति चार अला२ ॥ वंदो ॥ १७ ॥ धर्म ध्याने ध्य नस्त हुवा । शुक्ल
ध्यान इच्छाय ॥ वंदो ॥ जीवित मरण उभय भव । काम भोग नवछाय ॥ वंदो ॥१८॥
एक मास संलेषणा । आयुष्य पूर्णज थाय ॥ वंदो ॥ ग्रयवेक छट्ठाविषे । उपज्या चन्द्र ऋषि
राय ॥ वंदो ॥ १९ ॥ बीजा मुनि करणी जिसा।पाया उत्तम देवलोक ॥ व ॥ चन्द्र ऋ
षि मनुष्य हुइ । विदह मु जासी मोक्ष ॥ व ॥ २० ॥ बीजा ऋषि भव थोडा में । पाम
सी पद निर्वाण ॥ वं ॥ सती लीलावती निमही । आयु थिग अवसर जाण ॥ वं ॥२१॥
संलेषणा अणसण करी । दिन पवर जय थाय ॥ व ॥ आयू पूर्ण छठा ग्रीवेक । चन्द्र
लिग देव पद पाय ॥ व ॥ २२ ॥ बीजी सतीयों पण इण परे । सधारा कर गइ स्वर्ग ॥
॥वं॥थोडा भव नर देवमा । कर वरसी अपवर्ग ॥व॥ २३ ॥ श्री शालि महारस रासको ॥
चन्द्र सेण लीलावती चरित्र ॥ व ॥ सपूर्ण हुवो, ग्यारह छ: विषे ॥ ढाल चउवद पवित्र ॥

॥ घ ॥ २४ ॥ चउवीसी सत सती नाणा ॥ हुवा आत्म कल्याण ॥ व ॥ अमाल ऋाप
करे यत्ना ॥ इच्छा रथण निर्वाण ॥ व ॥ २५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ चन्द्र सेण ऋषि रायजी
। कनरथ महाराज ॥ लीलावती कुसीना सती । आदि महू जन साज ॥ १ ॥ कथा सन-
मी ध्यनी कथी । अधिकार सम घर वन ॥ प्रणाम पण तिम वृतीया । शुभाशुभ सम जे-
न ॥ २ ॥ पण रहू उत्तम निवड्या ॥ सुधार्या आतम काम॥द्रव्य वैर त्यागने॥किया पाया
शिव सुख धाम । ३ ॥ तिम हू अत कर शुद्ध कर । छली करी प्रणाम ॥ माफी मागू
महू धकी । ज शब्द किया निकाम ॥ ४ ॥ त क्षमजा महू महात्मा ॥ कृपा करी मुज पर
॥ समक जाणी साक्षोवा । दीजो मुज मुज जरे ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १५ मी ॥ जबू द्विप
प्रसिद्ध प्रमाणे ॥ आं ॥ अहो श्राता शील महात्म रास यो । सारस विचारो ॥ सुणियो
का कुछ मार यही है । सद्गुण हृदय धारो ॥ १ ॥ अतर द्रष्टी देखा चन्द्र राजा । और
लीलावती राणी ॥ प्राणातिक उपसर्ग सहापण । न धरी वृत में हाणी ॥ २ ॥
उन संत सती का नाम आज लग । जग में सुमुख गवावे ॥
इम हीज आसडी आय खडी रहे । तम नर नारी निभावे ॥ ३ ॥औ
र कनरथ कुसीता आदि । कुसगत ने प्रभावे ॥ राज गमाया दुःख घणा पाया ॥ सुसग

न शिय सुख पाय ॥ ४ ॥ तिम कुसगत हितेच्छु त्यागो । सुसगत सवा कीजे । तो दो
नों भव सुखिया हो सो । हित शिक्षा चित्त दीज ॥ ५ ॥ अति लालच कपट किया थी।
धन दत्त श्री दत्त दाइ ॥ दानों भव में दु ख ते पाया । सार्थी दार सगोइ ॥ ६ ॥ इम
जाणी दगो लालच त्यागो । निर्मम आर्यता धारो ॥ और सहू कथा महादोष थी भरी । सु
न चुन मत्ो मारो ॥ ७ ॥ भट श्रोता वक्ताने चडाशो । निज २ शक्ति प्रमाणो ॥ ज्ञान
धर्म प्रत्य म्पान यथावो ॥ योहीज साचो नाणो ॥ ८ ॥ ● ॥ गाथा ॥ एय खुणाणी णा
मारं । ज न हिंमइ किंचणं ॥ अहिंसा समय चेव । एतावत वीयाणिया ॥ १ ॥ ● ॥
॥ ढाल । श्री वीर प्रभू निर्वाण के नन्तर । स्वामी सुधर्मा आचार्य ॥ सत्तावीस पाट लग
धर्म मचाल्यो।फिर भस्म ग्रह किया अकार्य ॥ ९ ॥ सत्य मार्ग दिना दिन छुपाणो । अ-
मयनी अधर्म वढायो ॥ चौरसो सीत्तर वर्ष वीर पछे । रायत्रीक्रम जी थाया ॥ १० ॥ स-
वन तास पन्नरसैंते एकतीस । दो संहंध्र वर्ष हुवा पूरा ॥ अमदावाद में शाह लौंकाजी ॥
शास्त्र पक्षी हुवा शूरा ॥ ११ ॥ पुनरोधार कियो जिन शासन । लौंका गच्छ थपाणा ॥

* एय—ज्ञान ज्ञान कारीयका सार यही है कि किस भी जीव की करापी किंचित हिंसा नही करनी ऐसा अहिंसा
मय भाव भाव समवायकवली सबको है सुच गडा सूत्र अ. १ औरमा ४ गाथा १

आगल फिर यतां पाटया ढीला । तब लवजी ऋषि प्रगटाणा ॥१२॥ न्याय मार्ग अमोघ
चलायो । शिष्य सोमजी ऋषि तास ॥ तस्य शिष्य पुज्य प्रभाविक कहानजी । ऋषि कि-
यो रवी ज्यों प्रकाश ॥ १३ ॥ तासु सम्प्रदाय यह विख्याती । हुवा ताराऋषि जी स्वामी
। गुजरात देश में धर्म फेलायो । खमायत सिंघाडो नामी ॥ १४ ॥ काला ऋषि जी तस्य
शिष्य दीपता । मालव देशे रहिया ॥ तास शिष्य बक्षूऋषि दीप्या । धनजी ऋषि ने दइ
या ॥ १५ ॥ तस्य जेष्ट शिष्य पुज्य खूबाऋषिजी । क्रिया उत्कृष्टी धारी । चालीस वर्ष
लग संयम पाल्यो । महा क्षमा धत गुण भन्डारी ॥ १६ ॥ तस्य शिष्य गुरुदयाल आर्य
भाषा । चना ऋषिजी महाराजा ॥ मुज दिक्षा नन्तर दो मास में । तस सीज्या आत्म
ना काजा ॥ १७ ॥ तात ससारी दिक्षा धारी । तपस्वी केवल ऋषिजी ॥ तीन वर्ष रह्यो
त्स पासे । फिर ज्ञान काजे तुषिजी ॥ १८ ॥ कवि वरेंद्र पुज्य तिलोक ऋषिजी का । पा
टवी शिष्य गुणवन्त ॥ रत्न ऋषिजी चरण ने सेव्या। । जे दिक्षा दाता महन्त जी ॥१९
॥ कृपा कर मुज ज्ञान पढायो । साज दियो महा उपकारी ॥ तास आश्रय विचरत आया
। दक्षिण देश मझारी ॥ २० ॥ अहमदनगर जिलाके माही । कान्हूर पाठार सुग्रामो ॥
अमरचदजी तांतेड के स्थानके । चतुर्मास रह्या सुख पामो ॥ २१ ॥ कथा तणो ग्रंथ ति-

रा मुज पाया । वाची मन हुल्सायो ॥ रसिक उपकारीक शातचे जाणी । रास ए ताको
रणायो ॥ २२ ॥ पिंगल व्याकरण पूर्ण न जाणू । स्वल्प मति अनुसार ॥ याल स्याल
सम ए र्‍पो।मापित्र चउ तीर्थ धार ॥२३॥ स्वमन अनुसारथी।घवल्यो ममास मछु स्थान
॥ गुस्री घृसी महूली करी । तिणमें छद्मस्त प्रमाण ॥ २४ ॥ विप्रित त्रिदश्च जिन ज्ञान
थी । कृपापा होय अधिकार ॥ तो मिथ्या दुष्कृत मुज भणी । कहू साम्वी केवली धार
॥ २५ ॥ षट खण्ड ढाल सत्यामीण । ग्रन्थ ए पूर्ण कीध ॥ श्री गुरु देव प्रशाद से ।हुवा
मनोथ सिद्ध ॥ २६ ॥ श्री वीर निर्वाण वर्ष चोवीसें सो । पैंचीस उपर मझारो ॥ विक्रम
उन्नीसो पचावन में । कार्तिक शुक्ल अष्टमी चन्द्र वारो ॥ २७ ॥ जय जय सदा जैन धर्म
री ॥ वक्त भोना की सवाइ ॥ ह्रीं श्रीं सुख सपदा अमोलख । आनन्द मगल वरताइ
॥ २८ ॥ ॥ खण्ड सारांस हरिगीत छद ॥ जय जय जग रहो सती संतकी । शील
भली पर पालीयो ॥ पुण्य प्रबल जग यश जेहनो । विरह विस ने टालीयो ॥ श जय
कर राज लीनो । मुनि उपदेश सुणाइयो ॥ परमत्र स्वरूप सुणीने भूप ।जग जजाल छि
टकावीया ॥ १ ॥ मयम पारीममस्व मारी । कर्म रिपुने हटावीया ॥ स्वर्ग पाया नरहोइते
॥ वरसी शिव मग्म चावीया ॥ षट खण्ड मझार अधिकार पना । सारंस संक्षिप्त ए सही॥

ार सेवा पार हावे । जिम चोवीस जाव का मह ॥ २ ॥ ... ... ॥ येव
म भम कम्म गम छम करण ॥ अजरामर वर पद पावन । येहीमग असरण सरण ॥ येव
ारिहंत गुरु निग्रन्थ । धर्म कवटी आज्ञा मेहे । गावे गवावे सुणे सुणावे ते नित्य मगल
रहे ॥ ३ ॥ ● ● ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषि जी महाराजके सम्प्रदाय के महत मुनिश्री
खूबाऋषि जी महाराज क शिष्य वर्य आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी
महाराज क शिष्य वर्य बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख
ऋषि जी महाराज रचित शील महातम श्री
चन्द्र सेण लीलावती चरीत्र समाप्त ॥ ❀ ॥

चन्द्र सेन लीलावती चरित्र समाप्त